तपागच्छ का इतिहास

भाग १ खण्ड १

लेखक
डॉ० शिवप्रसाद

पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी
प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर
२०००

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुस्तक-परिचय

श्वेताम्बर मूर्तिपूजक समुदाय में तपागच्छ का स्थान सर्वोपरि है। वि0सं0 1285 में आचार्य जगच्चन्द्रसूरि को आघाटपुर के शासक जैत्रसिंह से 'तपा' विरुद् प्राप्त हुआ। इस आधार पर उनकी शिष्य संतति तपागच्छीय कहलायी। जगच्चन्द्रसूरि से लेकर आज तक इस गच्छ की अविच्छिन्न परम्परा चली आ रही है। इस गच्छ में सुप्रसिद्ध विद्वान् सोमसुन्दरसूरि, अकबर प्रतिबोधक आचार्य हीर-विजयसूरि, महान् विद्वान् उपाध्याय यशोविजय जी आदि हो चुके हैं। आज भी इस परम्परा में बड़ी संख्या में प्रभावक आचार्य एवं विद्वान् मुनिजन विद्यमान हैं। अन्यान्य गच्छों की भांति इस गच्छ से भी समय-समय पर विभिन्न शाखायें अस्तित्व में आयीं। इन सभी का शोधपूर्ण विवरण प्रस्तुत पुस्तक में संग्रहीत है।

●

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पार्श्वनाथ विद्यापीठ ग्रन्थमाला : १३४
प्राकृत भारती पुष्प : १३८

प्रधान सम्पादक
प्रो० सागरमल जैन
प्रो० भागचन्द्र जैन भास्कर

तपागच्छ का इतिहास

भाग १ खण्ड १

लेखक
डॉ० शिवप्रसाद

पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी
प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर
२०००

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पार्श्वनाथ विद्यापीठ ग्रन्थमाला-ग्रन्थांक - १३४
प्राकृत भारती पुष्प-१३८

लेखक	:	डॉ० शिव प्रसाद
पुस्तक	:	तपागच्छ का इतिहास, भाग-१, खण्ड-१.
प्रकाशक	:	पार्श्वनाथ विद्यापीठ, आई०टी०आई० रोड, करौंदी, वाराणसी-२२१००५ प्राकृत भारती अकादमी, १३-ए, मेन मालवीय नगर, जयपुर-३०२०१७
दूरभाष संख्या	:	३१६५२१, ३१८०४६
फैक्स	:	०५४२-३१८०४६
प्रथम संस्करण	:	२००० ई०
मूल्य	:	रू० ५००.००
अक्षर-सज्जा	:	वीज बिजनेस सेन्टर, लहूराबीर, वाराणसी (फोन नं० ३१२३७५)
मुद्रक	:	वर्द्धमान मुद्रणालय, भेलूपुर, वाराणसी
ISBN	:	81-86715-60-6
©	:	पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी

Pārśwanātha Vidyāpītha Series No. 134
Prakrit Bharti Pushpa-138

Title	:	Tapāgaccha Kā Itihās, Vol.-1, Part-1.
Publisher	:	Pārśwanātha Vidyāpītha I.T.I., Road, Karaundi, Varanasi-221005 Prakrit Bharti Academy, 13-A, Main Malviya Nagar, Jaipur-302017
Telephone No.	:	316521, 318046
Fax	:	0542-318046
First Edition	:	2000
Price	:	Rs. 500.00
Type Setting	:	Vee's Business Centre, Lahurabir, Varanasi. Phone-312375
Printed at	:	Vardhaman Mudranalaya, Bhelupur, Varanasi

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रकाशकीय

श्वेताम्बर मूर्तिपूजक समुदाय पूर्व मध्यकाल से ही विभिन्न गच्छों में विभाजित होता रहा। इसमें समय के साथ-साथ विभिन्न नये-नये गच्छ अस्तित्व में आये और नामशेष भी हो गये किन्तु कुछ गच्छ अपने जन्म से लेकर आज भी अविच्छिन्न रूप से चले आ रहे हैं। ऐसे गच्छों में तपागच्छ का स्थान बहुत महत्त्वपूर्ण है। आचार्य जगच्चन्द्रसूरि को वि०सं० १२८५ में आघाटपुर के शासक जैत्रसिंह से 'तपा' विरुद् प्राप्त हुआ जिसके आधार पर उनकी शिष्यसंतति तपागच्छीय कहलायी। इस गच्छ में देवेन्द्रसूरि, सोमसुन्दरसूरि, मुनिचन्द्रसूरि, अकबर प्रतिबोधक आचार्य हीरविजयसूरि, उनके शिष्य विजयसेनसूरि, प्रशिष्य विजयदेवसूरि, महान् वादी उपा० यशोविजय जी आदि अनेक प्रभावक और विद्वान् आचार्य एवं मुनिजन हो चुके हैं और आज भी बड़ी संख्या में ऐसे मुनिजन विद्यमान हैं। अन्य गच्छों की भांति इस गच्छ से भी समय-समय पर विभिन्न शाखायें निकलीं, जिनमें संविग्नपक्षीय शाखायें आज भी विद्यमान है। ये संविग्नपक्षीय शाखायें भी आज विभिन्न समुदायों में विभक्त हैं और यही तपागच्छ का वर्तमान स्वरूप है।

गच्छों के इतिहास पर अभी तक कोई भी शोध कार्य नहीं हुआ था। संस्थान के प्रवक्ता डॉ० शिवप्रसाद ने इस कमी को पूर्ण करते हुए अनेक वर्षों के सतत् अध्यवसाय के बाद प्रामाणिक ढंग से तपागच्छ सहित विभिन्न गच्छों का इतिहास लिखा है। प्रस्तुत पुस्तक तपागच्छ के इतिहास के प्रथम भाग का प्रथम खंड है। इसके अन्तर्गत लेखक ने तपागच्छ का प्रारम्भ से लेकर २०वीं शताब्दी तक के इतिहास को व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत किया है। इसके प्रकाशन सम्बन्धी कार्यों की जिम्मेदारी विद्यापीठ के ही प्रवक्ता डॉ० विजय कुमार जैन ने वहन की है अतः हम उनके भी आभारी हैं।

अन्त में हम सुन्दर अक्षर सज्जा के लिये बीज बिजनेस सेन्टर, महामण्डल नगर, लहुराबीर, वाराणसी और मुद्रण के लिये वर्धमान मुद्रणालय, भेलूपुर, वाराणसी के प्रति अपना आभार प्रकट करते हैं।

देवेन्द्र राज मेहता
मंत्री
प्राकृत भारती अकादमी
जयपुर

भूपेन्द्र नाथ जैन
मंत्री
पार्श्वनाथ विद्यापीठ,
वाराणसी

दिनाङ्क : २३.१२.२०००

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अपनी बात

श्वेताम्बर मूर्तिपूजक सम्प्रदाय का इतिहास वस्तुतः समय-समय पर उद्भूत विभिन्न गच्छों का ही इतिहास है। ई० सन् की ११वीं शताब्दी से गच्छों का अभ्युदय माना जाता है। बृहद्गच्छ प्राचीनतम गच्छों में एक है। इस गच्छ से समय-समय पर विभिन्न गच्छों का उदय हुआ, वे विकसित हुए और समय के साथ-साथ नामशेष भी हो गये। बृहद्गच्छ का समकालीन चैत्रगच्छ भी है। यह चैत्रपुर (चित्तौड़?) नामक स्थान में अस्तित्व में आया प्रतीत होता है। बृहद्गच्छीय आचार्य जगच्चन्द्रसूरि ने अपने गच्छ में व्याप्त शिथिलाचार को देखकर चैत्रगच्छीय आचार्य भुवनचन्द्रसूरि के शिष्य देवभद्रगणि से उपसम्पदा ग्रहण कर ली और उग्र तपश्चर्या में संलग्न हो गये जिससे प्रभावित होकर आघाटपुर के शासक जैत्रसिंह ने वि०सं० १२८५ में उन्हें **'तपा'** विरुद प्रदान किया। जगच्चन्द्रसूरि की शिष्य-संतति उक्त आधार पर तपागच्छीय कहलायी। इस गच्छ में समय-समय पर न केवल अनेक प्रभावक और विद्वान् गच्छपति, आचार्य एवं मुनिजन हुए, बल्कि यह कहते हुए गौरव का अनुभव होता है कि आज भी इसमें बड़ी संख्या में शासनप्रभावक और विद्वान् आचार्य एवं मुनिजन विद्यमान हैं, जिसके परिणामस्वरूप यह गच्छ न केवल जीवन्त रूप में आज दिखाई देता है बल्कि इसके प्रभाव में उत्तरोत्तर वृद्धि होती जा रही है। इसी गौरवशाली तपागच्छ का सम्यक्, प्रामाणिक एवं सुव्यवस्थित विवरण प्रस्तुत ग्रन्थ में सन्निहित है।

तपागच्छ के इतिहास के प्रथम भाग के प्रथम खण्ड में प्रारम्भ से लेकर २०वीं शताब्दी तक तपागच्छीय आचार्य परम्परा और उसकी विभिन्न शाखाओं का इतिहास दिया गया है। इसके दूसरे खण्ड - तपागच्छीय मुनिजनों की साहित्य सेवा-के अन्तर्गत इस गच्छ के विभिन्न मुनिजनों द्वारा प्रणीत रचनाओं को रचनाकारों के अकारादिक्रम से प्रस्तुत किया गया है। यह खण्ड भी अतिशीघ्र विद्वानों के सम्मुख प्रस्तुत होगा।

इस अवसर पर संक्षेप में इस ग्रन्थ के प्रारूप और इसमें विवेचित सामग्री पर प्रकाश डालना उपयुक्त होगा। किसी भी गच्छ के इतिहास के अध्ययन के मूल स्रोत के रूप में उससे सम्बद्ध रचनाकारों के कृतियों में दी गयी प्रशस्तियाँ, उनकी प्रेरणा से या स्वयं उनके द्वारा प्रतिलिपि किये गये ग्रन्थों की प्रशस्तियाँ, विवेच्य गच्छ के मुनिजनों द्वारा प्रतिष्ठापित की गयी जिनप्रतिमाओं पर उत्कीर्ण लेखों और सम्बद्ध गच्छ की पट्टावलियों का उपयोग अपरिहार्य है। तपागच्छ के इतिहास के अध्ययन के सम्बन्ध में भी ठीक यही बात कही जा सकती है। हमारे पास इस गच्छ के उक्त तीनों प्रकार के साक्ष्य अत्यधिक संख्या में उपलब्ध हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ में उन सब का सम्यक् उपयोग किया गया है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तपागच्छ का वर्तमान इतिहास वस्तुतः तपागच्छीय संविग्न परम्परा का ही इतिहास है। इस गच्छ में ये तीन संविग्न परम्परायें अस्तित्व में आयीं - १. विजयसंविग्न परम्परा, २. सागरसंविग्न परम्परा और ३. विमलसंविग्न परम्परा। उक्त तीनों संविग्न परम्परायें प्रारम्भ में मूल तपागच्छीय परम्परा की अनुगामी थी। धीरे-धीरे जब मूल परम्परा में क्रियाशील मुनिजनों की संख्या घटने लगी तब संविग्न परम्पराके मुनिजनों ने उनसे सम्बन्ध विच्छेद कर लिया और उनकी स्वतंत्र आचार्य परम्परा चलने लगी। तपागच्छीय संविग्न परम्परा आज निम्नलिखित समुदायों में विभक्त है:

१. पंन्यास श्री धर्मविजयजी महाराज - (डहेलावाला) का समुदाय
२. शासनसम्राट् श्री विजयनेमिसूरि का समुदाय
३. बुद्धिसागरसूरि का समुदाय
४. आनन्दसागरसूरि का समुदाय
५. विजयसिद्धिसूरि (बापजी महाराज) का समुदाय
६. विजयनीतिसूरि का समुदाय
७. विजयमोहनसूरि का समुदाय
८. विजयलब्धिसूरि का समुदाय
९. विजयवल्लभसूरि का समुदाय
१०. विजयकेशरसूरि का समुदाय
११. विजयकनकसूरि (बागड़) का समुदाय
१२. विजयप्रेमसूरि का समुदाय
१३. विजयभक्तिसूरि का समुदाय
१४. विजयशांतिचन्द्रसूरि का समुदाय
१५. हालारदेशोद्धारक विजयअमृतसूरि का समुदाय
१६. मोहनलालजी महाराज का समुदाय
१७. श्रीसौधर्मबृहद्तपागच्छ अपरनाम त्रिस्तुतिक समुदाय

त्रिस्तुतिक समुदाय को छोड़कर उक्त सभी समुदाय का नामकरण समुदायप्रवर्तक आचार्यों के नाम पर ही हुआ है। इन सभी समुदायों में हो चुके पट्टधरों एवं सभी आचार्यों के जन्म , दीक्षा, आचार्यपद प्राप्ति, स्वर्गारोहण, स्वदीक्षित शिष्य, साहित्यनिर्माण, साहित्य सेवा एवं जीवन की विशिष्ट कार्यकलापों आदि की पूर्ण जानकारी जब तक प्राप्त नहीं हो पाती तब तक इन सभी के विषय में प्रामाणिक रूप से कुछ भी लिख पाना कठिन है। अभी हाल के वर्षों में श्री नन्दलाल देवलुक द्वारा सम्पादित **शासनप्रभावक श्रमण भगवंतो** नामक पुस्तक दो भागों में प्रकाशित हुई है। इसके द्वितीय भाग में उपरोक्त

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समुदायों के कुछ प्रमुख आचार्यों के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी देने का प्रयास किया गया है, परन्तु इससे वे सभी बातें ज्ञात नहीं हो पाती जिनकी प्रामाणिक इतिहास लेखन के सम्बन्ध में आवश्यकता होती है। एक पट्टधर आचार्य के कितने शिष्य हुए, उन्होंने कितने आचार्य बनाये और कहाँ-कहाँ प्रतिष्ठा आदि करवायी, उनके द्वारा की गयी साहित्य सेवा आदि उपयोगी सूचनाओं का उसमें अत्यन्त संक्षिप्त और अपूर्ण विवरण है। ऐसी स्थिति में उसे आधार बना कर लिखा गया इतिहास भी अपूर्ण ही होगा।

संविग्न परम्परा के इतिहास के अध्ययन के सम्बन्ध में यह भी अनुभव हुआ कि देश के विभिन्न भागों में चातुर्मास या उसके पश्चात् मुनिजनों से वहाँ जाकर सम्पर्क कर पाना कठिन, समयसाध्य एवं व्ययसाध्य होने से अव्यावहारिक है, साथ ही उनसे आवश्यक सामग्री का प्रामाणिक एवं परिपूर्ण रूप में मिल पाना भी सरल नहीं है।

संविग्न परम्परा के इतिहास के अध्ययन का एक ही सुगम उपाय हो सकता है और वह यह कि प्रत्येक समुदाय के गच्छाधिपति आचार्य अपने-अपने अधीनस्थ किन्हीं विद्वान् मुनिजनों को अपने-अपने समुदाय की उत्पत्ति से लेकर वर्तमान समय तक के प्रत्येक पट्टधर आचार्यों के परिचय एवं उपलब्धियाँ, उनके शिष्य परिवार आदि का विवरण इतिहास के रूप में प्रस्तुत करने का कार्य सौंपें। यह कार्य उनके लिये उसी प्रकार सरल होगा जिस प्रकार किसी शिक्षित व्यक्ति द्वारा अपने परिवार की कतिपय पीढ़ियों का लेखा-जोखा प्रस्तुत करना।

प्रस्तुत शोध योजना के अन्तर्गत तपागच्छ के संविग्न-परम्परा के इतिहास लेखन में मैंने आवश्यक सामग्री के संकलन हेतु विभिन्न समुदायों के आचार्यों से सम्पर्क करने का प्रयास किया, किन्तु दो-तीन समुदायों को छोड़कर अन्य समुदायों के सम्बन्ध में जानकारी उपलब्ध नहीं हो पायी। ऐसी स्थिति में संविग्न परम्परा के मात्र कुछ समुदायों के पट्टधरों का संक्षिप्त विवरण देना उचित नहीं लगा। सुप्रसिद्ध विद्वान् प्रो० एम०ए०ढांकी और महोपाध्याय विनयसागरजी भी हमारे इस विचार से सहमत दिखे।

संविग्न परम्परा की प्रत्येक शाखाओं में विगत १००-१५० वर्षों में अनेक विद्वान् और प्रभावशाली आचार्य एवं मुनिजन हो चुके हैं और आज भी हैं। इन सभी के द्वारा की गयी साहित्यसेवा, ग्रन्थलेखन आदि का कीर्तिमान स्थापित हो चुका है। आचार्य आत्माराम जी अपरनाम विजयानन्दसूरिजी महाराज, शासनसम्राट विजयनेमिसूरि, विजयधर्मसूरि, विजयराजेन्द्रसूरि, बुद्धिसागरसूरि, सागरानन्दसूरि, विजयसिद्धिसूरि, विजयलब्धिसूरि, विजययतीन्द्रसूरि, विजयवल्लभसूरि, मुनि विद्याविजयजी, विजयेन्द्रसूरि, मुनि पुण्यविजयजी आदि अनेक विद्वान् मुनिजन इस काल में हो चुके हैं और आज भी विभिन्न विद्वान् आचार्य एवं मुनिजन विद्यमान हैं जिनकी साहित्यिक एवं अन्य उपलब्धियों

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तथा उनकी शिष्य-संतति आदि का विस्तृत विवरण इतिहास की दृष्टि से समाज के समक्ष रखा जाना अपरिहार्य है।

प्रो० एम०ए०ढ़ांकी, शोध निदेशक, अमेरिकन इस्ट्रिट्यूट ऑफ इन्डियन स्टडीज, वाराणसी (वर्तमान में गुड़गांव-हरियाणा) की प्रेरणा एवं सहयोग तथा प्रो० सागरमल जैन के निर्देशन में पार्श्वनाथ विद्यापीठ की सेवा में रहते हुए मैंने श्वेताम्बर गच्छों के इतिहास लेखन का कार्य प्रारम्भ किया और निर्बाध रूप से पिछले १० वर्षों में इस कार्य को एक सीमा तक पूर्ण करने का प्रयास किया, जिसका एक बड़ा भाग देश की प्रतिष्ठित शोध पत्रिकाओं - *निर्ग्रन्थ* (अहमदाबाद), *सामीप्य* (अहमदाबाद), *तुलसीप्रज्ञा* (लाडनूं), *तित्थयर* (कलकत्ता), *शोधादर्श* (लखनऊ), *संस्कृतिसंधान* (वाराणसी), *श्रमण* (वाराणसी) के अलावा विभिन्न अभिनन्दन ग्रन्थों एवं स्मारिकाओं आदि में प्रकाशित हो चुका है तथापि अभी आधे से भी अधिक सामग्री अप्रकाशित ही पड़ी हुई है।

पूर्व में गच्छों के इतिहास का प्रकाशन प्रो०एम०ए०ढ़ांकी और प्रो० सागरमल जैन के निर्देशन में पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी और शारदाबेन चिमनभाई एज्युकेशनल रिसर्च सेन्टर, अहमदाबाद के संयुक्त तत्त्वावधान में होना निश्चित् हुआ था, परन्तु अब यह इतिहास अलग-अलग खण्डों में पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी और प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर द्वारा संयुक्त रूप में प्रकाशित होने जा रहा है। इस क्रम में सर्वप्रथम तपागच्छ का इतिहास, भाग-१, खण्ड-१ विद्वानों के समक्ष प्रस्तुत है।

तपागच्छ के इतिहास के लेखन एवं संशोधन में मुझे प्रो० एम०ए०ढ़ांकी, प्रो० सागरमल जैन, साहित्य महारथी श्री भंवरलालजी नाहटा, महोपाध्याय विनयसागर जी आदि से जो सहयोग मिला उसके लिये आभार व्यक्त करने के लिये मेरे पास शब्द नहीं हैं। विनयसागर जी ने इस पुस्तक की पाण्डुलिपि के एक-एक शब्द को पढ़ा और उसमें यथावश्यक संशोधन किये, एतदर्थ हम उनके विशेष कृतज्ञ है।

प्रस्तुत पुस्तक के प्रकाशन का पूर्ण श्रेय प०पू० आचार्य राजयशसूरीश्वर जी म०सा०; प्रो० भागचन्द्र जैन, निदेशक, पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी और महो० विनयसागर जी, जयपुर को है, अतः मैं इन सभी का हृदय से आभारी हूँ।

शिवप्रसाद

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तपागच्छ का इतिहास

भाग १ : खंड १

विषय-सूची

प्रकाशकीय			
अपनी बात			I-IV
अध्याय १	-	गच्छों के मूल स्रोत	१
अध्याय २	-	तपागच्छ का इतिहास : जगच्चन्द्रसूरि से मुनिसुन्दरसूरि तक	६
अध्याय ३	-	रत्नशेखरसूरि से २०वीं शती तक	४६
अध्याय ४	-	तपागच्छ की शाखायें--	
	(१)	बृहद्पौशालिकशाखा	२१९
	(२)	कमलकलशशाखा	२५९
	(३)	कुतुबपुराशाखा	२६६
	(४)	लघुपौशालिकशाखा	२७०
	(५)	सागरशाखा	२७९
	(६)	विजयाणंदसूरिशाखा	२८९
	(७)	राजविजयसूरिशाखा अपरनाम रत्नशाखा	३०२
	(८)	विमलशाखा	३१६
		सहायक ग्रन्थ सूची	३२२

आवरण चित्र – आचार्य हीरविजयसूरि और सम्राट अकबर
जैन साहित्यनो संक्षिप्त इतिहास से साभार

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अध्याय - १

गच्छों के इतिहास के मूलस्त्रोत

किसी भी धर्म अथवा सम्प्रदाय के इतिहास के अध्ययन के स्त्रोत के रूप में साहित्यिक और पुरातात्विक साक्ष्यों का अध्ययन अपरिहार्य है। प्राक् मध्य युग में निग्रन्थ दर्शन के श्वेताम्बर आम्नाय में समय-समय पर उद्भूत विभिन्न गच्छों और उनसे निःसृत (उत्पन्न) शाखाओं-उपशाखाओं के इतिहास के अध्ययन के सम्बन्ध में भी ठीक यही बात कही जा सकती है।

गच्छों के इतिहास से सम्बद्ध साहित्यिक साक्ष्यों को मुख्य रूप से दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है, प्रथम ग्रन्थ या पुस्तक प्रशस्तियाँ और द्वितीय विभिन्न गच्छों के मुनिजनों द्वारा रची गयी अपने-अपने गच्छों की पट्टावलियाँ।

प्रशस्तियाँ

पुस्तकों के साथ सम्बन्ध रखने वाली प्रशस्तियाँ दो प्रकार की होती हैं। इनमें से एक तो वे हैं जो ग्रन्थों के अन्त में उनके रचयिताओं द्वारा बनायी गयी होती हैं। इनमें मुख्य रूप से रचनाकार द्वारा गण-गच्छ तथा अपने गुरु-प्रगुरु आदि का उल्लेख होता है। किन्हीं प्रशस्तियों में रचनाकाल और रचनास्थान का भी निर्देश होता है। किसी-किसी प्रशस्ति में तत्कालीन शासक या किसी बड़े राज्याधिकारी का नाम और अन्यान्य ऐतिहासिक सूचनायें भी मिल जाती हैं। कुछ प्रशस्तियाँ छोटी दो-चार पंक्तियों की और कुछ बड़ी होती हैं। इन प्रशस्तियों द्वारा भिन्न-भिन्न गण-गच्छों के जैनाचार्यों की गुरु-परम्परा , उनका समय, उनका कार्य क्षेत्र और उनके द्वारा की गयी समाजोत्थान एवं साहित्य सेवा का संकलन कर उनकी परम्पराओं का अत्यन्त प्रामाणिक इतिहास तैयार किया जा सकता है।

दूसरे प्रकार की प्रशस्तियाँ वे हैं जो प्रतिलिपि किये गये ग्रन्थों के अन्त में लिखी होती हैं। ये भी दो प्रकार की होती हैं। प्रथम वे जो किन्हीं मुनिजनों या श्रावक द्वारा स्वयं के अध्ययनार्थ लिखी गयी होती हैं और दूसरी वे जो श्रावकों द्वारा स्वयं के अध्ययनार्थ या किन्हीं मुनिजनों के भेंट देने हेतु दूसरों से (लोहिया से) द्रव्य देकर लिखवाई जाती हैं।

गच्छों के इतिहास की सामग्री की दृष्टि से ये प्रशस्तियाँ राजाओं के दान पत्रों और मन्दिरों के शिलालेखों के समान ही महत्त्वपूर्ण हैं। तथ्य की दृष्टि से इनमें कोई अन्तर नहीं होता; अन्तर यही है कि केवल एक पाषाण या ताम्रपत्र पर उत्कीर्ण होता है तो दूसरा ताड़पत्र या कागजों पर।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुजरात के पाटण, खम्भात, अहमदाबाद, बड़ौदा और लिम्बडी; राजस्थान के जैसलमेर, बीकानेर, जोधपुर, जयपुर, कोटा आदि तथा भण्डारकर ओरियण्टल रिसर्च इंस्टिट्यूट, पूणे के ग्रन्थ भण्डारों में जैन ग्रन्थों का विशाल संग्रह विद्यमान है। पीटरसन, मुनि जिनविजय जी, मुनि पुण्यविजय जी, श्री चिमनलाल डाह्याभाई दलाल, पण्डित लालचन्द भगवानदास गांधी, प्रो० हीरालाल रसिकलाल कापड़िया, पण्डित अम्बालाल प्रेमचन्द्र शाह, डॉ० विधात्री वोरा, श्री जौहरीमल पारेख आदि विद्वानों के अथक परिश्रम से उक्त भण्डारों के विस्तृत सूची पत्र प्रकाशित हो चुके हैं। इनका विवरण इस प्रकार है:

1. P.Peterson, *Operation in Search of Sanskrit Mss in the Bombay Circle,* Vol.I-VI, Bombay 1882-1898 A.D.

2. C.D. Dalal, *A Descriptivie Catalogue of Manuscripts in the Jain Bhandaras at Pattan,* Vol. I, G.O.S. No. LXXVI, Baroda, 1937.

3. H.R.Kapadia, *Descriptive Catalogue of the Government Collections of Manuscripts deposited at the Bhandarkar Oriental Research Institute,* Vol. XVII-XIX, Poona 1935-1977.

4. Muni Punya Vijaya, *Catalogue of Palm Leaf Mss. in the Shanti Natha Jaina Bhandar, Cambay,* Vol. I, II, G.O.S., No. 139, 149, Baroda 1961-1966 A.D.

5. A.P.Shah, *Catalogue of Sanskrit & Prakrit Mss. Muni Shree Punya Vijayajis collection,* Vol, I, II, III, L.D. Series No. 2, 6, 15, Ahmedabad, 1962, 1965, 1968 A.D.

6. A.P. Shah, *Catalogue of Sanskrit & Prakrit Mss. Ac. Vijayadevasuris and Ac. Ksantisuris collection,* Part IV., L.D. Series, No. 20, Ahmedabad, 1968 A.D.

7. Muni Punya Vijaya, *New Catalogue of Sanskrit & Prakrit Mss: Lesalmer collection,* L.D. Series no.36, Ahmedabad, 1972 A.D.

8. Vidhatri Vora, *Catalogue of Gujarati Mss in the Muniraj Shree Punya Vijayaji's collection,* L.D. Series No. 71, Ahmedabad, 1978 A.D.

९. अमृतलाल मगनलाल शाह, सम्पा०-**श्रीप्रशस्तिसंग्रह,** श्री जैन साहित्य प्रदर्शन, श्रीदेशविरति धर्माराजक समाज, अहमदाबाद वि०सं० १९९३.

१०. मुनि जिनविजय, सम्पा०-**जैनपुस्तकप्रशस्तिसंग्रह,** सिंघी जैन ग्रन्थमाला, ग्रन्थांक १८, भारतीय विद्याभवन, मुम्बई १९४३ ई०.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पट्टावलियाँ

इतिहास लेखन में अन्यान्य साधनों की भाँति पट्टावलियों का महत्वपूर्ण स्थान है। श्वेताम्बर जैन मुनिजनों ने इनके माध्यम से इतिहास की महत्वपूर्ण सामग्री प्रस्तुत की है। शिलालेख, प्रतिमा लेख और प्रशास्तियों से केवल हम इतना ही ज्ञात कर पाते हैं कि किस काल में किस मुनि ने क्या कार्य किया। अधिक से अधिक उस समय के शासक एवं मुनि के गुरु-परम्परा का ही परिचय मिल जाता है। किन्तु पट्टावली में अपनी परम्परा से सम्बन्धित पट्ट परम्परा का पूर्ण परिचय होता है। इनमें किसी घटना विशेष के सम्बन्ध में अथवा किसी आचार विशेष के सम्बन्ध में प्रायः अतिशयोक्तिपूर्ण विवरण ही मिलते हैं। अतः ऐतिहासिक महत्व की दृष्टि से इनकी उपयोगिता पर पूर्णरूपेण विश्वास नहीं किया जा सकता। चूंकि इनके संकलन या रचना में किम्वदन्तियों एवं अनुश्रुतियों के साथ-साथ कदाचित् तत्कालीन रास-गीत-सज्झाय आदि का भी उपयोग किया जाता है इसीलिए इनके विवरणों पर पूर्णतः अविश्वास भी नहीं किया जा सकता है और इनके उपयोग में अत्यधिक सावधानी बरतनी पड़ती है।

पट्टावलियाँ मुख्य रूप से दो प्रकार की होती हैं। प्रथम शार्खीय पट्टावली और दूसरी विशिष्ट पट्टावली। प्रथम प्रकार में सुधर्मा स्वामी से लेकर देवर्धिगणि क्षमा श्रवण तक का विवरण मिलता है। **कल्पसूत्र** और **नन्दीसूत्र** की पट्टावलियाँ इसी कोटि में आती हैं। गच्छ भेद के बाद विविध पट्टावलियाँ विशिष्ट पट्टावली की कोटि में रखी जा सकती हैं। इनकी अपनी-अपनी विशिष्टताएँ होती है।

पट्टावलियों में मुख्य रूप से पट्टधर आचार्यों का ही विवरण मिलता है। अन्य आचार्यों का नहीं। कहीं-कहीं प्रसंगवश उनके गुरुभ्राताओं का भी नामोल्लेख मिल जाता है। इनके द्वारा ही आचार्य परम्परा अथवा गच्छ का क्रमबद्ध पूर्ण विवरण प्राप्त होता है, जो इतिहास की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। श्वेताम्बर परम्परा में विभिन्न गच्छों की जो पट्टपरम्परा मिलती है, उसका श्रेय पट्टावलियों को ही है।

अन्यान्य गच्छों की भाँति तपागच्छ के इतिहास के अध्ययन हेतु इस गच्छ के विभिन्न मुनिजनों द्वारा समय-समय पर रचित विभिन्न पट्टावलियाँ मिलती हैं। मुनि दर्शनविजय ने इस गच्छ की कुछ पट्टावलियों को **पट्टावलीसमुच्चय** में प्रकाशित किया है।

इसी प्रकार श्री मोहनलाल दलीचंद देसाई द्वारा प्रणीत **जैनगूर्जरकविओं** और मुनि जिनविजय द्वारा सम्पादित **विविधगच्छीयपट्टावलीसंग्रह** तथा मुनि कल्याणविजय द्वारा सम्पादित **पट्टावलीपरागसंग्रह** में इस इस गच्छ की पट्टावलियां दी गयी हैं। प्रस्तुत पुस्तक में इन सभी का यथास्थान उपयोग किया गया है।

अभिलेखीयसाक्ष्य

श्वेताम्बर सम्प्रदाय के विभिन्न गच्छों से सम्बद्ध अभिलेखिय साक्ष्य मुख्य रूप से दो प्रकार के हैं-१. प्रतिमालेख, २. शिलालेख।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धातु या पाषाण की अनेक जिनप्रतिमाओं के पृष्ठ भाग या आसनों पर लेख उत्किर्ण होते हैं। इसी प्रकार विभिन्न तीर्थ स्थलों पर निर्मित जिनालयों से अनेक शिलालेख भी प्राप्त हुए हैं। इन लेखों में प्रतिमा प्रतिष्ठापक या प्रतिमा के प्रतिष्ठा हेतु प्रेरणा देने वाले मुनि का नाम होता है तो किन्हीं-किन्हीं लेखों में उनके पूर्ववर्ती दो-चार मुनिजनों के भी नाम मिल जाते हैं। किन्हीं-किन्हीं लेखों में तत्कालीन शासक का भी नाम मिल जाता है। इतिहास लेखन में उक्त साक्ष्यों का बड़ा महत्व है।

शिलालेखों में सामान्य रूप से जिनालयों के निर्माण, पुर्ननिर्माण, जीर्णोद्धार आदि कराने वाले श्रावक का नाम, उसके कुटुम्ब एवं जाति आदि का परिचय, प्रेरणा देने वाले मुनिराज का नाम, उनके गच्छ का नाम, उनकी गुरु-परम्परा में हुए पूर्ववर्ती दो-चार मुनिजनों का नाम, शासक का नाम, तिथि आदि का सविस्तार परिचय दिया हुआ होता है।

श्वेताम्बर सम्प्रदाय से सम्बद्ध अभिलेखों के विभिन्न संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। इनका विवरण इस प्रकार है-

जैनलेखसंग्रह, भाग १-३; सम्पा०-पूरनचंद नाहर, कलकत्ता १९१८, १९२७, १९२९ ई०।

प्राचीनजैनलेखसंग्रह, भाग १-२; सम्पा०-मुनि जिनविजय, जैन आत्मानन्द सभा, भाव नगर १९२१ ई०।

जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह, भाग १-२, सम्पा०-आचार्य बुद्धिसागरसूरि, श्री अध्यात्म ज्ञानप्रसारक मण्डल, पादरा १९२४ ई०।

प्राचीनलेखसंग्रह, संग्रा०-आचार्य विजयधर्मसूरि, सम्पा०-मुनि विद्याविजय, यशोविजय जैन ग्रन्थमाला, भावनगर १९२९ ई०।

अर्बुदप्राचीनजैनलेखसंदोह, (आबू, भाग २) सम्पा०-मुनि जयन्तविजय, विजयधर्मसूरी ज्ञानमन्दिर, उज्जैन वि०सं० १९९४।

अर्बुदचलप्रदक्षिणाजैनलेखसंदोह, (आबू, भाग ५), सम्पा०-मुनि जयन्तविजय, यशोविजय जैनग्रन्थमाला, भावनगर वि०सं०२००५।

जैनधातुप्रतिमालेख, सम्पा०-मुनिकांतिसागर, श्रीजिनदत्तसूरी ज्ञानभण्डार, सूरत १९५० ई०।

प्रतिष्ठालेखसंग्रह, सम्पा०-महोपाध्याय विनयसागर, सुमतिसदन, कोटा १९५३ ई०।

बीकानेरजैनलेखसंग्रह, सम्पा-अगरचंद नाहटा एवं श्री भंवरलाल नाहटा, नाहटा ब्रदर्स, ४ जगमोहन मल्लिक लेन, कलकत्ता १९५५ई०।

श्रीप्रतिमालेखसंग्रह, सम्पा०-श्रीदौलतसिंह लोढा "अरविन्द" धामणिया, मेवाड़ १९५५ ई०।

राधनपुरप्रतिमालेखसंग्रह, सम्पा०-मुनि विशालविजय, यशोविजय जैन ग्रन्थमाला, भावनगर १९६० ई०।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शत्रुंजयगिरिराजदर्शन, सम्पा०-मुनि कंचनसागर, कपडवज १९८३ ई०।

शत्रुंजयवैभव, सम्पा०-मुनि कान्तिसागर, कुशलसंस्थान, पुष्प ४, जयपुर १९९० ई०।

नाकोड़पार्श्वनाथतीर्थ-सम्पा० विनय सागर जी।

बाड़मेरजिलेकेप्राचीनजैनशिलालेख, संग्रा०-सम्पा०-चम्पालाल सालेचा, प्रकाशक-जैन श्वे०नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ, पो०मेवानगर, जिला-बाड़मेर, राजस्थान।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अध्याय - २

तपागच्छ का इतिहास

भाग-१, खंड -१

(आचार्य जगच्चन्द्रसूरि से आचार्य मुनिसुन्दरसूरि तक)

निर्ग्रन्थ परम्परा के श्वेताम्बर आम्नाय के गच्छों में तपागच्छ का स्थान आज तो सर्वोपरि जैसा है। इस गच्छ की परम्परानुसार बृहद्गच्छीय आचार्य मणिरत्नसूरि के शिष्य जगच्चन्द्रसूरि हुए, जिन्होंने अपने गच्छ में व्याप्त शिथिलाचार के कारण चैत्रगच्छीय आचार्य धनेश्वरसूरि के प्रशिष्य और भुवनचन्द्रसूरि के शिष्य देवभद्रगणि के पास उपसम्पदा ग्रहण की एवं १२ वर्षों तक निरंतर आयंबिल तप किया जिससे प्रभावित होकर आघाटपुर के शासक जैत्रसिंह ने उन्हें वि०सं० १२८५/ई०स० १२२९ में 'तपा' विरुद् प्रदान किया। आगे चलकर उनकी शिष्य संतति तपागच्छीय कहलायी।[1]

तपागच्छ में आचार्य देवेन्द्रसूरि, विजयचन्द्रसूरि, धर्मघोषसूरि, सोमप्रभसूरि, सोमतिलकसूरि, देवसुन्दरसूरि, सोमसुन्दरसूरि, मुनिसुन्दरसूरि, हेमविमलसूरि, आनन्दविमलसूरि, विजयदानसूरि, हीरविजयसूरि, विजयसेनसूरि, विजयदेवसूरि, उपा० यशोविजय जी तथा वर्तमानयुग में आचार्य विजयानन्दसूरि, आचार्य विजयधर्मसूरि, शासनसम्राट आचार्य विजयनेमिसूरि, आचार्य नेमिसूरि, आचार्य सागरानन्दसूरि, आचार्य बुद्धिसागरसूरि, आचार्य विजयसिद्धिसूरि, आचार्य लब्धिसूरि, आचार्य विजयवल्लभसूरि आदि अनेक विद्वान् और प्रभावक मुनिजन हो चुके हैं तथा आज भी अनेक प्रभावशाली और साहित्यरसिक मुनिजन विद्यमान हैं। इन्होंने अपनी उत्कृष्ट रचनाओं, ज्ञानभंडारों की स्थापना, तीर्थयात्रा, तीर्थक्षेत्रों के जीर्णोद्धार एवं जिनप्रतिमाओं की प्रतिष्ठा आदि कार्यों द्वारा पश्चिमीभारत विशेषकर महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान एवं दिल्ली और पंजाब के विभिन्न क्षेत्रों में श्वेताम्बर मूर्तिपूजक समाज को जीवन्त एवं समुन्नत बनाये रखने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है जो आज भी जारी है।

अन्य गच्छों की भाँति तपागच्छ से भी समय-समय पर विभिन्न उपशाखाओं का प्रादुर्भाव हुआ, जिनमें बृहद्पौशालिकशाखा, कमलकलशशाखा, कुतुबपुराशाखा, लघुपौशालिक अपरनाम सोमशाखा, राजविजयसूरिशाखा अपरनाम रत्नशाखा, सागरशाखा, विमलशाखा, विजयशाखा आदि प्रमुख हैं।

तपागच्छ के इतिहास के अध्ययन में स्रोत के रूप में इस गच्छ के मुनिजनों द्वारा रचित ग्रन्थों की प्रशस्तियाँ, उनकी प्रेरणा से या स्वयं उनके द्वारा लिखी गयी पुस्तकों की प्रतिलिपि या दाता प्रशस्तियाँ तथा बड़ी संख्या में पट्टावलियां मिलती हैं[2]। इसी प्रकार इस गच्छ के मुनिजनों द्वारा प्रतिष्ठापित बहुत बड़ी संख्या में सलेख जिनप्रतिमायें भी प्राप्त हुई हैं, जो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वि०सं० १४४७ से लेकर वर्तमान युग तक की है। प्रस्तुत पुस्तक में इनमें से महत्त्वपूर्ण और आवश्यक साक्ष्यों का उपयोग करते हुए इस गच्छ के इतिहास पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

तपागच्छ का उल्लेख करने वाले प्रारम्भिक साक्ष्यों में इस गच्छ के आदिपुरुष जगच्चन्द्रसूरि के (शिष्य एवं) पट्टधर देवेन्द्रसूरि द्वारा रचित कृतियों की प्रशस्तियां द्रष्टव्य हैं। **नव्यपंचकर्मग्रन्थसटीक**[1] की प्रशस्ति में उन्होंने अपनी गुरु-परम्परा दी है जो इस प्रकार है:

जगच्चन्द्रसूरि (**तपा** विरुद्धारक)
|
देवेन्द्रसूरि (**नव्यपंचकर्मग्रन्थसटीक** के कर्ता)

सुदर्शनाचरित की प्रशस्ति[2] में उनके द्वारा दी गयी गुरु-परम्परा निम्नानुसार है:

चैत्रगच्छीय भुवनचन्द्रसूरि
|
देवभद्र (गणि) सूरि
|
जगच्चन्द्रसूरि
|
देवेन्द्रसूरि (**सुदर्शनाचरित** के रचनाकार) — विजयचन्द्रसूरि

देवेन्द्रसूरि के गुरुभ्राता विजयचन्द्रसूरि के शिष्य क्षेमकीर्ति द्वारा रचित बृहत्कल्पवृत्ति की प्रशस्ति में रचनाकार ने जगच्चन्द्रसूरि को देवेन्द्रसूरि और विजयचन्द्रसूरि के गुरुभाई के रूप में उल्लिखित करते हुए इन्हें देवभद्रसूरि का शिष्य कहा है:

धनेश्वरसूरि
|
भुवनचन्द्रसूरि
|
देवभद्रसूरि
|
जगच्चन्द्रसूरि — देवेन्द्रसूरि — विजयचन्द्रसूरि
|
वज्रसेन — पद्मचन्द्र — क्षेमकीर्ति (वि०सं० १३३२ में **बृहत्कल्पसूत्रवृत्ति** के रचनाकार)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तपागच्छीय आचार्य देवसुन्दरसूरि के एक शिष्य गुणरतसूरि द्वारा रचित विभिन्न कृतियां मिलती हैं। वि०सं० १४६६ में रचित **गुरुपर्वक्रमविवरण**[३४] में उन्होंने अपनी गुरु-परम्परा इस प्रकार बतलायी है:

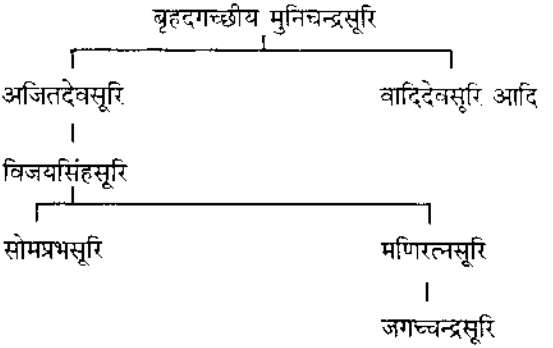

गुरुपर्वक्रमविवरण के अनुसार जगच्चन्द्रसूरि ने शिथिलाचार को देखते हुए चैत्रगच्छीय देवभद्रगणि से उपसम्पदा ग्रहण कर ली। देवभद्रसूरि के गुरु कौन थे? इस बारे में गुणरत्नसूरि ने कोई चर्चा नहीं की है, किन्तु जैसा कि ऊपर देवेन्द्रसूरि कृत **सुदर्शनाचरित** और क्षेमकीर्तिकृत **बृहदकल्पवृत्ति** की प्रशस्तियो में हम देख चुके हैं देवभद्रसूरि के प्रगुरु और गुरु का नाम भी उन्होंने दिया है।

शान्तिनाथ जैनभंडार, खंभात में संरक्षित **पाक्षिकप्रतिक्रमणसूत्र** की चूर्णि और वृत्ति की वि०सं०१२९६ में लिखी गयी प्रति की प्रशस्ति के अनुसार देवेन्द्रसूरि और विजयचन्द्रसूरि ने उपा० देवभद्रगणि के व्याख्यान के प्रभाव से उक्त ग्रन्थ की प्रतिलिपि करायी।[३५]

उक्त प्रशस्ति से क्षेमकीर्ति का यह मत पुष्ट होता दिखाई देता है कि देवेन्द्रसूरि और विजयचन्द्रसूरि देवभद्रगणि के शिष्य थे न कि जगच्चन्द्रसूरि के। इस प्रकार जगच्चन्द्रसूरि, देवेन्द्रसूरि और विजयचन्द्रसूरि को परस्पर गुरु भ्राता और इन्हें देवभद्रगणि का शिष्य मानने में कोई बाधा नहीं दिखाई देती। कनिष्ठ गुरुभ्राता भी अपने ज्येष्ठ गुरुभ्राता का पट्टधर हो सकता है, यह बात **गुरुपर्वक्रम** से भलीभाँति स्पष्ट हो जाती है।

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि जगच्चन्द्रसूरि मूलत: बृहद्गच्छीय थे। बाद में अपने गच्छ में व्याप्त शिथिलाचार से क्षुब्ध होकर उन्होंने चैत्रगच्छीय देवभद्रगणि से उपसम्पदा ग्रहण की और साधना में लीन हो गये। बाद में उन्हें जब **तपा** विरुद् मिला, तो उनके पट्टधरों की परम्परा **तपागच्छ** के नाम से विख्यात् हुई, अन्यथा ये चैत्रगच्छ के होते और स्वाभाविक रूप से चैत्रगच्छीय ही कहे जाते। देवभद्रसूरि के अन्य शिष्यों से चैत्रगच्छ की परम्परा आगे बढ़ी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जगच्चन्द्रसूरि :

जैसा कि प्रारम्भ में हम देख चुके हैं, आचार्य जगच्चन्द्रसूरि इस गच्छ के आदि पुरुष माने जाते हैं। इनके द्वारा रचित न तो कोई कृति मिलती है और न ही इस सम्बन्ध में कोई उल्लेख ही प्राप्त होता है। जगच्चन्द्रसूरि के दो प्रमुख शिष्य थे-देवेन्द्रसूरि और विजयचन्द्रसूरि। गुरु के निधनोपरान्त देवेन्द्रसूरि उनके पट्टधर बने। ये अपने समय के प्रमुख विद्वानों में से एक थे। इन्होंने अपनी कृतियों में अपनी गुरु-परम्परा तथा कुछ में अपने साहित्यिक सहयोगी के रूप में अपने कनिष्ठ गुरुभ्राता विजयचन्द्रसूरि[४] का उल्लेख किया है।

देवेन्द्रसूरि ने विशेष रूप से गुजरात और मालवा में विहार किया। वि०सं० १३०२ में उज्जैन में इन्होंने वीरधवल नामक एक श्रेष्ठीपुत्र को दीक्षित कर उसका नाम विद्यानन्द रखा। कुछ समय पश्चात् वीरधवल का लघुभ्राता भी देवेन्द्रसूरि के पास दीक्षित हुआ और उसका नाम धर्मकीर्ति रखा गया[५]। २२ वर्ष तक मालवा में विहार करने के पश्चात् आचार्य देवेन्द्रसूरि स्तम्भतीर्थ (खंभात) पधारे। उनके कनिष्ठ गुरुभ्राता विजयसिंहसूरि ने इस अवधि में स्तम्भतीर्थ की उसी पौषधशाला में निवास किया जहाँ ठहरना आचार्य जगच्चन्द्रसूरि ने निषिद्ध कर दिया था। इस दरम्यान उन्होंने मुनिआचार के कठोर नियमों को भी शिथिल कर दिया। देवेन्द्रसूरि को ये सभी बातें ज्ञात हुईं और वे वहां न जाकर दूसरी पौषधशाला, जो अपेक्षाकृत कुछ छोटी थी, में ठहरे। इस प्रकार जगच्चन्द्रसूरि के दो शिष्य एक ही नगर में एक ही समय दो अलग-अलग स्थानों पर रहे। बड़ी पौषधशाला में ठहरने के कारण विजयचन्द्रसूरि का शिष्य समुदाय **बृहद्पौशालिक** तथा देवेन्द्रसूरि का शिष्यपरिवार **लघुपौशालिक** कहलाया।[६]

गुर्जरदेश में विहार करने के पश्चात् देवेन्द्रसूरि पुनः मालवा पधारे। वि०सं० १३२७/ ई०स० १२६१ में वहीं उनका देहान्त हो गया।[७] उन्होंने विद्यानन्दसूरि को अपना पट्टधर घोषित किया था किन्तु उनके निधन के मात्र १३ दिन पश्चात् विद्यानन्दसूरि का भी निधन हो गया। इन घटनाओं के ५ माह पश्चात् विद्यानन्द के छोटे भाई धर्मकीर्ति को धर्मघोषसूरि के नाम से देवेन्द्रसूरि का पट्टधर बनाया गया।[८]

देवेन्द्रसूरि द्वारा रचित विभिन्न कृतियाँ मिलती[९] हैं, जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं :

१. **श्राद्धदिनकृत्यवृत्ति** २. **नव्यपंचकर्मग्रन्थ सटीक**
३. **सिद्धपंचाशिका सटीक** ४. **धर्मरत्नप्रकरण बृहद्वृत्ति**
५. **सुदर्शनाचरित्र** ६. **चैत्यवन्दनादि ३ भाष्य**
७. **वन्दारुवृत्ति** अपरनाम **श्राद्धप्रतिक्रमणसूत्रवृत्ति**
८. **दानादि चार कुलक**, जिसपर वि०सं० की १७वीं शती में विजयदानसूरि के प्रशिष्य एवं राजविजयसूरि के शिष्य देवविजय ने **धर्मरत्नमंजूषा** के नाम से वृत्ति की रचना की। इसके अलावा उनके द्वारा रचित कुछ स्तुति-स्तोत्र भी मिलते हैं।

देवेन्द्रसूरि के पट्टधर धर्मघोषसूरि द्वारा रचित कृतियाँ इस प्रकार हैं[१०] :

१. **संघाचार भाष्य** २. **कायस्थितिस्तवन**
३. **भवस्थितिस्तव** ४. **स्तुतिचतुर्विंशति**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५.	**देहस्थितिप्रकरण**	६.	**चतुर्विंशतिजिनस्तवसंग्रह**
७.	**दुषमाकालसंघस्तवन**	८.	**युगप्रधानस्तोत्र**
९.	**ऋषिमंडलस्तोत्र**	१०.	**परिग्रहप्रमाणस्तवन**
११.	**चतुर्विंशतिजिनस्तुति**	१२.	**अष्टापदकल्प**
१३.	**गिरनारकल्प**	१४.	**श्राद्धजीतकल्प**

मुनि चतुरविजयजी ने इनके अनेक स्तवनों को **जैनस्तोत्रसंदोह**, प्रथम भाग में प्रकाशित किया है।[११]

धर्मघोषसूरि के पट्टधर सोमप्रभसूरि हुए। इनका जन्म वि०सं० १३१० में हुआ था। वि०सं० १३२१ में इन्होंने दीक्षा ग्रहण की। वि०सं० १३३२ में सूरि पद प्राप्त हुआ और वि०सं० १३५७ में गुरु के निधन के पश्चात् ये उनके पट्टधर बने। इन्होंने कोंकण आदि प्रदेशों में जल की अधिकता और मारवाड़ आदि में जल की दुर्लभता के कारण तपागच्छीय मुनिजनों का विहार निषिद्ध कर दिया। इनके द्वारा रचित कृतियों में **यतिजीतकल्पसूत्र**, **अट्ठाइस यमकस्तुतिओ**, **श्रीमच्छर्यस्तोत्र** आदि उल्लेखनीय हैं।[१२] इनके शिष्यों के रूप में विमलप्रभ, परमानंद, पद्मतिलक और सोमतिलक का नाम मिलता है। वि०सं० १३७३/ई०स० १३१७ में इनके निधन के पश्चात् सोमतिलकसूरि ने तपागच्छ का नायकत्त्व ग्रहण किया।

सोमतिलकसूरि का जन्म वि०सं० १३३५ में हुआ था, वि०सं० १३६९ में इन्होंने दीक्षा ग्रहण की और वि०सं० १४२४ में इनका देहान्त हुआ। इनके द्वारा रचित कृतियाँ[१३] इस प्रकार हैं :

१.	**बृहत्क्षेत्रसमास**		
२.	**सप्ततिशतस्थानप्रकरण** (रचनाकाल वि०सं० १३८७/ई०स० १३२१)		
३.	**सज्झक चतुर्विंशतिजिनस्तुतिवृत्ति**	४.	**चतुर्विंशति जिनस्तवनवृत्ति**
५.	**तीर्थराजस्तुति**	६.	**विचारसूत्र**
७.	**अट्ठाइस यमकस्तुतिओ पर वृत्ति**	८.	**वीरस्तव**
९.	**कमलबन्धस्तवन**	१०.	**साधारणजिनस्तुति**
११.	**शत्रुंजययात्रावर्णन**		

इनके शिष्यों में पद्मतिलक, चन्द्रशेखर, जयानन्दसूरि, देवसुन्दरसूरि आदि का नाम मिलता है। पद्मतिलक द्वारा रचित कोई कृति नहीं मिलती, किन्तु चन्द्रशेखर और जयानन्द द्वारा रचित कृतियां प्राप्त होती हैं।

चन्द्रशेखर द्वारा रचित कृतियों में **उषितभोजनकथा**, **यवराजर्षिकथा**, **श्रीमद्स्तम्भनकहारबंधस्तवन** आदि का नाम मिलता है।[१४]

जयानन्दसूरि द्वारा रचित कृतियों में **स्थूलिभद्रचरित्र**[१५], **देवप्रभस्तोत्र**[१६], **साधारण जिनस्तोत्र**[१७] आदि उल्लेखनीय हैं। जयानन्दसूरि को वि०सं० १४२० में आचार्यपद प्राप्त हुआ और वि०सं० १४४१ में देहान्त हुआ।

सोमतिलकसूरि के वि०सं० १४२०/ई०स० १३६४ में निधन के पश्चात् देवसुन्दरसूरि उनके पट्टधर बने।[१८] वि०सं० १३९६ में इनका जन्म हुआ था, वि०सं० १४०४ में इन्होंने

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दीक्षा ग्रहण की और वि०सं० १४२० में सूरि पद प्राप्त किया।[1] इनके उपदेश से बड़ी संख्या में प्राचीन ग्रन्थों की प्रतिलिपियाँ करायी गयीं, जिनमें से अनेक आज भी उपलब्ध हैं।[2] इनके द्वारा प्रतिष्ठापित कुछ जिनप्रतिमायें भी प्राप्त हुई हैं, जो वि०सं० १४४७ से १४६८ तक की हैं। इनका विवरण इस प्रकार है :

क्रमांक	वि०सं०	तिथि	प्राप्तिस्थान	संदर्भग्रन्थ
१.	१४४७	फाल्गुन सुदि ८ सोमवार	दादा पार्श्वनाथ देरासर नरसिंहजीकी पोल, बड़ोदरा	आचार्य बुद्धिसागर, संपा०, **जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक १४६.
२.	१४५८	फाल्गुन सुदि २ बुधवार	अनुपूर्ति लेख, आबू	मुनि जयन्तविजय, संपा०, **अर्बुदप्राचीनजैनलेखसंदोह**, लेखांक ६०७.
३.	१४६१	श्रावण सुदि ११ गुरुवार	बड़ा मंदिर, नागौर	विनयसागर, संपा०, **प्रतिष्ठालेखसंग्रह**, लेखांक १८४
४.	१४६५	ज्येष्ठ वदि ११	आदिनाथ जिनालय, मालपुरा	वही, लेखांक १९१.
५.	१४६६	श्रावण सुदि १०	आदिनाथ जिनालय, खेरालु	आचार्य बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ७६१.
६.	१४६६	तिथिविहीन	चिन्तामणि जी का मंदिर, बीकानेर	अगरचंद भँवरलाल नाहटा, संपा० **बीकानेरजैनलेखसंग्रह**, लेखांक ६३२.
७.	१४६७	वैशाख सुदि ७	चिन्तामणिपार्श्वनाथ जिनालय, बीकानेर	वही, लेखांक ६३४.
८.	१४६८	तिथिविहीन	वही	वही, लेखांक ६३५.
९.	१४६९	फाल्गुन सुदि ३	जगवल्लभ पार्श्वनाथ देरासर, नीशापोल, अहमदाबाद	आचार्य बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १२०१.
१०.	१४६९	तिथिविहीन	दादापार्श्वनाथ देरासर, नरसिंह जी की पोल, बड़ोदरा	वही, भाग २, लेखांक १२०.
११.	१४६.?	तिथिविहीन	माधवलालबाबू का देरासर, पालीताना	विजयधर्मसूरि, संपा०, **प्राचीनलेखसंग्रह**, लेखांक १०८.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देवसुन्दरसूरि के शिष्यों में ज्ञानसागरसूरि, कुलमण्डनसूरि, गुणरत्न, साधुरत्न, सोमसुन्दरसूरि, साधुराजगणि, क्षेमंकरसूरि आदि का नाम मिलता है।

ज्ञानसागरसूरि द्वारा रचित कई कृतियाँ मिलती[२१] है, जो इस प्रकार हैं :

१. **उत्तराध्ययनअवचूरि** वि०सं०१४४१ २. **आवश्यकसूत्र** पर **अवचूरि** वि०सं० १४४०
३. **ओघनिर्युक्ति** पर **अवचूरि** ४. **मुनिसुव्रतस्तवन**
५. **धनौधनवखंडपार्श्वनाथस्तवन** ६. **शास्वतचैत्यवन्दन** आदि

कुलमंडनसूरि द्वारा रचित कृतियाँ[२२] इस प्रकार हैं :

१. **विचारामृतसंग्रह** वि०सं० १४४३
२. **प्रवचनपाक्षिक रूप** अधिकार वाला **सिद्धान्तालापकोद्धार**
३. **प्रज्ञापना अवचूरि** ४. **प्रतिक्रमणसूत्रअवचूरि**
५. **कल्पसूत्रअवचूरि** ६. **कायस्थितिस्तोत्र** पर **अवचूरि**
७. **अष्टादशचक्रबन्धस्तवन** ८. **हारबंधस्तवन**
९. **काकबंधचौपाई** आदि

देवसुन्दरसूरि के तीसरे शिष्य गुणरत्न भी अपने समय के प्रसिद्ध रचनाकार थे। उनके द्वारा रचित कृतियाँ[२३अ] निम्नानुसार हैं :

१. **कल्पान्तर्वाच्य** वि०सं० १४५७
२. **सप्ततिका** पर देवेन्द्रसूरि की **टीका** के आधार पर **अवचूर्णि** वि०सं० १४५९
३. देवेन्द्रसूरिकृत **कर्मग्रन्थों** पर **अवचूरि**
४. **प्रकीर्णकों** पर **अवचूरि**
५. सोमतिलकसूरिविरचित **क्षेत्रसमास** पर **अवचूरि**
६. **नवतत्त्वअवचूरि**
७. **अंचलमतनिराकरण**
८. **ओघनिर्युक्तिउद्धार**
९. **क्रियारत्नसमुच्चय**
१०. **षट्दर्शनसमुच्चय** पर **तत्त्वरहस्यदीपिका** नामक टीका
११. **कल्याणमंदिरस्तोत्रटीका**
१२. **सप्ततिका अवचूरि** वि०सं० १४५९ के लगभग
१३. **आतुरप्रत्याख्यान अवचूरि**
१४. **चतुःशरणअवचूरि**
१५. **संस्तारक अवचूरि**
१६. **भक्तपरिज्ञा अवचूरि**
१७. **गुरुपर्वक्रमवर्णनम्** वि०सं० १४६६

वि०सं० १४६९ के दो प्रतिमालेखों में प्रतिमाप्रतिष्ठापक के रूप में भी इनका नाम मिलता है।[२३]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देवसुन्दरसूरि के चौथे शिष्य साधुरत्न ने वि०सं० १४५६ में **यतिजीतकल्प** पर **वृत्ति** की रचना की।[१४] इसी काल के आस-पास इनके द्वारा रचित **नवतत्त्वअवचूरि**[१५] नामक कृति भी प्राप्त होती है।

उन्हीं के ही पांचवें शिष्य सोमसुन्दरसूरि अपने समय के सर्वश्रेष्ठ रचनाकार थे। इनके सम्बन्ध में आगे विस्तार से विवरण दिया गया है।

छठें शिष्य साधुराजगणि द्वारा वि०सं० १४७० के लगभग **साधारणजिनस्तुति** की वृत्ति[१६] के साथ रचना की गयी। प्रो० हरि दामोदर वेलणकर ने उक्त वृत्ति के रचनाकार का नाम श्रुतसागर बताया है[१७], जो भ्रांति है।[१८]

सातवें शिष्य क्षेमंकर गणि द्वारा रचित **सिंहासनबत्तीसी**[१९] (रचनाकाल वि०सं० १४५० के आसपास) नामक कृति मिलती है।

उक्त विवरणों को एक तालिका के रूप में निम्न प्रकार से रखा जा सकता है...

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International

For Private & Personal Use Only

www.jainelibrary.org

देवसुन्दरसूरि के शिष्य परिवार की तालिका

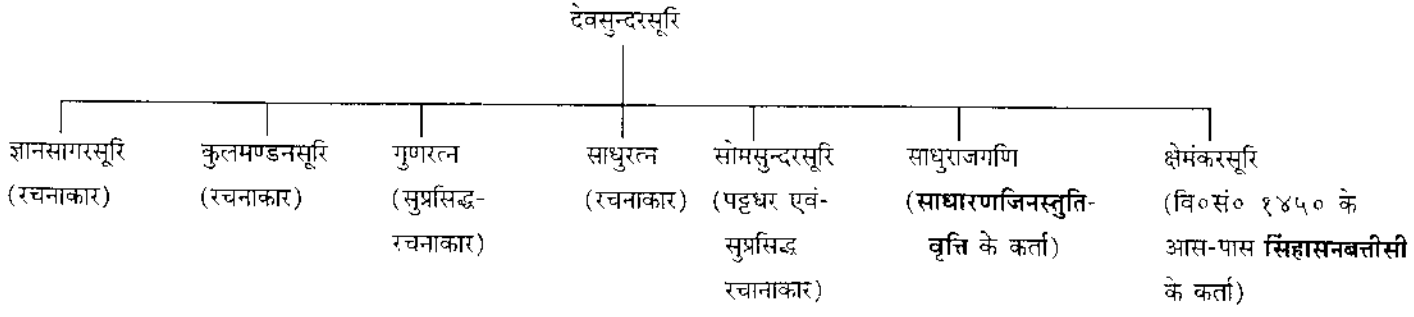

सोमसुन्दरसूरि - तपागच्छ के प्रमुख नायकों में सोमसुन्दरसूरि का विशिष्ट स्थान है। इनका जन्म वि०सं० १४३० में प्रल्हादनपुर (वर्तमान पालनपुर) में हुआ था। इनके पिता का नाम सज्जन और माता का नाम माल्हण देवी था। वि०सं० १४३७ में सात वर्ष की आयु में इन्होंने जयानन्दसूरि के पास दीक्षा ग्रहण की और सोमसुन्दर नाम प्राप्त किया। वि०सं० १४५० में पाटण में इन्हें वाचक पद प्राप्त हुआ और वि०सं० १४५३ में पाटण में ही देवसुन्दरसूरि द्वारा आचार्य पद प्राप्त हुआ। मुनिसुन्दरसूरि कृत गुर्वावली[१] (रचनाकाल वि०सं० १४६६), चारित्ररत्नगणिकृत **चित्रकूटमहावीरप्रासादप्रशस्ति**[२] (रचनाकाल वि०सं० १४९५), प्रतिष्ठासोमकृत **सोमसौभाग्यकाव्य**[३] (रचनाकाल वि०सं० १५२४), सोमचरित्रगणिकृत **गुरुगुणरत्नाकर**[४] (रचनाकाल वि०सं० १५४१) आदि ग्रन्थों से इनके जीवन के विषय में विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है।

आचार्य सोमसुन्दरसूरि द्वारा रचित कृतियाँ[५] इस प्रकार हैं :

१. **आराधनारास**
२. **उपदेशमालाबालावबोध** (रचनाकाल वि०सं० १४८५)
३. **षष्ठिशतकबालावबोध** (रचनाकाल वि०सं० १४९६)
४. **योगशास्त्रबालावबोध**
५. **भक्तामरस्तोत्रबालावबोध**
६. **आराधनापताकाबालावबोध**
७. **षड़ावश्यकबालावबोध**
८. **नवतत्त्वबालावबोध** (रचनाकाल वि०सं० १५०२)
९. **अष्टादशस्तवी** (रचनाकाल वि०सं० १४९० के आसपास)
१०. **आतुरप्रत्याख्यानटीका**
११. **आवश्यकनियुक्तिअवचूरि**
१२. **इलादुर्गऋषभजिनस्तवन**
१३. **चैत्रवन्दनसूत्रभाष्यटीका**
१४. **जिनकल्याणकादिस्तवन**
१५. **जिनभवस्तोत्र**
१६. **पार्श्वस्तोत्र**
१७. **श्राद्धजीतकल्पवृत्ति**
१८. **षट्भाषामयस्तव**
१९. **सप्ततिकासूत्रचूर्णि**
२०. **साधुसामाचारीकुलक**

सोमसुन्दरसूरि द्वारा वि०सं० १४७० से वि०सं० १४९९ के मध्य तक प्रतिष्ठापित बड़ी संख्या में सलेख जिनप्रतिमायें प्राप्त हुई हैं। इनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख क्रमांक	सम्वत्	तिथि/मिति/वार	लेख का स्वरूप	प्रतिष्ठास्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१-	१४७०	वैशाख सुदि २ शुक्रवार	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैन देरासर, त्रापज, काठियावाड़	विद्याविजयजी, संपा० **प्राचीन लेखसंग्रह,** लेखांक १०९
२-	१४७०	ज्येष्ठ सुदि ५	मुनिसुव्रत की पाषाण की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	मुनिसुव्रत जिनालय, मालपुरा	विनयसागर, संपा०, **प्रतिष्ठालेखसंग्रह** लेखांक २०२
३-	१४७१	माघ सुदि ७	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्किर्ण लेख	सुमतिनाथ मुख्यबावन जिनालय, मातर	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह** भाग २, लेखांक ५००.
४-	१४७२	तिथिविहीन	सुमतिनाथ की प्रतिमा पर उत्किर्ण लेख	श्रेयांसनाथ जिनालय, फताशाह की पोल, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक १३६०.
५-	१४७३	वैशाख वदि ८	पार्श्वनाथ की पंचयतीर्थी प्रतिमा पर उत्किर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, सिरोही	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक २०९.
६-	१४७३	मार्गशीर्ष सुदि ६ शुक्रवार	मुनिसुव्रत की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अनुपूर्ति लेख, आबू	**अर्बुदप्राचीनजैनलेखसंदोह,** लेखांक ६११.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७-	१४७४	ज्येष्ठ वदि ११ रविवार	विमलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	कुन्थुनाथ जिनालय, मांडवीपोल, खंभात	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक ६४४
८-	१४७४	मार्गशीर्ष सुदि ८ सोमवार	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि जी का मंदिर बीकानेर संपा०,	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह**, लेखांक ६७३.
९-	१४७४	फाल्गुन सुदि ८	मुनिसुव्रत की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, लेखांक ६७४.
१०-	१४७४	फाल्गुन	सुपार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	नेमिनाथ जिनालय, वीसनगर	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १ लेखांक ५२१.
११-	१४७५	ज्येष्ठ वदि ११ रविवार	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	खरतगच्छीय बड़ा मंदिर, तूलपट्टी, कलकत्ता	मुनि कांतिसागर, संपा०, **जैनधातुप्रतिमालेख,** लेखांक ७३
१२-	१४७५	ज्येष्ठ वदि ११ रविवार	पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जीवनदास जी का घर देरासर, हरीसन रोड, कलकत्ता	पूरनचन्द नाहर, संपा०, **जैनलेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक १३१
१३-	१४७६	वैशाख वदि १ शनिवार	चन्द्रप्रभ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि जी का मंदिर, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह**, लेखांक ६८०
१४.	१४७७	चैत्र सुदि ५ सोमवार	आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि जी का मंदिर, बीकानेर	वही, लेखांक ६८६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१५.	१४७७ मार्गशीर्ष वदि ३	मुनिसुव्रत की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, लेखांक ६८८
१६.	१४७७ मार्गशीर्ष वदि ४	सुपार्श्वनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अनुपूर्ति लेख, आबू	**अर्बुदप्राचीनजैनलेखसंदोह,** लेखांक ६१५
१७.	१४७८ माघ सुदि ९	सुपार्श्वनाथ की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, लेखांक ६१७
१८.	१४७९ माघ वदि ४	अभिनन्दनस्वामी की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	कुन्थुनाथ देरासर, वडनगर	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह** भाग १, लेखांक ७५२
१९.	१४७९ माघ सुदि ७ शुक्रवार	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	संभवनाथ देरासर, मीयागाम	वही, भाग २, लेखांक २८६
२०.	१४८० ज्येष्ठ सुदि ५	चन्द्रप्रभ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	नेमिनाथ जिनालय, मेहता जी की पोल, बड़ोदरा	वही, भाग २, लेखांक १७९
२१.	१४८० तिथि-वार विहीन	कुन्थुनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि जी का मन्दिर, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक ७०२
२२.	१४८० "	मुनिसुव्रत की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, लेखांक ७०६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२३.	१४८१	माघ सुदि १०	श्रेयांसनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, ईडर	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह** भाग १, लेखांक १४८२
२४.	१४८१	"	पद्मप्रभ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	गौडी पार्श्वनाथ जिनालय, अजमेर	**जैनलेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ५४६
२५.	१४८१	"	सुविधिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, वीरमगाम	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक १२५
२६.	१४८१	फाल्गुन सुदि ३	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैन देरासर, सौदागर पोल, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ७८९
२७.	१४८१	तिथि/मिति/वारविहीन	आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अनुपूर्ति लेख, आबू	**अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेख-संदोह**, लेखांक ६१९
२८.	१४८२	फाल्गुन सुदि २	मुनिसुव्रत की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, दादावाडी, लश्कर, ग्वालियर	**जैनलेखसंग्रह** भाग २, लेखांक १४२१
२९.	१४८२	फाल्गुन सुदि ३ शनिवार	महावीर की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणिजी का मन्दिर, ग्वालियर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह** लेखांक ७२०
३०.	१४८२.	फाल्गुन सुदि १५	सुमतिनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	माणिक सागर जी का मन्दिर, कोटा	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह** लेखांक २३७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३१.	१४८२	तिथि/मिति/वारविहीन	विमलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	श्रेयांसनाथ जिनालय, फताशाह की पोल, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक १३७६
३२.	१४८३	मार्गशीर्ष वदि ७	पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पद्मप्रभ जिनालय, पन्नीबाई का उपाश्रय, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक १८७२
३३.	१४८३	माघ सुदि १० बुधवार	चन्द्रप्रभ की धातु-प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चौमुख जी देरासर, ईडर	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक १४२६
३४.	१४८३	तिथि/ मिति/वारविहीन	वासुपूज्य की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, देशनोक	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक २२३५
३५.	१४८४	वैशाख सुदि ३	पद्मप्रभ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, शांतिनाथ पोल, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक १२९८
३६.	१४८४	”	विमलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चौमुखजी देरासर, वडनगर	वही, भाग १, लेखांक ५६४
३७.	१४८४	”	धर्मनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	कल्याण पार्श्वनाथ देरासर, वीसनगर	वही, भाग १, लेखांक ५३३
३८.	१४८४	मितिविहीन	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वीरचैत्य के अन्तर्गत आदिनाथ चैत्य, थराद	दौलतसिंह लोढ़ा, संपा०, **श्रीजैनप्रतिमालेखसंग्रह,** लेखांक १६९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३९.	१४८४	”	शिलालेख	बावन जिनालय, उदयपुर	**जैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक १९८०
४०.	१४८५	वैशाख सुदि ३ बुधवार	सुविधिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, नाडोल	वही, भाग १, लेखांक ८३६
४१.	१४८५	”	भूगर्भगृह में संरक्षित नंदीश्वर पट्ट पर उत्कीर्ण लेख	बावन जिनालय, उदयपुर	वही, भाग २, लेखांक १९७२ एवं **प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ५३३
४२.	१४८५	वैशाख सुदि ३ बुधवार	सुविधिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पद्मप्रभ जिनालय, नाडोल	मुनि जिनविजय, संपा०, **प्राचीनजैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ३६८
४३.	१४८५	ज्येष्ठ सुदि १३	मुनिसुव्रत की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, सांडेसर	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ४७७
४४.	१४८५	”	”	पार्श्वनाथ जिनालय, करेडा	**प्राचीनलेखसंग्रह,** लेखांक १३४
४५.	१४८५	माघ सुदि १० शनिवार	”	विमलनाथ जिनालय, संघवीपाडा, खंभात	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ७८६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४६.	१४८५	तिथिविहीन	सुपार्श्वनाथ की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, दिलवाडा	**जैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक २०१७
४७.	१४८५	"	शीतलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वीर जिनालय, रीजरोड, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ९८२
४८.	१४८५	"	सुपार्श्वनाथ की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	विमलवसही, आबू	**अर्बुदप्राचीनजैनलेखसंदोह,** लेखांक १६
४९.	१४८५	तिथिविहीन	विमलनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	कुंथुनाथ जिनालय, रांगडीचौक, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक १६९६
५०.	१४८६	वैशाख सुदि १०	कुंथुनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिंतामणि जी का मंदिर, बीकानेर	वही, लेखांक ७३०
५१.	१४८६	" बुधवार	विमलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, छाणी, बड़ोदरा	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक २६३
५२.	१४८६	"	मुनिसुव्रत की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, सुल्तानपुरा, बड़ोदरा	वही, भाग २, लेखांक १९२
५३.	१४८६	माघ सुदि ४ शनिवार	वर्धमान स्वामी की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैन मंदिर, ऊंझा	वही, भाग १, लेखांक २०२
५४.	१४८६	तिथिविहीन	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, भाग १, लेखांक १५०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

५५.	१४८६	"	संभवनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, चौकसी पोल, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ८४८
५६.	१४८७	मार्गशीर्ष सुदि ५	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वीर जिनालय, झवेरीवाड़, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ८४८
५७.	१४८७	मार्गशीर्ष सुदि ...?	सुपार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	मनमोहन पार्श्वनाथ जिनालय, पटोलिआ पोल, बडोदरा	वही, भाग २, लेखांक ८८
५८.	१४८७	पौष सुदि ५	अजीतनाथ की पाषाण की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	मुनिसुव्रत जिनालय, मालपुरा	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक २६८
५९.	१४८७	माघ सुदि ७	सुपार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चौमुखजी का देरासर, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक १४४
६०.	१४८७	माघ .....?	श्रेयांसनाथ की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, साहूकार पेठ, मद्रास	**जैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक २०७५
६१.	१४८८	वैशाख सुदि ६	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, कनासानो पाडो, पाटण	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ३१३
६२.	१४८८	वैशाख सुदि ७ शनिवार	मल्लिनाथ की प्रतिमा पंचतीर्थी पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, गागरडू	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक २७०

६३.	१४८८	वैशाख ....?	मल्लिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	मनमोहन पार्श्वनाथ जिनालय, पटोलिया पोल, बडोदरा	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ८६
६४.	१४८८	ज्येष्ठ वदि ४ शनिवार	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, माणेकचौक, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ९९३
६५.	१४८८	ज्येष्ठ सुदि ५ रविवार	आदिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	संभवनाथ जिनालय, मीयागाम	वही, भाग २, लेखांक २८५
६६.	१४८८	"	शीतलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	मुनिसुव्रत जिनालय, भरुच	वही, भाग २, लेखांक ३२८
६७.	१४८८	कार्तिक सुदि २ सोमवार	अजितनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	महावीर जिनालय, रीजरोड, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक ९५२
६८.	१४८८	मार्गशीर्ष वदि २	सुविधिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, वासा	मुनि जयन्त विजय जी, संपा० **अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेख-संदोह**, लेखांक ५२१
६९.	१४८८	मार्गशीर्ष वदि ५ गुरुवार	पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैन मंदिर, भीलड़िया तीर्थ	**श्रीप्रतिमालेखसंग्रह,** लेखांक ३७३
७०.	१४८८	फाल्गुन सुदी ८	जिनालय के द्वार पर उत्कीर्ण लेख	बावन जिनालय, उदयपुर	**जैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक १९८३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७१.	१४८८	"	शांतिनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, माणेक चौक, खंभात	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक १०२०
७२.	१४८८	तिथि/मिति/वारविहीन	पार्श्वनाथ की पाषाण की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	मुनिसुव्रत जिनालय, मालपुरा	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक २७३
७३.	१४८९	ज्येष्ठ वदि १० शुक्रवार	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अजितनाथ देरासर, सुतार की खड़की, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक १३३७
७४.	१४८९	ज्येष्ठ वदि ११	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शीतलनाथ जिनालय, उदयपुर	**प्राचीनलेखसंग्रह,** लेखांक १४७ एवं **जैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक १०२९
७५.	१४८९	आषाढ़ वदि १०	अजितनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, हद्राणा	**अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेख-संदोह**, लेखांक १९१
७६.	१४८९	आषाढ़ सुदि ५	शांतिनाथ की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अजितनाथ जिनालय, तारंगा	**जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक १७३१
७७.	१४८९	आषाढ़ सुदि ८	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अजितनाथ जिनालय, वेजलपुरा, भरुच	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ३६१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७८.	१४८९	तिथिविहीन	कुन्थुनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शीतलनाथ जिनालय, उदयपुर	**जैनलेखसंग्रह**, भाग २. लेखांक १०६७. एवं **प्राचीनलेखसंग्रह**, लेखांक १४८
७९.	१४८९	”	महावीर की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	दादा पार्श्वनाथ देरासर, नरसिंहजी की पोल, बड़ोदरा	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक १३५.
८०.	१४९०	वैशाख वदि ७	विमलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सुविधिनाथ जिनालय, शेरडीवाला की पोल, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ६५३.
८१.	१४९०	वैशाख सुदि ३	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, राधनपुर	**प्राचीनलेखसंग्रह,** लेखांक १४९
८२.	१४९०	मार्गशीर्ष वदि ५ सोमवार	चन्द्रप्रभ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	संभवनाथ देरासर, पादरा	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक १२.
८३.	१४९०	फाल्गुन सुदि ११	वर्धमानस्वामी की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ देरासर, देवसानो पाडो, अहमदाबाद	वही, भाग १. लेखांक १०५५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८४.	१४९१	वैशाख सुदि ६ गुरुवार	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शीतलनाथ जिनालय, उदयपुर	**प्राचीनलेखसंग्रह,** लेखांक १५५.
८५.	१४९१	वैशाख सुदि ६ गुरुवार	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	**जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक १०७४.
८६.	१४९१	आषाढ़ वदि ७	सुपार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सुमतिनाथ जिनालय, जयपुर	वही, भाग २, लेखांक ११८१ एवं **प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक २८३.
८७.	१४९१	आषाढ़ सुदि २	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक २५२.
८८.	१४९१	”	पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, लेखांक २५३.
८९.	१४९१	”	मुनिसुव्रत की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, लेखांक २५४.
९०.	१४९१	आषाढ़...१३...?	अभिनन्दनस्वामी की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चौमुख जी देरासर, ईडर	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक १४१९.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९१.	१४९१	माघ सुदि ५	पद्मप्रभ की पाषाण की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	मुनिसुव्रत जिनालय, मालपुरा	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक २८४.
९२.	१४९१	फाल्गुन वदि ५	मुनिसुव्रत की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, चौकसीपोल, खंभात	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ८१३.
९३.	१४९२	वैशाख सुदि २	वर्धमानस्वामी की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वीरजिनालय, रीजरोड, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक ९६४.
९४.	१४९२	ज्येष्ठ वदि ११	नमिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शीतलनाथ जिनालय, उदयपुर	**प्राचीनलेखसंग्रह,** लेखांक १५९ एवं **जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक १०७६.
९५.	१४९२	आषाढ़ सुदि ११	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वीर जिनालय, बैदों का चौक, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक १२१८.
९६.	१४९३	वैशाख सुदि ३	सुमतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	महावीर स्वामी का मंदिर, बीकानेर	वही, लेखांक १२१६.
९७.	१४९३	ज्येष्ठ वदि १२ रविवार	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अनन्तनाथ जिनालय, काथाबाजार	**जैनधातुप्रतिमालेख,** लेखांक ६९.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९८.	१४९३	तिथिविहीन	कुन्थुनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, खेरालु	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ७४९.
९९.	१४९३(?)	तिथि नष्ट	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	महावीर स्वामी का मंदिर, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक १३२५.
१००.	१४९३	तिथिविहीन	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, धराद	**श्रीजैनप्रतिमालेखसंग्रह,** लेखांक १६३.
१०१.	१४९४	माघ सुदि ५	आदिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अजितनाथ जिनालय, सिरोही	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ३०२.
१०२.	१४९४	तिथिविहीन	महावीर स्वामी की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, मेड़ता रोड	वही. लेखांक ३०७.
१०३.	१४९४	फाल्गुन वदि ५	पाषाण की जिन पट्टिका पर उत्कीर्ण लेख	बावनजिनालय, उदयपुर	**जैनलेखसंगह**, भाग २, लेखांक १६९८.
१०४.	१४९४	तिथिविहीन	कुन्थुनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	कुन्थुनाथ जिनालय, वडनगर	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ५६१.
१०५.	१४९४	तिथिविहीन	भौयरे में रखी आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बावन जिनालय, उदयपुर	**जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक १९७१.
१०६.	१४९४	〃	श्रेयांसनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, पाटडी	**प्राचीनलेखसंग्रह,** लेखांक १६६.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०७. १४९४	''	आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, देलवाड़ा	**प्राचीनलेखसंग्रह,** लेखांक १६७.
१०८. १४९४	''	शिलालेख	पित्तलहर, आबू	**अर्बुदप्राचीनजैनलेखसंदोह,** लेखांक ४३०.
१०९. १४९४	''	सुमतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक ७७२.
११०. १४९५	''	वर्धमान स्वामी की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, लेखांक ७७३.
१११. १४९५.	ज्येष्ठ वदि ६	मुनिसुव्रत की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, ग्राम चवेली	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ८३.
११२. १४९५	ज्येष्ठ सुदि १४	आदिनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, नाहटों की गवाड़, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक १४०२.
११३. १४९५	ज्येष्ठ सुदि १३	संभवनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	उपकेशगच्छीय शांतिनाथ जिनालय, मेड़ता सिटी	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ३१०.
११४. १४९५	ज्येष्ठ सुदि १४	संभवनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक ७८३.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११५. १४९५	तिथिनष्ट	विमलनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही,	वही, लेखांक ७८५.
११६. १४९६	वैशाख सुदि १३	चन्द्रप्रभ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथदेरासर, उपलो गभारो, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ११३२.
११७. १४९६	माघ सुदि ५	महावीर की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, खेरालु	वही, भाग १, लेखांक ७६२
११८. १४९६	तिथिविहीन	सुविधिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वीरजिनालय, रीजरोड, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक ९६७.
११९. १४९६	,,	अनन्तनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक ७८६.
१२०. १४९६	,,	प्रशस्ति लेख	त्रैलोक्यदीपक प्रासाद, राणकपुर	**प्राचीनजैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ३०७. एवं **जैनलेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ७००.
१२१. १४९६	,,	संभवनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, रतलाम	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ३१६.
१२२. १४९६	,,	महावीर की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अनुपूर्तिलेख, आबू	**अर्बुदप्राचीनजैनलेखसंदोह,** लेखांक ६२९.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१२३.	१४९७	चैत्र सुदि.....?	मुनिसुव्रत की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पंचायतीमंदिर, जयपुर	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ३१७.
१२४.	१४९७	माघ सुदि ४ सोमवार	मूलनायक आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	केशरियानाथ मंदिर, भैंसरोडगढ़	वही, लेखांक ३२३.
१२५.	१४९७	माघ सुदि १३	सुविधिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वीरजिनालय, रीजरोड, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक १७०.
१२६.	१४९७	तिथिविहीन	अजितनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अजितनाथ जिनालय, सिरोही	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ३२४.
१२७.	१४९८	,,	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चौमुखजी देरासर, झवेरीवाड़, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ८९४.
१२८.	१४९९	मार्गशीर्ष सुदि २	अनन्तनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अनुपूर्तिलेख, आबू	**अर्बुदप्राचीनजैनलेखसंदोह,** लेखांक ६३०.
१२९.	१४९९	माघ सुदि ५	संभवनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	गौडीपार्श्वनाथ जिनालय, अजमेर	**जैनलेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ५५३.
१३०.	१४९९	,,	,,	संभवनाथ जिनालय, अजमेर	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ३२९.
१३१.	१४९९	माघ सुदि ६ सोमवार	कुन्थुनाथ की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, ऊंझा	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक १६५.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोमसुन्दरसूरि के विशाल शिष्य परिवार में कई प्रसिद्ध विद्वान् और प्रभावक आचार्य हुए हैं। इनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :

१. **मुनिसुन्दरसूरि** - सोमसुन्दरसूरि के प्रथम शिष्य और पट्टधर मुनिचन्द्रसूरि अपने युग के प्रख्यात् आचार्यों में एक थे। वि०सं० १४२६ अथवा वि०सं० १४३६ में इनका जन्म हुआ। वि०सं० १४४३ में इन्होंने दीक्षा ग्रहण की, वि०सं० १४६६ में इन्हें वाचक पद प्राप्त हुआ। वि०सं० १४७८ में सोमसुन्दरसूरि ने इन्हें सूरि पद प्रदान किया और वि०सं० १५०३ में इनकी मृत्यु हुई।[३५] इनके सम्बन्ध में आगे विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

२. **भावसुन्दर** - इन्होंने उज्जैन में **'पानविहारमंडन महावीरस्तवन'**[३६] की रचना की। इनके बारे में विस्तृत विवरण उपलब्ध नहीं है।

३. **भुवनसुन्दरसूरि** - इनके द्वारा रचित कृतियाँ[३७] इस प्रकार हैं --

१. **परब्रह्मोत्थापन स्थलवाद**
२. **महाविद्याविडंबनवृत्ति**
३. **महाविद्याविडंबनटिप्पणविवरण**
४. **लघुमहाविद्याविडंबन**
५. **व्याख्यान**

४. **जयचन्द्रसूरि** - इनके द्वारा रचित **प्रत्याख्यानस्थानविवरण**, **सम्यकत्त्वकौमुदी** और **प्रतिक्रमणविधि** नामक कृतियां[३८] प्राप्त हुई हैं। इनके द्वारा प्रतिष्ठापित जिनप्रतिमायें भी पर्याप्त संख्या में प्राप्त हुई हैं जो वि०सं० १४९६ से वि० सं० १५०६ तक की हैं। इनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है--

वि०सं० १४९६	१	प्रतिमालेख
वि०सं० १५००	१	प्रतिमालेख
वि०सं० १५०२	५	प्रतिमालेख
वि०सं० १५०३	१७	प्रतिमालेख
वि०सं० १५०४	९	प्रतिमालेख
वि०सं० १५०५	१७	प्रतिमालेख
वि०सं० १५०६	१	प्रतिमालेख

जयचन्द्रसूरि के शिष्य जिनहर्षगणि हुए जिनके द्वारा रचित **वस्तुपालचरित** (वि०सं० १४९७), **रमणसेहरीकहा**, **विंशतिस्थानप्रकरण** (**विचारामृतसंग्रह**), **प्रतिक्रमणविधि** (वि०सं० १५२५), **आरामशोभाचरित्र**, **अनर्घराघववृत्ति**, अष्टभाषामय **सीमंधरजिनस्तवन** आदि कृतियां मिलती हैं।[३९]

जिनहर्षगणि की शिष्यसंतति में साधुविजय, शुभवर्धन आदि मुनि हुए।

दीपमालिकाकल्प[४०] (रचनाकाल वि०सं० १४८३) के रचनाकार जिनसुन्दरसूरि भी सोमसुन्दरसूरि के ही शिष्य थे।

सोमसुन्दरसूरि के एक शिष्य अमरसुन्दर हुए, जिनके द्वारा रचित कोई कृति नहीं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मिलती किन्तु अमरसुन्दर के शिष्य धीरसुन्दर ने वि०सं० १५०० के लगभग **आवश्यकनिर्युक्ति** पर **अवचूरि**[४१] की रचना की।

सोमसुन्दरसूरि के एक अन्य शिष्य जिनकीर्तिसूरि हुए जिनके द्वारा रची गयी विभिन्न कृतियाँ[४२] मिलती हैं जो इस प्रकार हैं --

१. **नमस्कारस्तवन** पर **स्वोपज्ञवृत्ति** (रचनाकाल-वि०सं० १४९४)
२. **उत्तमकुमारचरित्र**
३. **शीलगोपालकथा**
४. **चम्पकश्रेष्ठिकथा**
५. **पंचजिनस्तवन**
६. **धन्यकुमारचरित्र** (रचनाकाल-वि०सं० १४९७)
७. **दानकल्पद्रुप**
८. **श्राद्धगुणसंग्रह**

तपागच्छ के ५२वें पट्टधर रत्नशेखरसूरि भी सोमसुन्दरसूरि के ही शिष्य थे।

सोमसुन्दरसूरि के अन्य शिष्यों में सोमदेवसूरि[४३], सुधानन्दनसूरि, जिनमंडनगणि, रत्नहंसगणि, साधुराजगणि, विवेकसमुद्र, प्रतिष्ठासोम आदि का नाम मिलता है।

सोमसुन्दरसूरि के शिष्य परिवार को एक तालिका के रुप में निम्न प्रकार से रखा जा सकता है ...

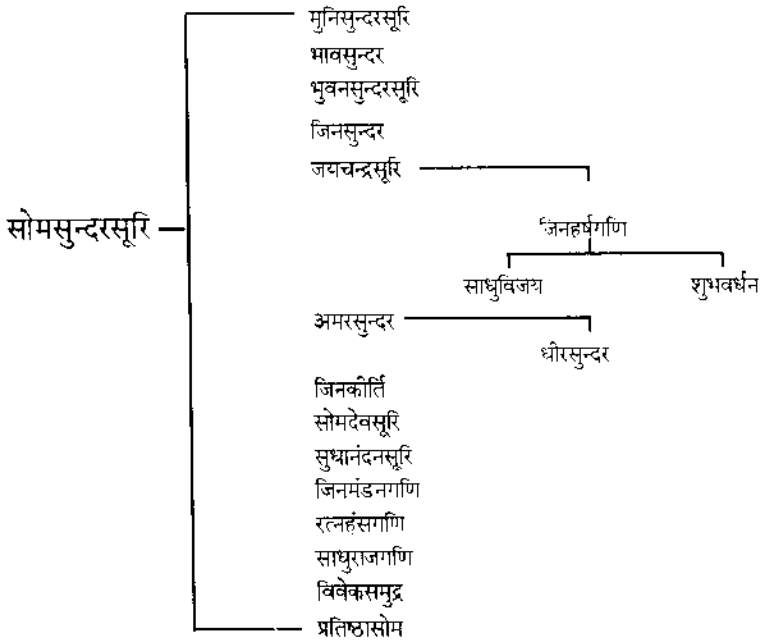

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुनिसुन्दरसूरि-तपागच्छीय आचार्य सोमसुन्दरसूरि के प्रतिभासम्पन्न पट्टधर और शिष्य मुनिसुन्दरसूरि के प्रारम्भिक जीवन के बारे में कोई जानकारी नहीं मिलती। जैसा कि पूर्व में कहा जा चुका है पट्टावलियों के अनुसार वि०सं० १४२६ या १४३६ में इनका जन्म हुआ, वि०सं० १४४३ में इन्होंने दीक्षा ग्रहण की और वि०सं० १४६६ में वाचक पद प्राप्त किया। वि०सं० १४७८ में वड़नगर में इन्हें आचार्य पद प्राप्त हुआ और वि०सं० १५०३ में इनका निधन हुआ।[४४] इनके द्वारा रचित कृतियाँ[४५] इस प्रकार हैं :

१. **त्रैविद्यगोष्ठी** (वि०सं० १४५५/ई०स० १३९८-९९)
२. **अध्यात्मकल्पद्रुम** अपरनाम **शांतसुधारस** (वि०सं०१४५५/ई०स० १३९८-९९)
३. **त्रिदशतरंगिणी** (वि०सं० १४६६/ई०स० १४१०) यह **महाविज्ञप्तिपत्र** मुनिसुन्दरसूरि ने देवसुन्दरसूरि के पास भेजा था। १०८ हाथ लम्बे इस **विज्ञप्तिपत्र** का केवल **गुर्वावली** वालाअंश ही आज प्राप्त हो सका है।
४. **चतुर्विंशतिस्तोत्ररत्नकोश**
५. **जयानन्दचरित** (वि०सं० १४८३/ई०स० १४२७)
६. **मित्रचतुष्ककथा** (वि०सं० १४८४/ई०स० १४२८)
७. **उपदेशरत्नाकर** स्वोपज्ञवृत्ति के साथ (वि०सं० १४९३/ई०स० १४३७)
८. **संतिकरथोत्त** (**शांतिकरस्तोत्र**) (वि०सं० १४९३ अथवा १५०३)
९. **सीमंधरस्तुति**
१०. **पाक्षिकसत्तरी**
११. **योगशास्त्र** के **चतुर्थ प्रकाश** पर **बालावबोध**

इसके अलावा इनके द्वारा रचित कुछ स्तवन[४६] भी मिलते हैं जो इस प्रकार हैं:

१. **चतुर्विंशतिजिनकल्याणकस्तवन**
२. **जीरापल्लीपार्श्वनाथस्तवन** (रचनाकाल वि०सं० १४७३/ई०स०१४१७)
३. **शत्रुंजयश्रीआदिनाथस्तोत्र** (वि०सं० १४७६/ई०स० १४२०)
४. **गिरनारमौलिमण्डनश्रीनेमिनाथस्तवनम्** (वि०सं० १४७६/ई०स० १४२०)
५. **शत्रुंजयआदिनाथस्तवन** (वि०सं० १४७६/ई०स० १४२०)
६. **वृद्धनगरस्थ आदिनाथस्तवनम्**
७. **सारणदुर्ग अजितनाथस्तोत्रम्**
८. **इलादुर्गालंकारश्रीऋषभदेवस्तवनम्**
९. **सीमंधरस्वामिस्तवनम्** (वि०सं० १४८२/ई०स० १४२६)
१०. **वर्धमानजिनस्तवनम्**
११. **श्रीजिनपतिद्वात्रिंशिका** (वि०सं० १४८३/ई०स० १४२७)

शांतिनाथ जिनालय, जावर (उदयपुर) के वि०सं० १४७८ पौष सुदि ५ के प्रशस्तिलेख[४७] में सोमसुन्दरसूरि, जयचन्द्र, भुवनसुन्दर, जिनसुन्दर, जिनकीर्ति, विशालराज, रत्नशेखर, उदयनंदि, लक्ष्मीसागर, सत्यशेखरगणि, सुरसुन्दरगणि आदि मुनिजनों के साथ मुनिसुन्दरसूरि का भी नाम मिलता है। ठीक यही बात जीरावला स्थित विभिन्न जिनालयों के देवकुलिकाओं पर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उत्कीर्ण वि०सं० १४८३ वैशाख सुदि[४८] ७ और भाद्रपद वदि ७ के कई लेखों के बारे में कही जा सकती है। यहाँ भी सोमसुन्दरसूरि, जयचन्द्र, भुवनसुन्दर और जिनसुन्दर के साथ मुनिसुन्दरसूरि का उल्लेख है। यही बात उक्त तीर्थ पर निर्मित महावीर जिनालय के देहरी क्रमांक ७ पर उत्कीर्ण वि०सं० १४८७ पौष सुदि २ गुरुवार के शिलालेख[४९] में भी दिखाई देती है।

आचार्य मुनिसुन्दरसूरि द्वारा प्रतिष्ठापित कुछ जिनप्रतिमायें भी प्राप्त हुई हैं जो वि०सं० १४८९ से लेकर वि०सं० १५०१ तक की है। इनका विवरण निम्नानुसार है:

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख क्रमांक	सम्वत्	तिथि/मिति/वार	प्रतिमा लेख/शिलालेख	प्रतिष्ठास्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१.	१४८९	वैशाख सुदि ३		मनमोहनपार्श्वनाथ जिनालय, जीराखाडो, खंभात	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक ७५९.
२.	१४९७	वैशाख वदि ४	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ देरासर, लाडोल	वही, भाग १, लेखांक ४६५.
३.	१४९९	आश्विन सुदि १०	मुनिसुव्रत की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सुमतिनाथ मुख्य बावनजिनालय, मातर	वही, भाग २, लेखांक ४६४.
४.	१४९९	तिथिविहीन	महावीर की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ देरासर, देवसानो पाडो, अहमदाबाद	वही,भाग १,लेखांक १०७५.
५.	१५००	वैशाख सुदि५ गुरुवार	अनन्तनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, कनासानो पाडो, पाटण	वही, भाग १, लेखांक ३१४.
६.	१५००	"	चन्द्रप्रभ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	श्री स्वामीजी का मंदिर, गेशनमुहल्ला, आगरा	**जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक १४६१.
७.	१५००	तिथिविहीन	वर्धमान स्वामी की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, शेखनो पाडो, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक १०४२.
८.	१५०१	वैशाख वदि५ सोमवार	कुन्थुनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, देशनोक	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह**, लेखांक २२३६.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९.	१५०१	वैशाख सुदि २ शनिवार	आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बालावसही, शत्रुंजय	**शत्रुंजयवैभव**, लेखांक ९०.
१०.	१५०१	”	शीतलनाथ की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	भीड़भंजनपार्श्वनाथ जिनालय, खेड़ा	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ४५०.
११.	१५०१	वैशाख सुदि ३	संभवनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, पूना	**प्राचीनलेखसंग्रह,** लेखांक १८६.
१२.	१५०१	ज्येष्ठ वदि ९ रविवार	वासुपूज्य की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	गौड़ीजी भंडार, उदयपुर	वही, लेखांक १९०.
१३.	१५०१	ज्येष्ठ सुदि १०	अभिनंदन स्वामी की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, इतवारीबाजार, नागपुर	**जैनधातुप्रतिमालेख,** लेखांक ९६.
१४.	१५०१	”	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	घर देरासर, ऊंझा	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक २१०.
१५.	१५०१	”	सुमतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	त्रैलोक्यदीपक प्रासाद, राणकपुर	**जैनलेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ७०४.
१६.	१५०१	ज्येष्ठ सुदि...?	अभिनन्दनस्वामी की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, वासा	**अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेख-संदोह,** लेखांक ५३३.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१७.	१५०१	आषाढ़ सुदि २	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	संभवनाथ देरासर, झवेरीवाड़, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ८१७.
१८.	१५०१	,,	,,	चंद्रप्रभ जिनालय, सेंडहर्स्ट रोड, मुम्बई	**जैनधातुप्रतिमालेख,** लेखांक ९४.
१९.	१५०१	मार्गशीर्ष सुदि १०	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सुपार्श्वनाथ जिनालय, जैसलमेर	**जैनलेखसंग्रह**, भाग ३, लेखांक २१८२.
२०.	१५०१	माघ वदि ५ गुरुवार	सुमतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	गौड़ीपार्श्वनाथ जिनालय, उदयपुर	वही, भाग २, लेखांक ११२६. एवं **प्राचीनलेखसंग्रह,** लेखांक १८०
२१.	१५०१	माघ वदि ६	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिंतामणिजी का मंदिर, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक ८४९.
२२.	१५०१	,,	विमलनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही.	वही, लेखांक ८५०.
२३.	१५०१	माघ वदि ६	मुनिसुव्रत की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही.	वही, लेखांक ८५२.
२४.	१५०१	फाल्गुन वदि ३	सुमतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बालावसही, शत्रुंजय	**शत्रुंजयवैभव**, लेखांक ९२.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२५.	१५०१	फाल्गुन वदि ५	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, नौहर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक २४७६.
२६.	१५०१	तिथिविहीन	नमिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	वही, लेखांक ८३७.
२७.	१५०१	,,	मुनिसुव्रत की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही.	वही, लेखांक ८३८.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शिष्यपरिवार-सोमसुन्दरसूरि के शिष्य रत्नशेखरसूरि और जयचन्द्रसूरि जिनका पूर्व में परिचय दिया जा चुका है, मुनिसुन्दरसूरि के आज्ञानुवर्ती थे। मुनिसुन्दरसूरि के निधन के पश्चात् रत्नशेखरसूरि उनके पट्टधर बने।

मुनिसुन्दरसूरि के एक शिष्य संघविमल हुए, जिन्होंने वि०सं० १५०२/ई०स० १४४५ में **सुदर्शनश्रेष्ठीरास**[११] की रचना की।

उनके दूसरे शिष्य हर्षसेन द्वारा रचित कोई कृति नहीं मिलती किन्तु हर्षसेन के शिष्य हर्षभूषण द्वारा रचित **श्राद्धविधिविनिश्चय** (रचनाकाल वि०सं० १४८०/ई०स० १४२४), **अंचलमतदलन, पर्युषणाविचार** (रचनाकाल वि०सं० १४८६/ई०स० १४२९) तथा **वाक्यप्रकाशऔक्तिकटीका** नामक कृति प्राप्त होती है।[१२]

मुनिसुन्दरसूरि के तीसरे शिष्य विशालराज द्वारा रचित कोई कृति नहीं मिलती, किन्तु इनके शिष्यों-प्रशिष्यों का विभिन्न रचनाओं के कर्ता एवं प्रतिलिपिकार के रूप में नाम मिलता है।[१३] इनका संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है :

१. **विवेकसागर**-इनके द्वारा रचित **हरिशब्दगर्भित वीतरागस्तवन** नामक कृति प्राप्त होती है।

२. **मेरुरत्नगणि**-इनके शिष्य संयममूर्ति का प्रतिलिपिकार के रूप में उल्लेख मिलता है।

३. **कुशलचारित्र**-इनके शिष्य रंगचारित्र द्वारा वि०सं० १५२९ में प्रतिलिपि की गयी **क्रियाकलाप** की प्रति प्राप्त हुई है।

४. **सुधाभूषण** इनके एक शिष्य जिनसूरि द्वारा रचित **गौतमपृच्छाबालावबोध** (रचनाकाल वि०सं० १५०५ के आसपास), **प्रियंकरनृपकथा, रूपसेनचरित्र** आदि कृतियाँ प्राप्त होती हैं।

सुधाभूषण के दूसरे शिष्य कमलभूषण द्वारा रचित कोई कृति नहीं मिलती किन्तु इनके शिष्य विशालसौभाग्यगणि द्वारा वि०सं० १५९५ में लिखी गयी **कल्पसूत्र** की प्रति सिनोर के जैनज्ञान भंडार में संरक्षित है।[१४]

मुनिसुन्दरसूरि के चौथे शिष्य शिवसमुद्रगणि हुए। इनके द्वारा रचित कोई कृति नहीं मिलती और न ही इस सम्बन्ध में कोई उल्लेख ही प्राप्त होता है किन्तु इनके शिष्य हेमविमलगणि द्वारा वि०सं० १५१७ में लिखित **नेमिनाथचरित्र** की एक प्रति पाटण के ग्रन्थभंडार से प्राप्त हुई है ऐसा मुनि चतुरविजयजी ने उल्लेख किया है।[१५]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संदर्भ

१. मुनिसुन्दरसूरिकृत **गुर्वावली** (रचनाकाल वि०सं० १४६६/ई०स० १४१०) श्लोक ८०-९६. यशोविजय जैनग्रन्थमाला, ग्रन्थांक ४, वाराणसी वीरसम्वत् २४३७, पृष्ठ ८-१०.

मुनि प्रतिष्ठासोम, **सोमसौभाग्यपट्टावली** (रचनाकाल वि०सं० १५२४/ई०स० १४६८) मुनिदर्शनविजय, संपा०-**पट्टावलीसमुच्चय**, प्रथम भाग, श्रीचारित्र स्मारक ग्रन्थमाला, ग्रन्थांक २२, वीरमगाम १९३३ ई०, पृष्ठ ३५-४०.

धर्मसागर उपाध्याय, "श्रीतपागच्छपट्टावली - स्वोपज्ञ वृत्ति सहित" (रचनाकाल वि०सं० १६४६/ई०स० १५९०)

पट्टावलीसमुच्चय, प्रथम भाग, पृष्ठ ५७. कल्याण विजयगणि, संपा०-**पट्टावलीपरागसंग्रह**, जालोर १९६६ ई० स०, पृष्ठ १४५-४६.

मुनि जिनविजय जी द्वारा संपादित **विविधगच्छीयपट्टावलीसंग्रह**- (सिंघी जैन ग्रन्थमाला, ग्रन्थांक ५३, मुम्बई १९६१ ई०) में भी तपागच्छ और उसकी कुछ शाखाओं की पट्टावलियां प्रकाशित हैं।

२. तपागच्छ पट्टावली, वृद्धपौशालिक पट्टावली, लघुपौशालिक अपरनाम हर्षकुलशाखा या सोमशाखा की पट्टावली, विजयानंदसूरिशाखा अपरनाम आनंदसूरिशाखा की पट्टावली, तपागच्छ विमलशाखा की पट्टावली, तपागच्छ सागरशाखा की पट्टावली, तपागच्छ-रत्नशाखा अपरनाम राजविजयशाखा की पट्टावली, कमलकलशशाखा की पट्टावली, कुतुबपुराशाखा की पट्टावली, तपागच्छ-विमलसंविग्न, सागरसंविग्न और विजयसंविग्न शाखा की पट्टावलियां।

उक्त सभी पट्टावलियों के लिये द्रष्टव्य-

मोहनलाल दलीचन्द देसाई, **जैनगुर्जरकविओ**, द्वितीय संशोधित संस्करण, भाग ९, संपा०-जयन्त कोठारी, मुम्बई १९९७ ई०, पृष्ठ ४४-११४.

३. क्रमात् प्राप्त तपाचार्येत्यभिख्या भिक्षुनायकाः।
समभूवन् कुले चान्द्रे, श्रीजगच्चन्द्रसूरयः॥
जगज्जनितबोधानां, तेषां शुद्धचरित्रिणाम्।
विनेयाः समजायन्त, श्रीमद्देवेन्द्रसूरयः॥
स्वान्ययोरुपकाराय, श्रीमद्देवेन्द्रसूरिणा।
स्वोपज्ञशतकटीका, सुबोधेयं विनिर्ममे॥
विबुधवरधर्मकीर्ति-श्रीविद्यानन्दसूरिमुख्यबुधैः।
स्वपरसमयैककुशलैस्तदैव संशोधिता चेयम्॥
यद् गदितमल्पमतिना, सिद्धान्तविरुद्धमिह किमपि शास्त्रे।
विद्वद्भिस्तत्त्वज्ञैः, प्रसादमाधाय तच्छोध्यम् ॥
स्वोपज्ञशकटीकां कृत्वेमां यन्मयाऽर्जितं सुकृतम्।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ध्रुवबन्धादिविमुक्तः, समस्तु सर्वोऽपि तेन जनः॥

देवेन्द्रसूरिकृत नव्यपंचकर्मग्रन्थ की प्रशस्ति- संपा०-विजयानंदसूरि के शिष्य कांतिविजय के शिष्य प्रवर्तक चतुरविजय, श्रीआत्मानन्द जैन रत्नग्रन्थमाला, ग्रन्थांक ८९, भावनगर वि०सं० १९९६/ई०सन् १९४०, पृ० १३७।

३ अ. **चि**त्तावालगच्छिक्कमंडणं जयइ **भु**वणचंदगुरू ।
तस्स विणेओ जाओ गुणभवणं **दे**वभद्दमुणी ॥
तप्पयभत्ता **ज**गचंदसूरिणो तेसिं दुन्नि वरसीसा ।
सिरि**दे**विंदमुणीदो तहा **वि**जयचंदसूरिवगे ॥४०५०॥
इय **सुदरिसणाइ कहा** नाण-तवच्चरणकारणं परमं ।
मूलकहाउ फुडत्थाभिहिया **देविंदसूरीहिं** ॥४०५१॥
परमत्था बहुरयणा दोगच्चहरा सुवन्नलंकारा ।
सुनिहि व्व कहा एसा नंदउ विबुहस्सिया सुइरं ॥४०५२॥

सुदर्शनाचरित्र की प्रशस्ति

C.D. Dalal, Ed. *A Descriptive Catalogue of Manuscripts in the Jaina Bhandras at Pattan*, Vol. I, G.O.S. No. LXXVI, Baroda 1937 A.D. P.208-209.

धर्मरत्नवृत्ति की प्रशस्ति

Muni Punya Vijaya: *Catalogue of Palm Leaf Mss in the Shanti Natha Jaina Bhandar, Cambay*, Vol.II. G.O.S. No. 149, Baroda 1966 A.D. Pp. 271-273.

३ ब. श्रीजैनशासन-नभस्तल-तिग्मरश्मिः श्रीसद्म चांद्रकुल-पद्मविकाशकारी।
स्वज्योतिरावृतदिगंबरडंबरोऽभूत् श्रीमान् धनेश्वरगुरुः प्रथितः पृथिव्यां॥७॥
श्रीमच्चैत्रपुरैकमंडनमहावीर प्रतिष्ठाकृत-
स्तस्मच्चित्रपुरप्रबोधतरणेः श्रीचैत्यगच्छोऽजनि।
तत्र श्रीभुवनेंद्रसूरिसुगुरुर्भूभूषणं भासुर-
ज्योतिः सद्गुण-रत्न रोहणगिरिः कालक्रमेणाभवत्॥८॥
तत्पादांबुज-मंडनं समभवत् पक्षद्वयीशुद्धिमान्
नीर-क्षीरसदृशदूषण-गुण-त्याग-ग्रहैकव्रतः।
कालुष्यं च जडोद्भवं परिहरन् दूरेण सन्मानस-
स्थायी राजमरालवद् गणिवरः श्रीदेवभद्रप्रभु॥९॥
शस्याः शिष्यास्त्रयस्तत्पद-सरसिरुहोत्संगशृंगार-भृंगा
विध्वस्तानंगभंगा सुविहितविहितोत्तुंगरंगा बभूवुः।
तत्राद्यः सच्चरित्रानुमतिकृतमतिः श्रीजगच्चंद्रसूरिः
श्रीमद्देवेन्द्रसूरिः सरलतरलसच्चित्तवृत्तिर्द्वितीयः॥१०॥
तृतीयशिष्याः श्रुत वारि-वार्द्धयः परीषहाक्षोभ्यमनः-समाधयः।
जयंति पूज्या विजयेन्दुसूरयः परोपकारादिगुणौधभूरयः॥११॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बृहत्कल्पवृत्ति की प्रशस्ति, वही, पृष्ठ ३५४-३५५

३स. **'गुरुपर्वक्रम'** श्लोक २६-३०. **पट्टावलीसमुच्चय**, भाग १, पृ० २७

3D. Muni Punya Vijaya. Ed. *Catalogue of Palm-Leaf Mss. in the Shanti Natha Jaina Bhandar, Cambay*, Vol. I. G.O.S. No. 136. Baroda, 1962. Pp. 91-92. देसाई, **जैनसाहित्यनो संक्षिप्त इतिहास**, पृष्ठ ३९१, कण्डिका ५६०,

४. **श्राद्धदिनकृत्यप्रकरण-स्वोपज्ञवृत्तिसहित** की प्रशस्ति
Muni Punya Vijaya, Ibid. P.263-265.

५-६. **मुनिसुन्दरकृतगुर्वावली**, श्लोक १५१-१६४; १३५-१३६.
तपागच्छपट्टावली (धर्मसागर उपाध्याय), **पट्टावलीसमुच्चय**, भाग १, पृष्ठ ५७-५८.

७-८. वही

९. मुनि चतुरविजय जी, संपा० **जैनस्तोत्रसंदोह**, भाग १, अहमदाबाद १९३२ ई०स०, प्रस्तावना, पृष्ठ ५५-५६.
त्रिपुटी महाराज, **जैनपरम्परानो इतिहास**, भाग ३, श्री चारित्रस्मारक ग्रन्थमाला, ग्रन्थांक ५६, अहमदाबाद वि०सं० २०२०, पृष्ठ २८३.

१०-११. मुनि चतुरविजय, पूर्वोक्त, भाग १, प्रस्तावना, पृष्ठ ५६-६१.

12. P. Peterson: *Third Report of Operation in search of Sanskrit Mss in the Bombay circle*, Bombay 1893 A.D. No. 312.
मोहनलाल दलीचंद देसाई, **जैनसाहित्यनो संक्षिप्त इतिहास**, मुम्बई १९३३ ई०स०, पृष्ठ ४१७, कंडिका ५९७.

१३. त्रिपुटी महाराज, पूर्वोक्त, भाग ३, पृष्ठ ४२७.

१४. वही, पृष्ठ ४२८.

15. P.Peterson, *Fifth Report of Operation in search of Sanskrit Mss in the Bombay circle*, Bombay 1896 A.D., No. 216.

१६-१७. हीरालाल रसिकलाल कापड़िया, **जैनसंस्कृत साहित्यनो इतिहास**, भाग २, खंड १, श्री मुक्तिकमल जैन मोहनमाला, ग्रन्थांक ६४, बड़ोदरा ई०स० १९६८, पृष्ठ ७०-७१.

१८-१९. उपा० धर्मसागरकृत "तपागच्छपट्टावली", **पट्टावलीसमुच्चय**, प्रथम भाग, पृष्ठ ६४.
20.Muni Punya Vijaya, Ed. *Catalogue of Palm Leaf Mss in the ShantiNatha Jaina Bhandar, Cambay*, Vol.I, II, G.O.S. No.136, 149, Baroda, 1962 and 1966 A.D.
मुनि जिनविजय, संपा०-**जैनपुस्तकप्रशस्तिसंग्रह**, सिंघी जैन ग्रन्थमाला, ग्रन्थांक १८, मुम्बई १९४३ ई०

२१-२२. **जैनसाहित्यनो**.....पृष्ठ ४४३, कंडिका ६५२-५३.

२२अ. मुनि चतुरविजय, पूर्वोक्त, भाग २, प्रस्तावना, पृष्ठ ४.

२३. बुद्धिसागरसूरि, संपा०, **जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक १२०१, भाग

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२, लेखांक १२०.

२४-२५. मुनि चतुरविजय, पूर्वोक्त, भाग २, प्रस्तावना, पृष्ठ ८४.

२६. हीरालाल रसिकलाल कापड़िया, **जैनसंस्कृत साहित्यनो इतिहास**, भाग २, खंड १, पृष्ठ ३७९.

27. H.D. Velankar. *Jinaratnakosha*, Poona 1944. P.299.

२८. **जैनसंस्कृत साहित्यनो**....., पृष्ठ ७९.

२९. श्रीअगरचन्द नाहटा ने इसका रचना काल वि०सं० १४७१ के आस-पास बतलाया है। द्रष्टव्य "विक्रमादित्यविषयक जैन साहित्य", **जैनसत्यप्रकाश**, वर्ष ९, अंक ४-६, विक्रम विशेषांक, पृष्ठ १८०-१८८.

३०. द्रष्टव्य - संदर्भ क्रमांक १.

३१. **जैनसाहित्यनो**....., पृष्ठ ४७०, कंडिका ६८९.

३२-३३. वही, पृष्ठ ४५३, पादटिप्पणी क्रमांक ४४०.

३४. मुनि चतुरविजय, पूर्वोक्त, भाग २, प्रस्तावना, पृष्ठ ८४-९३.

३५. **पट्टावलीसमुच्चय**, भाग १, पृष्ठ ६६.

३६. मुनि चतुरविजय, पूर्वोक्त, भाग २, प्रस्तावना, पृष्ठ ८८.

३७. **जैनसाहित्यनो**....., पृष्ठ ४६५, कंडिका ६७७.

३८. वही, पृष्ठ ४६५, कंडिका ६७६.

३९. मुनि चतुरविजय, पूर्वोक्त, भाग २, प्रस्तावना, पृष्ठ ९०.

40. *Jinaratnakosha*, P-175.

४१-४२. मुनि चतुरविजय, पूर्वोक्त, भाग २, प्रस्तावना, पृष्ठ ९०.

४३. वही, पृष्ठ ९१-९३.

४४. द्रष्टव्य, संदर्भ क्रमांक ३५.

४५. मुनि चतुरविजय, पूर्वोक्त, भाग २, प्रस्तावना, पृष्ठ ९३-९५.
जैनसाहित्यनो.....,पृष्ठ ४६४-४६५, कंडिका ६७४-६७५.

४६. मुनि कांतिसागर, **शत्रुंजयवैभव**, कुशल पुष्प ४, जयपुर १९९० ई०, पृष्ठ १७३-१७४.

४७. मुनि विद्याविजय, संपा०-**प्राचीनलेखसंग्रह**. भावनगर १९२९ ई० लेखांक ११८.

४८. दौलतसिंह लोढ़ा, संपा०-**श्रीप्रतिमालेखसंग्रह**, लेखांक ३०३ बी, ३०४ बी, ३५०, ३६०.

४९. वही, लेखांक २८०-२८६, २८९, २९६, ३०८बी, ३१२ एवं **अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेखसन्दोह**, लेखांक १३०-१३७, १३९, १४३, १५४-१५८. तथा पूरनचंद नाहर, **जैनलेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक २७८.

५०. **श्रीप्रतिमा**.....,लेखांक २७८, तथा **अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैन**....., लेखांक १६१.

५१-५२. मुनि चतुरविजय, पूर्वोक्त, भाग २, प्रस्तावना पृष्ठ ९५.

५३-५५. वही, पृष्ठ ९५-९६.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अध्याय - ३

तपागच्छ का इतिहास

भाग १, खंड १

(रत्नशेखरसूरि से २०वीं शती तक)

रत्नशेखरसूरि - आचार्य सोमसुन्दरसूरि के शिष्य, मुनिसुन्दरसूरि के आज्ञानुवर्ती तपागच्छ के ५५ वें पट्टधर आचार्य रत्नशेखरसूरि का जन्म वि०सं० १४५७ (अन्य मतानुसार १४५२) में हुआ था, वि०सं० १४६३ में इन्होंने दीक्षा ग्रहण की, वि०सं० १४८३ में पंडित पद प्राप्त किया। वि०सं० १४८३ में वाचक पद और वि०सं० १५०२ में आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किये गये। मुनिसुन्दरसूरि के वि०सं० १५०३ में निधन होने के पश्चात् इन्होंने तपागच्छ का नायकत्त्व ग्रहण किया। वि०सं० १५१७ मे इनकी मृत्यु हुई।[१] इनके द्वारा रचित विभिन्न कृतियां प्राप्त होती हैं[२], जो इस प्रकार हैं:

१. **षडावश्यकवृत्ति**
२. **श्राद्धप्रतिक्रमणसूत्र** पर **अर्थदीपिका** नामक वृत्ति
(इसका संशोधन लक्ष्मीभद्रगणि ने किया)
३. **श्राद्धविधिवृत्ति - विधिकौमुदी** (वि०सं० १५०६)
४. **रत्नचूड़रास** (वि०सं० १५१० के आसपास)
५. **आचारप्रदीप** (वि०सं० १५१६)
(जिनहंसगणि ने इसके प्रणयन और संशोधन में सहायता की)
६. **लघुक्षेत्रसमास - अवचूरि**
७. **हेमव्याकरण** पर **अवचूरि**
८. **प्रबोधचन्द्रोदयवृत्ति**
९. **मेहसाणामंडनपार्श्वनाथस्तवन**
१०. **नवखंडपार्श्वनाथजिनस्तवन**
११. **अर्बुदाद्रिमंडनपार्श्वनेमिस्तवन**
१२. **चतुर्विंशतिजिनस्तवन**
१३. **पार्श्वस्तवन**

दशवैकालिकसूत्र की वि०सं० १५११ में लिखी गयी प्रति की पुष्पिका से ज्ञात होता है कि इनके उपदेश से हाथादि परिवार ने एक लाख श्लोक परिमाण ग्रन्थों का प्रतिलेखन कराया था।[३] इन्हीं के उपदेश से वि०सं० १५१५ में श्रावक जइता और उसकी भार्या जयतलदेवी द्वारा विद्वद्जनों के पठनार्थ **पुष्पमालाप्रकरण** की प्रतिलिपि करायी गयी।[४]

रत्नशेखरसूरि द्वारा प्रतिष्ठापित बड़ी संख्या में सलेख जिनप्रतिमायें प्राप्त हुई हैं जो वि०स० १५०२ से १५१७ तक की है। इनका विवरण तालिका के रुप में प्रस्तुत है ...

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International

For Private & Personal Use Only

www.jainelibrary.org

रत्नशेखरसूरि द्वारा प्रतिष्ठापित और अद्यावधि उपलब्ध सलेख जिनप्रतिमाओं की विस्तृत तालिका

क्रमांक	वि० सं०	तिथि/मिति/वार	लेख का स्वरूप प्रतिमालेख/शिलालेख	वर्तमान प्राप्ति स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१.	१५०२	वैशाख वदि ५	कुन्थुनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, आमेर	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ३५८.
२.	१५०२	''	''	सुपार्श्वनाथ का पंचायती बड़ा मंदिर, जयपुर	**जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक ११४६.
३.	१५०३	माघ सुदि १३	विमलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ चैत्य, थराद	**श्रीप्रतिमालेखसंग्रह,** लेखांक २१०.
४.	१५०४	मितिविहीन	सुपार्श्वनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, नागौर	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ३८५ एवं **जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक १२४९.
५.	१५०६	वैशाख सुदि ६	अजितनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, नदियाड	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक २९६.
६.	१५०६	''	चन्द्रप्रभ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वीर जिनालय, रीजगेड, अहमदाबाद.	वही, भाग १, लेखांक ९९२.
७.	१५०६	वैशाख सुदि...?	महावीर की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	कुन्थुनाथ जिनालय, मांडवीपोल, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ६४०.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८.	१५०६	वैशाख.....?	सुविधिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अनुपूर्ति लेख, आबू,	**अर्बुदप्राचीनजैनलेखसंदोह,** लेखांक ६३९.
९.	१५०६	वैशाख वदि ५ गुरुवार	नेमिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक ८९८.
१०.	१५०६	फाल्गुन सुदि ९	अजीतनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, कोटा	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ४११.
११.	१५०६	फाल्गुन सुदि ९. शुक्रवार	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, पादरा	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक १७.
१२.	१५०६	फाल्गुन सुदि ९	शत्रुंजय-गिरनारवतारपट्टिका पर उत्कीर्ण लेख	बावन जिनालय, उदयपुर	**जैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक १९७० एवं **प्राचीनलेखसंग्रह,** लेखांक २२१.
१३.	१५...६	तिथिविहीन	आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, लाज	**अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैन-लेखसंदोह,** लेखांक ४७८.
१४.	१५०६	,,	कुन्थुनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक ८९७.
१५.	१५०७	चैत्र वदि ५	मुनिसुव्रत की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अनुपूर्ति लेख, आबू	**अर्बुदप्राचीनजैनलेखसंदोह,** लेखांक ६४०.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१६.	१५०७	ज्येष्ठ वदि ७ गुरुवार	नमिनाथ की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, हनुमानगढ़	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक २५२९.
१७.	१५०७	ज्येष्ठ सुदि ९	सुविधिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, मोतीशाह की टूँक, शत्रुंजय	**शत्रुंजयवैभव,** लेखांक ११२.
१८.	१५(०)७	आषाढ़ वदि ८	रिक्त जैनमंदिर मे दरवाजे के ऊपर उत्कीर्ण शिलालेख, जिसमें आदिनाथ की प्रतिमा प्रतिष्ठापित कराने की बात कही गयी है।	रिक्त जैन मंदिर, मानपुर	**अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेख-संदोह,** लेखांक ४२.
१९.	१५०७	माघ सुदि ५	सुमतिनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	विमलनाथ जिनालय, बेतेड	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ४२१.
२०.	१५०७	माघ सुदि ५ शुक्रवार	कुन्थुनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	स्तम्भन पार्श्वनाथ जिनालय, खारवाड़ो, खंभात	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक १०४७.
२१.	१५०७	माघ सुदि ११ बुधवार	शांतिनाथ की खंडित प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, किले के अन्दर, बसन्तगढ़, सिरोही-राजस्थान	**अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेख-संदोह,** लेखांक ४४६ एवं **जैनलेखसंग्रह,** भाग १. लेखांक ९५४.
२२.	१५०७	माघ.....?	.....	जैनमंदिर, भीलड़िया तीर्थ	दौलतसिंह लोढा, संपा०, **जैनप्रतिमालेखसंग्रह,** लेखांक ३३८.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२३.	१५०७	फाल्गुन सुदि.....?	सुपार्श्वनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	नवघरे का मंदिर, चेलपुरी, दिल्ली	**जैनलेखसंग्रह**, भाग १. लेखांक ४७७.
२४.	१५०७	तिथिविहीन	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, सांडेसर	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ४७६.
२५.	१५०७	,,	मुनिसुव्रत की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बड़ा मंदिर, पालीताना	**शत्रुंजयवैभव,** लेखांक ११४.
२६.	१५०७	,,	चन्द्रप्रभ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	मोतीशाह की टूंक, शत्रुंजय	वही, लेखांक ११६.
२७.	१५०७	,,	पद्मप्रभ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	विमलनाथ जिनालय, सवाईमाधोपुर	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ४२९.
२८.	१५०७	,,	सम्भवनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ देरासर, झवेरीवाड़, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ९१०.
२९.	१५०७	,,	कुन्थुनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	श्वेताम्बर जैनमंदिर, मधुवन, सम्मेतशिखर	**जैनलेखसंग्रह,** भाग २. लेखांक १६९५.
३०.	१५०७	,,	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अजितनाथ जिनालय, नानरवाड़ा	**अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेख-संदोह,** लेखांक ५२५.
३१.	१५०८	चैत्र सुदि ७	सुविधिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	स्तम्भन पार्श्वनाथ जिनालय, खारवाड़ो, खंभात	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक १०५२.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३२.	१५०८	वैशाख वदि१०रविवार	कुन्थुनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, माणेक चौक, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ९८९.
३३.	१५०८	वैशाख वदि १३	शीतलनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अस्पष्ट	**प्राचीनजैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ३७२.
३४.	१५०८	वैशाख सुदि ३	मुनिसुव्रत की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, शिववाड़ी, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक २१६९.
३५.	१५०८	वैशाख सुदि ३	नमिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	संभवनाथ देरासर, झवेरीवाड़, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ८०९.
३६.	१५०८	वैशाख सुदि ३	अनन्तनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	स्तम्भनपार्श्वनाथ जिनालय, खारवाडो, खंभात	वही, भाग २, लेखांक १०४८.
३७.	१५०८	"	चन्द्रप्रभ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बड़ा जैन मंदिर, लीम्बडी	**प्राचीनलेखसंग्रह,** लेखांक २३६.
३८.	१५०८	"	संभवनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, वासा	**अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैन-लेखसंदोह,** लेखांक ५३७.
३९.	१५०८	"	अभिनन्दनस्वामी की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	मुनिसुव्रत जिनालय, भरुच	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ३२६.
४०.	१५०८	वैशाख सुदि ५	धर्मनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, नदियाड	वही, भाग २, लेखांक ४०४.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४१.	१५०८	वैशाख सुदि५सोमवार	अभिनन्दनस्वामी की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अनुपूर्ति लेख, आबू	**अर्बुदप्राचीनजैनलेखसंदोह,** लेखांक ६४२.
४२.	१५०८	,,	श्रेयांसनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	प्राचीन जिनालय, लीम्बडी	**प्राचीनलेखसंग्रह,** लेखांक २३८.
४३.	१५०८	वैशाख सुदि.....?	धर्मनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बालावसही, शत्रुंजय	**शत्रुंजयवैभव,** लेखांक ११७.
४४.	१५०८	वैशाख.....?	शीतलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बड़ा जैनमंदिर, सीहोर	**प्राचीनलेखसंग्रह,** लेखांक २४०.
४५.	१५०८	ज्येष्ठ सुदि१३बुधवार	वर्धमान की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शीतलनाथ जिनालय, उदयपुर	वही, लेखांक २४२. एवं **जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक १०८४.
४६.	१५०८	माघ वदि २	वासुपूज्य की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अनुपूर्ति लेख, आबू	**अर्बुदप्राचीनजैनलेखसंदोह,** लेखांक ६४१.
४७.	१५०८	मितिविहीन	वर्धमान स्वामी की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सीमंधरस्वामी का देरासर, उपलो गभारो, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ११७२.
४८.	१५०९	चैत्र सुदि ३	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, वेरावल.	**प्राचीनलेखसंग्रह,** लेखांक २५०.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

४९.	१५०९	वैशाख सुदि ३	आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शीतलनाथ जिनालय, उदयपुर	**जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक १०८५.
५०.	१५०९	ज्येष्ठ वदि ५	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ देरासर, साणंद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ६३७.
५१.	१५०९	मार्गशीर्ष सुदि....?	संभवनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	महावीर जिनालय, रीज़रोड, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक ९९४.
५२.	१५०९	माघ वदि ४	शांतिनाथ की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, बींबणोद	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ४४२.
५३.	१५०९	माघ वदि ५	कुन्थुनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बड़ा जैनमंदिर, कतारग्राम	**प्राचीनलेखसंग्रह,** लेखांक २४७.
५४.	१५०९	माघ सुदि ५	मुनिसुव्रत की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, मुम्बई	**जैनधातुप्रतिमालेख,** लेखांक ११८.
५५.	१५०९	माघ सुदि ५	शीतलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वीरजिनालय, झवेरीवाड़, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ८५३.
५६.	१५०९	माघ सुदि५गुरुवार	चन्द्रप्रभ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, माणेक चौक, खंभात	वही, भाग २, लेखांक १०१३.

५७.	१५०९	माघ.....?	मुनिसुव्रत की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, जीरारवाडो, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ७४१.
५८.	१५०९	माघ.....?	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	मुनिसुव्रत जिनालय, खारवाड़ो, खंभात	वही, भाग २, लेखांक १०२७.
५९.	१५१०	चैत्र वदि ४ शनिवार	शीतलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	नेमिनाथ जिनालय, मेहताजी की पोल, बड़ोदरा.	वही, भाग २, लेखांक १८०.
६०.	१५१०	वैशाख वदि ५	चन्द्रप्रभ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, भैंसरोडगढ़	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह**, लेखांक ४५७.
६१.	१५१०	,,	सुविधिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पद्मप्रभ जिनालय, चूड़ीवाली गली, लखनऊ	**जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक १५४९.
६२.	१५१०	वैशाख सुदि २	आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बालावसही, शत्रुंजय	**शत्रुंजयवैभव,** लेखांक १२४.
६३.	१५१०	वैशाख सुदि ३	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ चैत्य, थराद	**जैनप्रतिमालेखसंग्रह,** लेखांक १४७.
६४.	१५१०	ज्येष्ठ सुदि ३	मुनिसुव्रत की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, मेड़ता	**जैनलेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ७७५.
६५.	१५१०	द्वितीय ज्येष्ठ सुदि ३	संभवनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	महावीर जिनालय, मामा की पोल, बड़ोदरा	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ३७.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६६.	१५१०	ज्येष्ठ सुदि ३ गुरुवार	धर्मनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ देरासर, साणंद	वही, भाग १, लेखांक ६३२.
६७.	१५१०	,,	महावीर की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, मेड़ता सिटी	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ४६१.
६८.	१५१०	मार्गशीर्ष सुदि ६	आदिनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	गौड़ीपार्श्वनाथ जिनालय, बीजापुर	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ४४९.
६९.	१५१०	मार्गशीर्ष सुदि १०	विमलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	गौड़ी जी भंडार की मूर्ति, उदयपुर	**प्राचीनलेखसंग्रह,** लेखांक २५७.
७०.	१५१०	पौष सुदि१५ शुक्रवार	सुमतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, मुर्शिदाबाद	**जैनलेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक २८.
७१.	१५१०	माघ सुदि५ शुक्रवार	सुपार्श्वनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ-पार्श्वनाथ जिनालय, पायधुनी, मुम्बई	**जैनधातुप्रतिमालेख,** लेखांक १२२.
७२.	१५१०	,,	वासुपूज्य की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, बोहारनटोला, लखनऊ	**जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक १५३९.
७३.	१५१०	माघ.....?	वर्धमान की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जगवल्लभ पार्श्वनाथ देरासर, नीशापोल, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक १२१३.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७४.	१५१०	माघ.....?	धर्मनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनदेरासर, सौदागरपोल, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक ७०८.
७५.	१५१०	फाल्गुन सुदि ३ शुक्रवार	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ देरासर, लाडोल	वही, भाग १, लेखांक ४७०.
७६.	१५१०	फाल्गुन सुदि १२	मुनिसुव्रत की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनदेरासर, महुआ	**प्राचीनलेखसंग्रह,** लेखांक २५१.
७७.	१५१०	तिथिविहीन	कुन्थुनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	संभवनाथ देरासर, झवेरीवाड़, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ८३५.
७८.	१५१०	"	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ देरासर, लाडोल	वही, भाग १, लेखांक ४५४.
७९.	१५११	ज्येष्ठ वदि १३	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, जानीशेरी, बड़ोदरा.	वही, भाग २, लेखांक १५५.
८०.	१५११	ज्येष्ठ सुदि ५	आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	संभवनाथ जिनालय, जैसलमेर	**जैनलेखसंग्रह**, भाग ३, लेखांक २३३०.
८१.	१५११	ज्येष्ठ सुदि ८	विमलनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सुमतिनाथ जिनालय, जयपुर	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ४७२.
८२.	१५११	आषाढ़ वदि९रविवार	विमलनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	**बीकानेरजैनसंग्रहलेख,** लेखांक १४७.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८३.	१५११	आषाढ़ सुदि ५	पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	घरदेरासर, चुडगर, बड़ोदरा	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक २२५.
८४.	१५११	माघ वदि १	सुमतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिलाल जिनालय, कोठीपोल, बड़ोदरा	वही, भाग २, लेखांक ५४.
८५.	१५११	माघ सुदि ४	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, चौकसीपोल, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ८४४.
८६.	१५११	,,	संभवनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, बड़नगर	वही, भाग १, लेखांक ५४४.
८७.	१५११	माघ सुदि १३	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि जी का मंदिर, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक ९५०.
८८.	१५११	फाल्गुन सुदि ९ रविवार	संभवनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, लस्कर, ग्वालियर	**जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक १४०२.
८९.	१५११	तिथिविहीन	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि जी का मंदिर, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक ९४३.
९०.	१५१२	वैशाख सुदि ५	जिनप्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बड़ू जी का मंदिर, वाराणसी	**जैनलेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ४०५.
९१.	१५१२	ज्येष्ठ वदि १	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सीमंधरस्वामी का देरासर, उपलो गभारो, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ११६७.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९२.	१५१२	मार्गशीर्ष सुदि १५	वासुपूज्य की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, भाग १, लेखांक ११९४.
९३.	१५१२	"	अभिनन्दन स्वामी की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बड़ा जैन मंदिर, नागौर	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ४८६.
९४.	१५१२	माघ सुदि ५	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	खरतरवसही, शत्रुंजय	**शत्रुंजयवैभव,** लेखांक १३५.
९५.	१५१२	माघ सुदि५सोमवार	सुमतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि जी का मंदिर, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक ९५३.
९६.	१५१२	फाल्गुन सुदि ८ शनिवार	सुमतिनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बड़ा जैन मंदिर, नागौर	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ४९४.
९७.	१५१२	"	आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि जी का मंदिर, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक ९५९.
९८.	१५१२	फाल्गुन सुदि ९ शनिवार	सुमतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, नागौर	**जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक १२६२.
९९.	१५१२	फाल्गुन सुदि १२	विमलनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, विलाव	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ४९५.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१००.	१५१२	मितिविहीन	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	माधवलाल बाबू का देरासर, पालिताना	**प्राचीनलेखसंग्रह,** लेखांक २८० एवं **जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक १७५४.
१०१.	१५१२	तिथिविहीन	महावीर की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	मनमोहन पार्श्वनाथ जिनालय, पटोलीया पोल, बड़ोदरा	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ६६.
१०२.	१५१२	,,	कुन्थुनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	महावीर जिनालय, भरुच	वही, भाग २, लेखांक ३४३.
१०३.	१५१२	,,	---	---	वही,भाग २,लेखांक ३८९.
१०४.	१५१३	चैत्र.....?	मुनिसुव्रत की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	मुनिसुव्रत जिनालय, सैलाना	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ५०१.
१०५.	१५१३	वैशाख वदि २ सोमवार	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	संभवनाथ जिनालय, देशनोक, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक २२१९.
१०६.	१५१३	,,	वासुपूज्य की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ देरासर, शेखनो पाडो, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक १०३३.
१०७.	१५१३	,,	संभवनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सुमतिनाथ मुख्य बावन जिनालय, मातर	वही, भाग २, लेखांक ४९१.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०८.	१५१३	वैशाख वदि ८	कुन्थुनाथ की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	संभवनाथ जिनालय, जैसलमेर	**जैनलेखसंग्रह**, भाग ३, लेखांक २१५२ एवं **बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक २७४६.
१०९.	१५१३	वैशाख वदि १२	विमलनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	माणिकसागर जी का मंदिर, कोटा	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ५०३
११०.	१५१३	वैशाख सुदि ३	संभवनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि जी का मंदिर, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक ९६७.
१११.	१५१३	वैशाख सुदि ७	आदिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	खरतरगच्छीय आदिनाथ जिनालय, कोटा	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ५०६.
११२.	१५१३	वैशाख सुदि १०	नमिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, पीपलाशेरी, बड़ोदरा	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक १६२.
११३.	१५१३	वैशाख सुदि.....?	सुपार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैन मंदिर, ऊंझा	वही, भाग १, लेखांक १७६.
११४.	१५१३	ज्येष्ठ सुदि ३	शीतलनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, मोतीशाह की टूंक, शत्रुंजय	**शत्रुंजयवैभव,** लेखांक १४०.
११५.	१५१३	ज्येष्ठ सुदि ९	चन्द्रप्रभ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बालावसही, शत्रुंजय	वही, लेखांक १४७.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११६.	१५१३	ज्येष्ठ सुदि ९ बुधवार	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, वीरमगाम	**प्राचीनलेखसंग्रह,** लेखांक २९३.
११७.	१५१३	आषाढ़ सुदि ३	सुविधिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वीर जिनालय, रीज़ रोड, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ९३८.
११८.	१५१३	आषाढ़ सुदि ५ सोमवार	कुन्थुनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, हरखजी का मुवाड़ा	**प्राचीनलेखसंग्रह,** लेखांक २९४.
११९.	१५१३	पौष सुदि १० बुधवार	मुनिसुव्रत की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, पूना	वही, लेखांक २८२.
१२०.	१५१३	,,	शीतलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	संभवनाथ देरासर, झवेरीवाड़, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ८३०.
१२१.	१५१३	माघ वदि २ शुक्रवार	धर्मनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ५३८.
१२२.	१४१३	माघ वदि ५	वासुपूज्य की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, लस्कर, ग्वालियर	**जैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक १४०३.
१२३.	१५१३	माघ सुदि ३	अजितनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	नवलखा पार्श्वनाथ जिनालय, पाली	**जैनलेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ८१८ एवं **प्राचीनजैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ३८७.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१२४.	१५१३	माघ.....?	मुनिसुव्रत की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, नाहटों में, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक १५०६.
१२५.	१५१३	माघ सुदि.....?	अस्पष्ट	बालावसही, शत्रुंजय	**शत्रुंजयवैभव**, लेखांक १४१.
१२६.	१५१३	फाल्गुन वदि ११	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	संभवनाथ देरासर, झवेरीवाड़, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ८१३.
१२७.	१५१३	मितिविहीन	सुमतिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सुमतिनाथ जिनालय, जयपुर	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ५२९.
१२८.	१५१३	,,	मुनिसुव्रत की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि जी का मंदिर, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक ९६१.
१२९.	१५१३	,,	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, लेखांक ९६४.
१३०.	१५१३	,,	धर्मनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, माणेक चौक, खंभात	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ९३३.
१३१.	१५१४	माघ सुदि.....?	सुमतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	यति इन्द्रचन्द्रजी का उपाश्रय, बाड़मेर	**जैनलेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ७४२.
१३२.	१५१४	तिथिविहीन	मुनिसुव्रत की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, ब्रह्मचर्याश्रम, चांदवड़, नासिक	**जैनधातुप्रतिमालेख,** लेखांक १४९.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१३३.	१५१४	,,	,,	जैनमंदिर, पटना	**जैनलेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक २७९.
१३४.	१५१५	वैशाख वदि ५	,,	विमलनाथ जिनालय, बालूचर, मुर्शिदाबाद	वही, भाग १, लेखांक ४०.
१३५.	१५१५	वैशाख सुदि १३	सुविधिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पद्मप्रभ जिनालय, नाल, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक २२७७.
१३६.	१५१५	,,	धर्मनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	मनमोहन पार्श्वनाथ जिनालय, पटोलीया पोल, बड़ोदरा	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक ६९.
१३७.	१५१५	,,	विमलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	नेमिनाथ जिनालय, मेहता पोल, बड़ोदरा	वही, भाग २, लेखांक १६८.
१३८.	१५१५	ज्येष्ठ सुदि ५	धर्मनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, बरखेड़ा	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ५३५.
१३९.	१५१५	,,	विमलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, कनासानो पाड़ो, पाटण	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ३७०.
१४०.	१५१५	,,	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	कल्याण पार्श्वनाथ देरासर, मामा की पोल, बड़ोदरा	वही, भाग २, लेखांक ३३.
१४१.	१५१५	ज्येष्ठ सुदि १५	नमिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वीर जिनालय, माणेक चौक, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ९७८.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१४२.	१५१५	आषाढ़ सुदि २	विमलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, भद्रावती, मध्यप्रदेश	**जैनधातुप्रतिमालेख,** लेखांक १५१.
१४३.	१५१५	माघ सुदि ७	अनन्तनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, पूना	**प्राचीनलेखसंग्रह,** लेखांक ३०१.
१४४.	१५१५	माघ सुदि ७	अजितनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	धर्मनाथ देरासर, डभोई	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ५२.
१४५.	१५१५	,,	महावीर की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वीरजिनालय, माणेक चौक, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ९६६.
१४६.	१५१५	माघ सुदि १५	संभवनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वीर जिनालय, नाणा	**अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेख-संदोह,** लेखांक ३५५ एवं **प्राचीनजैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ४१३.
१४७.	१५१५	,,	,,	जूनावेड़ा, मारवाड़	**जैनलेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ९२६.
१४८.	१५१५	फाल्गुन सुदि ४ शुक्रवार	धर्मनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	यति श्यामलालजी का उपाश्रय, जयपुर	वही, भाग १, लेखांक ५७३.
१४९.	१५१५	फाल्गुन सुदि १२	सुपार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, वडनगर	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ५५१.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१५०.	१५१५	तिथिविहीन	संभवनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	भाभापार्श्वनाथ देरासर, पाटण	वही, भाग १, लेखांक २२९.
१५१.	१५१५	तिथिविहीन	कुन्थुनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक ९८२.
१५२.	१५१५	तिथिनष्ट	धर्मनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	दादा पार्श्वनाथ देरासर, नरसिंहजी की पोल, वड़ोदरा	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक १४०.
१५३.	१५१६	वैशाख वदि १	पद्मप्रभ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक ९९५.
१५४.	१५१६	वैशाख वदि ४	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथजिनालय, कोचरों का चौक, बीकानेर	वही, लेखांक १६०५.
१५५.	१५१६	वैशाख वदि १२ शुक्रवार	सुविधिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	संभवनाथ देरासर, झवेरीवाड़, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ८४१.
१५६.	१५१६	वैशाख सुदि ३	पद्मप्रभ की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, किशनगढ़	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ५५४.
१५७.	१५१६	,,	कुन्थुनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सीमंधरस्वामी का देरासर, उपलो गभारो, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ११६९.
१५८.	१५१६	,,	अभिनन्दन स्वामी की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ देरासर, शांतिनाथ पोल, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक १३२४.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१५९.	१५१६	,,	कुन्थुनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, धवली	**अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेख-संदोह**, लेखांक ४.
१६०.	१५१६	,,	महावीर की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, कनासानो पाड़ो, पाटण	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ३४९.
१६१.	१५१६	वैशाख सुदि ५	संभवनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	राजवैद्य उदयचन्द जी का घर-देरासर, जोधपुर	**जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक १८८०.
१६२.	१५१६	वैशाख.....?	,,	सीमंधरस्वामी का देरासर, उपलोगभारो, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक १०५७.
१६३.	१५१६	ज्येष्ठ सुदि ३	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ देरासर, देवसानो पाड़ो, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक १०६९.
१६४.	१५१६	ज्येष्ठ सुदि ५	सुमतिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	खरतरगच्छीय आदिनाथ जिनालय, कांटा	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ५५७.
१६५.	१५१६	ज्येष्ठ सुदि ९	मुनिसुव्रत की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, दाहोद	वही, लेखांक ५५८.
१६६.	१५१६	कार्तिक सुदि १४ सोमवार	सुमतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बालावसही, शत्रुंजय	**शत्रुंजयवैभव,** लेखांक १४८.
१६७.	१५१६	मार्गशीर्ष वदि १ रविवार	मुनिसुव्रत की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, नाहटों की गवाड़, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक १८३८.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१६८.	१५१६	मार्गशीर्ष सुदि १	संभवनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	संभवनाथ देरासर, जैसलमेर	**जैनलेखसंग्रह**, भाग ३, लेखांक २३३९.
१६९.	१५१६	फाल्गुन सुदि ८	विमलनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	यति पन्नालाल मोहनलाल का घर देरासर, बड़ा बाजार, कलकत्ता	वही, भाग १, लेखांक ३९२.
१७०.	१५१६	तिथिविहीन	नमिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, सेठों की हवेली के पास, उदयपुर	वही, भाग २, लेखांक १९१२.
१७१.	१५१६	''	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बालावसही, शत्रुंजय	**शत्रुंजयवैभव**, लेखांक १४९.
१७२.	१५१६	''	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	संभवनाथ देरासर, कड़ी	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ७३५.
१७३.	१५१६	''	अजितनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह**, लेखांक ९९२
१७४.	१५१६	''	सुमतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, लेखांक ९९१.
१७५.	१५१६	''	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, नाहटों की गवाड़, बीकानेर	वही, लेखांक १८१९.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१७६.	१५१६	चैत्र वदि १२ गुरुवार	वासुपूज्य की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	संभवनाथ जिनालय, अजमेर	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ५६५.
१७७.	१५१७	"	धर्मनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बड़ा मंदिर, नागौर	वही, लेखांक ५६३.
१७८.	१५१७	"	अजितनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वीर जिनालय, सांगानेर	वही, लेखांक ५६४.
१७९.	१५१७	"	पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सुमतिनाथ जिनालय, जयपुर	**जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक ११८५.
१८०.	१५१७	वैशाख वदि ५ शुक्रवार	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	नेमिनाथ जिनालय, मेहतापोल, बड़ोदरा	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** लेखांक १७६.
१८१.	१५१७	वैशाख सुदि.....?	मुनिसुव्रत की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वीरजिनालय, माणेक चौक, खंभात	वही, भाग २, लेखांक १७५.
१८२.	.....नष्ट	.....?	चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक ११४१.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जगवल्लभ पार्श्वनाथ देरासर, नीशापोल, अहमदाबाद में संरक्षित भगवान् पार्श्वनाथ की धातु की एक प्रतिमा पर उत्कीर्ण वि०सं० १५१३ पौष सुदि १० बुधवार के लेख[७] में प्रतिमाप्रतिष्ठापक के रूप में रत्नशेखरसूरि के शिष्य गुणदेव का नाम मिलता है।

लूणवसही के गूढमंडप में उत्कीर्ण वि०सं० १५१५ माघ वदि ८ के एक शिलालेख[८] में आचार्य रत्नशेखरसूरि तथा उनके आज्ञानुवर्ती उदयनंदि, लक्ष्मीसागरसूरि, हेमदेव आदि मुनिजनों का उल्लेख है।

आदिनाथ जिनालय, मालपुरा में संरक्षित वासुपूज्य पंचतीर्थी पर वि०सं० १५१७ का एक लेख[९] उत्कीर्ण है। इस लेख में रत्नशेखरसूरि के साथ धर्मसागरसूरि का भी नाम मिलता है। ये धर्मसागरसूरि कौन थे? रत्नशेखरसूरि के साथ उनका क्या सम्बन्ध था, इस बारे में न तो उक्त प्रतिमालेख से और न ही किन्हीं अन्य साक्ष्यों से कोई जानकारी प्राप्त होती है।

विभिन्न साहित्यिक साक्ष्यों से रत्नशेखरसूरि की शिष्य सन्तति के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। वि०सं० १५९३ में **पिण्डविशुद्धिबालावबोध** और वि०सं० १५१४ में **आवश्यकपीठिका** पर **बालावबोध** के रचनाकार संवेगदेवगणि[१०] ने अपनी कृतियों में इन्हें गुरु के रूप में स्मरण किया है।

वि०सं० १५०७ में रची गयी **सम्यक्त्वरास**[११] की प्रशस्ति में रचनाकार संघकलशगणि ने स्वयं को उदयनंदि का शिष्य और रत्नशेखरसूरि का प्रशिष्य कहा है:

रत्नशेखरसूरि
|
उदयनंदि
|
संघकलशगणि (वि०सं० १५०७/ई०स० १४५१ में **सम्यक्त्वरास** के रचनाकार)

वि०सं० १५०४ में **कथामहोदधि** के रचनाकार एवं सोमसुन्दरसूरि के शिष्य सोमदेवसूरि भी रत्नशेखरसूरि के आज्ञानुवर्ती थे[१२]। राणकपुर में संघपति धरणशाह द्वारा आयोजित उत्सव में रत्नशेखरसूरि ने इन्हें आचार्य पद प्रदान किया[१३]। सुमतिसाधु द्वारा रचित **सोमसौभाग्यकाव्य**[१४] और सोमदेवसूरि के प्रशिष्य एवं चारित्रहंसगणि के शिष्य सोमचारित्रगणि द्वारा वि०सं० १५४१/ई०स० १४८५ में रचित **गुरुगुणरत्नाकरकाव्य**[१५] से यह जानकारी प्राप्त होती है। सोमदेवसूरि की शिष्य-संतति से आगे चलकर तपागच्छ की **कमलकलशशाखा** और **कुतुबपुराशाखा** अस्तित्व में आयी।

रत्नशेखरसूरि के एक शिष्य नंदिरत्न हुए, जिनके शिष्य रत्नमंदिरगणि ने वि०सं० १५१७ में **भोजप्रबन्ध** की रचना की[१६]। इनके द्वारा रचित **उपदेशतरंगिणी**, **नेमिनाथफाग**, **नारीनिराशफाग** आदि कृतियाँ भी मिलती हैं[१७]।

श्री देसाई[१८] ने नंदिरत्नगणि के शिष्य रत्नमंदिरगणि और सोमदेवसूरि के शिष्य रत्नमंडनगणि को एक ही व्यक्ति माना है जो भ्रामक है। वस्तुतः दोनों अलग-अलग व्यक्ति हैं। श्री कापडिया ने भी दोनों को अलग-अलग व्यक्ति और परस्पर गुरुभ्राता बताया है[१९]।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उपदेशतरंगिणी[८] और **भोजप्रबन्ध** की प्रशस्तियों मे रत्नमंदिर ने अपनी गुरु-परम्परा दी है, जो इस प्रकार है :

रत्नशेखरसूरि
|
नंदिरत्न
|
रत्नमंदिरगणि | **उपदेशतरंगिणी** और **भोजप्रबन्ध** (वि०सं० १५१७) आदि कृतियों के कर्ता |

रत्नमंदिरगणि की शिष्यपरम्परा आगे नही चली जबकि रत्नमंडन के एक शिष्य आगममंडन हुए जिनके प्रशिष्य और हर्षकल्लोल के शिष्य लक्ष्मीकल्लोल द्वारा रचित कई कृतियाँ मिलती है[९]। रत्नमंडन के दूसरे शिष्य सोमजय हुए जिनके शिष्य जिनसोम और प्रशिष्य इन्द्रनंदि से आगे चलकर तपागच्छ की कुतुबपुराशाखा अस्तित्व में आयी[१०]।

सोमदेवसूरि
|
रत्नमंडन (**सुकृतसागर** के कर्ता)

आगममंडन	सोमजय
हर्षकल्लोल	जिनसोम
लक्ष्मीकल्लोल (प्रसिद्ध रचनाकार)	इंद्रनंदि (तपागच्छ-कुतुबपुरा शाखा के आदिपुरुष)

रत्नशेखरसूरि के पश्चात् **लक्ष्मीसागरसूरि** उनके पट्टधर बने। इनके बारे में सोमदेवसूरि के प्रशिष्य और चारित्रहंसगणि शिष्य सोमचारित्रगणि द्वारा वि०स० १५४६/ई०स० १४८५ में रचित **गुरुगुणरत्नाकरकाव्य**[११] से विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है। इसके अनुसार वि०सं० १४६४ में इनका जन्म हुआ, वि०सं० १४७० में मुनिसुन्दरसूरि से दीक्षा ली, वि०सं० १५०१ में उन्हीं से मुण्डस्थल में वाचक पद प्राप्त हुआ। वि०सं० १५०८ में इन्हें सूरि पद मिला और १५१७ वि०सं० में गच्छनायक बने। इन्होंने स्तम्भतीर्थ में सोमदेवसूरि और उनके शिष्य रत्नमंडन के मध्य मतभेद दूर कराया।

शिष्यपरिवार

विभिन्न साहित्यिक साक्ष्यों से लक्ष्मीसागरसूरि के शिष्यों के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। मुनि चतुरविजयजी ने इनके विभिन्न शिष्यों का उल्लेख किया है, जो इस प्रकार है :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१. **सोमदेवसूरि** - ये वही सोमदेवसूरि हैं, जिन्हें सोमसुन्दरसूरि ने दीक्षित किया था। ये मुनिसुन्दरसूरि, रत्नशेखरसूरि और उनके शिष्य एवं पट्टधर लक्ष्मीसागरसूरि के आज्ञानुवर्ती थे। सोमदेवसूरि के विभिन्न शिष्यों के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

क-**रत्नहंसगणि**- इनके उपदेश से वि०सं० १५०९ में मालव देश के खाचरोद नगर में श्रावक कर्मसिंह ने **शांतिनाथचरित** की एक प्रतिलिपि करायी, जो छाणी, बड़ौदरा के एक ग्रन्थभंडार में संरक्षित है।[२२]

ख-**रत्नमंडन**- इनके द्वारा रचित **सुकृतसागर**[२३] नामक एक कृति प्राप्त होती है।

रत्नमंडन के एक शिष्य आगममंडन हुए। इनके द्वारा रचित कोई कृति नहीं मिलती किन्तु इनके प्रशिष्य और हर्षकल्लोल के शिष्य लक्ष्मीकल्लोल द्वारा रचित कुछ कृतियां मिलती हैं[२४]। इन्होंने वि०सं० १५६६ में **आचारांगसूत्र** पर तत्त्वालंगमा नामक अवचूरि[२५] की रचना की। **ज्ञाताधर्मकथा** पर रची गयी **मुग्धावबोध**[२६] भी इन्हीं की कृति मानी जाती है।

जैसा कि पूर्व में कहा जा चुका है रत्नमंडन के दूसरे शिष्य सोमजय हुए। सोमजय के शिष्य जिनसोम हुए, जिन्हें लक्ष्मीसागरसूरि द्वारा पाटण में उपाध्याय पद प्राप्त हुआ। जिनसोम के शिष्य इन्द्रनंदि हुए जिनसे आगे चलकर तपागच्छ की कुतुबपुरा शाखा अस्तित्त्व में आयी।

२. **श्रुतमूर्ति** - इनके द्वारा वि०सं० १५१७ कार्तिक वदि १० को स्तम्भतीर्थ लिखी गयी **द्वात्रिंशिका** की एक प्रति पाटण भंडार[२७] में संरक्षित है ऐसा मुनि चतुरविजय जी ने उल्लेख किया है।

३. **जिनमाणिक्य** - इनके शिष्य अनंतकीर्ति हुए जिनके द्वारा वि०सं० १५२९ में एक श्राविका के पठनार्थ **शीलोपदेशमाला** की प्रतिलिपि की गयी। मुनिश्री के अनुसार यह प्रति भी पाटण भंडार[२८] में संरक्षित है।

४. **सुमतिसाधु** - ये लक्ष्मीसागरसूरि के पट्टधर बने।

५. **शुभसुन्दर** - इनके द्वारा रचित **देउलवाडामंडनऋषभजिनस्तवन सटीक**[२९] नामक कृति मिलती है।

६. **जयवीर** - इनके शिष्य शुभलाभ ने वि०सं० १५३६ में **उपदेशमालाअवचूरि** की प्रतिलिपि की, जो आज पाटण के भंडार[३०] में संरक्षित है।

७. **शुभशीलगणि** - इन्होंने वि०सं० १५२१/ई०स० १४६५ में रचित **पंचशतीप्रबन्ध**[३१] नामक कृति प्राप्त होती है। इनके द्वारा रचित अन्य कृतियाँ भी मिलती हैं, जो इस प्रकार हैं:

१- **विक्रमादित्यचरित्र** - रचनाकाल वि०सं० १४९९ (अथवा १४९०) प्रकाशित
२- **पुण्यधननृपकथा** - " वि०सं० १४९६
३- **प्रभावककथा** - " वि०सं० १५०४
४- **भरतेश्वरबाहुबलिवृत्ति** (कथाकोश) वि०सं० १५०९
५- **शत्रुंजयकल्पवृत्ति** - वि०सं० १५१८
६- **भोजप्रबन्ध** -
७- **शालिवाहनचरित्र** - वि०सं० १५४०
८- **पुण्यसारकथा** -

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९- **जावड़कथा**

१०- **भक्तामरस्तोत्रमाहात्म्य**

११- **पंचवर्गसंग्रहनाममाला**

१२- **उणादिनाममाला**

१३- **अष्टकर्मविपाक**

वि०सं० १४९९ में रचित **विक्रमादित्यचरित्र**[२७] और वि०सं० १५०९ में रचित **भरतेश्वरबाहुबलिवृत्ति** में रचनाकार स्वयं को मुनिसुन्दरसूरि का शिष्य बताते हैं-

मुनिसुन्दरसूरीशविनेयः शुभशीलभाक् ।
चकार विक्रमादित्य-चरित्रं मन्दधीरपि ।।

(**विक्रमादित्यचरित्र**-प्रशस्ति-१२)

प्रबन्धपंचशती के द्वितीय अधिकार[२८] के अन्त में इन्होंने स्वयं को लक्ष्मीसागरसूरि का शिष्य कहा है, जबकि ग्रन्थ की समाप्ति की **प्रशस्ति**[२९] में रत्नमंडन का शिष्य बतलाया है :

इति श्रीसोमसुन्दरसूरि पट्टालङ्करण श्रीमुनिसुन्दरसूरिः श्रीजयचन्द्रसूरि पट्टालङ्करण श्री रत्नशेखरसूरि पट्टालङ्करण श्रीलक्ष्मीसागरसूरि श्री सोमदेवसूरि श्रीरत्नमंडनसूरिशिष्य पं० शुभशीलगणि विरचित (प्रबन्ध) पंचशतीसम्बन्धे चतुर्थोऽधिकारः समाप्तः।।

शुभशीलगणि सोमसुन्दरसूरि के विशाल शिष्य-प्रशिष्य परिवार के एक सदस्य थे। अपने लम्बे जीवनकाल में ये मुनिसुन्दरसूरि, रत्नशेखरसूरि, लक्ष्मीसागरसूरि आदि के आज्ञानुवर्ती थे। इसीलिये इन्होंने अपनी विभिन्न रचनाओं में, जो विभिन्न गच्छनायकों के समय में रची गयीं, स्वयं को कहीं मुनिसुन्दरसूरि का, कहीं रत्नशेखरसूरि का और कहीं लक्ष्मीसागरसूरि का शिष्य बतलाया गया है। वस्तुतः ये उनके शिष्य नहीं वरन् आज्ञानुवर्ती थे और सोमसुन्दरसूरि के शिष्य सोमदेवसूरि के प्रशिष्य और रत्नमंडन के शिष्य थे, जैसा कि **प्रबन्धपंचशती** की प्रशस्ति में ऊपर हम देख चुके हैं।

सुधानन्दन, रत्नमंडनगणि, शुभरत्नगणि, सोमजय, जिनसोम, जिनहंस, सुमतिसुन्दर, सुमतिसाधुसूरि, इन्द्रनंदि आदि को लक्ष्मीसागरसूरि ने ही आचार्य पद तथा अनेक मुनिजनों को उपाध्याय और वाचक पद प्रदान किया था[३०]।

आचार्य लक्ष्मीसागरसूरि ने गुर्जर, मरु और मालव प्रदेशों के तपागच्छीय श्रावकों द्वारा हजारों की संख्या में निर्मित जिनबिम्बों की प्रतिष्ठायें कीं, जिनमें से बड़ी संख्या में आज भी सलेख जिन प्रतिमायें प्राप्त होती हैं। ये वि० सं० १५१३ से लेकर वि० सं० १५३६ तक की हैं। इनका विस्तृत विवरण तालिका के रुप में प्रस्तुत है ....

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International

For Private & Personal Use Only

www.jainelibrary.org

आचार्य लक्ष्मीसागरसूरि द्वारा प्रतिष्ठापित और अद्यावधि उपलब्ध सलेख जिन प्रतिमाओं की तालिका

क्रमांक	वि० सं०	तिथि/मिति/वार	लेख का स्वरूप प्रतिमालेख/शिलालेख	वर्तमान प्राप्ति स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१.	१५१३	वैशाख सुदि १३	शीतलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अजितनाथ जिनालय, शेखनो पाड़ो, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक १०२०.
२.	१५१३	तिथिविहीन	वासुपूज्य की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ देरासर, देवसानोपाड़ो, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक १०९७.
३.	१५१७	वैशाख सुदि ३	विमलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वासुपूज्य जिनालय, थराद	**जैनप्रतिमालेखसंग्रह,** लेखांक ३०.
४.	१५१७	वैशाख सुदि ८	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	नवघरे का मंदिर, दिल्ली	**जैनलेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ४८३.
५.	१५१७	ज्येष्ठ वदि ५	मुनिसुव्रत की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, कनासानो-पाड़ो, पाटण	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ३०४.
६.	१५१७	ज्येष्ठ सुदि ३	शीतलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, खेरातु	वही, भाग १, लेखांक ७६४.
७.	१५१७	ज्येष्ठ सुदि १४	धर्मनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि जी का मंदिर, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक १००१.
८.	१५१७	मार्गशीर्ष सुदि २ शनिवार	धर्मनाथ की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, किशनगढ़	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ५६९.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९.	१५१७	पौष वदि ८ रविवार	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शीतलनाथ जिनालय, उदयपुर	**जैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक १०३०.
१०.	१५१७	फाल्गुन सुदि ३	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अजितनाथ जिनालय, शेखनो पाड़ो, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ९९९.
११.	१५१७	माघ सुदि.....	पद्मप्रभ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, बीजापुर	वही, भाग १, लेखांक ४३७.
१२.	१५१७	फाल्गुन सुदि ११	कुन्थुनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, पटना	**जैनलेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक २८०.
१३.	१५१७	फाल्गुन सुदि ११ शनिवार	विमलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शीतलनाथ जिनालय, उदयपुर	**प्राचीनलेखसंग्रह,** लेखांक ३१० एवं **जैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक १०९१.
१४.	१५१८	वैशाख वदि १ गुरुवार	सुमतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि जी का मंदिर, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक १००९.
१५.	१५१८	वैशाख वदि ४	नमिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चतुर्मुख विहार, अचलगढ़	**प्राचीनजैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक २६७.
१६.	१५१८	वैशाख सुदि १३	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	माधवलाल बाबू का घर देरासर, पालिताना	**प्राचीनलेखसंग्रह,** लेखांक ३१९ एवं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

					शत्रुंजयवैभव, लेखांक १६०
१७.	१५१८	,,	मुनिसुव्रत की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सुमतिनाथ जिनालय, माधवलाल बाबू की धर्मशाला, पालीताना	**जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक १७५६.
१८.	१५१८	ज्येष्ठ वदि १	संभवनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सीमंधर स्वामी का देरासर, उपलो गभारो, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ११९१.
१९.	१५१८	ज्येष्ठ वदि ६ बुधवार	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, परा, खेड़ा	वही, भाग २, लेखांक ४१५.
२०.	१५१८	ज्येष्ठ वदि १०	वासुपूज्य की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पर देरासर, चुडगर, बड़ोदरा	वही, भाग २ लेखांक २२४.
२१.	१५१८	,,	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	कल्याण पार्श्वनाथ देरासर, मामा की पोल, बड़ोदरा	वही, भाग २, लेखांक ३१.
२२.	१५१८	आषाढ़ सुदि ३ गुरुवार	विमलनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	खरतरगच्छीय आदिनाथ जिनालय, कोटा	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ५७९.
२३.	१५१८	आषाढ़.....?	वासुपूज्य की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, भद्रावती, मध्यप्रदेश	**जैनधातुप्रतिमालेख,** लेखांक १६६.
२४.	१५१८	माघ सुदि ५ बुधवार	कुन्थुनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, कोटा	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ५८४.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२५.	१५१८	फाल्गुन वदि ५	नमिनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, सेलवाड़ा ग्राम	**अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैन-संदोह**, भाग५, लेखांक१८६.
२६.	१५१८	फाल्गुन सुदि २	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि जी का मंदिर, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक १००७.
२७.	१५१८	फाल्गुन सुदि ११ गुरुवार	कुन्थुनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, कनासानो-पाड़ो, पाटण	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ३५०.
२८.	१५१८	मितिविहीन	शीतलनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, जैसलमेर	**जैनलेखसंग्रह**, भाग ३. लेखांक २१२५.
२९.	१५१८	,,	सुविधिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	संभवनाथ देरासर, कड़ी	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ७३१.
३०.	१५१८	,,	वासुपूज्य की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैन मंदिर, ऊंझा	वही, भाग १, लेखांक १८१.
३१.	१५१८	,,	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, पाटडी	**प्राचीनलेखसंग्रह,** लेखांक ३२७.
३२.	१५१९	चैत्र वदि ११	शांतिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बड़ा जैनमंदिर, नागौर	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ५८९.
३३.	१५१९	वैशाख वदि ११	कुन्थुनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैन मंदिर पाटडी	**प्राचीनलेखसंग्रह,** लेखांक ३३६.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३४.	१५१९	वैशाख वदि ११ शुक्रवार	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, सुल्तानपुरा, बड़ोदरा	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक १९४.
३५.	१५१९	,,	,,	आदिनाथ जिनालय, नागौर	**जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक १२६८.
३६.	१५१९	,,	संभवनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि जी का मंदिर, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक १०१४.
३७.	१५१९	वैशाख सुदि ३	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पद्मप्रभ जिनालय, अजीमगंज, मुर्शिदाबाद	**जैनलेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ९.
३८.	१५१९	ज्येष्ठ वदि ९ शनिवार	मुनिसुव्रत की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, किशनगढ़	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ५९२.
३९.	१५१९	,,	धर्मनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, रतलाम	वही, लेखांक ५९८.
४०.	१५१९	ज्येष्ठ सुदि ३ शनिवार	पद्मप्रभ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, गांभू	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ७५.
४१.	१५१९	कार्तिक वदि ४ गुरुवार	संभवनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बालावसही, शत्रुंजय	**शत्रुंजयवैभव,** लेखांक १६२.
४२.	१५१९	माघ सुदि ५ शनिवार	मुनिसुव्रत की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, ग्राम चवेली	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ८७.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४३.	१५१९	माघ सुदि १३ सोमवार	संभवनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	संभवनाथ देरासर, झवेरीवाड़, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक ८१४.
४४.	१५१९	"	"	आदिनाथ जिनालय, वासा	**अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेख-संदोह**, लेखांक ५३८.
४५.	१५१९	"	पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	दादाजी के बंगले में स्थित जिनालय, साहूकार पेट, मद्रास	**जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक २०७४.
४६.	१५१९	"	कुन्थुनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, बडनगर	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ५३९.
४७.	१५१९	माघ सुदि.....शुक्रवार	"	जैनमंदिर, जसोल, मारवाड़	**जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक १८८४.
४८.	१५१९	फाल्गुन सुदि ९....	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, गजलदेसर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह**, लेखांक २३५०.
४९.	१५१९	तिथिविहीन	देहरी पर उत्कीर्ण शिलालेख	देहरी नं० १०, वीर जिनालय, ब्राह्मणवाड़ा	**अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेख-संदोह**, लेखांक २८८.
५०.	१५२०	वैशाख सुदि ३	संभवनाथ की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पद्मप्रभ जिनालय, कडाकोटडी, खंभात	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक ५९५.
५१.	१५२०	ज्येष्ठ सुदि १३	सुविधिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अनुपूर्ति लेख, आबू	**अर्बुदप्राचीनजैनलेखसंदोह**, लेखांक ६४४.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५२.	१५२०	आषाढ़ सुदि २	मुनिसुव्रत की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, अचलगढ़	**जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक २०२४ एवं **अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेख-संदोह**, लेखांक ५०३.
५३.	१५२०	मार्गशीर्ष वदि ५ गुरुवार	आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, परा, खेड़ा	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक ४०८.
५४.	१५२०	,,	मुनिसुव्रत की धातु की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, कोलीयाक	**प्राचीनलेखसंग्रह**, लेखांक ३४२.
५५.	१५२०	,,	आदिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैन मंदिर, जूनीआ	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह**, लेखांक ६०५.
५६.	१५२०	मार्गशीर्ष सुदि ११ सोमवार	नमिनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अजितनाथ जिनालय, सिरोही	वही, लेखांक ६०६.
५७.	१५२०	मितिविहीन	नमिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	मुनिसुव्रत जिनालय, जामनगर	**प्राचीनलेखसंग्रह**, लेखांक ३५३.
५८.	१५२०	,,	वासुपूज्य की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	संभवनाथ देरासर, झवेरीवाड़, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ८३४.
५९.	१५२०	,,	कुन्थुनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सीमंधर स्वामी का देरासर, उपलो गभारो, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक ११६६.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६०.	१५२०	,,	विमलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, शांतिनाथ पोल, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक १२५८.
६१.	१५२०	,,	शीतलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, माणेक चौक, खंभात	वही, भाग २, लेखांक १०१५.
६२.	१५२०	,,	,,	वीरजिनालय, गोपटी	वही, भाग २, लेखांक ७०८.
६३.	१५२०	,,	श्रेयांसनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, नागौर	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ६०९.
६४.	१५२१	वैशाख सुदि ३	संभवनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि जी का मंदिर, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक १०२१.
६५.	१५२१	,,	सुमतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, वासा	**अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेख-संदोह**, लेखांक ५४०.
६६.	१५२१	,,	कुन्थुनाथ की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	विमलनाथ जिनालय, चौकसी-पोल, खंभात	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह-** भाग २, लेखांक ७८८.
६७.	१५२१	,,	संभवनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	नवपल्लव पार्श्वनाथ जिनालय, बोलपीपलो, खंभात	वही, भाग २, लेखांक १०९७.
६८.	१५२१	,,	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, जीराग्पाड़ो, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ७२४.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६९.	१५२१	,,	वासुपूज्य की धातु की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, चालीस गांव, महाराष्ट्र	**जैनधातुप्रतिमालेख,** लेखांक १८०.
७०.	१५२१	,,	मुनिसुव्रत की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	केशरियानाथ मंदिर, भिनाय	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ६१०.
७१.	१५२१	वैशाख सुदि १० रविवार	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, पुणे	**जैनधातुप्रतिमालेख,** लेखांक ३५८.
७२.	१५२१	ज्येष्ठ सुदि ४	,,	आदिनाथ जिनालय, जानीशेरी, बड़ोदरा	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक १४९.
७३.	१५२१	,,	धातु की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैन मंदिर, अमरावती	**जैनधातुप्रतिमालेख,** लेखांक १८२.
७४.	१५२१	ज्येष्ठ सुदि ४ गुरुवार	सुमतिनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पंचायती मंदिर, जयपुर	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ६१५.
७५.	१५२१	,,	चन्द्रप्रभ की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, हीरावाड़ी, नागौर	वही, लेखांक ६१४ एवं **जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक १३१४.
७६.	१५२१	,,	संभवनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	गौड़ीपार्श्वनाथ जिनालय, अजमेर	**जैनलेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ५३५.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७७.	१५२१	ज्येष्ठ सुदि.....?	पद्मप्रभ की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, साहूकार पेठ, मद्रास	वही, भाग २, लेखांक २०७६.
७८.	१५२१	ज्येष्ठ.....?	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जगवल्लभ पार्श्वनाथ देरासर, नीशापोल, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक १२२१.
७९.	१५२१	आषाढ़ सुदि ३ गुरुवार	नमिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बड़ा जैनमंदिर, नागौर	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ६१८.
८०.	१५२१	आषाढ़ सुदि ९	वासुपूज्य स्वामी की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अजितनाथ जिनालय, नानरवाड़ा	**अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेख-संदोह**, लेखांक ५२६.
८१.	१५२१	माघ वदि ५ शुक्रवार	सुविधिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, लींच	**प्राचीनलेखसंग्रह,** लेखांक ३५६.
८२.	१५२१	माघ सुदि १३ गुरुवार	आदिनाथ के परिकर के नीचे उत्कीर्ण लेख	जैन मंदिर, तेलपुर ग्राम	**अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेख-संदोह**, लेखांक २७६.
८३.	१५२१	,,	वासुपूज्य स्वामी की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, नांदिया	वही, लेखांक ४५९.
८४.	१५२१	,,	देहरी नं. २३ के दरवाजे पर उत्कीर्ण लेख	वीर जिनालय,ब्राह्मणवाड़ा	वही, भाग ५, लेखांक २९५.
८५.	१५२१	,,	शीतलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	मुनिसुव्रत जिनालय, लांबीशेरी, खेड़ा	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ४२८.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८६.	१५२१	,,	नमिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, रायपर	वही, भाग १, लेखांक ६२०.
८७.	१५२१	,,	शीतलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैन देरासर, बड़ोदरा	**प्राचीनलेखसंग्रह,** लेखांक ३५५.
८८.	१५२१	,,	नेमिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, नागौर	**जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक १२७२.
८९.	१५२१	,,	अभिनन्दन स्वामी की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बालावसही, शत्रुंजय	**शत्रुंजयवैभव,** लेखांक १६९.
९०.	१५२१	फाल्गुन सुदि ९	कुन्थुनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	मुनिसुव्रत देरासर, डभोई	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ६१.
९१.	१५२१	फाल्गुन सुदि १२	संभवनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बालावसही, शत्रुंजय	**शत्रुंजयवैभव,** लेखांक १७१.
९२.	१५२२	वैशाख सुदि ३	विमलनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वीर जिनालय,जोधपुर	**जैनलेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ५८९.
९३.	१५२२	आषाढ़ वदि ७ शनिवार	मुनिसुव्रत की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, नदियाड	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ३८२.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९४.	१५२२	कार्तिक वदि १	शीतलनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पद्मप्रभ जिनालय, पन्नीबाई का उपाश्रय, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक १८८०.
९५.	१५२२	पौष वदि १ गुरुवार	संभवनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	गौड़ीजी का मंदिर, उदयपुर	**प्राचीनलेखसंग्रह,** लेखांक ३६१.
९६.	१५२२	,,		जैन देरासर, डभोई	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक १६.
९७.	१५२२	माघ वदि ९, शनिवार	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ देरासर, ईडर	वही, भाग १, लेखांक १४७३.
९८.	१५२२	,,	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, कटाकोटडी, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ६०२.
९९.	१५२२	माघ सुदि १३	शीतलनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बालावसही, शत्रुंजय	**शत्रुंजयवैभव,** लेखांक १७२.
१००.	१५२२	,,	नमिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	ऋषभदेव जिनालय, डग	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ६२०.
१०१.	१५२२	फाल्गुन वदि ५ बुधवार	विमलनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, कोटा	वही, लेखांक ६२१.
१०२.	१५२२	फाल्गुन सुदि ८	सुमतिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पद्मप्रभ जिनालय, घाट	वही, लेखांक ६२४.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०३.	१५२२	तिथिविहीन	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ देरासर, ईडर	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक १४८०.
१०४.	१५२२	,,	मुनिसुव्रत की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, नदियाड	वही, भाग २, लेखांक ३९४.
१०५.	१५२३	वैशाख वदि ४ गुरुवार	धर्मनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बालावसही, शत्रुंजय	**शत्रुंजयवैभव,** लेखांक १७५.
१०६.	१५२३	,,	पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	नेमिनाथ का पंचायती बड़ा मंदिर, अजीमगंज	**जैनलेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक १४.
१०७.	१५२३	,,	वासुपूज्य की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, छाणी	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक २६५.
१०८.	१५२३	वैशाख वदि ७ रविवार	सुमतिनाथ की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सुमतिनाथ जिनालय, माधवलाल बाबू की धर्मशाला, पालीताना	**जैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक १७५१ एवं **प्राचीनलेखसंग्रह,** लेखांक ३७१.
१०९.	१५२३	,,	विमलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, परा, खेड़ा	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ४२०.
११०.	१५२३	वैशाख वदि १३	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	छोटा जिनालय, माणसा	वही, भाग १, लेखांक ४०७.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१११.	१५२३	वैशाख सुदि ३	मुनिसुव्रत की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	मुनिसुव्रत जिनालय, नाल	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक २२८०.
११२.	१५२३	वैशाख सुदि ३ सोमवार	विमलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वीर जिनालय, झवेरीवाड़ अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ८७१.
११३.	१५२३	वैशाख सुदि ३	सुमतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बालावसही, शत्रुंजय	**शत्रुंजयवैभव,** लेखांक १७६.
११४.	१५२३	,,	विमलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, भीलड़िया तीर्थ	**जैनप्रतिमालेखसंग्रह,** लेखांक ३५८.
११५.	१५२३	,,	नमिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, वेजलपुरा भरुच	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ३५७.
११६.	१५२३	,,	सुमतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, जानीशेरी, बड़ोदरा	वही, भाग २, लेखांक १४५.
११७.	१५२३	वैशाख सुदि ६	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, सादड़ी	**प्राचीनलेखसंग्रह,** लेखांक ३७४.
११८.	१५२३	,,	विमलनाथ की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, नितोड़ा	**अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेख-संदोह,** लेखांक ५१९.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११९.	१५२३	वैशाख सुदि १३	विमलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, जामनगर	**प्राचीनलेखसंग्रह,** लेखांक ३७२.
१२०.	१५२३	,,	वासुपूज्य की धातु प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ चैत्य, थराद	**जैनप्रतिमालेखसंग्रह,** लेखांक २४२.
१२१.	१५२३	,,	अभिनन्दन स्वामी की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, लेखांक १२८.
१२२.	१५२३	माघ वदि ३ शुक्रवार	वासुपूज्य स्वामी की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पंचायती जैनमंदिर, जयपुर	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ६३२.
१२३.	१५२३	माघ वदि ७	नमिनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ देरासर, सांणद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ६३९.
१२४.	१५२३	,,	मुनिसुव्रत की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	नेमिनाथ जिनालय, भोंयरापाड़ो, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ८८५.
१२५.	१५२३	माघ वदि ७ शनिवार	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बालावसही, शत्रुंजय	**शत्रुंजयवैभव,** लेखांक १७८.
१२६.	१५२३	माघ सुदि ५	धर्मनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	धर्मनाथ जिनालय, माणेकचौक, खंभात	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ९५३.
१२७.	१५२३	माघ सुदि ६ रविवार	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वीर जिनालय, सुंधीटोला, लखनऊ	**जैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक १५६९.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१२८.	१५२३	,,	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शीतलनाथ जिनालय, उदयपुर	**प्राचीनलेखसंग्रह,** लेखांक ३६७. एवं **जैनलेखसंग्रह**, भाग २. लेखांक १०१२.
१२९.	१५२३	,,	संभवनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	मुनिसुव्रत जिनालय, सैलाना	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ६३४.
१३०.	१५२३	,,	अभिनन्दन स्वामी की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक १०३२.
१३१.	१५२३	,,	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, महादनगंज, लखनऊ	**जैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक १६३३.
१३२.	१५२३	,,	मुनिसुव्रत की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक १०३३.
१३३.	१५२३	,,	सुविधिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	धर्मनाथ जिनालय, मडार	**अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेख-संदोह**, लेखांक ८५.
१३४.	१५२३	,,	धर्मनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, वासा	वही, लेखांक ५४१.
१३५.	१५२३	,,	आदिनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	विजयगच्छीय मंदिर, जयपुर	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ६३३.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१३६.	१५२३	,,	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	धर्मनाथ देरासर, दभोई	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ४८.
१३७.	१५२३	,,	कुन्थुनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैन मंदिर, ऊंझा	वही, भाग १, लेखांक १९७.
१३८.	१५२३	,,	श्रेयांसनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	नेमिनाथ जिनालय, वीसनगर	वही, भाग १, लेखांक ५२५.
१३९.	१५२३	माघ सुदि ११	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अजितनाथ देरासर, सुतारकी खड़की, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक १३४५.
१४०.	१५२३	माघ सुदि १३	शांतिनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, कोटा	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ६३५.
१४१.	१५२४	चैत्र वदि १ शुक्रवार	वासुपूज्य की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वीर जिनालय, रीजरोड, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक १४४.
१४२.	१५२४	वैशाख वदि ७ शुक्रवार	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सीमंधर स्वामी का देरासर, उपलो गभारो, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक ११६८.
१४३.	१५२४	,,	पद्मप्रभ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, चौकसीपोल, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ८४३.
१४४.	१५२४	वैशाख सुदि २	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ देरासर, देवसानो पाड़ो, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक १०५७.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१४५.	१५२४	वैशाख सुदि ३ सोमवार	सुमतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चौमुखजी देरासर, झवेरीवाड़, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक ८८०.
१४६.	१५२४	''	विमलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ देरासर, झवेरीवाड़, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक ९१४.
१४७.	१५२४	''	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	कल्याण पार्श्वनाथ देरासर, वीसनगर	वही, भाग १, लेखांक ५३२.
१४८.	१५२४	वैशाख सुदि ३	शीतलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	कल्याण पार्श्वनाथ जिनालय, वीसनगर	वही, भाग १, लेखांक ५२९.
१४९.	१५२४	''	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ देरासर, वीसनगर	वही, भाग १, लेखांक ५१७.
१५०.	१५२४	वैशाख सुदि ५ शनिवार	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, जीरारपाड़ो, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ७३०.
१५१.	१५२४	वैशाख सुदि १०	नमिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	खरतरगच्छीय आदिनाथ जिनालय, कोटा	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह**, लेखांक ६४३.
१५२.	१५२४	वैशाख सुदि १३	वासुपूज्य की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, पटना	**जैनलेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक २८३.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१५३.	१५२४	वैशाख सुदि.....?	शीतलनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	धर्मनाथ देरासर, बड़ा बाजार, कलकत्ता	वही, भाग १, लेखांक १०५.
१५४.	१५२४	,,	,,	वही	वही, भाग १, लेखांक १०६.
१५५.	१५२४	ज्येष्ठ सुदि ५	सुविधिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बांठियों का मंदिर, जयपुर	वही, भाग २, लेखांक १२०८ एवं **प्राचीनलेखसंग्रह,** लेखांक ३८४ तथा **प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ६४४.
१५६.	१५२४	आषाढ़ सुदि १० शुक्रवार	नमिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	संभवनाथ जिनालय, अजमेर	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ६४६ एवं **जैनलेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ५६०.
१५७.	१५२४	मार्गशीर्ष वदि २	सुविधिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ चैत्य, थराद	**जैनप्रतिमालेखसंग्रह,** लेखांक ९२.
१५८.	१५२४	मार्गशीर्ष सुदि....?	आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, चूड़ीवाली गली, लखनऊ	**जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक १५६०.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१५९.	१५२४	मार्गशीर्ष वदि ५ सोमवार	संभवनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, रामनिवास, गंगाशहर, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक २१८२.
१६०.	१५२४	माघ वदि ५ रविवार	पाषाण की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	भाभा पार्श्वनाथ देरासर, पाटण	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक २३९.
१६१.	१५२४	तिथिविहीन	नमिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	श्रेयांसनाथ जिनालय, फताशाह की पोल, अहमदाबाद	वही, भाग१, लेखांक १३८१.
१६२.	१५२५	वैशाख वदि १० शनिवार	धर्मनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अनन्तनाथ जिनालय,भरुच	वही, भाग २, लेखांक ३०२.
१६३.	१५२५	वैशाख सुदि ३	कुन्थुनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	नवपल्लव पार्श्वनाथ देरासर, बोलपीपलो, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ११०२.
१६४.	१५२५	वैशाख सुदि ३ सोमवार	मुनिसुव्रत की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि जी का मंदिर, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक १०३९.
१६५.	१५२५	,,	वासुपुज्य की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, मीयागाम	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक २९०.
१६६.	१५२५	वैशाख सुदि....	सुविधिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बावन जिनालय, पेथापुर	वही, भाग १, लेखांक ६८४.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१६७.	१५२५	”	अजितनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, डभोई	वही, भाग १, लेखांक ७०.
१६८.	१५२५	”	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैन मंदिर, ऊंझा	वही, भाग १, लेखांक १७७
१६९.	१५२५	वैशाख सुदि ६	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वासुपूज्य जिनालय, खारवाड़ो, खंभात	वही, भाग २, लेखांक १०८५.
१७०.	१५२५	आषाढ़ वदि ७	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	श्रेयांसनाथ देरासर, फताशाह की पोल, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक १३६४.
१७१.	१५२५	आषाढ़ सुदि	पद्मप्रभ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ५४२.
१७२.	१५२५	मार्गशीर्ष सुदि ९	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बावन जिनालय, उदयपुर	**जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक १९३.
१७३.	१५२५	मार्गशीर्ष सुदि १० शुक्रवार	चन्द्रप्रभ स्वामी की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सीमंधर स्वामी का देरासर, उपलोगभारो, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह**, लेखांक ११८८.
१७४.	१५२५	”	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ देरासर, देवसानो पाड़ो, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक ११००.
१७५.	१५२५	”	विमलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, शांतिनाथ-पोल, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक १२८९.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१७६.	१५२५	मार्गशीर्ष सुदि १०	वासुपूज्य की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	"	वही, भाग १, लेखांक १२७४.
१७७.	१५२५	"	शीतलनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सुमतिनाथ मुख्य बावन जिनालय, मातर	वही, भाग २, लेखांक ४७८.
१७८.	१५२५	"	आदिनाथ की धातु की चौबीसी जिन प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैन देरासर, सौदागर पोल, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक ८१०.
१७९.	१५२५	"	अजितनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	घर देरासर, बड़ोदरा	वही, भाग २, लेखांक २५२.
१८०.	१५२(५)	पौष वदि....?	वासुपूज्य की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि जी का मंदिर, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक १०४१-१०४२.
१८१.	१५२५	माघ वदि ६	नमिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ चैत्य, थराद	**जैनप्रतिमालेखसंग्रह,** लेखांक २१४.
१८२.	१५२५	"	अजितनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	मुनिसुव्रत जिनालय, मालपुरा	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ६७०.
१८३.	१५२५	"	अनन्तनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, माणेक चौक, खंभात	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ९१८.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१८४.	१५२५	माघ सुदि ९	पद्मप्रभ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	नवघरे का मंदिर, दिल्ली	**जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक ४८४.
१८५.	१५२५	फाल्गुन सुदि ७	विमलनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	धर्मनाथ जिनालय, मडार	**अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैन-लेखसंदोह**, लेखांक ८६.
१८६.	१५२५	,,	धर्मनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अनुपूर्ति लेख, आबू	**अर्बुदप्राचीनजैनलेखसंदोह**, लेखांक ६४७.
१८७.	१५२५	,,	संभवनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, लेखांक ६४८.
१८८.	१५२५	फाल्गुन सुदि ७ शनिवार	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैन मंदिर, ऊंझा	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक १५९.
१८९.	१५२५	,,	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, शांतिनाथ-पोल, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक १२८०.
१९०.	१५२५	,,	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जगवल्लभ पार्श्वनाथ देरासर, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक १२२८.
१९१.	१५२५	फाल्गुन सुदि ७	वासुपूज्य की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, परा, खेड़ा	वही, भाग २, लेखांक ४१८.
१९२.	१५२५	,,	श्रेयांसनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	धर्मनाथ जिनालय, उपलो गभारो, अहमदाबाद	वही, भाग २, लेखांक १११७.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१९३.	१५२५	तिथिविहीन	संभवनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, किशनगढ़	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ६७९.
१९४.	१५२५	,,	मुनिसुव्रत की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, मुंडावा	वही, लेखांक ६७८.
१९५.	१५२५	,,	कुन्थुनाथ की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, छाणी	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक २६०.
१९६.	१५२५	,,	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	धर्मनाथ जिनालय, जोधपुर	**जैनलेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ६२४.
१९७.	१५२५	,,	सुपार्श्वनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	नेमिनाथ जिनालय, हींगमण्डी, आगरा	वही, भाग १, लेखांक १४८५.
१९८.	१५२५	,,	,,	संभवनाथ देरासर, पादरा	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक १८.
१९९.	१५२६	वैशाख सुदि १२ रविवार	नेमिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शीतलनाथ जिनालय, माणिक तल्ला, कलकत्ता	**जैनलेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक १२५.
२००.	१५२६	वैशाख सुदि ५	सुमतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बालावसही, शत्रुंजय	**शत्रुंजयवैभव,** लेखांक १८९.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२०१.	१५२६	वैशाख सुदि ६ सोमवार	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, भिण्डीबाजार, मुम्बई	**जैनधातुप्रतिमालेख,** लेखांक १९९.
२०२.	१५२६	आषाढ़ सुदि ९ रविवार	कुन्थुनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	नवखण्डा पार्श्वनाथ जिनालय, भोंयरापाड़ो, खंभात	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २,लेखांक ८७२.
२०३.	१५२६	पौष वदि १ सोमवार	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ देरासर, मांडल	**प्राचीनलेखसंग्रह,** लेखांक ४०४.
२०४.	१५२६	तिथिविहीन	विमलनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ देरासर, छांणी,	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक २६४.
२०५.	१५२७	वैशाख सुदि ८	कुन्थुनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	कुन्थुनाथ प्रासाद, अचलगढ़	**अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैन.....** लेखांक ४९१.
२०६.	१५२७	ज्येष्ठ वदि.....?	नमिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, परा, खेड़ा	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग२, लेखांक ४२५.
२०७.	१५२७	ज्येष्ठ वदि १०	कुन्थुनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	मुनिसुव्रत जिनलय, मालपुरा	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ६८६.
२०८.	१५२७	ज्येष्ठ.....?	सुमतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक १०५०.
२०९.	१५२७	पौष वदि १ सोमवार	शीतलनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, दाहोद	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ६९०.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२१०.	१५२७	,,	संभवनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ देरासर, शांतिनाथ पोल, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक १३१७.
२११.	१५२७	पौष वदि ५ शुक्रवार	विमलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	,,	वही, भाग १, लेखांक १२९६.
२१२.	१५२७	,,	कुन्थुनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख		**जैनलेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ३९८.
२१३.	१५२७	पौष सुदि १२	नमिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि जी का मंदिर, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह**, लेखांक १०५२.
२१४.	१५२७	माघ वदि १	शीतलनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, वासा	**अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेख-संदोह**, लेखांक ५४२.
२१५.	१५२७	माघ वदि ५ गुरुवार	संभवनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ चैत्य, थराद	**जैनप्रतिमालेखसंग्रह,** लेखांक १५१.
२१६.	१५२७	माघ वदि ५	विमलनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, नाहटों में, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक १४४१.
२१७.	१५२७	माघ वदि ७	धर्मनाथ की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, चामुडेरी	**अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेख-संदोह**, लेखांक ३३८.
२१८.	१५२७	,,	नमिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, कोचरों का चौक, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक १६००.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२१९.	१५२७	माघ सुदि १३	सुमतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	गोपों का उपाश्रय, बाड़मेर	**जैनलेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ७३९.
२२०.	१५२७	तिथिविहीन	श्रेयांसनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, सांडेसर	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ४७५.
२२१.	१५२७	,,	,,	आदिनाथ जिनालय, नागौर	**जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक १२७९.
२२२.	१५२८	वैशाख सुदि ३	नमिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदीश्वर जिनालय, मेड़ता सिटी	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह**, लेखांक ७०४.
२२३.	१५२८	वैशाख सुदि ३ रविवार	शीतलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अजितनाथ जिनालय, गोपटी, खंभात	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक ७१८.
२२४.	१५२८	,,	विमलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	मनमोहन पार्श्वनाथ देगमर, पाटण	वही, भाग १, लेखांक २५०.
२२५.	१५२८	वैशाख सुदि ३	मुनिसुव्रत की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, नाहटों में, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह**, लेखांक १५०७.
२२६.	१५२८	वैशाख सुदि ३ शनिवार	संभवनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बालावसही, शत्रुंजय	**शत्रुंजयवैभव**, लेखांक १९३.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२२७.	१५२८	ज्येष्ठ वदि ११	विमलनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अनुपूर्ति लेख, आबू	**अर्बुदप्राचीनजैनलेखसंदोह,** लेखांक ६४९.
२२८.	१५२८	ज्येष्ठ सुदि ८	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	मूर्तियों का पुराना कोठा, शत्रुंजय	**शत्रुंजयवैभव,** लेखांक १९७.
२२९.	१५२८	माघ वदि ४	सुविधिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ देरासर, उपलो गभारो, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ११४२.
२३०.	१५२८	माघ वदि ५	मुनिसुव्रत की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, नांदिया	**अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेख-संदोह**, लेखांक ४६१.
२३१.	१५२८	”	संभवनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, जीरारपाड़ो, खंभात	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ७४७.
२३२.	१५२८	माघ सुदि १३	संभवनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बालावसही, शत्रुंजय	**शत्रुंजयवैभव,** लेखांक १९५.
२३३.	१५२८	फाल्गुन वदि १३	शांतिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, बगीची, मेड़तासिटी	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ७११.
२३४.	१५२८	”	अम्बिका की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अमीझरा पार्श्वनाथ देरासर, जीरारवाड़ो, खंभात	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ७५६.
२३५.	१५२८	फाल्गुन सुदि ७	पद्मप्रभ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	मुनिसुव्रत जिनालय, अलिंग, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ८५२.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२३६.	१५२८	फाल्गुन सुदि १० बुधवार	धर्मनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, लेखांक ८५३.
२३७.	१५२९	वैशाख वदि ४ शुक्रवार	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	संभवनाथ देरासर, पादरा	वही, भाग २, लेखांक १९.
२३८.	१५२९	"	कुन्थुनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, सेठों की हवेली के पास, उदयपुर	**जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक १९०२.
२३९.	१५२९	वैशाख सुदि ३ शुक्रवार	नमिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, ऊंझा	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक १८४.
२४०.	१५२९	ज्येष्ठ वदि ७ गुरुवार	पद्मप्रभ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, कोठीपोल, बड़ोदरा	वही, भाग २, लेखांक ५९.
२४१.	१५२९	आषाढ़ सुदि २ सोमवार	मुनिसुव्रत की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ देरासर, भरुच	वही, भाग २, लेखांक ३०९.
२४२.	१५२९	माघ सुदि ६	धातु की जिनप्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, नौहर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक २४७७.
२४३.	१५२९	फाल्गुन वदि ३ सोमवार	सुविधिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	कल्याण पार्श्वनाथ देरासर, मामा की पोल, बड़ोदरा	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ३६.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२४४.	१५२९	"	मुनिसुव्रत की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सेठ नरसीनाथा का मंदिर, पालीताना	**जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक ६६३.
२४५.	१५२९	"	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	गौड़ी पार्श्वनाथ जिनालय, पालीताना	**शत्रुंजयवैभव,** लेखांक १९८.
२४६.	१५२९	"	धर्मनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	नवखंडा पार्श्वनाथ देरासर, घोघा	**प्राचीनलेखसंग्रह**, लेखांक ४२२.
२४७.	१५२९	"	शांतिनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, नांदिया	**अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेख-संदोह**, लेखांक ४६२.
२४८.	१५३०	वैशाख सुदि ३	मुनिसुव्रत की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बड़ा जैनमंदिर, नागौर	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ७१८. एवं **जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक १२८२.
२४९.	१५३०	श्रावण वदि ६	संभवनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जूनावेड़ा, मारवाड़	**जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक ९२४.
२५०.	१५३०	माघ वदि १	आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बालावसही, शत्रुंजय	**शत्रुंजयवैभव,** लेखांक २०२.
२५१.	१५३०	माघ वदि २	नमिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सुपार्श्वनाथ जिनालय, जयपुर	**जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक ११६०.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२५२.	१५३०	"	श्रेयांसनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, पग, खेड़ा	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ४१६.
२५३.	१५३०	माघ वदि ६	संभवनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	महावीर जिनालय, नाणा	**प्राचीनजैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ४११ एवं **अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेख-संदोह**, लेखांक ३५६.
२५४.	१५३०	माघ वदि १० बुधवार	मुनिसुव्रत की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, आमेर	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ७२७
२५५.	१५३०	माघ सुदि ४ शुक्रवार	नमिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, जीरापाड़ो, खंभात	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ७४५.
२५६.	१५३०	"	संभवनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, कठगोला, मुर्शिदाबाद	**जैनलेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ७०.
२५७.	१५३०	"	शांतिनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बड़ा मंदिर, नागौर	वही, भाग २, लेखांक १२८३ एवं **प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ७२८.
२५८.	१५३०	फाल्गुन सुदि २	मुनिसुव्रत की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	नवघरे का मंदिर, दिल्ली	**जैनलेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ४८५.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२५९.	१५३०	फाल्गुन सुदि ७	महावीर की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि जी का मंदिर, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक १०६७.
२६०.	१५३१	ज्येष्ठ सुदि २ रविवार	नमिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, चौकसी-पोल, खंभात	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ८३६.
२६१.	१५३१	ज्येष्ठ सुदि ३	सुमतिनाथ की देवकुलिका पर उत्कीर्ण लेख	पित्तलहर, आबू	**अर्बुदप्राचीनजैनलेखसंदोह,** लेखांक ४२८.
२६२.	१५३१	मार्गशीर्ष सुदि ५ सोमवार	मुनिसुव्रत की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शीतलनाथ जिनालय, गिणी,	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक २४४९.
२६३.	१५३१	माघ वदि ८ सोमवार	धर्मनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि जी का मंदिर, बीकानेर	वही, लेखांक १०६८.
२६४.	१५३१	,,	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, बीजापुर	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ४३८.
२६५.	१५३१	माघ सुदि ५ शुक्रवार	मुनिसुव्रत की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वीर जिनालय, खारवाड़ो, खंभात	वही, भाग २, लेखांक १०३५.
२६६.	१५३१	माघ सुदि.....?	सुमतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	गौड़ी पार्श्वनाथ जिनालय, पालीताना	**शत्रुंजयवैभव,** लेखांक २१०.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२६७.	१५३१	तिथिविहीन	धर्मनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	संभवनाथ देरासर, झवेरीवाड़, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ८३८.
२६८.	१५३२	वैशाख सुदि ३	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, जानीशेरी, बड़ोदरा	वही, भाग २, लेखांक १५१.
२६९.	१५३२	,,	नमिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	नवखंडा पार्श्वनाथ जिनालय, भोंयरापाड़ो, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ८७३.
२७०.	१५३२	,,	अभिनन्दन स्वामी की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, ऊंडीपोल, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ६७७.
२७१.	१५३२	वैशाख सुदि १२ गुरुवार	शांतिनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सुमतिनाथ जिनालय, मेड़ा	**अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेख-संदोह**, लेखांक २२५.
२७२.	१५३२	वैशाख सुदि १५	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ देरासर, देवसानो पाड़ो, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक १०५९.
२७३.	१५३२	ज्येष्ठ वदि ३ रविवार	विमलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ चैत्य, थराद	**जैनप्रतिमालेखसंग्रह,** लेखांक २३६.
२७४.	१५३२	ज्येष्ठ वदि १३	सुविधिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणिपार्श्वनाथ जिनालय, मेड़ता सिटी	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ७५० एवं **जैनलेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ७७७.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२७५.	१५३२	ज्येष्ठ सुदि २ रविवार	संभवनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अनुपूर्ति लेख, आबू	**अर्बुदप्राचीनजैनलेखसंदोह,** भाग २, लेखांक ६५१.
२७६.	१५३२	कार्तिक सुदि ९	वासुपूज्य की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, वासा	**अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेख-**संदोह, लेखांक ५४३.
२७७.	१५३२	,,	मुनिसुव्रत की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, लेखांक ५४४.
२७८.	१५३२	,,	आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, लेखांक ५४५.
२७९.	१५३२	तिथिविहीन	शीतलनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अनुपूर्ति लेख, आबू	वही, लेखांक ६५२.
२८०.	१५३२	,,	संभवनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	विमलनाथ जिनालय, सवाईमाधोपुर	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ७५२.
२८१.	१५३२	वैशाख वदि ४	वासुपूज्य स्वामी की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	घरदेरासर, चावलगोला, मुर्शिदाबाद	**जैनलेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ५८.
२८२.	१५३२	वैशाख वदि ११	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, जामनगर	**प्राचीनलेखसंग्रह,** लेखांक ४५४.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२८३.	१५३३	वैशाख सुदि ३	नमिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वीर जिनालय, माणेकचौक, खंभात	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ९६५.
२८४.	१५३३	वैशाख सुदि १२ गुरुवार	कुन्थुनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अस्पष्ट	**जैनलेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ३९९.
२८५.	१५३३	,,	धर्मनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	माणिकसागर जी का मंदिर, कोटा	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ७५५.
२८६.	१५३३	,,	,,	धर्मनाथ जिनालय, मडार	**अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेख-संदोह**, लेखांक ८८.
२८७.	१५३३	,,	विमलनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि जी का मंदिर, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक १०७७.
२८८.	१५३३	वैशाख सुदि१५ सोमवार	शीतलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, जामनगर	**प्राचीनलेखसंग्रह,** लेखांक ४५५.
२८९.	१५३३	पौष वदि१०गुरुवार	सुमतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सुपार्श्वनाथ जिनालय, जैसलमेर	**जैनलेखसंग्रह**, भाग ३, लेखांक २१९४.
२९०.	१५३३	,,	नमिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अष्टापद जी का मंदिर, जैसलमेर	वही, भाग ३, लेखांक २१७३ एवं **बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक २७२७.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२९१.	१५३३	,,	मुनिसुव्रत की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अजितनाथ देरासर, सुतारकी खड़की, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक १३५१.
२९२.	१५३३	पौष सुदि २	,,	मुनिसुव्रत जिनालय, सांडेसर	वही, भाग १, लेखांक ४८०.
२९३.	१५३३	पौष पूर्णिमा सोमवार	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, लींबड़ीपाड़ा, पाटण	वही, भाग १, लेखांक २८२.
२९४.	१५३३	माघ वदि १०	,,	पार्श्वनाथ देरासर, देवसानो पाड़ो, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक ११०५.
२९५.	१५३३	,,	अभिनन्दन स्वामी की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	कुन्थुनाथ देरासर, वडनगर	वही, भाग १, लेखांक ५७१.
२९६.	१५३३	माघ वदि १०गुरुवार	नमिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, ऊंझा	वही, भाग १, लेखांक २०६.
२९७.	१५३३	,,	मुनिसुव्रत की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ देरासर, ईडर	वही, भाग १, लेखांक १४७८.
२९८.	१५३३	माघ सुदि६सोमवार	सुमतिनाथ की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सोमपार्श्वनाथ जिनालय, संघवीपाड़ा, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ७७७.
२९९.	१५३३	फाल्गुन...९....?	वासुपूज्य की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अनुपूर्ति लेख, आबू	**अर्बुदप्राचीनजैनलेखसंदोह**, लेखांक ६५४.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३००.	१५३३	फाल्गुन वदि९...?	पद्मप्रभ की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	मुनिसुव्रत जिनालय, मालपुरा	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ७६६.
३०१.	१५३३	तिथिनष्ट	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, वासा	**अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेख-संदोह**, लेखांक ५४६.
३०२.	१५३४	चैत्र वदि२गुरुवार	शांतिनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	खरतरगच्छीय आदिनाथ जिनालय, कोटा	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ७६८.
३०३.	१५३४	चैत्र वदि९शनिवार	शीतलनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक १०७८.
३०४.	१५३४	वैशाख वदि ८	वासुपूज्य की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, लेखांक १०७९.
३०५.	१५३४	वैशाख वदि १०	सुमतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	संभवनाथ जिनालय, जैसलमेर	**जैनलेखसंग्रह**, भाग ३, लेखांक २३५३.
३०६.	१५३४	,,	,,	जैनमंदिर, ऊंझा	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक १९६.
३०७.	१५३४	ज्येष्ठ सुदि १०	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ चैत्य, थराद	**जैनप्रतिमालेखसंग्रह,** लेखांक ३८.
३०८.	१५३४	आषाढ़ वदि२सोमवार	सुविधिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, वासा	**अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेख-संदोह**, लेखांक ५४८.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३०९.	१५३४	आषाढ़ वदि ९	नमिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक १०८२.
३१०.	१५३४	पौष वदि १०	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ चैत्य, थराद	**जैनप्रतिमालेखसंग्रह,** लेखांक १३५.
३११.	१५३४	माघ सुदि १०	,,	आदिनाथ जिनालय, नागौर	**जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक १२९१.
३१२.	१५३४	माघ सुदि१०सोमवार	शीतलनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, चौकसी पोल, खंभात	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ८४५.
३१३.	१५३४	फाल्गुन सुदि २	,,	सुपार्श्वनाथ का पंचायती बड़ा मंदिर, जयपुर	**जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक ११६४.
३१४.	१५३४	मितिविहीन	संभवनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सुमतिनाथ जिनालय, नागौर	वही, भाग २, लेखांक १३१९ एवं **प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ७८४.
३१५.	१५३४	,,	धर्मनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	संभवनाथ जिनालय, बालूचर, मुर्शिदाबाद	**जैनलेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ५३.
३१६.	१५३४	.....सुदि ३	धर्मनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, बालूचर मुर्शिदाबाद	वही, भाग १, लेखांक ३६.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३१७.	१५३४	आषाढ़ सुदि ६ शुक्रवार	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	गौड़ीपार्श्वनाथ जिनालय, अजमेर	वही, भाग१, लेखांक ५७०.
३१८.	१५३५	पौष वदि ९	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, वजाणा	**प्राचीनलेखसंग्रह,** लेखांक ४५९.
३१९.	१५३५	,,	,,	बालावसही, शत्रुंजय	**शत्रुंजयवैभव,** लेखांक २१७.
३२०.	१५३५	पौष सुदि१बुधवार	शीतलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, ऊंझा	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक १५३.
३२१.	१५३५	माघ वदि ५ गुरुवार	कुन्थुनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ देरासर, देवासानो पाड़ो अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक १०९५.
३२२.	१५३५	माघ वदि ९ शनिवार	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणिपार्श्वनाथ जिनालय, मुंधीटोला, लखनऊ	**जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक १५८९.
३२३.	१५३५	,,	संभवनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	संभवनाथ देरासर, जैसलमेर	वही, भाग ३, लेखांक २३९५.
३२४.	१५३५	,,	अभिनंदन स्वामी की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, ग्राम गांभू	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ७३.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३२५.	१५३५	"	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, भीलड़िया तीर्थ	**जैनप्रतिमालेखसंग्रह,** लेखांक ३३५.
३२६.	१५३५	माघ सुदि ५ गुरुवार	संभवनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	कुन्थुनाथ देरासर, वडनगर	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ५७९.
३२७.	१५३५	"	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	धर्मनाथ जिनालय, मडार	**अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेख-संदोह**, लेखांक ९०.
३२८.	१५३५	"	अनन्तनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	संभवनाथ देरासर, जैसलमेर	**जैनलेखसंग्रह**, भाग ३, लेखांक २३५६.
३२९.	१५३५	"	श्रेयांसनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, हरसूली	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह**, लेखांक ७९०.
३३०.	१५३५	"	संभवनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, नाहटों में, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक १८२६.
३३१.	१५३५	"	अरनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	वही, लेखांक १०९२.
३३२.	१५३५	माघ सुदि ५	नमिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	संभवनाथ जिनालय, देशनोक	वही, लेखांक २२२०.
३३३.	१५३५	माघ सुदि १०	शीतलनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि जी का मंदिर, बीकानेर	वही, लेखांक १०९४.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३३४.	१५३५	,,	,,	चन्द्रप्रभ जिनालय, वेगाणियों का चौक, बीकानेर	वही, लेखांक १६४९.
३३५.	१५३५	फाल्गुन सुदि ८	संभवनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	प्राचीन जैन मंदिर, लींबड़ी	**प्राचीनलेखसंग्रह,** लेखांक ४६१.
३३६.	१५३६	ज्येष्ठ सुदि ५	कुन्थुनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणिपार्श्वनाथ जिनालय, रतलाम	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ७९५.
३३७.	१५३६	,,	आदिनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	श्रीस्वामीजी का मंदिर, रोशन-मुहल्ला, आगरा	**जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक १४६५.
३३८.	१५३६	ज्येष्ठ सुदि ११	,,	चन्द्रप्रभ जिनालय, सुल्तानपुरा, बड़ोदरा	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** लेखांक २०६.
३३९.	१५३६	कार्तिक सुदि २	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, हद्राणा	**अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेख-संदोह**, लेखांक २०२.
३४०.	१५३६	माघ सुदि ५	वासुपूज्य की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	विमलनाथ जिनालय, सवाई माधोपुर	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ८०२.
३४१.	१५३६	,,	चन्द्रप्रभ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, चेलपुरी, दिल्ली	**जैनलेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ४४६.
३४२.	१५३६	माघ सुदि ८	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, ऊंझा	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक २०४.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३४३.	१५३६	फाल्गुन सुदि १२	नमिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जगतसेठ का मंदिर, महिमापुर	**जैनलेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ७३.
३४४.	१४३६	तिथिविहीन	आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अनुपूर्तिलेख, आबू	**अर्बुदाचलप्राचीनजैनलेख-**संदोह, लेखांक ६५६.
३४५.	१५३७	वैशाख वदि२ सोमवार	शीतलनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अजितनाथ देरासर, सुगनजी का उपाश्रय, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक १६६५.
३४६.	१५३७	वैशाख वदि ९	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	श्रेयांसनाथ जिनालय, हिंडोन	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ८०८.
३४७.	१५३७	वैशाख सुदि ३	,,	शांतिनाथ देरासर, शेखनो पाडो, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह**, भाग१, लेखांक १०२३.
३४८.	१५३७	वैशाख सुदि५ बुधवार	कुन्थुनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	उपकेशगच्छीय शांतिनाथ जिनालय, मेड़ता सिटी	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ८११.
३४९.	१५३७	,,	सुमतिनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सेठ चांदमल का देरासर, जैसलमेर	**जैनलेखसंग्रह**, भाग ३, लेखांक २४६६.
३५०.	१५३७	वैशाख सुदि १० सोमवार	वासुपूज्य की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	नवघरे का मंदिर, दिल्ली	वही, भाग १, लेखांक ४८९.
३५१.	१५३७	,,	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पोरवालों का मंदिर, पूना	**जैनधातुप्रतिमालेख,** लेखांक ४७४.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३५२.	१५३७	,,	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैन देरासर, डभोई	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ३४.
३५३.	१५३७	,,	संभवनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, मियागाम	वही, भाग २, लेखांक २२१.
३५४.	१५३७	ज्येष्ठ वदि ७	पद्मप्रभ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	महावीर स्वामी का मंदिर, डागों में, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक १५३८.
३५५.	१५३७	ज्येष्ठ वदि ८शनिवार	सुविधिनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सुमतिनाथ जिनालय, मेड़ा	**अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेख-संदोह**, लेखांक ३२७.
३५६.	१५३७	ज्येष्ठ वदि ११	शीतलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शीतलनाथ जिनालय, कड़ा-कोटड़ी, खंभात	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ६१२.
३५७.	१५३७	,,	,,	जैन देरासर, कोलवड़ा	वही, भाग१,लेखांक ६६१.
३५८.	१५३७	ज्येष्ठ सुदि २सोमवार	अजितनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ चैत्य, थराद	**जैनप्रतिमालेखसंग्रह,** लेखांक १६७.
३५९.	१५३७	पौष वदि१०गुरुवार	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, चौकसीपोल, खंभात	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ८१४.
. .	१५३७	माघ सुदि २सोमवार	शीतलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, जामनगर	**प्राचीनलेखसंग्रह,** लेखांक ४७३.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३६१.	१५३८	वैशाख सुदि३	सुविधिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, शेखनो पाड़ो, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक १०२१.
३६२.	१५३९	वैशाख सुदि३ गुरुवार	शीतलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, उपलोगभारो, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक ११३३.
३६३.	१५४०	वैशाख सुदि ३	शांतिनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, हद्राणा	**अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेख-**संदोह, लेखांक २०३.
३६४.	१५४०	वैशाख....३....?	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, ऊंझा	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक १७९.
३६५.	१५४०	वैशाख सुदि ७	''	बालावसही, शत्रुंजय	**शत्रुंजयवैभव,** लेखांक २२५.
३६६.	१५४०	ज्येष्ठ सुदि२ सोमवार	शिलालेख	सुविधिनाथ जिनालय, पित्तलहर, आबू	**अर्बुदप्राचीनजैनलेखसंदोह,** लेखांक ४३२.
३६७.	१५४०	माघ सुदि १३ रविवार	कुन्थुनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	नेमिनाथ जिनालय, भोयरापाड़ो, खंभात	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ८८८.
३६८.	१५४१	माघ सुदि१२	धर्मनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, रेजीडेंसी बाजार, हैदराबाद	**जैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक २०५४.
३६९.	१५४१	फाल्गुन सुदि३ गुरुवार	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, मेड़तारोड	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ८२७.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३७०.	१५४१	मितिविहीन	संभवनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, मांडल	**प्राचीनलेखसंग्रह,** लेखांक ४८०.
३७१.	१५४१	तिथिविहीन	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पद्मावती का मंदिर, बीजापुर	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ४२७.
३७२.	१५४२	वैशाख सुदि १० गुरुवार	नमिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ देरासर, शांतिनाथ पोल, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक १३२८.
३७३.	१५४२	वैशाख सुदि १३	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, दंताल पोल, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ६६४.
३७४.	१५४२	माघ सुदि १० रविवार	आदिनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, नागपुर	**जैनधातुप्रतिमालेख,** लेखांक २४१.
३७५.	१५४२	फाल्गुन वदि २	धर्मनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शीतलनाथ जिनालय, उदयपुर	**प्राचीनलेखसंग्रह,** लेखांक ४८१ एवं **जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक ११००.
३७६.	१५४२	फाल्गुन वदि ८ शनिवार	विमलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, सीनोर	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ३६९.
३७७.	१५४२	मितिविहीन	नेमिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, किशनगढ़	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ८३४.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३७८.	१५४३	वैशाख सुदि१गुरुवार	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, सूरत	**प्राचीनलेखसंग्रह,** लेखांक ४८८.
३७९.	१५४३	फाल्गुन वदि८ शनिवार	धातु की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, शाहपुर, मुंबई	**जैनधातुप्रतिमालेख,** लेखांक २४६.
३८०.	१५४३	,,	शीतलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	महावीर जिनालय, खेड़ा	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ४३९.

इसके अतिरिक्त मुनि विशालविजय द्वारा संपादित **राधनपुरप्रतिमालेखसंग्रह** में वि०सं० १५१९ से १५३६ तक; **जैनसत्यप्रकाश**, वर्ष २ में वि०सं० १५२१-१५४१ तक, वर्ष ३ में वि०सं० १५१७ से १५३१ तक और वर्ष ११ में वि०सं० १५२० से १५२३ तक के इनके विभिन्न प्रतिमा लेख प्रकाशित हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुमतिसाधुसूरि - लक्ष्मीसागरसूरि के निधन के पश्चात् सुमतिसाधुसूरि तपागच्छ के ५४वें पट्टधर बने। एक पट्टावली के अनुसार वि०सं० १४९४ में इनका जन्म हुआ, वि०सं० १५११ में इन्होंने आचार्य रत्नशेखरसूरि से दीक्षा ग्रहण की। वि०सं० १५१८ में आचार्य लक्ष्मीसागरसूरि ने इन्हें आचार्य पद प्रदान किया और वि०सं० १५५१ में इनका निधन हुआ।[३६] इनके द्वारा रचित **सोमसौभाग्यकाव्य**[३७] और **दशवैकालिक लघुटीका**[३८] नामक कृतियाँ प्राप्त होती हैं। **सोमसौभाग्यकाव्य** में आचार्य सोमसुन्दरसूरि का जीवनचरित्र वर्णित है। लावण्यसमय गणि द्वारा रचित **सुमतिसाधुविवाहलो**[३९] (रचनाकाल वि०सं० की १६वीं शताब्दी का मध्य) से इनके बारे में जानकारी प्राप्त होती है। सुमतिसाधुसूरि द्वारा प्रतिष्ठापित कुछ जिनप्रतिमायें भी प्राप्त हुई हैं जो वि०सं०१५३७ से वि०सं० १५४८ तक की हैं। इनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमांक	वि० सं०	तिथि/मिति/वार	लेख का स्वरूप प्रतिमालेख/शिलालेख	वर्तमान प्राप्ति स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१.	१५३७	वैशाख सुदि १०	सुविधिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, परा, खेड़ा	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ४२३.
२.	१५४३	वैशाख सुदि ....?	धर्मनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वीर जिनालय, वैदों का चौक, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक १२२५.
३.	१५४४	वैशाख सुदि ३	कुन्थुनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पंचायती मंदिर, जयपुर	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ८३७.
४.	१५४४	"	अनन्तनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	छोटा जिनालय, माणसा	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह** भाग १, लेखांक ४१५.
५.	१५४४	वैशाख सुदि१५ रविवार	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, सांभर	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ८३८.
६.	१५४५	वैशाख सुदि ९	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	नवघरे का मंदिर, दिल्ली	**जैनलेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ४९०.
७.	१५४५	ज्येष्ठ वदि११ रविवार	पद्मप्रभ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, हद्राणा	**अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेख-संदोह,** लेखांक २०४.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८.	१५४६	माघ सुदि ३शनिवार	संभवनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सुमतिनाथ मुख्य बावन जिनालय, मातर	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ४८१.
९.	१५४६	,,	कुन्थुनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ देरासर, शांतिनाथ पोल, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक १३२६.
१०.	१५४६	माघ सुदि१३रविवार	अरनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ देरासर, करवटीया	वही, भाग १, लेखांक ४९४.
११.	१५४६	फाल्गुन वदि१० रविवार	आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वासुपूज्य जिनालय, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक १३९६.
१२.	१५४७	वैशाख वदि ५	नमिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	मुनिसुव्रत जिनालय, जामनगर	**प्राचीनलेखसंग्रह,** लेखांक ५००.
१३.	१५४७	वैशाख सुदि३ सोमवार	संभवनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैन मंदिर, नेमुभाई का बाड़ा, सूरत	वही, लेखांक ४९९
१४.	१५४७	,,	अम्बिका की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, खंभात	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ५५३.
१५.	१५४७	माघ वदि १३	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पद्मावती का मंदिर, बीजापुर	वही, भाग १, लेखांक ४२८.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१६.	१५४७	माघ सुदि१३ रविवार	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	उपकेशगच्छीय शांतिनाथ जिनालय, मेड़ता सिटी	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ८४७.
१७.	१५४७	,,	धातु की जिन प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ देरासर, देवसानो पाड़ो, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक १०७४.
१८.	१५४८	,,	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अजितनाथ जिनालय, गोपटी, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ७१५.
१९.	१५४७	,,	विहरमान तीर्थंकर विशालनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, कड़ाकोटडी, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ६१४.
२०.	१५४७	,,	कुन्थुनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	संभवनाथ जिनालय, बोलपीपली, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ११४९.
२१.	१५६(४)७	,,	धातु की जिन प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, भरुच	वही, भाग २, लेखांक ३१६.
२२.	१५४७	,,	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	मुनिसुव्रत जिनालय, भरुच	वही, भाग २, लेखांक ३५२.
२३.	१५४७	,,	नेमिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	भीड़भंजन पार्श्वनाथ जिनालय, खेड़ा	वही, भाग २, लेखांक ४५४.
२४.	१५४७	,,	शीतलनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ देरासर, देवसानो पाड़ो, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक १०८८.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२५.	१५४७	"	अभिनंदन स्वामी की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	नया आदिनाथ जिनालय, नागपुर	**जैनधातुप्रतिमालेख,** लेखांक २५१.
२६.	१५४७	माघ सुदि....रविवार	विहरमान जिनप्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शीतलनाथ जिनालय, रिणी, तारानगर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक २४४५.
२७.	१५४७	तिथिविहीन	शिलालेख	सुविधिनाथ जिनालय, पित्तलहर, आबू	**अर्बुदप्राचीनजैनलेखसंदोह,** लेखांक ४३९.
२८.	१५४७	"	शीतलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ देरासर, झवेरीवाड़, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ९०३
२९.	१५४८	वैशाख सुदि...गुरुवार	"	सीमंधरस्वामी का देरासर, उपलो गभारो, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक ११५.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आचार्य सुमतिसाधुसूरि के वि०सं० १५५१/ई०स० १४९५ में निधन के पश्चात् हेमविमलसूरि तपागच्छ के ५५वें पट्टधर बने। इनके जीवन के बारे में विभिन्न साहित्यिक साक्ष्यों से जानकारी प्राप्त होती है। इनका विवरण इस प्रकार है :

१. **वीरवंशावली**[४०]
२. **लघुपौशालिकपट्टावली**[४१]
३. **हेमविमलफागु**[४२] रचनाकार-दानवर्धन के शिष्य मुनि हंसधीर;
रचनाकाल - वि०सं० १५५४/ई०स० १४९८
४. **हेमविमलसूरिसज्झाय**[४३] रचनाकार - अज्ञात
रचनाकाल - वि०सं० १५८३ से पूर्व
५. **हेमविमलसूरिसज्झाय**[४४] रचनाकार - सुन्दरहंस
६. **गच्छनायकपट्टावलीसज्झाय**[४५] रचनाकार-सोमविमल
रचनाकाल - वि०सं० १६०२/ई०स० १५४६
७. **तपागच्छपट्टावलीसूत्र**[४६] रचनाकार- धर्मसागर उपाध्याय
रचनाकाल - वि०सं० १६४६/ई०स० १५९०
८. **महावीरपट्टपरम्परा**[४७] रचनाकार-देवविमल गणि
रचनाकाल-वि०सं० १६३९-१६५६ के मध्य
९. **सूरिपरम्परा**[४८] रचनाकार-विनयविजय
रचनाकाल-वि०सं० १७०८/ई०स० १६५२
१०. **पट्टावलीसारोद्धार**[४९] रचनाकार-रविवर्धन
रचनाकाल-वि०सं० १७३९/ई०स० १६८३
११. **गुरुपट्टावली**[५०] रचनाकार-अज्ञात

आचार्य हेमविमलसूरि के जन्म और दीक्षा के समय के बारे में उक्त साक्ष्यों में प्राय: मतभेद है। **लघुपौशालिकपट्टावली** आदि के अनुसार इनका जन्म वि०सं० १५२०में हुआ था और वि०सं०१५२८ में इन्होंने दीक्षा ग्रहण की, जबकि **वीरवंशावली** आदि में जन्म वि०सं० १५२२ और दीक्षा वि०सं० १५३८ में बतलाया गया है। अन्य प्रमुख बातों में उक्त साक्ष्यों में प्राय: समान विवरण मिलता है। लक्ष्मीसागरसूरि से इन्होंने दीक्षा ग्रहण की और वि०सं० १५४८ में सुमतिसाधुसूरि ने इन्हें आचार्य पद प्रदान किया। गुरु के निधन के पश्चात् इन्हें तपागच्छ का नायकत्त्व प्राप्त हुआ।

हेमविमलसूरि द्वारा रची गयी कुछ कृतियाँ मिलती हैं, जो इस प्रकार हैं :

१. **पार्श्वजिनस्तवन**[५१]
२. **वरकाणापार्श्वनाथस्तवन**[५२]
३. **तेरकाठियानीसज्झाय**[५३]
४. **मृगापुत्रसज्झाय** या **मृगापुत्रचौपाई**[५४]

आचार्य हेमविमलसूरि द्वारा प्रतिष्ठापित जिन प्रातिमायें बड़ी संख्या में मिलती हैं। ये वि०सं० १५४६ से वि०सं० १५८३ तक की हैं। इनका विवरण इस प्रकार है :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आचार्य हेमविमलसूरि द्वारा प्रतिष्ठापित और अद्यावधि उपलब्ध सलेख जिनप्रतिमाओं की तालिका

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमांक	वि० सं०	तिथि/मिति/वार	लेख का स्वरूप प्रतिमालेख/शिलालेख	वर्तमान प्राप्ति स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१.	१५४६	तिथिविहीन	वासुपूज्य की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अजितनाथ देरासर, सुतार की खड़की, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक १३४७.
२.	१५४८	वैशाख सुदि२ शनिवार	शीतलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सीमंधर स्वामी का देरासर, उपलो गभारो, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक ११६४.
३.	१५५१	वैशाख.....?	संभवनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	धर्मनाथ देरासर, उपलो गभारो, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक ११०९.
४.	१५५१	वैशाख सुदि१३ गुरुवार	आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बालावसही, शत्रुंजय	**शत्रुंजयवैभव,** लेखांक २४८.
५.	१५५१	"	धर्मनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, माणेक चौक, खंभात	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** लेखांक १००८.
६.	१५५१	आषाढ़ वदि ८	विमलनाथ की पाषाण की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वीर जिनालय, चोथ का बरवाड़ा	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ८६२.
७.	१५५२	वैशाख सुदि ५ सोमवार	आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सुमतिनाथ जिनालय, मेड़ा	**अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेख-संदोह,** लेखांक २२८.
८.	१५५२	वैशाख सुदि १४	नमिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक ८.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९.	१५५२	ज्येष्ठ सुदि १३	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	संभवनाथ जिनालय, फूलवाली गली, लखनऊ	**जैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक १६०४.
१०.	१५५२	आषाढ़ सुदि२रविवार	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	मनमोहन पार्श्वनाथ देरासर, पाटण	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक २५१.
११.	१५५२	माघ वदि ८	संभवनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	मोती सुखिया का मंदिर, जैन धर्मशाला, पालीताना	**शत्रुंजयवैभव,** लेखांक २५१.
१२.	१५५२	फाल्गुन सुदि ६	विमलनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिनालय, आसानियों का चौक, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक १९१७ एवं **जैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक १३४४.
१३.	१५५२	फाल्गुन सुदि६ शनिवार	धर्मनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ देरासर, देवासनो पाड़ो, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक १०६६.
१४.	१५५३	माघ वदि१० गुरुवार	,,	,,	वही, भाग १, लेखांक १४७५.
१५.	१५५३	माघ सुदि ५ रविवार	पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शीतलनाथ जिनालय, कुंभारवाड़ो, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ६५४.
१६.	१५५३	,,	कुन्थुनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सीमंधर स्वामी का देरासर, उपलो गभारो, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक ११६२.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१७.	१५५४	आषाढ़ सुदि २	सुमतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बालावसही, शत्रुंजय	**शत्रुंजयवैभव,** लेखांक २५५.
१८.	१५५४	पौष वदि २	,,	वही	वही, लेखांक २५३.
१९.	१५५४	माघ वदि२ बुधवार	आदिनाथ की पाषाण की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	केशरियानाथ मंदिर, भिनाथ	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ८७७.
२०.	१५५४	,,	नमिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, वडनगर	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ५५०.
२१.	१५५४	,,	सुविधिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	गौडी पार्श्वनाथ जिनालय, मोती कटरा, आगरा	**जैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक १४७७.
२२.	१५५४	,,	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैन मंदिर, चाणस्मा	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ११०.
२३.	१५५४	तिथिविहीन	शांतिनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शीतलनाथ जिनालय, रिणी, तारानगर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक २४४६.
२४.	१५५५	वैशाख सुदि३ शनिवार	,,	नया जैन मंदिर, अमरावती	**जैनधातुप्रतिमालेख,** लेखांक २६७.
२५.	१५५५	,,	नमिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	मुनिसुव्रत जिनालय, भरुच	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ३२७.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२६.	१५५५	”	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सुपार्श्वनाथ जिनालय, नाहटों की गुवाड़, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक १७५७.
२७.	१५५५	फाल्गुन सुदि२ सोमवार	समतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, वडनगर	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ५५४.
२८.	१५५६	वैशाख सुदि६ गुरुवार	अस्पष्ट	चौमुखजी देरासर, ईडर	वही, भाग १, लेखांक १४५२.
२९.	१५५६	वैशाख सुदि ३	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैन देरासर, डभोई	वही, भाग १, लेखांक ८.
३०.	१५५६	”	विमलनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	नेमिनाथ जिनालय, मांडवीपोल, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ६३४.
३१.	१५५६	”	सुविधिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	मुनिसुव्रत जिनालय, भरुच	वही, भाग २, लेखांक ३३४.
३२.	१५५६	वैशाख सुदि ४	कुन्थुनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, भरुच	वही, भाग २, लेखांक ३०६.
३३.	१५५६	द्वितीय ज्येष्ठ सुदि १ शुक्रवार	शिलालेख	जैन मंदिर, हमीरगढ़	**अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेख-**संदोह, लेखांक २३७.
३४.	१५५६	ज्येष्ठ सुदि २	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा पर ऊत्कीर्ण लेख	विमलनाथ जिनालय, सवाई-माधोपुर	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ९९२.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३५.	१५५६	मितिविहीन	वासुपूज्य स्वामी की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	मनमोहन पार्श्वनाथ जिनालय, मीयागाम	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक २८४.
३६.	१५५७	ज्येष्ठ सुदि३ गुरुवार	मुनिसुव्रत की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनदेरासर, डभोई	वही, भाग १, लेखांक १७.
३७.	१५५७	पौष सुदि १५	कुन्थुनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पंचायती मंदिर, जयपुर	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ८९६.
३८.	१५५७	पौष सुदि १५	वासुपूज्य स्वामी की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, रंगपुर	**जैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक १०२६.
३९.	१५५८	कार्तिक वदि १३	अस्पष्ट	आदिनाथ जिनालय, अचलगढ़	**अर्बुदप्राचीनजैनलेखसंदोह,** लेखांक ४८८
४०.	१५५८	माघ सुदि १३ गुरुवार	मुनिसुव्रत की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, रतलाम	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ८९८.
४१.	१५५८	,,	श्रेयांसनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	खरतरगच्छीय आदिनाथ जिनालय, कोटा	वही, लेखांक ८९९.
४२.	१५५९	माघ वदि २ गुरुवार	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, खेरालु	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ७५४.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४३.	१५५९	माघ सुदि १४	पद्मप्रभ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सुमतिनाथ जिनालय, मालगाम	**अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेख-संदोह**, लेखांक २१५.
४४.	१५५९	माघ सुदि१५ गुरुवार	सुविधिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	यति श्याम लाल जी का उपाश्रय, जयपुर	**जैनलेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ५८०.
४५.	१५६०	वैशाख सुदि ३	वासुपूज्य की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बडा मंदिर, नागौर	वही, भाग २, लेखांक १३२० एवं **प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ९०८.
४६.	१५६०	ज्येष्ठ वदि८ रविवार	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सुमतिनाथ जिनालय, जयपुर	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ९११.
४७.	१५६१	वैशाख सुदि५ शुक्रवार	वासुपूज्य की धातु की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, नदियाड	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ४०२.
४८.	१५६१	वैशाख सुदि ३	कुन्थुनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक ११३०.
४९.	१५६१	माघ सुदि५ शुक्रवार	विमलनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिनालय, आसनियों का मुहल्ला, बीकानेर	वही, लेखांक १९०१ एवं **जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक १३४५.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५०.	१५६१	तिथिविहीन	---	संभवनाथ देरासर, कड़ी	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ७४६.
५१.	१५६३	वैशाख सुदि३ शनिवार	पद्मप्रभ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैन मंदिर, भामरा ग्राम	**अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेख-संदोह,** लेखांक १८१.
५२.	१५६३	,,	,,	पद्मप्रभ जिनालय, कडाकोटडी, खंभात	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ५९२.
५२अ.	१५६३	,,	वासुपूज्य की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, चौकसी पोल, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ८४१.
५३.	१५६३	वैशाख सुदि११ गुरुवार	आदिनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ देरासर, ईडर	वही, भाग १, लेखांक १४७०.
५४.	१५६४	ज्येष्ठ सुदि १२	शीतलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वीर जिनालय, रीज रोड, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक ९४५.
५५.	१५६४	ज्येष्ठ सुदि ११	आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	गौडी पार्श्वनाथ जिनालय, पालीताना	**शत्रुंजयवैभव,** लेखांक २६०.
५६.	१५६४	तिथिविहीन	जिन प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पद्मप्रभ जिनालय, अजीमगंज	**जैनलेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ११.
५७.	१५६५	वैशाख सुदि ३ रविवार	संभवनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, आरीपाड़ो, खंभात	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ५७१.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५८.	१५६५	वैशाख सुदि ८ शनिवार	अनन्तनाथ की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बावन जिनालय, उदयपुर	**जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक १९४६.
५९.	१५६६	वैशाख वदि १३ रविवार	धर्मनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शीतलनाथ जिनालय, उदयपुर	वही, भाग २, लेखांक ११०२.
६०.	१५६६	वैशाख सुदि १० गुरुवार	सुविधिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	फतेहभाई अमीचंदभाई झवेरी का घर देरासर, बडोदरा	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** लेखांक २३९.
६१.	१५६६	पौष वदि ५ सोमवार	मुनिसुव्रत की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अरनाथ जिनालय, जीरारवाड़ो, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ७६१.
६२.	१५६६	माघ वदि ५	,,	गौड़ी पार्श्वनाथ जिनालय, पायधुनी, मुम्बई	**जैनधातुप्रतिमालेख,** लेखांक २८२.
६३.	१५६६	,,	,,	जैन मंदिर, पटना	**जैनलेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक २९१.
६४.	१५६६	माघ वदि ८	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, किशनगढ़	**प्रतिष्ठलेखसंग्रह,** लेखांक ९२९.
६५.	१५६६	फाल्गुन सुदि ३ सोमवार	,,	सुपार्श्वनाथ का बडा पंचायती मंदिर, जयपुर	**जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक ११७०.
६६.	१५६७	ज्येष्ठ वदि ४ शुक्रवार	धर्मनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	घर देरासर, बड़ोदरा	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक २३३.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

६७.	१५६७	ज्येष्ठ सुदि ९ शुक्रवार	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	धर्मनाथ देरासर, डभोई	वही, भाग १, लेखांक ५४.
६८.	१५६८	वैशाख सुदि ३ शुक्रवार	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, माणेक चौक, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ९३६.
६९.	१५६८	वैशाख सुदि ७	नोट- (इस लेख में हेमविमलसूरि के शिष्य चरित्रसाधुगणि का प्रतिमा प्रतिष्ठापक के रूप में नाम मिलता है)		**प्राचीनजैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ४१८.
७०.	१५६८	,,	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	मल्लिनाथ जिनालय, भोंयरापाड़ो, खंभात	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ९०२.
७१.	१५६८	माघ सुदि ४ शुक्रवार	सुमतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि जी का मंदिर, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक ११३३.
७२.	१५६९	माघ सुदि १३	,,	आदिनाथ जिनालय, मेड़ता सिटी	**प्राचीनजैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ४३२ एवं **प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ९४५.
७३.	१५७०	माघ वदि १३ बुधवार	पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, लूणकरणसर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक २५०५.

७४.	१५७१	पौष वदि १ सोमवार	कुन्थुनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	महावीर देरासर, अहमदनगर	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ५८४.
७५.	१५७१	माघ वदि १ सोमवार	संभवनाथ की धातु की चौबीसी उत्कीर्ण लेख	सीमंधरस्वामी का देरासर, उपलो गभरो, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक ११९२.
७६.	१५७१	,,	नमिनाथ की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	मोती सुखिया जी का मंदिर, पालीताना	**जैनलेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ६४९.
७७.	१५७२	फाल्गुन वदि ४	वासुपूज्य की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वीर जिनालय, रीज रोड, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ९२६.
७८.	१५७५	अश्विन वदि ७ रविवार	पद्मप्रभ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक ११३८.
७९.	१५७५	फाल्गुन वदि ४	वासुपूज्य की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, लेखांक ११३९.
८०.	१५७६	वैशाख सुदि ६ सोमवार	अभिनन्दन स्वामी की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	कुन्थुनाथ जिनालय, वडनगर	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ५७०.
८१.	१५७७	ज्येष्ठ सुदि५ शनिवार	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	संभवनाथ देरासर, कड़ी	वही, भाग १, लेखांक ७२५.
८२.	१५७७	,,	अनन्तनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बालावसही, शत्रुंजय	**शत्रुंजयवैभव,** लेखांक २७४.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८३.	१५७७	,,	आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	मनमोहन पार्श्वनाथ जिनालय, पटोलीआ पोल, बड़ोदरा	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ९०.
८४.	१५७७	,,	नमिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अजितनाथ देरासर, सुतार की खड़की, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक १३३८.
८५.	१५७८	माघ वदि ८ रविवार	वासुपूज्य की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बालावसही, शत्रुंजय	**शत्रुंजयवैभव,** लेखांक २७६.
८६.	१५७८	,,	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अरनाथ देरासर, बीजापुर	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ४४५.
८७.	१५७८	,,	मुनिसुव्रत की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वीर जिनालय, वलडा ग्राम	**अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेख-संदोह**, लेखांक २६९.
८८.	१५७९	माघ सुदि १३ बुधवार	सुमतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, मेड़ता	**जैनलेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ७६९.
८९.	१५८०	चैत्र सुदि१३ गुरुवार	बीस विहरमान चित्रपट्ट पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि जी का मंदिर, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक ११.
९०.	१५८०	वैशाख सुदि १२ शुक्रवार	धर्मनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अजितनाथ जिनालय, तारंगा	**जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक १७३०.
९१.	१५८०	ज्येष्ठ वदि ९ गुरुवार	धर्मनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, शेठ वाड़ो, खेड़ा	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ४३१.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९२.	१५८१	ज्येष्ठ वदि ९	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	श्रेयांसनाथ जिनालय, फताशाह की पोल, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक १३७२.
९३.	१५८१	----	धातु के शत्रुंजय तीर्थपट्ट पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, बूंदी	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ९६८.
९४.	१५८३	माघ सुदि ४	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, कोचरों में, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक १६२९.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आचार्य हेमविमलसूरि के समय ही तपागच्छ की दो उपशाखायें-**कमलकलशशाखा** और **कुतुबपुराशाखा** अस्तित्त्व में आयी।[६५] मुनिश्री चतुरविजयजी ने विभिन्न ग्रन्थप्रशस्तियों, पुस्तकप्रशस्तिओं आदि के आधार पर इनके आनन्दविमलसूरि, दयावर्धनगणि, कुलचरणगणि, साधुविजय, अनन्तहंस, हर्षकुल, सौभाग्यहर्ष आदि २० शिष्यों का उल्लेख किया है।[६६] **लघुपौशालिकपट्टावली** के अनुसार हेमविमलसूरि ने पहले आनन्दविमलसूरि को अपना पट्टधर नियुक्त किया था, परन्तु बाद में उन्होंने सौभाग्यहर्ष को अपना पट्टधर नियुक्त किया[६७]। वि०सं० १५८३ में इनका देहान्त हुआ।[६८] इनके प्रथम पट्टधर आनन्दविमल से तपागच्छ की मूलपरम्परा आगे चली और द्वितीय पट्टधर सौभाग्यहर्ष की शिष्य-परम्परा **लघुपौशालिक** या **सोमशाखा** के नाम से विख्यात हुई।

आनन्दविमलसूरि का जन्म वि०सं०१५४७ में हुआ था। वि०सं० १५५२ (?) में इन्होंने दीक्षा ग्रहण की और वि०सं० १५७० में आचार्य पद प्राप्त किया।[६९] इस समय तक मुनिजनों में शिथिलाचार व्याप्त हो चुका था, अतः इन्होंने वि०सं० १५८२ में क्रियोद्धार किया। तपागच्छीय आचार्य सोमप्रभसूरि ने मरुभूमि में जलदौर्लभ्य के कारण अपने गच्छ के मुनिजनों का विहार निषिद्ध किया था, उसे आनन्दविमलसूरि ने पुनः चालू किया और अपने शिष्यों का वहाँ विहार कराया ताकि तपागच्छ का प्रभाव वहाँ बना रहे। वि०सं० १५९६ में इनका देहान्त हुआ।[७०] इनके द्वारा प्रतिष्ठापित कुछ जिनप्रतिमायें प्राप्त हुई हैं, जिनका विवरण इस प्रकार है :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आनन्दविमलसूरि द्वारा प्रतिष्ठापित और अद्यावधि उपलब्ध सलेख जिनप्रतिमाओं की तालिका

क्रमांक	वि० सं०	तिथि/मिति/वार	लेख का स्वरूप प्रतिमालेख/शिलालेख	वर्तमान प्राप्ति स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१.	१५८५	माघ वदि २ बुधवार	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, नदियाड	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ३८०.
२.	१५८५	"	"	भीड़भंजन पार्श्वनाथ जिनालय, खेड़ा	वही, भाग २, लेखांक ४५३.
३.	१५८५	"	अजितनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैन मंदिर, घडकण	वही, भाग १, लेखांक ६१९.
४.	१५८५	माघ सुदि १२	आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, छांणी,	वही, भाग २, लेखांक २७०.
५.	१५८५	माघ सुदि १२ शुक्रवार	"	जगवल्लभ पार्श्वनाथ देरासर, नीशापोल, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक १२०९.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आनन्दविमलसूरि के पट्टधर विजयदानसूरि हुए। पट्टावलियों के अनुसार वि०सं० १५५३ में इनका जन्म हुआ, वि०सं० १५६२ में इन्होंने दीक्षा ग्रहण की, वि०सं० १५८७ में सूरि पद प्राप्त किया और वि०सं० १६२२ में इनकी मृत्यु हुई।[६१] इन्होंने अनेक स्थानों पर विहार किया। विभिन्न साहित्यिक साक्ष्यों में उपलब्ध सूचना के अनुसार इन्होंने गुजरात के सुल्तान मुहम्मद के मंत्री से शत्रुंजयतीर्थ पर लगने वाले कर को छह मास के लिये माफ कराया।[६२] इन्होंने संघ के साथ शत्रुंजय, गिरनार आदि तीर्थों की यात्रायें की और वहाँ के प्राचीन जिनालयों का जीर्णोद्धार कराया। इन्हीं के समय उपाध्याय धर्मसागर जी ने सभी गच्छों की अशिष्टोचित आलोचना करके असन्तोष का वातावरण उत्पन्न कर दिया जिससे श्वेताम्बर समाज में परस्पर तीव्र वैमनस्य होने लगा, अत: विजयदानसूरि ने उपाध्याय जी को गच्छ से निष्कासित कर दिया और उनके तथाकथितग्रन्थ **कुमतिकुद्दाल** को जलशरण कराया[६३]। इनके द्वारा प्रतिष्ठापित कुछ जिनप्रतिमायें भी मिली हैं जो वि०सं० १५९२ से लेकर वि०सं० १६२० तक की हैं। इनका विवरण इस प्रकार है:

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमांक	वि० सं०	तिथि/मिति/वार	लेख का स्वरूप प्रतिमालेख/शिलालेख	वर्तमान प्राप्ति स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१.	१५९२	माघ सुदि १२ शुक्रवार	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	मुनिसुव्रत जिनालय, भरुच	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ३५४.
२.	१५९५	''	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, मांडवीपोल, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ६२१.
३.	१५९५	''	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, माणेक चौक, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ९९२.
४.	१५९५	''	जिनप्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, बोलपीपलो, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ११११६.
५.	१५९५	वैशाख सुदि ६ सोमवार	.....	शांतिनाथ जिनालय, बोहरन-टोला, लखनऊ	**जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक १५०७.
६.	१५९५	''	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ देरासर, कड़ी	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ७२१.
७.	१५९५	''	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सुमतिनाथ मुख्य बावन जिनालय, मातर	वही, भाग २, लेखांक ४९०.
८.	१५९६	वैशाख सुदि.....?	धर्मनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	भीड़भंजन पार्श्वनाथ जिनालय, खेड़ा	वही, भाग २, लेखांक ४५६.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९.	१५९६	ज्येष्ठ सुदि २	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शीतलनाथ जिनालय, उदयपुर	**जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक ११०४.
१०.	१५९८	वैशाख सुदि ५ गुरुवार	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	उपकेशगच्छीय शांतिनाथ जिनालय, मेड़ता सिटी	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ९९८.
११.	१५९८	वैशाख सुदि १३ गुरुवार	,,	आदिनाथ जिनालय, खंभात	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक १०१९.
१२.	१५९८	,,	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, भाग २, लेखांक १००९.
१३.	१६०१	तिथिविहीन	धर्मनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सुपार्श्वनाथ का पंचायती बड़ा मंदिर, जयपुर	**जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक ११७६.
१४.	१६०३	माघ वदि ८ शुक्रवार	देहरी पर उत्कीर्ण शिलालेख	वीर जिनालय, पींडवाड़ा	वही, भाग १, लेखांक ९४६.
१५.	१६०३	,,	महावीर प्रासाद की देहरी पर उत्कीर्ण शिलालेख	महावीर जिनालय, पींडवाड़ा	वही, भाग १, लेखांक ९४७.
१६.	१६०३	,,	,,	वही	वही, भाग १, लेखांक ९४८ एवं **अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेख-संदोह**, लेखांक ३७९-३८१.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१७.	१६०४	वैशाख वदि ७ सोमवार	सुमतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शीतलनाथ जिनालय, कुभारवाड़ो, खंभात	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ६५१.
१८.	१६०४	,,	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सोमपार्श्वनाथ जिनालय, संघवी पाड़ा, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ७७३.
१९.	१६०४	,,	धर्मनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	महावीर जिनालय, मेड़ता सिटी	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक १००५.
२०.	१६०५	वैशाख सुदि ७	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, पटोलीआ पोल, बड़ोदरा	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ११५.
२१.	१६०५	माघ वदि ११	शीतलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सेठ जी का घर देरासर, कोटा	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक १००७.
२२.	१६०५	फाल्गुन वदि ३ गुरुवार	असपष्ट	शांतिनाथ जिनालय, नाहटों में, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक १८४०.
२३.	१६१०	फाल्गुन वदि २ सोमवार	,,	सुपार्श्वनाथ जिनालय, नाहटों में, बीकानेर	वही, लेखांक १७७७.
२४.	१६१०	,,	आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	थीरूशाह का देरासर, जैसलमेर	**जैनलेखसंग्रह**, भाग ३, लेखांक २४४८.
२५.	१६१२	वैशाख सुदि २	चन्द्रप्रभ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, खंभात	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ५४४.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२६.	१६१२	वैशाख सुदि ६ बुधवार	आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, बोलपीपलो, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ११२७.
२७.	१६१२	,,	पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, भाग २, लेखांक १११८.
२८.	१६१२	,,	शीतलनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	नवपल्लव पार्श्वनाथ देरासर, बोलपीपलो, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ११०७.
२९.	१६१२	,,	धर्मनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अजितनाथ जिनालय, गोपटी, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ७१४.
३०.	१६१२	,,	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, मांडवीपोल, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ६३०.
३१.	१६१२	फाल्गुन वदि ११ शुक्रवार	शिलालेख,	वीर जिनालय, पींडवाड़ा	**अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेख-संदोह**, लेखांक ३८३-३८४.
३२.	१६१३	वैशाख सुदि ६ बुधवार	मुनिसुव्रत की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	स्टेशन का जैन मंदिर, जयपुर	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक १०१२.
३३.	१६१५	पौष वदि ६ शुक्रवार	संभवनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, भरुच	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ३१०.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३४.	१६१५	"	विमलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	मुनिसुव्रत जिनालय, भरुच	वही भाग २, लेखांक ३५१.
३५.	१६१५	"	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, भाग २, लेखांक ३२०.
३६.	१६१५	"	विमलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	गौड़ीपार्श्वनाथ जिनालय, पायधुनी, मुम्बई	**जैनधातुप्रतिमालेख,** लेखांक ३०९.
३७.	१६१६	वैशाख सुदि १० रविवार	आदिनाथ की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, कोट, मुम्बई	वही, लेखांक ३१०.
३८.	१६१६	"	वासुपूज्य की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, बोहरन-टोला, लखनऊ	**जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक १५०८.
३९.	१६१६	"	संभवनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही,	वही, भाग २, लेखांक १५०८.
४०.	१६१६	"	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	विमलनाथ जिनालय, संघवी-पाड़ा, खंभात	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ७८३.
४१.	१६१७	ज्येष्ठ सुदि५सोमवार	अनन्तनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	विमलनाथ जिनालय, चौकसी-पोल, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ७९४.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४२.	१६१७	,,	पद्मप्रभ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	धर्मनाथ जिनालय, रत्नपुरी, अयोध्या	**जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक १६६०.
४३.	१६१७	,,	पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सीमंधर स्वामी का जिनालय, खारवाड़ो, खंभात	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक १०६३.
४४.	१६१७	,,	शीतलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, सुतार की शेरी, थराद	**जैनधातुप्रतिमालेख,** लेखांक २७१.
४५.	१६१७	,,	नमिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ देरासर, देवसानो पाडो, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ११०२.
४६.	१५१५	,,	चन्द्रप्रभ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही,	वही, लेखांक १०७३.
४७.	१६१७	पौष वदि १ गुरुवार	सुविधिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सुमतिनाथ मुख्य बावन जिनालय, मातर	वही, भाग २, लेखांक ४९७.
४८.	१६१८	माघ सुदि १३ रविवार	सुमतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	संभवनाथ जिनालय, जैसलमेर	**जैनलेखसंग्रह**, भाग ३, लेखांक २३७०.
४९.	१६१८	,,	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ चैत्य, थराद	**जैनप्रतिमालेखसंग्रह,** लेखांक ४७.
५०.	१६१८	,,	वासुपूज्य की धातु की प्रतिमा पर	संभवनाथ जिनालय, जैसलमेर	**जैनलेखसंग्रह,** भाग ३,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

			उत्कीर्ण लेख		लेखांक २३७१.
५१.	१६१९	माघ सुदि ६	आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, सेठों की हवेली के पास, उदयपुर	वही, भाग २, लेखांक १९०७.
५२.	१६२०	वैशाख सुदि २	देवकुलिका का लेख	आदिनाथ जिनालय, शत्रुंजय	**प्राचीनजैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ८.
५३.	१६२०	वैशाख सुदि ५ गुरुवार	देहरी का लेख	वही,	वही, भाग २, लेखांक १०.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विजयदानसूरि के एक शिष्य राजविजयसूरि से तपागच्छ की रत्नशाखा का प्रादुर्भाव हुआ, जबकि दूसरे शिष्य हीरविजयसूरि से तपागच्छ की मूल परम्परा आगे चली[४]।

जिस प्रकार चौलुक्यनरेश जयसिंह सिद्धराज और कुमारपाल पर आचार्य हेमचन्द्रसूरि का और मुहम्मद तुगलक पर आचार्य जिनप्रभसूरि का प्रभाव था ठीक उसी प्रकार १७वीं शताब्दी में सम्राट अकबर पर हीरविजयसूरि का था। इन्होंने सम्राट को प्रभावित कर धर्म की प्रभावना में महान् योगदान दिया। हीरविजयसूरि तपागच्छ के सर्वाधिक महान् पुरुष थे। इनके जीवन के बारे में अनेक रचनायें प्राप्त होती हैं, जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं :

१.	**जगद्गुरुकाव्य**[५]	पद्मसागर	वि०सं० १६४६
२.	**तपागच्छपट्टावली**[६]	उपाध्याय धर्मसागरगणि	वि०सं० १६४६-४८
३.	**कृपारसकोश**[७]	उपाध्याय शांतिचन्द्र	
४.	**हीरसौभाग्यकाव्य**[८]	देवविमल	वि०सं० १६४६ से पूर्व
५.	**लाभोदयरास**[९]	दयाकुशल	वि०सं० १६४९
६.	**हीरविजयसूरिनिर्वाणसज्झाय**[१०]	विवेकहर्ष	वि०सं० १६५२
७.	**हीरविजयसूरिशलोको**[११]	कुंवरविजय	
८.	**हीरविजयसूरिशलोको**[१२]	विद्यानन्द	
९.	**हीरविजयसूरिपुण्यखानि**[१३]	जयविजय	
१०.	**हीरविजयसूरिरास**[१४]	ऋषभदास	वि०सं० १६८५

हेमविजय द्वारा रचित **विजयप्रशस्तिकाव्य**[१५] (वि०सं० १६८१) एवं इस पर गुणविजय द्वारा वि०सं० १६८८ में रचित टीका[१६] तथा अन्य कई ग्रन्थों में प्रसंगवश हीरविजयसूरि के बारे में विवरण प्राप्त होता है।

हीरविजयसूरि का जन्म वि०सं० १५८३ में हुआ था। वि०सं० १५९६ में पाटण में इन्होंने विजयदानसूरि से दीक्षा ग्रहण की। वि०सं० १६१० में इन्हें सूरि पद प्राप्त हुआ और वि०सं० १६२२ में विजयदानसूरि के निधन के पश्चात् उनके पट्टधर बने। इनके द्वारा प्रतिष्ठापित बड़ी संख्या में जिनप्रतिमायें प्राप्त हुई हैं, जो वि०सं० १६११ से वि०सं० १६५१ तक की हैं। इनका विवरण इस प्रकार है :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आचार्य हीरविजयसूरि द्वारा प्रतिष्ठापित और अद्यावधि उपलब्ध जिनप्रतिमाओं की तालिका

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमांक	वि०सं०	तिथि - वार	लेख का स्वरूप	प्राप्ति स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१.	१६११	वैशाख सुदि १३	सभामंडप के खंभे पर उत्कीर्ण शिलालेख	त्रैलोक्य दीपक प्रासाद, रणकपुर	**जैनलेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ७१३, एवं **प्राचीनजैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक ३०८.
२.	१६१३	वैशाख....१०शुक्रवार	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	महावीर जिनालय, नाणा	**अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेख-संदोह**, (आबू, भाग ५), लेखांक ३६०.
३.	१६१७	ज्येष्ठ सुदि ३	तीर्थंकर प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, सणवाड़ा	वही, लेखांक २२३.
४.	१६१७	पौष वदि १ गुरुवार	पद्मप्रभ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, ऊंडीपोल, खंभात	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक ६७९.
५.	१६१७	"	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, माणेक चौक, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ९३५.
६.	१६१७	पौष वदि १	शीतलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	नवखंडा पार्श्वनाथ जिनालय, भोंयरापाड़ा, खंभात	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक ८६९.
७.	१६१७	माघ वदि १ गुरुवार	कुन्थुनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पद्मप्रभ जिनालय, चूड़ीवाली गली, लखनऊ	**जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक १५५३.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८.	१६२०	वैशाख सुदि ५ गुरुवार			**प्राचीनजैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ६.
९.	१६२०	,,			वही, लेखांक ७, ९.
१०.	१६२०	,,	शिलालेख		वही, लेखांक ४.
११.	१६२०	,,	,,		वही, लेखांक ५.
१२.	१६२०	फाल्गुन वदि १२ बुधवार	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणिपार्श्वनाथ जिनालय, भैंसररोडगढ़	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक १०१८.
१३.	१६२१	पौष वदि१३ शुक्रवार	शिलालेख	विमलवसही, आबू	**अर्बुदप्राचीनजैनलेखसंदोह,** (आबू, भाग २), लेखांक २२५.
१४.	१६२२	वैशाख सुदि१२	शीतलनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, सेठों की हवेली के पास, उदयपुर	**जैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक १९०८.
१५.	१६२२	पौष वदि१ रविवार	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, परा, खेड़ा	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ४२६.
१६.	१६२२	,,	धर्मनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, जीरापाड़ो, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ७४६.
१७.	१६२२	पौष वदि.....	नमिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	मोतीशाह की टूंक, शत्रुंजय	**शत्रुंजयवैभव,** लेखांक २१०.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१८.	१६२२	माघ वदि २ बुधवार	अनन्तनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	मुनिसुव्रत जिनालय, भरुच	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ३३३.
१९.	१६२२	''	सिद्धचक्रपट्ट पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, आरीपाडो, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ५८५.
२०.	१६२२	''	धातु की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अमीझरा पार्श्वनाथ जिनालय, जीरारपाड़ो, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ७५२.
२१.	१६२२	''	पद्मप्रभ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सोमपार्श्वनाथ जिनालय, संघवी पाड़ा, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ७८०.
२२.	१६२२	वैशाख सुदि१० शुक्रवार	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, जूनावेड़ा मारवाड़	**जैनलेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ९२७ एवं **प्राचीनजैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ४९४.
२३.	१६२४	वैशाख सुदि१० शुक्रवार	पद्मप्रभ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	श्रीमालों का मंदिर, जयपुर	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक १०२२.
२४.	१६२४	माघ सुदि६ सोमवार	धर्मनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सुमतिनाथ जिनालय, जयपुर	वही, लेखांक १०२३एवं **जैनलेखसंग्रह,** भाग २,लेखांक ११९५.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२५.	१६२४	,,	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, कोठीपोल, बड़ोदरा	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ६३.
२६.	१६२४	,,	वासुपूज्य की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, शेठवाड़ो, खेड़ा	वही, भाग २, लेखांक ४३३.
२७.	१६२४	,,	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, ऊंझा	वही, भाग १, लेखांक १९९.
२८.	१६२४	फाल्गुन सुदि३रविवार	,,	धर्मनाथ जिनालय, मडार	आबू, भाग ५, लेखांक ९१.
२९.	१६२४	,,	सुपार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, लींबड़ी-पाड़ा, पाटण	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक २६५.
३०.	१६२४	,,	नमिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बालावसही, शत्रुंजय	**शत्रुंजयवैभव,** लेखांक २९१.
३१.	१६२४	माघ सुदि६सोमवार	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, सौदागरपोल, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ७९१.
३२.	१६२४	तिथिविहीन	संभवनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, नौहर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक २४७९.
३३.	१६२६	वैशाख सुदि११ बुधवार	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चंद्रप्रभ जिनालय, सुल्तानपुरा, बड़ोदरा	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक २०९.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३४.	१६२६	फाल्गुन सुदि८सोमवार	संभवनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	संभवनाथ देरासर, जैसलमेर	**जैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक २३७२.
३५.	१६२६	,,	पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख		**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक २८०४.
३६.	१६२६	,,	अजितनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	विमलनाथ जिनालय, संघवीपाड़ा, खंभात	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ७८२.
३७.	१६२६	,,	शीतलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सुमतिनाथ चौमुख जिनालय, चोलापोल, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ६९४.
३८.	१६२६	,,	विमलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	स्तम्भन पार्श्वनाथ जिनालय, खारवाड़ो, खंभात	वही, भाग २, लेखांक १०५०.
३९.	१६२६	,,	अस्पष्ट	शांतिनाथ जिनालय, आगीपाड़ो, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ५७९.
४०.	१६२६	,,	सुमतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सुमतिनाथ जिनालय, माधोलाल बाबू की धर्मशाला, पालीताना	**जैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक १७४०.
४१.	१६२६	,,	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, भद्रावती, मध्यप्रदेश	**जैनधातुप्रतिमालेख,** लेखांक ३१३.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४२.	१६२७	पौष वदि ३	वासुपूज्य की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिनालय, आसानियों का चौक, बीकानेर	**जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक १३४८ एवं **बीकानेरजैनलेखसंग्रह**, लेखांक १९०४.
४३.	१६२७	पौष सुदि ३ शुक्रवार	आदिनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख		**बीकानेरजैन....**, लेखांक १४५२.
४४.	१६२७	पौष पूर्णिमा गुरुवार	नेमिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, भायखाला, मुम्बई	**जैनधातुप्रतिमालेख**, लेखांक ३१४.
४५.	१६२७	''	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, बोलपीपलो, खंभात	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक ११२८.
४६.	१६२७	पौष सुदि १५ गुरुवार	संभवनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	महावीर जिनालय, चौकसीपोल, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ८२८.
४७.	१६२८	वैशाख सुदि११बुधवार	धर्मनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, उदयपुर	**जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक १८९१.
४८.	१६२८	''	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ देरासर, शांतिनाथ पोल, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक १३१८.
४९.	१६२८	''	तीर्थंकर प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	भींड़भंजन पार्श्वनाथ जिनालय, खेड़ा	वही, भाग २, लेखांक ४५२.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५०.	१६२८	''	अनन्तनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, पग. खेड़ा	वही, भाग २, लेखांक ४२१.
५१.	१६२८	''	धर्मनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	घर देरासर, बड़ौदरा	वही, भाग २, लेखांक २४३.
५२.	१६२८	फाल्गुन सुदि७बुधवार	''	नयामंदिर, जयपुर	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक १०२५ एवं **जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक १२१४.
५३.	१६२८	तिथिविहीन	वासुपूज्य की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बालावसही, शत्रुंजय	**शत्रुंजयवैभव,** लेखांक २९३.
५४.	१६३०	वैशाख वदि ८	आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनदेरासर, जूनाबेड़ा, मारवाड़	**जैनलेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ९२५ एवं **प्राचीनजैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ४१२.
५५.	१६३०	''	कुन्थुनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	**जैनलेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ९२३.
५६.	१६३०	वैशाख वदि ८	आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	महावीर जिनालय, नाणा	**अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेख-संदोह,** (आबू भाग ५), लेखांक ३६१.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५७.	१६३०	पौष वदि४सोमवार	पद्मप्रभ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	घर देरासर, पाटण	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ३८६.
५८.	१६३०	,,	सुमतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बालावसही, शत्रुंजय	**शत्रुंजयवैभव,** लेखांक २९४.
५९.	१६३०	,,	वासुपूज्य की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	विमलनाथ जिनालय, चौकसी-पोल, खंभात	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ७८९.
६०.	१६३०	माघ सुदि १३	संभवनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणिपार्श्वनाथ जिनालय, अजीमगंज, पश्चिमबंगाल	**जैनलेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक २१.
६१.	१६३०	,,	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सेठ जी का मंदिर, रतलाम	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक १०२७.
६२.	१६३१	पौष वदि६रविवार	विमलनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	विमलनाथ जिनालय, संघवीपाड़ा, खंभात	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ७८५.
६३.	१६३२	वैशाख सुदि७रविवार	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सीमंधरस्वामी का जिनालय, खरवाड़ो, खंभात	वही, भाग २, लेखांक १०७८.
६४.	१६३२	वैशाख सुदि१३ शुक्रवार	,,	चिन्तामणिपार्श्वनाथ जिनालय, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ५६२.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६५.	१६३२	माघ वदि५शुक्रवार	धर्मनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, माणेकचौक, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ९८४.
६६.	१६३२	माघ सुदि१०बुधवार	शांतिनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	कुन्थुनाथ जिनालय, दंतालपोल, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ६६८.
६७.	१६३२	,,	श्रेयांसनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	घर देरासर, बड़ोदरा	वही, भाग २, लेखांक २५०.
६८.	१६३२	,,	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	गौड़ीपार्श्वनाथ जिनालय, देरापोल, बाबाजीपुरा, बड़ोदरा	वही, भाग २, लेखांक २१५.
६९.	१६३३	तिथिविहीन	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बड़ामंदिर, नागौर	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक १०३०.
७०.	१६३४	मार्गशीर्ष सुदि ५	चरण चौकी पर उत्कीर्ण लेख	चौमुख जी जिनालय, सिरोही	**अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेख-संदोह,** (आबू, भाग ५) लेखांक २५०.
७१.	१६३४	फाल्गुन सुदि ८ सोमवार	मुनिसुव्रत की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सुपार्श्वनाथ जिनालय, नाहटों की गुवाड़, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक १७७३.
७२.	१६३४	फाल्गुन सुदि.....	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, माणिकतल्ला, कलकत्ता	**जैनलेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक १२४.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७३.	१६३६	फाल्गुन सुदि १० गुरुवार	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, देशनोक	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक २२३८.
७४.	१६३६	,,	शीतलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अमरनाथ जिनालय, बीजापुर	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ४४७.
७५.	१६३७शक-संवत (१५०२)	वैशाख सुदि ३ गुरुवार			**प्राचीनजैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ४२१.
७६.	१६३७	वैशाख सुदि १३ रविवार	आदिनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, आरीपाड़ो, खंभात	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ५७३.
७७.	१६३७	,,	,,	बावन जिनालय, उदयपुर	**जैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक १९४२.
७८.	१६३७	माघ वदि३शनिवार	शीतलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, कड़ाकोटड़ी, खंभात	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ६०४.
७९.	१६३७	माघ वदि...शनिवार	आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सुमतिनाथ जिनालय, माधोलाल बाबू की धर्मशाला, पालीताना	**जैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक १७६२.
८०.	१६३७	तिथिविहीन	कुन्थुनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ देरासर, ईडर	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक १४७२.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८१.	१६३८	माघ सुदि १३ सोमवार	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	नयामंदिर, जयपुर	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक १०३५.
८२.	१६३८	,,	संभवनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणिपार्श्वनाथ जिनालय, बोलपीपलो, खंभात	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ११२३.
८३.	१६३८	,,	मुनिसुव्रत की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	नवपल्लवपार्श्वनाथ जिनालय, बोलपीपलो, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ११००.
८४.	१६३८	,,	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	कुन्थुनाथ जिनालय, छाणी, बड़ोदरा	वही, भाग २, लेखांक २५५.
८५.	१६३८	,,	अजितनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	महावीर जिनालय, जोधपुर	**जैनलेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ६०५.
८६.	१६३८	,,	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ का नया मंदिर, जयपुर	**जैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक १२१५.
८७.	१६३८	,,	आदिनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, रामपुरा	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक १०३६.
८८.	१६४०	पौष वदि२सोमवार	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, भिंडी-बाजार, मुम्बई	**जैनधातुप्रतिमालेख,** लेखांक ३१५.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८९.	१६४०	माघ सुदि७गुरुवार	सुपार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, सांगानेर	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक १०४०.
९०.	१६४१	मार्गशीर्ष सुदि ३ बुधवार	वासुपूज्य की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, कोचरों का मुहल्ला, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक १६११.
९१.	१६४१	तिथिविहीन	सुपार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	श्रीस्वामीजी का मंदिर, बीकानेर	**जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक १४५९.
९२.	१६४२	पौष सुदि१२सोमवार	अजितनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, कलकत्ता	वही, भाग २, लेखांक १००२.
९३.	१६४४	फाल्गुन वदि १३	पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, जूना बेड़ा, मारवाड़	वही, भाग १, लेखांक ९२०.
९४.	१६४४	फाल्गुन वदि१३बुधवार	अनन्तनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	श्रीमालों की दादावाड़ी, पार्श्वनाथ जिनालय, जयपुर	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक १०४३.
९५.	१६४४	,,	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, छुड़वाल, सिरोही	**जैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक २०९४.
९६.	१६४४	फाल्गुन वदि १५	शिलालेख	जैनमंदिर की प्रशस्ति, उसतरां, नागौर	वही, भाग २, लेखांक १७१२.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९७.	१६४४	,,	संभवनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, जूना वेड़ा, मारवाड़	वही, भाग १, लेखांक ९३०.
९८.	१६४४	फाल्गुन सुदि २	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	धर्मनाथ जिनालय, रत्नपुरी, अयोध्या	वही, भाग २, लेखांक १६६१.
९९.	१६४४	,,	अनन्तनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	महावीर जिनालय, सांगानेर	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक १०४४.
१००.	१६४६	ज्येष्ठ सुदि९सोमवार	अनन्तनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वासुपूज्य जिनालय, माणेकचौक, खंभात	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** लेखांक ९९८.
१०१.	१६४७	वैशाख सुदि ७	मुनिसुव्रत की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बड़ा जैन मंदिर, नागौर	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक १०४६.
१०२.	१६४७	फाल्गुन सुदि ५ गुरुवार	शिलालेख	चतुर्मुखप्रासाद, राणकपुर	**प्राचीनजैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ३०९.
१०३.	१६४७	,,	आंगन के खम्भे पर उत्कीर्ण शिलालेख	वही	**जैनलेखसंग्रह,** लेखांक ७२४.
१०४.	१६५०	चैत्र पूर्णिमा	शिलालेख		**प्राचीनजैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ३३.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०५.	१६५१	मार्गशीर्ष वदि ४ गुरुवार	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सुमतिनाथ जिनालय, माधोलाल बाबू की धर्मशाला, पालीताना	**जैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक १७६३ एवं **शत्रुंजयवैभव**, लेखांक २९६.
१०६.	१६५१	पौष सुदि १० शनिवार	विमलनाथ की पाषाण की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	विमलनाथ जिनालय, बेंतेड	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक १०४८.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्राविका चम्पा के छहमासी व्रत के प्रसंगवश बादशाह अकबर को आचार्य हीरविजयसूरि के बारे में जानकारी प्राप्त हुई तो वह उनके दर्शन एवं उनसे धार्मिक चर्चा हेतु अत्यन्त उत्सुक हुआ। उसी समय बादशाह ने आचार्यश्री के पास, जो उस समय गुजरात में गंधार नामक स्थान पर थे, बुलाने के लिये निमंत्रण भेजा। बादशाह का आमंत्रण और वहाँ धर्मप्रभावना का अपूर्व अवसर देखकर आचार्य हीरविजयसूरि ने वि०सं० १६३८ मार्गशीर्ष वदि ७ को तेरह मुनिजनों के साथ गंधार से प्रस्थान किया और वि०सं० १६३९ ज्येष्ठ सुदि १३ को फतेहपुर सीकरी पहुँचे[२७]। दूसरे दिन बादशाह की उनसे भेंट हुई। आचार्यश्री से हुई धार्मिक चर्चा से अत्यन्त प्रभावित होकर बादशाह ने उन्हें **जगद्गुरु** की उपाधि प्रदान की[२८]। सूरिजी ने तीन वर्ष तक आगरा, फतेहपुर सीकरी, शौरीपुर आदि स्थानों पर विचरण किया और इस अवधि में विभिन्न अवसरों पर अकबर को धर्मोपदेश दिया। उनके आग्रह से बादशाह ने पर्युषण के दिनों में जीवहिंसा पर पूर्णरूपेण प्रतिबन्ध लगा दिया और इसके लिये अपने साम्राज्य के विभिन्न सूबों में फरमान भेजा।[२९] वि०सं० १६४२में सूरिजी गुजरात लौट गये किन्तु बादशाह के आग्रह से शांतिचन्द्र गणि को वहीं दरबार में छोड़ दिया।

अकबर पर हीरविजयसूरि का प्रभाव चिरस्थायी रहा और सूरिजी के गुजरात लौट आने के पश्चात् भानुचन्द्र, सिद्धिचन्द्र, विवेकहर्ष आदि मुनि राजदरबार में जाने-आने लगे। बादशाह ने हीरविजयसूरि के शिष्य एवं पट्टधर विजयसेनसूरि को वि०सं० १६४९ में जब वह लाहौर में प्रवास में था, आमंत्रित किया और उनकी प्रखर प्रतिभा तथा पाण्डित्य से प्रभावित होकर उन्हें **सवाईहीर** की उपाधि दी।[३०] जैन मुनिजनों का यह प्रभाव जहाँगीर और शाहजहां के समय में भी पर्याप्त अंशों में बना रहा।

आचार्य हीरविजयसूरि द्वारा रचित **द्वादशजल्पविचार, अन्तरिक्षपार्श्वनाथस्तवन, जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिवृत्ति** आदि कुछ कृतियां मिलती हैं।[३१] इनका शिष्य परिवार बहुत विशाल था। जिनमें विजयसेनसूरि, शान्तिचन्द्र उपाध्याय, भानुचन्द्र उपाध्याय पद्मसागर, वाचक कल्याणविजय, सिद्धिचन्द्र, नंदिविजय, सोमविजय, धर्मसागर उपाध्याय, प्रीतिविजय, तेजविजय, आनन्दविजय, विनीतविजय, धर्मविजय, हेमविजय, शुभविजयगणि आदि उल्लेखनीय हैं।[३२] वाचक कल्याणविजय के एक शिष्य नयविजय हुए। उपाध्याय यशोविजय इन्हीं के शिष्य थे। १८वीं शताब्दी के महान् विद्वानों में उनकी गणना होती है। इन्होंने विशाल संख्या में ग्रंथों की। इनकी कृतियां संस्कृत, प्राकृत, गुजराती और हिन्दी भाषा में हैं। गद्य और पद्य दोनों में समान रूप से ही इनकी प्रतिभा प्रकट हुई है। वि०सं० १६५२/ई०स० १५९६ में काठियावाड़ के ऊना नामक ग्राम में आचार्य श्री का निधन हुआ।

आचार्य हीरविजयसूरि के निधन के पश्चात् उनके शिष्य विजयसेनसूरि ने तपागच्छ का नायकत्त्व ग्रहण किया। इनके बारे में पट्टावलियों के अतिरिक्त हेमविजय द्वारा रचित

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विजयप्रशस्तिकाव्य[42] और इस पर गुणविजय द्वारा वि०सं० १६८९ में रची गयी टीका[43], जिसका पूर्व में हीरविजयसूरि के सम्बन्ध में उल्लेख आ चुका है, तथा इसके अतिरिक्त गुणविजय द्वारा ही रचित **विजयसेनसूरिनिर्वाणरास**[44] एवं कवि वीपा के शिष्य विद्याचन्द्र द्वारा रचित **विजयसेनसूरिनिर्वाणरास**[45] नामक कृतियों से जानकारी प्राप्त होती है। उक्त साक्ष्यों के अनुसार वि०सं० १६०४ में इनका जन्म हुआ था। वि०सं० १६१३ में ९ वर्ष की आयु में विजयदानसूरि के पास इन्होंने दीक्षा ग्रहण की। वि०सं० १६२८ में इन्हें आचार्य पद प्राप्त हुआ। हीरविजयसूरि के गुजरात लौट जाने के पश्चात् पीछे से बादशाह ने उनके पट्टधर विजयसेनसूरि को वि०सं० १६४९ में अपने दरबार में, जब वह लाहौर में था, बुलवाया और इनका यथेष्ठ सम्मान कर **सवाईहीर** की पदवी से अलंकृत किया।[46] वि०सं०१६७२ में इनका देहान्त हुआ।[47]

विजयसेनसूरि द्वारा प्रतिष्ठापित कुछ जिन प्रतिमायें प्राप्त हुई हैं, जो वि०सं०१६४२ से वि०सं०१६७० तक की हैं। इनका विवरण निम्नानुसार है:-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विजयसेनसूरि द्वारा प्रतिष्ठापित और अद्यावधि उपलब्ध सलेख जिनप्रतिमाओं की तालिका

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमांक	वि०सं०	तिथि - वार	लेख का स्वरूप	प्राप्ति स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१.	१६४२	ज्येष्ठ सुदि २ सोमवार	विमलनाथ की पाषाण की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चनद्रप्रभ जिनालय, जानीशेरी, बड़ोदरा	**जैनधातुप्रातिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक १४२.
२.	१६४२	माघ वदि १ रविवार	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चौमुखजी देरासर, ईडर	वही, भाग १, लेखांक १४४६.
३	१६४३	द्वितीय वैशाख वदि ३ रविवार	अभिनन्दन नाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, झाडोली	**अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेख-संदोह,** (आबू, भाग ५), लेखांक ३१४.
४.	१६४३	ज्येष्ठ सुदि २ सोमवार	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पद्मप्रभ जिनालय, कडा कोटड़ी, खंभात	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ५१६.
५.	१६४३	,,	,,	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ५४६.
६.	१६४३	फाल्गुन सुदि ११	धर्मनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चौमुखजी देरासर, झवेरीवाड़, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक ८८२.
७.	१६४३	फाल्गुन सुदि ११ गुरुवार	शीतलनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	नवघरे का मंदिर, दिल्ली	**जैनलेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ५०४.
८.	१६४३	,,	आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, लालबाग	वही, भाग १, लेखांक २२३.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९.	१६४३	''	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अस्पष्ट	**जैनधातुप्रतिमालेख,** लेखांक ३१७.
१०.	१६४३	''	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बड़ा जैनमंदिर, नागौर	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक १०४२ एवं **जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक १३०८.
११.	१६४४(?)	ज्येष्ठ सुदि१२ सोमवार	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	हिन्दविजयप्रेस वाले का घरदेरासर, बड़ोदरा	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक २४२.
१२.	१६४४	''	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, पादरा	वही, भाग २, लेखांक ७.
१३.	१६४४	''	''	हिन्दविजय प्रेस वाले का घर देरासर, बड़ोदरा	वही, भाग २, लेखांक २४२.
१४.	१६४४	''	मुनिसुव्रत की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	घर देरासर, बड़ोदरा	वही, भाग २, लेखांक २५१.
१५.	१६४४	''	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ५३९.
१६.	१६४४	''	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, आगीपाडो, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ५८९.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१७.	१६४४	,,	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, जीरारपाडो, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ७३६.
१८.	१६४४	,,	अजितनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	संभवनाथ देरासर, बोलपीपलो, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ११३७.
१९.	१६४४	,,	वासुपूज्य की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, भाग २, लेखांक ११३२.
२०.	१६४४	,,	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	नेमिनाथ जिनालय, भोयरापाडो, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ८९०.
२१.	१६४४	,,	कुन्थुनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, लोरल ग्राम	**अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेख-संदोह,** (आबू, भाग ५), लेखांक १९२.
२२.	१६४४	तिथिविहीन	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय की प्रशस्ति	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, खंभात	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ५२९.
२३.	१६४४	तिथिविहीन	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	घर देरासर, जयपुर	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक १०४५.
२४.	१६४४	,,	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, खंभात	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, खंभात	**प्राचीनजैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ४५०.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२५.	१६४८	माघ सुदि ६	संभवनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बालावसही, शत्रुंजय	**शत्रुंजयवैभव,** लेखांक २९५.
२६.	१६४९(इलाही-सम्वत्४८)	वैशाख वदि ६ गुरुवार	जिनप्रतिमाओं पर उत्कीर्ण लेख	जैन मंदिर, गंधार	**प्राचीनजैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ४५६.
२७.	१६४९	मार्गशीर्ष सुदि १३ सोमवार	प्रशस्ति लेख	आदिनाथ जिनालय, कावीतीर्थ	वही, भाग २, लेखांक ४५२.
२८.	१६४९	तिथिविहीन	प्रशस्ति लेख	वही	वही, भाग २, लेखांक ४५१.
२९.	१६५३	वैशाखसुदि ४ बुधवार	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	महावीर जिनालय, मेड़ता	वही, भाग २, लेखांक ४४१.
३०.	१६५३	,,	हीरविजयसूरि की पाषाण की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	कुन्थुनाथ जिनालय, तपागच्छीय उपाश्रय, मेड़ता सिटी	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक १०५४.
३१.	१६५३	,,	शीतलनाथ की पाषाण की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, मेड़ता सिटी	वही, लेखांक १०५६.
३२.	१६५३	,,	अरनाथ की पाषाण की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, लेखांक १०५७.
३३.	१६५३	,,	महावीर की पाषाण की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, लेखांक १०५८.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३४.	१६५३	,,	मूलनायक कुन्थुनाथ की पाषाण की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	कुन्थुनाथ जिनालय, .तपागच्छीय उपाश्रय, मेड़ता सिटी	वही, लेखांक १०५५.
३५.	१६५३	कार्तिक सुदि ८	वासुपूज्य की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अरनाथ जिनालय, जीरारपाड़ो, खंभात	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ७६२.
३६.	१६५३	माघ सुदि १४	संभवनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	महावीर जिनालय, पींडवाड़ा	**अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेख-संदोह**, (आबू-भाग ५), लेखांक ३८५.
३७.	१६५४	माघ सुदि१२ बुधवार	सुमतिनाथ की पाषाण की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अजमेर संग्रहालय, अजमेर	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक १०६७.
३८.	१६५४	,,	मुनिसुव्रत की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, लेखांक १०६८.
३९.	१६५४	तिथिविहीन	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चौमुखजी का देरासर, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक १४२.
४०.	१६५४	,,	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	संभवनाथ जिनालय, बोलपीपलो, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ११३६.
४१.	१६५४	,,	अजितनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, भाग २, लेखांक ११३७.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४२.	१६५४	"	संभवनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, भाग २, लेखांक ११३८.
४३.	१६५५	माघ वदि ४	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	धनवसही, तलहटी, पालीताना	**शत्रुंजयवैभव,** लेखांक २९७.
४४.	१६५६	वैशाख सुदि ७ बुधवार	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	कल्याण पार्श्वनाथ देरासर, मामा की पोल, बड़ोदरा	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ३५.
४५.	१६५६(अला-ई सम्वत्४५)	वैशाख सुदि ७ बुधवार			**प्राचीनजैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ४५४.
४६.	१६५६	फाल्गुन वदि २ गुरुवार	संभवनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सुमतिनाथ जिनालय, माघवलाल बाबू की धर्मशाला, पालीताना	**जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक १७६४.
४७.	१६५८	माघ सुदि५ सोमवार	संभवनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, भद्रावती, कच्छ	**जैनधातुप्रतिमालेख,** लेखांक ३१९.
४८.	१६५९	वैशाख सुदि ७ गुरुवार	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, माणेक चौक, खंभात	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ९१३.
४९.	१६५९	वैशाख वदि १३ बुधवार	अजितनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	महावीर जिनालय, रीज रोड़, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक ९७१.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५०.	१६५९(इला-ही सम्वत्४८)	वैशाख वदि १३ बुधवार	विमलनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सुपार्श्वनाथ जिनालय, जैसलमेर	**जैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक २२०१.
५१.	१६६०	वैशाख सुदि १३ सोमवार	कुन्थुनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, किशनगढ़	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक १०७५.
५२.	१६६०	ज्येष्ठ सुदि १४	पीतल के तीर्थपट्ट पर उत्कीर्ण लेख	अजितनाथ जिनालय, सिरोही	**अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेख-संदोह,** (आबू- भाग ५), लेखांक २५२.
५३.	१६६१	वैशाख सुदि ७ सोमवार	कुन्थुनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, माणेक चौक, खंभात	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ९१४.
५४.	१६६१	,,	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, भाग २, लेखांक ९१५.
५५.	१६६१	,,	भोंयरे के द्वार पर उत्कीर्ण शिलालेख	बावन जिनालय, प्रभास पाटन, गुजरात	**जैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक १७९४.
५६.	१६६२	द्वितीय चैत्र वदि ६ गुरुवार	चन्द्रप्रभ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	मुनिसुव्रत जिनालय, अलिंग, खंभात	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ८५४.
५७.	१६६२	वैशाख सुदि ३ बुधवार	नमिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, मामा की पोल, बड़ोदरा	वही, भाग २, लेखांक ११३.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५८.	१६६३	वैशाख सुदि ६ बुधवार	मुनिसुव्रत की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	महावीर जिनालय, रीज रोड़, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक ९६१.
५९.	१६६४	वैशाख सुदि ७	हीरविजयसूरि की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अजितनाथ जिनालय, कोचरों का चौक, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक १५५२.
६०.	१६६५	तिथिविहीन	प्रशस्ति लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, केकिन्द	**जैनलेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ८७४.
६१.	१६६६	पौष वदि ६ भृगुवार (शुक्रवार)	विमलनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	विमलनाथ जिनालय, जैसलमेर	वही, भाग ३, लेखांक २४३९.
६२.	१६६७	माघ वदि ६	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, किशनगढ़	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक १०८६.
६३.	१६६७	,,	श्रेयांसनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही,लेखांक १०८७.
६४.	१६६७	माघ सुदि ६	मूलनायक विमलनाथ की पाषाण की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	विमलनाथ जिनालय, सवाई माधोपुर	वही, लेखांक १०८८.
६५.	१६६७	तिथिविहीन	विमलनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	धर्मनाथ जिनालय, बड़ा बाजार, कलकत्ता	**जैनलेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक १२०.
६६.	१६६८	आषाढ़ सुदि २ शनिवार	चिन्तामणि पार्श्वनाथ के परिकर पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, माणेक चौक, खंभात	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ९८०.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६७.	१६७०	वैशाख सुदि ५ सोमवार	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा के परिकर पर उत्कीर्ण लेख	घर देरासर, जयपुर	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक १०९७.
६८.	१६७०	वैशाख सुदि ८	श्रेयांसनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चौमुखजी का देरासर, ईडर	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक १४३४.
६९.	१६७०	श्रावण सुदि	संभवनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	संभवनाथ जिनालय, अजमेर	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखाक १०९८.
७०.	१६७०	माघ सुदि २	आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सुमतिनाथ जिनालय, माधवलाल बाबू की धर्मशाला, पालीताना	**जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक १७४१.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आचार्य विजयसेनसूरि के समय में ही हीरविजयसूरि की विशाल शिष्य सन्तति में परस्पर विचार भेद बढ़ते-बढ़ते उग्र हो गया और वि०सं० १६७२ में उनकी मृत्यु के पश्चात् उनके दो पट्टधर हो गये- विजयदेवसूरि और विजयतिलकसूरि। विजयदेवसूरि से तपागच्छ की मूल परम्परा आगे बढ़ी तथा विजयतिलकसूरि से तपागच्छ की एक नूतनशाखा-**विजयाणंदसूरिशाखा** अपरनाम **आनन्दसूरिशाखा** अस्तित्व में आयी।

तपागच्छ के प्रभावक महापुरुषों में आचार्य हीरविजयसूरि और विजयसेनसूरि के पश्चात् विजयदेवसूरि का नाम आता है। खरतरगच्छीय विद्वान्मुनि श्रीवल्लभ उपाध्याय द्वारा रचित **विजयदेवमहात्म्य**[८८] (रचनाकाल वि०सं० १७०९ से पूर्व); महोपाध्याय मेघविजय द्वारा इस पर रचित **विवरण**[८९] (रचनाकाल वि०सं० १७०९ से पूर्व) और मेघविजय द्वारा ही वि०सं० १७२७ में रचित **देवानन्दमहाकाव्य**[९०] में विजयदेवसूरि का विस्तृत जीवनचरित्र वर्णित है। इसके अतिरिक्त मेघविजयगणि द्वारा ही रचित **श्रीतपगच्छपट्टावलीसूत्रवृत्त्यनुसंधान**[९१] तथा तपागच्छ की उत्तरकालीन अन्य **पट्टावलियों**[९२] से भी इनके बारे में जानकारी प्राप्त होती है। प्राप्त विवरणानुसार वि०सं० १६३४ में ईडर नामक स्थान में इनका जन्म हुआ था। वि०सं० १६४३ में विजयसेनसूरि से इन्होंने दीक्षा ग्रहण की और वि०सं० १६५६ में आचार्य पद प्राप्त किया। गुरु के निधन के पश्चात् ये उनके पट्टधर बने।

इनके समय में हीरविजयसूरि के विशाल शिष्य-प्रशिष्य परिवार में परस्पर जो वैमनस्य उत्पन्न हो गया था, उसकी चर्चा जहाँगीर के दरबार में भी पहुँच गयी। उसने विजयदेवसूरि को उत्सुकतावश, जब वह मांडू में था, बुलवाया। सूरिजी उस समय खंभात में थे। बादशाह का आमंत्रण पाकर उन्होंने विहार किया और मांडू पहुँचकर आश्विन सुदि १३ को बादशाह से मिले।[९३] वहाँ इनका समुचित सम्मान हुआ। सूरिजी की विद्वत्ता, तेजस्विता और क्रियानिष्ठा से वह बहुत प्रभावित हुआ और इन्हें **जहांगीरी महातपा** की उपाधि प्रदान की।[९४] तपागच्छीय मुनिजनों द्वारा इस काल में लोकभाषाओं में रचित विशालसाहित्य अपने आप में एक स्वतंत्र अध्ययन का विषय है।

विज्ञप्तिपत्रों का इस युग में विशेष विकास हुआ। विजयदेवसूरि और उनके प्रथम पट्टधर विजयसिंहसूरि (जिनका वि०सं० १७०९ में गुरु की विद्यमानता में ही निधन हो गया था।) को विद्वान् शिष्यों द्वारा अनेक **विज्ञप्तिपत्र** प्रेषित किये गये।[९५] इन **विज्ञप्तिपत्रों** में प्रवास यात्राओं में आगत स्थान, गिरि, नगर, ग्राम आदि का सुन्दर और प्रामाणिक वर्णन पाया जाता है। भौगोलिक और ऐतिहासिक दृष्टि से इन **विज्ञप्तिपत्रों** का महत्त्व निर्विवाद है। आचार्य विजयदेवसूरि का वि०सं० १७१३ में ऊना नामक स्थान पर, जहां हीरविजयसूरि का निधन हुआ था, देहान्त हुआ।[९६]

विजयदेवसूरि द्वारा प्रतिष्ठापित सलेख जिन प्रतिमाओं पर वि०सं० १६५७ से १७१३ तक उत्कीर्ण लेख मिलते हैं। इनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आचार्य विजयदेवसूरि द्वारा प्रतिष्ठापित और अद्यावधि उपलब्ध सलेख जिनप्रतिमाओं की तालिका

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमांक	वि० सं०	तिथि - वार	लेख का स्वरूप	प्राप्ति स्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१.	१६५७	पौष सुदि ४ बुधवार	तीर्थंकर की पाषाण प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	धर्मनाथ जिनालय, मेड़ता सिटी	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक १०७१.
२.	१६५८	माघ सुदि ५ सोमवार	संभवनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	धर्मनाथ जिनालय, बड़ा बाजार, कलकत्ता	**जैनलेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ११३.
३.	१६६४	भाद्रपद वदि १	नमिनाथ की पाषाण प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, मेड़ता सिटी	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक १०८३.
४.	१६६४	पौष वदि १ बुधवार	धर्मनाथ की धातु-प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैन मंदिर, गवाड़ा	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ६५४.
५.	१६६४	फाल्गुन सुदि ८ शनिवार	शिलालेख	पंचासरा पार्श्वनाथ जिनालय, पाटण	**प्राचीनजैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ५१२.
६.	१६६४	"	वही	वही	वही, लेखांक ५१३.
७.	१६६६	पौष वदि ८ शनिवार	परिकर पर उत्कीर्ण लेख	नया जैन मंदिर, सलखणपुर	**प्राचीनजैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ४९७.
८.	१६६६	फाल्गुन सुदि१० शुक्रवार	हीरविजयसूरि की चरणपादुका पर उत्कीर्ण लेख	जैन मंदिर, खेड़ा	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ४०६.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९.	१६६७	फाल्गुन सुदि६सोमवार	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, रेजीडेन्सी बाजार, उदयपुर	**जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक २०५७.
१०.	१६६७ शक-सं०१५३२	तिथिविहीन			**प्राचीनजैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ४२०.
११.	१६६८	द्वितीयआषाढ़ सुदि ६ शुक्रवार		नाकोड़ा तीर्थ	**जैनलेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ७२५.
१२.	१६७०	माघ सुदि ५	मुनिसुव्रत की धातु-प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैन देरासर, सौदागर पोल, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ७८१.
१३.	१६७२	ज्येष्ठ सुदि५ शुक्रवार	सुविधिनाथ की धातु कर प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, मालपुरा	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह**, लेखांक ११०३.
१४.	१६७२	माघ सुदि१३ शुक्रवार	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, लींबडी, पाटण	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक २७४.
१५.	१६७२	,,	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, भाग १, लेखांक २७२.
१६.	१६७२	तिथिविहीन	शिलालेख	मुनिसुव्रत जिनालय, मालपुरा	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ११०७.
१७.	१६७३	पौष वदि ५ शुक्रवार	स्फटिक की प्रतिमा पर पर उत्कीर्ण लेख	घर देरासर, पाटण	**प्राचीनजैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ५३२.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१८.	१६७४	वैशाख वदि १		आदिनाथ जिनालय, हीराबाड़ी, नागौर	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ११२४.
१९.	१६७४	माघ वदि १ गुरुवार	आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, नाडलाई	**जैनलेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ८५३.
२०.	१६७४	माघ वदि १	अजितनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अजितनाथ जिनालय, कोचरों का चौक, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक १५४७.
२१.	१६७४	माघ वदि १ गुरुवार	वासुपूज्य की पाषाण की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वासुपूज्य जिनालय, मेड़ता सिटी	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक १११९.
२२.	१६७४	,,	महावीर की पाषाण की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	कुन्थुनाथ जिनालय, मेड़ता सिटी	वही, लेखांक ११०८.
२३.	१६७४	,,	पार्श्वनाथ की पाषाण की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, लेखांक ११०९.
२४.	१६७४	,,	सुमतिनाथ की पाषाण की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, लेखांक १११०.
२५.	१६७४	,,	शांतिनाथ की पाषाण की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	उपकेशगच्छीय शांतिनाथ जिनालय, मेड़ता सिटी	वही, लेखांक १११३.
२६.	१६७४	,,	सुविधिनाथ की पाषाण की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चौमठिया जी का मंदिर, नागौर	वही, लेखांक १११५.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२७.	१६७४	,,	धर्मनाथ की पाषाण की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	धर्मनाथ जिनालय, खजवाना	वही, लेखांक १११६.
२८.	१६७४	,,	सुविधिनाथ की पाषाण की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बड़ा मंदिर, नागौर	वही, लेखांक १११८.
२९.	१६७४	,,	--	महावीर जिनालय, मेड़ता सिटी	वही, लेखांक १११२.
३०.	१६७४	,,	मुनिसुव्रत की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बड़ा मंदिर, नागौर	वही, लेखांक १११९.
३१.	१६७४	,,	शांतिनाथ की पाषाण की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, लेखांक ११२०.
३२.	१६७४	,,	सुमतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, लेखांक ११२१.
३३.	१६७४	,,	सुपार्श्वनाथ की पाषाण की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही,	वही, लेखांक ११२२.
३४.	१६७४	,,	नमिनाथ की पाषाण की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, लेखांक ११२३.
३५.	१६७४	,,	आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख		**प्राचीनजैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ३३७.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३६.	१६७४	,,	मुनिसुव्रत की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	श्रीस्वामी जी का मंदिर, रौशन मुहल्ला, आगरा	**जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक १४६०.
३७.	१६७४	माघ वदि २ गुरुवार	नमिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	यति श्यामलालजी का उपाश्रय, जौहरी बाजार, जयपुर	वही, भाग १, लेखांक ५८१.
३८.	१६७४	माघ वदि ९ गुरुवार	,,	पार्श्वचन्द्रगच्छीय उपाश्रय, जयपुर	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह**, लेखांक १११७.
३९.	१६७४	,,	आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चौसठिया जी का मंदिर, नागौर	वही, लेखांक १११४.
४०.	१६७५	वैशाख सुदि ६ शुक्रवार	अस्पष्ट	शत्रुंजय	**प्राचीनजैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक २५.
४१.	१६७५	माघ सुदि ४ शनिवार	महावीर की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आरासणा तीर्थ, आरासण	**प्राचीनजैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक २९३.
४२.	१६७५	,,	महावीर की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, नवापुरा, सूरत	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ६०१.
४३.	१६७५	,,	अस्पष्ट	नेमिनाथ जिनालय, आरासणा	**अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेख-संदोह**, लेखांक ३९.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४४.	१६७७	वैशाख सुदि ३ शनिवार	आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, मेड़ता	**जैनलेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ७५०.
४५.	१६७७	वैशाख सुदि ३ शनिवार (अक्षय तृतीया)	मुनिसुव्रत की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	नया मंदिर, मेड़ता	**प्राचीनजैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक ४३८.
४६.	१६७७	,,		,,	वही, लेखांक ४४०.
४७.	१६७७	,,	महावीर की पाषाण प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, मेड़ता सिटी	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह**, लेखांक ११२७.
४८.	१६७७	,,	,,	,,	वही, लेखांक ११२८.
४९.	१६७७	,,	,,	,,	वही, लेखांक ११३०.
५०.	१६७७	,,	धर्मनाथ की पाषाण की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	,,	वही, लेखांक ११३१.
५१.	१६७७	,,	,,	,,	वही, लेखांक ११३३.
५२.	१६७७	,,	सुमतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	,,	वही, लेखांक ११३४.
५३.	१६७७	,,	मुनिसुव्रत की पाषाण की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	,,	वही, लेखांक ११३७.
५४.	१६७७	,,	तीर्थंकर प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	,,	वही, लेखांक ११३८.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५५.	१६७७	''	वासुपूज्य की पाषाण की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	कुन्थुनाथ जिनालय, मेड़ता सिटी	वही, लेखांक ११३९.
५६.	१६७७	''	शांतिनाथ की पाषाण की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पंचायती मंदिर, जयपुर	वही, लेखांक ११४०.
५७.	१६७७	''	अष्टदलकमल पर उत्कीर्ण लेख	धर्मनाथ जिनालय, मेड़ता	वही, लेखांक ११४१.
५८.	१६७७	''	मुनिसुव्रत की पाषाण की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	''	वही, लेखांक ११४२.
५९.	१६७७	''	महावीर की पाषाण की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पंचायती मंदिर, जयपुर	वही, लेखांक ११३५.
६०.	१६७७	वैशाख सुदि३ (अक्षयतृतीया)	मुनिसुव्रत की पाषाण की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	महावीर जिनालय, मेड़ता सिटी	वही, लेखांक ११३६ एवं **जैनलेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ७८४.
६१.	१६७७	''	''	पार्श्वनाथ जिनालय, मेड़ता सिटी	वही, भाग १, लेखांक ७५४.
६२.	१६७७	मार्गशीर्ष सुदि...रविवार	पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, चेलपुरी, दिल्ली	वही, भाग १, लेखांक ४५२.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६३.	१६७७	ज्येष्ठ सुदि १३	चन्द्र(प्रभ) की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, किशनगढ़	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ११५६.
६४.	१६७७	.....वदि ३	कुन्थुनाथ की पाषाण की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	उपकेशगच्छीय शांतिनाथ जिनालय, मेड़ता सिटी	वही, लेखांक ११५७.
६५.	१६७७	कार्तिक वदि २ बुधवार	अनन्तनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सीमंधर स्वामी का मंदिर, खारवाड़ो, खंभात	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक १०५८.
६६.	१६७७	,,	संभवनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, जीगरपाड़ो, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ७२६.
६७.	१६७७	,,	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अनन्तनाथ जिनालय, खारवाड़ो, खंभात	वही, भाग २, लेखांक १०४३.
६८.	१६७७	,,	,,	नवखंडापार्श्वनाथ जिनालय, भोयरापाड़ो, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ८६४.
६९.	१६७७	,,	,,	मनमोहन पार्श्वनाथ जिनालय, मीयागाम	वही, भाग २, लेखांक २७८.
७०.	१६७७	कार्तिक सुदि६ रविवार	अनन्तनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अभिनन्दननाथ जिनालय, लालवाड़ो, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ८५९.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७१.	१६७७	,,	विमलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	कंसारी पार्श्वनाथ जिनालय, खारवाड़ो, खंभात	वही, भाग २, लेखांक १०३७.
७२.	१६७७	मार्गशीर्ष सुदि५रविवार	पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैन मंदिर, गंधार	**प्राचीनजैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ४५७.
७३.	१६७७	,,	,,	वही	वही, भाग २, लेखांक ४५८.
७४.	१६७७	तिथिविहीन	मुनिसुव्रत की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, लेखांक ४५९.
७५.	१६७७	मार्गशीर्ष (सुदि) ५ रविवार	अस्पष्ट	अमीझरा पार्श्वनाथ जिनालय, जीरावाड़ो, खंभात	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ७५८.
७६.	१६७७	,,	शीतलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, माणेक चौक, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ७९३.
७७.	१६७७	,,	मुनिसुव्रत की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, माणेक चौक, खंभात	वही, भाग २, लेखांक १०२२.
७८.	१६७७	,,	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, शकोपुरा, बड़ोदरा	वही, भाग २, लेखांक ९१०.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७९.	१६७७	फाल्गुन सुदि ८ सोमवार	कुन्थुनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जगवल्लभ पार्श्वनाथ देरासर, नीशापोल, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक १२०८.
८०.	१६७७	तिथिविहीन	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, बोल पीपलो, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ११२९.
८१.	१६७७	--	मुनिसुव्रत की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, माणेक चौक, खंभात	वही, भाग २, लेखांक १०२२.
८२.	१६७८	ज्येष्ठ सुदि ६सोमवार	नमिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चौमुखजी का देरासर, ईडर	वही, भाग १, लेखांक १४४५.
८३.	१६७८	ज्येष्ठ सुदि १०शुक्रवार	महावीर की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, शांतिनाथ पोल, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक १२८५.
८४.	१६७८	मार्गशीर्ष सुदि १४	--अस्पष्ट	मुनिसुव्रत जिनालय, मालपुरा	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ११५८.
८५.	१६७८	माघ सुदि ५	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	घर देरासर, जयपुर	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ११५९.
८६.	१६७८	फाल्गुन सुदि ९ शनिवार	तीर्थंकर की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	खरतरगच्छीय बड़ा जैन मंदिर, तुलापट्टी, कलकत्ता	**जैनधातुप्रतिमालेख,** लेखांक ३२२.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८७.	१६७८	"	विमलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	"	वही, लेखांक ३२३.
८८.	१६७८	तिथिविहीन	संभवनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, ईडर	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक १४८५.
८९.	१६७९	वैशाख सुदि २ शनिवार	शांतिनाथ की पाषाण की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, मसूदा	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ११६०.
९०.	१६८१	प्रथम चैत्र वदि ५ गुरुवार	आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, जालौर दुर्ग	**प्राचीनजैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ३५८.
९१.	१६८१	"	आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चौमुख जी का मंदिर, जालौर	**जैनलेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ९११.
९२.	१६८१	ज्येष्ठ सुदि १३ बुधवार	"	भाभा पार्श्वनाथ देरासर, पाटण	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक २२४.
९३.	१६८२	ज्येष्ठ वदि २ गुरुवार	संभवनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वीर जिनालय, रीजरोड, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक ९८९.
९४.	१६८३	वैशाख सुदि १	वासुपूज्य की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ५७८.
९५.	१६८३	ज्येष्ठ सुदि ६ गुरुवार	यंत्र पर उत्कीर्ण लेख	सुपार्श्वनाथ जिनालय, जैसलमेर	**जैनलेखसंग्रह**, भाग ३, लेखांक २२१४.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९६.	१६८३	आषाढ़ वदि ४ गुरुवार	अस्पष्ट	जैनमंदिर, जालौर दुर्ग	**प्राचीनजैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक ३५६
९७.	१६८३	,,	धर्मनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख		वही, लेखांक ३५५.
९८.	१६८३	आषाढ़ वदि ४ गुरुवार	सुविधिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	गौड़ीपार्श्वनाथ जिनालय, अजमेर	**जैनलेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ५४२.
९९.	१६८३	,,	सुमतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	गौड़ीपार्श्वनाथ जिनालय, कोलर	**अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेख-संदोह**, (आबू, भाग ५), लेखांक २४२.
१००.	१६८३	,,	धर्मनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	संभवनाथ जिनालय, जैसलमेर	**जैनलेखसंग्रह**, भाग ३, लेखांक २३७४.
१०१.	१६८३	,,	मुनिसुव्रत की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सुपार्श्वनाथ जिनालय, जैसलमेर	वही, भाग ३, लेखांक २२०७.
१०२.	१६८३	,,	संभवनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	,,	वही, भाग ३, लेखांक २२०८.
१०३.	१६८३	,,	धर्मनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	महावीर जिनालय, तोपखाना, जालोर	वही, भाग १, लेखांक ९०५.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०४.	१६८३	”	--	वही	वही, भाग १, लेखांक ९०६.
१०५.	१६८३	”	सुपार्श्वनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, भाग १, लेखांक ९०७.
१०६.	१६८३	”	अजितनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, भाग १, लेखांक ९०८.
१०७.	१६८३	”	वासुपूज्य स्वामी की धातु प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, अजमेर	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह**, लेखांक ११६५.
१०८.	१६८३	तिथिविहीन	सुमतिनाथ की पाषाण की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, मेड़ता सिटी	वही, लेखांक ११६७.
१०९.	१६८३	आश्विन वदि ... गुरुवार	अस्पष्ट	महावीर जिनालय, तोपखाना, जालौर	**जैनलेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ९१०.
११०.	१६८४	माघ वदि १० सोमवार	कुन्थुनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वासुपूज्य जिनालय, मेड़ता सिटी	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह**, लेखांक ११६९.
१११.	१६८४	”	धर्मनाथ की पाषाण की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, लेखांक ११७०.
११२.	१६८४	”	शिलालेख	जैन मंदिर, मेड़ता	**प्राचीनजैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक ४३७.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११३.	१६८४	,,	शीतलनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वीर जिनालय, बैदों का चौक, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक १२३७.
११४.	१६८४	,,	कुन्थुनाथ की पाषाण की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अजितनाथ जिनालय, मेड़ता सिटी,	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ११७२.
११५.	१६८४	,,	वासुपूज्य की पाषाण की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	महावीर जिनालय, मेड़ता सिटी	वही, लेखांक ११७३.
११६.	१६८४	,,	शीतलनाथ की पाषाण की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, लेखांक ११७४.
११७.	१६८४	,,	धर्मनाथ की प्रतिमा का लेख	वही	वही, लेखांक ११७५.
११८.	१६८४	,,	आदिनाथ की पाषाण की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख		वही, लेखांक ११७६.
११९.	१६८४	,,	शांतिनाथ की पाषाण की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	धर्मनाथ जिनालय, मेड़ता सिटी	वही, लेखांक ११७७.
१२०.	१६८५	वैशाख सुदि ७ गुरुवार	मुनिसुव्रत (?) की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बावन जिनालय, उदयपुर	**जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक १९४३.
१२१.	१६८५	वैशाख सुदि १५	संभवनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पंचायती जैन मंदिर, सराफा बाजार, ग्वालियर	वही, भाग २, लेखांक १३९१.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१२२.	१६८५	"	नमिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	प्रेमाभाई हेमाभाई की टोंक, शत्रुंजय	वही, भाग १, लेखांक ६९४.
१२३.	१६८६	वैशाख सुदि ८	कुन्थुनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, किशनगढ़	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ११७९.
१२४.	१६८६	"	सुमतिनाथ की पाषाण की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वासुपूज्य जिनालय, मेड़ता सिटी	वही, लेखांक ११८०.
१२५.	१६८६	प्रथम आषाढ़ वदि ५ शुक्रवार	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पद्मप्रभ जिनालय, नाडोल	**प्राचीनजैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ३९९.
१२६.	१८६८	"	पद्मप्रभ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, भाग २, लेखांक ३६७.
१२७.	१६८६	ज्येष्ठ सुदि १३गुरुवार	चिन्तामणि पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर सांड़ की पोल, मेड़ता	वही, भाग २, लेखांक ४३६.
१२८.	१६८६	ज्येष्ठ सुदि१३ गुरुवार	"	वासुपूज्य जिनालय, मेड़ता	**जैनलेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ७५५.
१२९.	१६८७	ज्येष्ठ सुदि १	सुविधिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सुपार्श्वनाथ का पंचायती बड़ा मंदिर, जयपुर	वही, भाग २, लेखांक ११७३.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१३०.	१६८७	ज्येष्ठ सुदि १३ गुरुवार	पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	गौड़ी पार्श्वनाथ जिनालय, अजमेर	वही, भाग १, लेखांक ५४३.
१३१.	१६८७	,,	जगवल्लभ पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	युगादीश्वर जिनालय, मेड़ता सिटी	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ११८३.
१३२.	१६८७	,,	मनमोहन पार्श्वनाथ की पाषाण की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अजितनाथ जिनालय, मेड़ता सिटी	वही, लेखांक ११८४.
१३३.	१६८७	,,	चिन्तामणि पार्श्वनाथ की पाषाण की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, मेड़ता सिटी	वही, लेखांक ११८५.
१३४.	१६९०	ज्येष्ठ वदि ११गुरुवार	हीरविजयसूरि की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	मुनिसुव्रत जिनालय, मालपुरा	वही, लेखांक ११८६.
१३५.	१६९१	वैशाख सुदि १० गुरुवार	मुनिसुव्रत की पाषाण की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	,,	वही, लेखांक ११८७.
१३६.	१६९३	वैशाख सुदि ६गुरुवार	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चन्द्रप्रभ जिनालय, सैंडहर्स्ट रोड, मुम्बई	**जैनधातुप्रतिमालेख,** लेखांक ३२७.
१३७.	१६९३	फाल्गुन सुदि१२ शनिवार	,,	वीरजिनालय, मामापोल, बड़ोदरा	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ६५.
१३८.	१६९३	तिथिविहीन	आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	प्रतापचन्द जी ढड्ढा का घर देरासर, जयपुर	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ११८८.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१३९.	१६९३	,,	धर्मनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, लेखांक ११८९.
१४०.	१६९४	माघ सुदि ६गुरुवार	पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, लेखांक ११९०.
१४१.	१६९४	माघ सुदि ३गुरुवार	सुमतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बालावसही, शत्रुंजय	**शत्रुंजयवैभव,** लेखांक ३०२.
१४२.	१६९४	माघ सुदि ६गुरुवार	आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	माधवलाल बाबू का घर-देरासर, मुर्गीहाटा, कलकत्ता	**जैनलेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक १३०.
१४३.	१६९४	,,	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख		**जैनधातुप्रतिमालेख,** लेखांक ३२८.
१४४.	१६९४	,,	संभवनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सेठ नरसीनाथा का मंदिर, पालीताना	**जैनलेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ६७०.
१४५.	१६९४	माघ सुदि ६गुरुवार	सुमतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	**जैनलेखसंग्रह,** भाग १. लेखांक ६६९.
१४६.	१६९५	तिथिविहीन	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बालावसही, शत्रुंजय	**शत्रुंजयवैभव,** लेखांक ३०३.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१४७.	१६९६	ज्येष्ठ वदि ७सोमवार	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ देरासर, बलाद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ७६३.
१४८.	१६९६	फाल्गुन सुदि २	अंतरिक्ष पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, भद्रावती-मध्यप्रदेश	**जैनधातुप्रतिमालेख,** लेखांक ३३०.
१४९.	१६९७	माघ सुदि ६गुरुवार	संभवनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण	घर देरासर, जयपुर	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ११९३.
१५०.	१६९७	फाल्गुन सुदि ५	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ देरासर, रेजीडेन्सी बाजार, हैदराबाद	**जैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक २०५९.
१५१.	१७००	द्वितीय चैत्र सुदि ८	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	भीड़भंजन पार्श्वनाथ जिनालय, खेड़ा	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ४५८.
१५२.	१७००	द्वितीय चैत्र सुदि ८ गुरुवार	मुनिसुव्रत की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, मेड़ता सिटी	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ११९९.
१५३.	१७००	माघ सुदि १२बुधवार	कुन्थुनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, लक्ष्मणगढ़	वही, लेखांक १२००.
१५४.	१७०१	चैत्र सुदि ८बुधवार	सुमतिनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, भिंडीबाजार, मुम्बई	**जैनधातुप्रतिमालेख,** लेखांक ३३२.
१५५.	१७०१(?)	मार्गशीर्ष सुदि ५	पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, रेजीडेन्सी बाजार,हैदराबाद	**जैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक २०६०.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१५६.	१७०१	माघ सुदि ६	"		**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक ११९८.
१५७.	१७०१	"	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वीर जिनालय, वैदों का चौक, बीकानेर	वही, लेखांक १३०९.
१५८.	१७०१	फाल्गुन वदि ५	संभवनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	श्रेयांसनाथ देरासर, फताशाह की पोल, ईडर	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक १३६७.
१५९.	१७०२	फाल्गुन सुदि २	मुनिसुव्रत की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	गौड़ीपार्श्वनाथ जिनालय, पायधुनी, मुम्बई	**जैनधातुप्रतिमालेख,** लेखांक ३३३.
१६०.	१७०३	ज्येष्ठ वदि ७शुक्रवार	पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चीरेखाने का मंदिर, दिल्ली	**जैनलेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ५१४.
१६१.	१७०५	वैशाख वदि २	विमलनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	लाला हीरालाल चुन्नीलाल का घर देरासर, लखनऊ	वही, भाग २, लेखांक १६१३.
१६२.	१७०५	वैशाख वदि ७बुधवार	शीतलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, शांतिनाथ पोल, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक १२८६.
१६३.	१७०९	फाल्गुन सुदि ३रविवार	विजयसिंहसूरि की चरणपादुका पर उत्कीर्ण लेख	पंचासरा पार्श्वनाथ जिनालय, पाटण	**प्राचीनजैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ५१४.
१६४.	१७१३	आषाढ़ सुदि ११	२५ पंक्तियों का शिलालेख	जैनमंदिर, ऊना, काठियावाड़	**जैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक १७९७.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आचार्य विजयदेवसूरि ने विजयसिंहसूरि को अपना पट्टधर नियुक्त किया था। **ऐतिहासिकसज्झायमाला**[१०] से इनके बारे में विस्तृत विवरण प्राप्त होता है। पट्टावलियों में इनके जन्म, दीक्षा, आचार्य पद और मृत्यु के बारे में सूचनायें प्राप्त होती हैं जिन्हें एक तालिका के रूप में निम्न प्रकार से रखा जा सकता है :

पट्टावली का नाम	रचनाकार का नाम	जन्मतिथि	दीक्षा काल	वाचक पद	आचार्य पद प्राप्ति का काल	मृत्यु का काल	संदर्भग्रन्थ
१. **तपागच्छपट्टावलीसूत्र वृत्तिनुसंधानम्**	उपाध्याय मेघविजय (रचनाकाल वि०सं० १७३२	१६४४	१६५४	१६७२	१६८१	१७०८	**पट्टावलीसमुच्चय,** भाग २, पृष्ठ ९६.
२. **पट्टावलीसारोद्धार**	रविवर्धन (रचनाकाल वि०सं० १७३९ के आसपास	१६४४	१६५४	१६७३	१६८२	१७०९ आषाढ़ सुदि २शनिवार	वही, भाग १, पृष्ठ १६१
३. **श्रीगुरु पट्टावली**	अज्ञात	१६४४	१६५४	१६७५	१६८१	१७०८	वही, भाग १, पृष्ठ १७५.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उक्त तालिका से ज्ञात होता है कि इनके जन्म और दीक्षा की तिथियों के बारे में पट्टावलियों में जो तिथियाँ दी गयी हैं, वे तो समान हैं किन्तु इनके आचार्य पदारोहण और मृत्यु के सम्बन्ध में दी गयी तिथियों में एक-एक वर्ष का अन्तर है।

गौड़ी पार्श्वनाथ जिनालय, अजमेर में संरक्षित भगवान् पार्श्वनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा पर वि०सं० १६७९ का एक लेख उत्कीर्ण है। महोपाध्याय विनयसागर ने इसकी वाचना दी है, जो इस प्रकार है :

संवत् १६७९ वर्षे आषाढ़ सुदि १३ गुरौ मेड़तानगर वास्तव्य.....भं०।उ०।सदे पुत्र को० दीपलुनेकेन श्री पार्श्व बिं० का०प्र० तपागच्छे भ० **श्रीविजयदेवसूरिभिः स्वपदस्थापित-श्रीविजयसिंहसूरिपरिवृतैः**।

प्रतिष्ठालेखसंग्रह, लेखांक ११६२.

उक्त प्रतिमा लेख के पाठ को यदि हम सही मानें तो यह स्वीकार करना होगा कि वि०सं० १६७९ में विजयसिंहसूरि अपने गुरु द्वारा आचार्य पद पर प्रतिष्ठापित हो चुके थे और ऐसी स्थिति में पट्टावलियों में इनके आचार्य पदारोहण की दी गयी तिथियों (वि०सं० १६८१-१६८२) की प्रामाणिकता के सम्बन्ध में शंका उत्पन्न हो जाती है।

चूंकि वि०सं० १७०९ में इनका आकस्मिक रूप से निधन हो गया था और तपागच्छनायक विजयदेवसूरि ने वि०सं० १७१० में विजयप्रभसूरि को आचार्य पद देकर अपना पट्टधर बनाया जिन्होंने वि०सं० १७१३ में गुरु की मृत्यु के बाद तपागच्छ का नायकत्त्व ग्रहण किया और जिनसे गच्छ की परम्परा आगे बढ़ी। इस प्रकार स्वाभाविक रूप से विजयसिंह सूरि के बारे में लोगों की स्मृति शनैः शनैः क्षीण होने लगी और संभवतः यही कारण है कि उनकी मृत्यु के २५-३० वर्ष पश्चात् ही रची गयी पट्टावलियों में उनके आचार्य पदारोहण और मृत्यु के सम्बन्ध में अलग-अलग तिथियाँ प्राप्त होती हैं।

विजयसिंहसूरि द्वारा अपने गुरु विजयदेवसूरि को वि०सं० १६९९ में प्रेषित एक विज्ञप्तिपत्र[९८] भी प्राप्त हुआ है। इसी प्रकार विजयसिंहसूरि के शिष्यों--विजयवर्धन[९९] द्वारा वि०सं० १७०३ और वि०सं० १७०४ में; उदयविजय[१००] द्वारा वि०सं० १६९९ तथा अमरचन्द्र[१०१] कमलविजय[१०२] और लावण्यविजय[१०३] द्वारा वि०सं० १७०९ में प्रेषित विज्ञप्तिपत्र भी प्राप्त हुए हैं।

विजयसिंहसूरि द्वारा प्रतिष्ठापित कुछ जिनप्रतिमायें भी प्राप्त हुई हैं जो वि०सं० १६७९ से वि०सं० १७०५ तक की हैं। इनका विवरण इस प्रकार है :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विजयसिंहसूरि द्वारा प्रतिष्ठापित और अद्यावधि उपलब्ध सलेख जिन प्रतिमाओं की तालिका

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख क्रमांक	सम्वत्	तिथि/मिति/वार	लेख का स्वरूप	प्रतिष्ठास्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१.	१६७९	आषाढ़ सुदि१३ गुरुवार	पार्श्वनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	गौड़ी पार्श्वनाथ जिनालय, अजमेर	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ११६२.
२.	१६८४	माघ सुदि८ सोमवार	कमलबंध पर उत्कीर्ण लेख	संभवनाथ जिनालय, अजमेर	वही, लेखांक ११७१.
३.	१६८४	माघ सुदि १०	कुन्थुनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख		**प्राचीनजैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ३५९.
४.	१६८४	,,	,,	महावीर जिनालय, तोपखाना, जालौर	**जैनलेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ९०९.
५.	१६८६	वैशाख सुदि ८	सुमतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	महावीर जिनालय, मेड़ता	वही, भाग १, लेखांक ७८३.
६.	१६८६	वैशाख सुदि ८ शनिवार	पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	नवलखा पार्श्वनाथ जिनालय, पाली	वही, भाग १, लेखांक ८२५.
७.	१६८६	,,	महावीर की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही,	वही, भाग १, लेखांक ८२६.
८.	१६८६	,,	सुपार्श्वनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही,	वही, भाग १, लेखांक ८२७.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९.	१६८६	,,	मूलनायक आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, मेवाड़ी	**प्राचीनजैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ३४१.
१०.	१६८६	,,		नवलखा पार्श्वनाथ जिनालय, पाली	वही, भाग २, लेखांक ३९५.
११.	१६८६	,,		पंचतीर्थी मंदिर, मेड़ता	वही, भाग २, लेखांक ४४२.
१२.	१६८६	वैशाख सुदि ८	महावीर की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	नवलखा पार्श्वनाथ जिनालय, पाली	वही, भाग २, लेखांक ३९४.
१३.	१६८६	,,	अस्पष्ट	वही	वही, भाग २, लेखांक ३९३.
१४.	१६८६	,,	,,	शांतिनाथ जिनालय, लोंढारोवास	वही, भाग २, लेखांक ३९९.
१५.	१६८६	वैशाख सुदि ८ शनिवार	आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, नाडलाई	**जैनलेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ८५६.
१६.	१६८६	,,	विमलनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शीतलनाथ जिनालय, उदयपुर	वही, भाग २, लेखांक ११०६.
१७.	१६८६	वैशाख सुदि ८	आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वासुपूज्य जिनालय, मेड़ता सिटी	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ११८१.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१८.	१६८६	वैशाख सुदि ९	पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	गौड़ी पार्श्वनाथ जिनालय, पाली	**जैनलेखसंग्रह,** भाग १. लेखांक ८२९.
१९.	१६८६	प्रथम आषाढ़ वदि ५ शुक्रवार	पद्मप्रभ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, नाडोल	वही, भाग १, लेखांक ८३७.
२०.	१६८६	,,	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, भाग १, लेखांक ८३८.
२१.	१६८७	ज्येष्ठ सुदि४ गुरुवार	चिन्तामणि पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वासुपूज्य जिनालय, मेड़ता सिटी	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ४५५.
२२.	१६८७	ज्येष्ठ सुदि १३ गुरुवार	सुमतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	नवघरे का मंदिर, चेलपुरी, दिल्ली	**जैनलेखसंग्रह,** भाग १. लेखांक ४५५.
२३.	१६८७	वैशाख सुदि ३	मूलनाथ शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, चुरू (राजस्थान)	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक २४०१.
२४.	१६८८	माघ वदि १गुरुवार	सुविधिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	यतिश्यामलालजी का उपाश्रय, जयपुर	**जैनलेखसंग्रह,** भाग १. लेखांक ५८२.
२५.	१६९३	चैत्र वदि.....गुरुवार	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चौमुखजी देरासर, ईडर	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक १४४८.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२६.	१६९३	वैशाख सुदि ६गुरुवार	कुन्थुनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनदेरासर, ईडर	वही, भाग १, लेखांक १३८६.
२७.	१६९३	वैशाख.....गुरुवार	पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बालावसही, शत्रुंजय	**शत्रुंजयवैभव,** लेखांक ३०१.
२८.	१६९३	वैशाख सुदि ६ गुरुवार	जिनप्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सेठ नरसीनाथा का मंदिर, पालीताना	**जैनलेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ६५६.
२९.	१६९३	कार्तिक वदि११ सोमवार	शीतलनाथ की पीतल की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शीतलनाथ जिनालय, उदयपुर	वही, भाग १, लेखांक १०२८.
३०	१६९३	फाल्गुन सुदि ३	कुन्थुनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	श्री माणिकचन्द्र जी का मंदिर, भद्रावती-मध्यप्रदेश	**जैनधातुप्रतिमालेख,** लेखांक ३२६.
३१.	१६९६	वैशाख सुदि ५	पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शत्रुंजय	**प्राचीनजैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ३०.
३२.	१६९७	वैशाख वदि २	पार्श्वनाथ की प्रतिमा के रजत परिकर पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, नासिक	**जैनधातुप्रतिमालेख,** लेखांक ३३०.
३३.	१६९७	फाल्गुन वदि ५ शुक्रवार	नमिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	खरतरगच्छीय बड़ा जैन मंदिर, तुलापट्टी, कलकत्ता	वही, लेखांक ३३१.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३४.	१६९७	फाल्गुन सुदि ५	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	श्रेयांसनाथ देरासर, फताशाह की पोल, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक १३८२.
३५.	१६९७	फाल्गुन सुदि ५ गुरुवार	नमिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	धर्मनाथ जिनालय, बड़ा बाजार कलकत्ता	**जैनलेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ११४.
३६.	१६९७	,,	आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ देरासर, उपलो गभारो, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ११३८.
३७.	१६९७	,,	अजितनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही,	वही, भाग १, लेखांक ११३४.
३८.	१६९८	भाद्रपद सुदि ५	मूलनायक चिन्तामणि पार्श्वनाथ के सिंहासन पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, किशनगढ़	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ११९५.
३९.	१६९९	वैशाख सुदि ९	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, नागौर	**जैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक १३१०.
४०.	१६९९	माघ वदि १ गुरुवार	सुविधिनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वचन्द्रगच्छ उपाश्रय, जयपुर	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ११९७.
४१.	१६९९	फाल्गुन वदि २	शीतलनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, नागौर	**जैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक १३११.
४२.	१६९९	फाल्गुन वदि १२ सोमवार	पार्श्वनाथ की चरणचौकी पर उत्कीर्ण लेख	बावन जिनालय, प्रभासपाटन, गुजरात	वही, भाग २, लेखांक १७९०.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४३.	१७०१	मार्गशीर्ष वदि १०	नमिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	महावीर जिनालय, सुंधीटोला, लखनऊ	वही, भाग २, लेखांक १५७५.
४४.	१७०१	मार्गशीर्ष वदि ११	पद्मप्रभ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	नवघरे का मंदिर, दिल्ली	वही, भाग १, लेखांक ५०६.
४५.	१७०३	मार्गशीर्ष सुदि १	मुनिसुव्रत की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सुमतिनाथ जिनालय, उदयपुर	वही, भाग २, लेखांक ११९७.
४६.	१७०५	वैशाख वदि २	संभवनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	महावीर जिनालय, झवेरीवाड़, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ८४८.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चूंकि वि०सं० १७०९में विजयसिंहसूरि का निधन हो गया अत: विजयदेवसूरि के पश्चात् वि०सं० १७१३ में विजयप्रभसूरि ने तपागच्छ का नायकत्त्व ग्रहण किया।

विजयप्रभसूरि का जन्म वि०सं० १६७७ में कच्छ प्रान्त में हुआ था। वि०सं० १६८६ में इन्होंने दीक्षा ग्रहण की और वि०सं० १७१० में इन्हें अपने गुरु विजयदेवसूरि से आचार्य पद प्राप्त हुआ।[१०४] उपाध्याय मेघविजय ने इनकी प्रशस्ति के रूप में **दिग्विजयमहाकाव्य**[१०५] की (वि०सं० १७१० के पश्चात्) रचना की। इन्होंने देश के बड़े भूभाग में विहार किया और श्रावकों को उपदेश देकर अनेक तीर्थों पर जीर्णोद्धार, नवनिर्माण-प्रतिमाप्रतिष्ठापना आदि का कार्य सम्पन्न कराया।

अपने गुरुभ्राता स्व० विजयसिंहसूरि की स्मृति में इन्होंने वि०सं० १७१३ कार्तिक वदि २ को खंभात[१०६] में तथा अपने गुरु विजयदेवसूरि की स्मृति में वि०सं० १७१३ माघ सुदि ५ को ऊना[१०७] में (जहाँ उनका निधन हुआ था) उनकी चरणपादुका स्थापित करायी।

आदिनाथ जिनालय, नाडलाई में संरक्षित मुनिसुव्रत की प्रतिमा पर उत्कीर्ण वि०सं० १७२१ ज्येष्ठ सुदि ३ रविवार के लेख से ज्ञात होता है कि उसकी प्रतिष्ठापना विजयप्रभसूरि के करकमलों से हुई थी।[१०८]

सुपार्श्वनाथ पंचायती मंदिर, जयपुर में संरक्षित पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण वि०सं० १७४४ फाल्गुन सुदि १ बुधवार के लेख से ज्ञात होता है कि उक्त प्रतिमा आचार्य विजयप्रभसूरि के निर्देश पर मुक्तिचन्द्रगणि द्वारा स्थापित की गयी।[१०९]

दिग्विजयमहाकाव्य के दसवें सर्ग[११०] से ज्ञात होता है कि इन्होंने आगरा में बादशाह जहाँगीर से भेंट की थी। वि०सं० १७४९ में ऊना नामक स्थान पर इनका देहान्त हो गया।[१११]

विजयप्रभसूरि के पश्चात् विजयरत्नसूरि उनके पट्टधर बने। प्राप्त विवरणानुसार वि०सं०१७१३ में इनका जन्म हुआ। गुरु के निधन के पश्चात् वि०सं० १७४९ में ये उनके पट्ट पर विराजमान हुये और वि०सं. १७७३ में इनका देहान्त हुआ। श्रीपूज्य विजयरत्नसूरि के पश्चात् विजयक्षमासूरि श्रीपूज्य बने। वि०सं० १७३२ में इनका जन्म हुआ। इनके मृत्यु की तिथि के बारे में कोई जानकारी नहीं मिलती।

श्रीपूज्य विजयक्षमासूरि के पक्षधर श्रीपूज्य विजयधर्मसूरि हुए। वि०सं० १८२५, १८२८ और १८३९ के लेखों में इनका नाम मिलता है।

इन लेखों का विवरण इस प्रकार है:

१८२५ वैशाख सुदि २	विजयप्रभसूरि की पादुका पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, डभोई	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ११
१८२८ फाल्गुन सुदि ३ भृगुवार	धातुयंत्र पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, चाणस्मा	वही, भाग १, लेखांक १३२
१८३९ वैशाख सुदि ९ बुधवार	विजयप्रभसूरि की पादुका पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, डभोई	वही भाग १, लेखांक १२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१८३९	''	पद्मप्रभस्वामी की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	''	वही, भाग, लेखांक २१

श्रीपूज्य विजयधर्मसूरि के पट्टधर श्रीपूज्य विजयजिनेन्द्रसूरि हुए। वि०सं० १८४३, १८४५, १८५४, १८७३, १८८० और १८८३ के विभिन्न प्रतिमालेखों में इनका नाम मिलता है। इनका विवरण इस प्रकार है:

१९४३	माघ सुदि ११ सोमवार	आदिनाथ की धातुप्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	--	**जैनधातुप्रतिमालेख** परिशिष्ट, पृष्ठ १२
१८४५	फाल्गुन सुदि ३ भृगुवार (शुक्रवार)	''	जैन मंदिर, डभोई	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक २२
१८५४	ज्येष्ठ सुदि १० गुरुवार	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, ईडर	वही, भाग १, लेखांक १३९९
१८५४	''	सहस्रफणा पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	''	वही, भाग १, लेखांक १४००
१८७३	ज्येष्ठ सुदि १४ गुरुवार	केशरिया जी की पादुका पर उत्कीर्ण लेख	''	वही, भाग१, लेखांक १४५९
१८८०	मार्गशीर्ष सुदि ५ गुरुवार	पद्मप्रभ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	नाकोड़ा तीर्थ	**नाकोड़ापार्श्वनाथतीर्थ** लेखांक १०८
१८८०	''	''	''	वही, लेखांक १०९ एवं चम्पालाल सालेचा, संपा०- **बाड़मेर जिले के प्राचीन जैन शिलालेख,** लेखांक ४७४
१८८३	माघ सुदि ५	मल्लिनाथ की पाषाण की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पद्मप्रभ का मंदिर, पन्नीबाई का उपाश्रय, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह** लेखांक १८५७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१८८३	''	आदिनाथ की पाषाण की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	''	वही, लेखांक १८६९

श्रीपूज्य विजयजिनेन्द्रसूरि के पश्चात् उनके शिष्य विजयदेवेन्द्रसूरि श्रीपूज्य बने। वि०सं० १८८८, १८९२, १८९३, १९०२ और १९०४ के कुछ लेखों में इनका नाम मिलता है। इनका विवरण निम्नानुसार है:

१८८८	माघ सुदि ५ सोमवार	पार्श्वनाथ जिनालय की देहरी पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ जिनालय पोसीना	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग१, लेखांक १४६४
१८८८	''	''	''	वही, भाग १, लेखांक १४६५
१८८८	''	''	''	वही, भाग १, लेखांक १४६६
१८८८	''	''	''	वही, भाग १, लेखांक १४६७
१८८८	''	मूलनायक की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	''	वही, भाग, १, लेखांक १३८८
१८९२	वैशाख सुदि १३ शुक्रवार	धातु की जिनप्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैन मंदिर, ईडर	वही, भाग१. लेखांक १३९४
१८९२	''	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	''	वही, भाग१. लेखांक १३९६
१८९२	''	चन्द्रप्रभ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	''	वही, भाग१. लेखांक १३९७
१८९३	माघ सुदि १० बुधवार	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	--	**जैनधातुप्रतिमालेख** परिशिष्ट, पृ.१३
१८९३	''	''	--	वही, परिशिष्ट पृ.१३-१४
१८९३	''	पार्श्वनाथ की पाषाण की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सीमंधर स्वामी का मंदिर, भांडासर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक १२७६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१८९३	"	आदिनाथ की पाषाण की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	"	वही, लेखांक १२७९
१९०२	कार्तिक सुदि २	जिन प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	--	**जैनधातुप्रतिमालेख,** परिशिष्ट, पृष्ठ ८
१९०४	वैशाख सुदि १५ गुरुवार	मल्लिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, साड़वाड़ा	**अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैन-लेखसंदोह,** लेखांक २७३
१९०४	"	संभवनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	"	वही, लेखांक २७४

श्रीपूज्य विजयदेवेन्द्रसूरि के निधन के पश्चात् उनके दो पट्टधर हुए, प्रथम विजयधरणेन्द्रसूरि और द्वितीय विजयकल्याणसूरि। इनसे अलग-अलग शिष्य परम्परायें चलीं।

श्रीपूज्य विजयधरणेन्द्र के पश्चात् क्रमशः विजयराजसूरि, विजयमुनिचन्द्रसूरि, विजयकल्याणसूरि और विजयमहेन्द्रसूरि श्रीपूज्य बने। इन सभी के बारे में कोई जानकारी नहीं मिलती। इनके पश्चात् यह परम्परा समाप्त हो गयी।[११२]

श्रीपूज्य विजयदेवेन्द्रसूरि के दूसरे पट्टधर श्रीपूज्य विजयकल्याणसूरि के पट्टधर श्रीपूज्य विजयप्रमोदसूरि हुए। श्रीपूज्य विजयप्रमोदसूरि के शिष्य श्रीपूज्य विजयराजेन्द्रसूरि जी हुए जिन्होंने यति परम्परा में व्याप्त शिथिलाचार का त्याग कर वि०सं० १९२५ में क्रियोद्धार कर जैनधर्म में नई स्फूर्ति पैदा की।[११३] आचार्य विजयराजेन्द्रसूरि जी की परम्परा स्वतंत्र रूप से चली।

आचार्य विजयप्रभसूरि की शिष्य संतति को तालिका के रूप में निम्न प्रकार से प्रस्तुत किया जा सकता है:

विजयप्रभसूरि (वि०सं० १७४९ में स्वर्गस्थ)

।

श्रीपूज्य विजयरत्नसूरि (वि०सं० १७७३ में स्वर्गस्थ)

।

श्रीपूज्य विजयक्षमासूरि

।

श्रीपूज्य विजयधर्मसूरि (वि०सं० १८२५-१८३९) यंत्रलेख एवं चरणपादुकालेख

।

श्रीपूज्य विजयजिनेन्द्रसूरि (वि०सं० १८४३-१८८३) प्रतिमालेख

।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

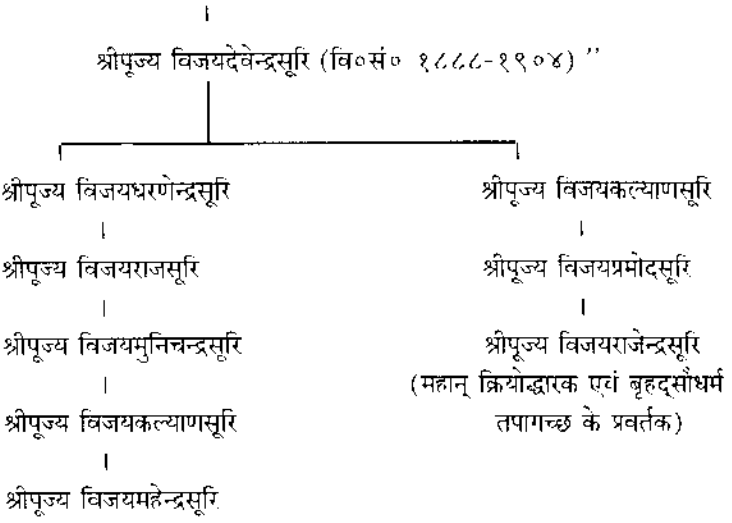

तपागच्छीय श्रीपूज्यों का अनुयायी यति समुदाय बहुत विशाल संख्या में था। उत्तर भारत के प्रायः सभी भागों में इनका प्रभाव था। ये यति ज्योतिष, तंत्र-मंत्र, वैद्यक आदि सभी विद्याओं में निपुण थे। यह यति समुदाय विजय, कुशल, माणिक्य आदि विभिन्न शाखाओं में विभक्त था। धार्मिक संस्कारों एवं कर्मकाण्डों को बनाये रखने में इनका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। इस समुदाय में शिथिलाचार के अत्यधिक बढ़ जाने के कारण संविग्नपक्षीय साधुपरम्परा का उदय हुआ। संविग्नपक्षीय मुनिजनों के आचार के प्रभाव के कारण इन यतिजनों का प्रभाव तेजी से घटने लगा और ये गोरजी (गुरांसा या गुरुजी) के नाम से जाने गये। धीरे-धीरे यतिजन उपाश्रयों के स्वामी होते हुए भी प्रभावशून्य हो गृहस्थ वेश में आ गये। आज तो यह स्थिति है कि कोई भी वेशधारी यति दिखलाई नहीं देता और यह परम्परा अब नाममात्र की ही बची है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संदर्भ

१. धर्मसागरीय "**तपागच्छ पट्टावली**",
पट्टावली समुच्चय, भाग १, पृष्ठ ६६-६७.

२. मुनि चतुरविजय, **जैनस्तोत्रसंदोह**, भाग २, प्रास्तावना, पृष्ठ

३. A.P. Shah, Ed. *Catalogue of Sanskrit and Prakrit Mss: Muni Shree Punya Vijaya Jis Collection*, Part I, L.D. Seris No. 2,Ahmedabad. 1962 A.D., P. 88.
मुनि कांतिसागर, **शत्रुंजयवैभव**, पृष्ठ १८९.

४. अमृतलाल मगनलालशाह, संपा०- **श्रीप्रशस्तिसंग्रह**, भाग २, पृष्ठ २०, प्रशस्ति क्रमांक ८५.

५. बुद्धिसागरसूरि, संपा०- **जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह**, भाग१,लेखांक १२१५.

६. मुनि जयन्तविजय, संपा०- **अर्बुदप्राचीनजैनलेखसंदोह**, लेखांक २५५.

७. विनयसागर, संपा०- **प्रतिष्ठालेखसंग्रह**, जिनमणिमाला, पुष्प ४, कोटा १९५३ ई०, लेखांक ५६८.

८. मोहनलाल दलीचंद देसाई, **जैनगूर्जरकविओ**, भाग १, नवीनसंस्करण, संपा०- जयन्त कोठारी, अहमदाबाद १९८६ ई०, पृष्ठ १०४-१०५.

९. वही, भाग १, पृष्ठ ९१-९३.
मुनि चतुरविजयजी ने संघकलश के गुरु उदयनंदि को संवेगदेवगणि का शिष्य और रत्नशेखरसूरि का प्रशिष्य कहा है। उनके इस कथन का आधार क्या है, यह ज्ञात नहीं होता।
जैनस्तोत्रसंदोह, भाग २, प्रस्तावना, पृष्ठ ९८.

१०-११. वही, भाग २, प्रस्तावना, पृष्ठ ९९-१००.

१२. **सोमसौभाग्यकाव्य**, सर्ग १०, श्लोक ३२-४३.

१३. **गुरुगुणरत्नाकरकाव्य**, पृष्ठ १९-२०, मूलग्रन्थ उपलब्ध न होने से यह उद्धरण **जैनस्तोत्रसंदोह**, भाग २, प्रस्तावना, पृष्ठ ९९ के आधार पर दिया गया है।

१४-१५. वही, पृष्ठ १००.

१६. देसाई, **जैनसाहित्यनो संक्षिप्तइतिहास**, मुम्बई १९३२ ई०, पृष्ठ ५१५, कंडिका ७५२.

१७. रसिकलाल हीरालाल कापड़िया, **जैनसंस्कृतसाहित्यनो इतिहास**, भाग २, खंड १, बड़ोदरा १९६८ ई०, पृष्ठ १७२, २२७, २३१ आदि.

१८. **उपदेशतरंगिणी** की प्रशस्ति

१९. आचारांगसूत्र पर **तत्त्वावगमा** नामक **अवचूर्णि; ज्ञाताधर्मकथा** पर **सुबोधबोध** नामक लघुवृत्ति आदि, **जैनसाहित्यनो.....**, पृष्ठ ५२०, कंडिका [illegible]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२०. इस शाखा का स्वतंत्र रूप से इतिहास लिखा गया है जो इसी ग्रंथ में यथास्थान प्रकाशित है।

२१. पूज्याराध्यध्येयतम श्रीगच्छाधिराज भट्टारकपुरन्द श्रीसोमसुन्दरसूरि शिष्य शिरोऽवतंसकसकलसकर्णपुरुषश्रेणीप्रणीतपदपद्मसेवभट्टारक प्रभु श्रीसोमदेवसूरि शिष्यशिरोमणिपूज्याराध्य पं० चारित्रहंसगणिपादविनेयपरमाणुनासोमचारित्रगणिना विरचितो ग्रन्थः सम्पूर्णः।।

गुरुगुणरत्नाकरकाव्य की प्रशस्ति

गुरुगुणारत्नाकरकाव्य, संपा०- मुनि इन्द्रविजय, वाराणसी वीर सम्वत् २४३७.

२२. अमृतलाल मगनलालशाह, संपा०- **श्रीप्रशस्तिसंग्रह**, श्रीदेशविरति धर्माराजकसंघ, अहमदाबाद, वि०सं० १९९३, भाग २, पृष्ठ १६, प्रशस्ति क्रमांक ६३.

२३. यह कृति पेथड़ (पृथ्वीधर) और उसके पुत्र झांझड़ की प्रशस्ति के रूप में रची गयी है और आत्मानन्द सभा, भावनगर से प्रकाशित हो चुकी है।

H.D. Velankar, *Jinaratnakosha*, Poona. 1944 A.D. P-443.

२४. **साधारणजिनस्तवन** भी इन्हीं की कृति है जो **अनेकार्थ रत्नमंजूषा**, पृष्ठ ८७-९० में प्रकाशित है। हीरालाल रसिकलाल कापड़िया, **जैनसंस्कृत साहित्यनो इतिहास**, भाग २, खंड १, बड़ोदरा १९६३ ई०स०, पृष्ठ ४७४.

२५-२६. वही, पृष्ठ ४००, ४७४.

२७-२८. मुनि चतुरविजय, **जैनस्तोत्रसंदोह**, प्रस्तावना, पृष्ठ १०४.

२९. वही, पृष्ठ १०४.

३०. वही, पृष्ठ १०४.

३१. मुनिमृगेन्द्र, संपा० **प्रबन्धपंचशती**, सूरत १९६८ ई०स०.

३२. वही, प्रस्तावना, पृष्ठ १, पादटिप्पणी.

३३-३४. वही, पृष्ठ २५८, ३५२.

३५. मोहनलाल दलीचंद देसाई, **जैनसाहित्यनोसंक्षिप्तइतिहास**, पृष्ठ ४९६-५०० कंडिका ७२१-७२६.

विजयधर्मसूरि, संपा० **ऐतिहासिकरासंग्रह**, भाग १, भावनगर वि०सं० १९७२, पृष्ठ २७-२९. मुनिकांतिसागर, **शत्रुंजयवैभव**, पृष्ठ १९३-१९७.

३६. **ऐतिहासिकरासंग्रह**, भाग १, पृष्ठ ३०.

३७. *Jinaratnamakosha*, P-452-53.

३८. धर्मसागरीय "तपागच्छ पट्टावली", मुनि कल्याणविजय गणि, **पट्टावलीपरागसंग्रह**, पृष्ठ १५२.

३९. लावण्यसमय गणि, **सुमतिसाधुविवाहलो**

ऐतिहासिकरासंग्रह, भाग १, पृष्ठ ४१-४८.

४०. **जैनगूर्जरकविओ**, भाग ९, संशोधक- संपा०, जयन्तकोठारी, अहमदाबाद १९९७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ई०, पृष्ठ ६५-६६ एवं **जैनस्तोत्रसंदोह**, भाग २, पृष्ठ १०८ टिप्पणी में उद्धृत. मुनि जिनविजय, संपा०- **विविधगच्छीयपट्टावलीसंग्रह**, सिंघीजैनग्रन्थमाला, ग्रन्थांक ५३, मुम्बई १९६१ ई०, पृष्ठ २१९-२२०.

४१. **जैनगूर्जरकविओ**, भाग ९, पृष्ठ ८५-८९. **पट्टावलीपरागसंग्रह**, पृष्ठ १८२-१८६. मुनि जिनविजय, संपा०- **जैनऐतिहासिकगूर्जरकाव्यसंचय**, जैनऐतिहासिक ग्रन्थमाला, पुष्प ७, भावनगर १९२६ ई०, परिशिष्ट, राससार, पृष्ठ ९५-१००.

४२. **जैनऐतिहासिकगूर्जरकाव्यसंचय**, पृष्ठ १८६-१९०.

४३. वही, पृष्ठ १९०-१९२.

44. Charlotte Krause, Ed. *Ancient Jaina Hymms*, Scindia Oriental Series, No. 2, Ujjain 1952, P-34.

४५. **जैनऐतिहासिक गूर्जर.....**,परिशिष्ट, पृष्ठ ९६.

४६. **पट्टावलीसमुच्चय**, भाग १, पृष्ठ ६८ और आगे.

४७. वही, भाग १, पृष्ठ १३४.

४८. वही, भाग १, पृष्ठ १४६.

४९. वही, भाग १, पृष्ठ १५७.

५०. वही, भाग १, पृष्ठ १७२.

५१. **जैनस्तोत्रसंदोह**, भाग २, पृष्ठ २१७-२२६.

52. *Ancient Jaina Hymms*, P-38-42; 105-114.

५३. शार्लोटे क्राउझे, "श्रीहेमविमलसूरिकृत तेर काठीयानी सज्झाय" **जैनसत्यप्रकाश**, वर्ष १२, अंक ३, पृष्ठ ७३ और आगे.

54. *Ancient Jaina Hymms*, P-38.

५५. इन शाखाओं का इतिहास स्वतंत्र रूप से लिखा गया है जो इसी पुस्तक में यथास्थान प्रकाशित है।

५६. **जैनस्तोत्रसंदोह**, भाग २, पृष्ठ १०८-१२२.

५७. वही, पृष्ठ १११. *Ancient Jaina Hymms*, P-37.

५८. "लघुपौशालिक पट्टावली" **जैनगूर्जरकविओ**, भाग ९, पृष्ठ ८६; **पट्टावलीपरागसंग्रह**, पृष्ठ १८३.

५९-६०. "वीरवंशावली", **विविधगच्छीयपट्टावलीसंग्रह**, पृष्ठ २२०-२२१.
धर्मसागर उपाध्यायकृत "तपागच्छपट्टावलीसूत्र"
पट्टावलीसमुच्चय, भाग १, पृष्ठ ६९-७०; **पट्टावलीपरागसंग्रह**, पृष्ठ १५३-५४.
"गुरुपट्टावली", **पट्टावलीसमुच्चय**, भाग १, पृष्ठ १७२-१७३.
"पट्टावलीसारोद्धार", वही, भाग १, पृष्ठ १५७-१५८.
"सूरिपरम्परा", वही, भाग १, पृष्ठ १४६.

६१-६३. "पट्टावलीसारोद्धार"
पट्टावलीसमुच्चय, भाग १, पृष्ठ १५८.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"गुरुपट्टावली", वही, भाग १, पृष्ठ १७३-७४.

"वीरवंशावली", **विविधगच्छीयपट्टावलीसंग्रह**, पृष्ठ २२२.

विजयधर्मसूरि, संपा०- **ऐतिहासिकरासंग्रह**, भाग ४, भूमिका,पृष्ठ ५-१०.

६४. इस शाखा का स्वतंत्र रूप से इतिहास लिखा गया है जो इसी पुस्तक में यथास्थान रखता है।

६५. यशोविजय जैन ग्रन्थमाला, भावनगर से प्रकाशित.

६६. **पट्टावली समुच्चय**, भाग १, पृष्ठ ७१-७७.

६७. श्रीकांतिविजय इतिहासमाला, भावनगर से वि०सं० १९७३ में प्रकाशित

६८. काव्यमालासिरीज, निर्णयसागरप्रेस, मुम्बई से वि०सं० १९०० में प्रकाशित

६९. **जैनगूर्जरकविओ**, भाग २, द्वितीय संशोधित संस्करण, पृष्ठ २५७.

७०-७१. मुनि जिनविजय, संपा०- **जैनऐतिहासिक गूर्जरकाव्यसंचय**, श्रीकांतिविजयजी जैनऐतिहासिक ग्रन्थमाला, पुष्प ७, भावनगर १९२६ ई०, पृष्ठ १९६-२०५.

७२. **जैनसाहित्यनोसंक्षिप्तइतिहास**, पृष्ठ ५४०, कंडिका ७९२.

७३. मुनि जिनविजय, पूर्वोक्त, पृष्ठ २०६-२०९.

७४. **आनन्दकाव्यमहोदधि**.

७५-७६. संपा०- पं० हरगोविन्ददास बेचरदास, यशोविजय जैन ग्रन्थमाला, वाराणसी वीर सम्वत् २४३७.

७७. मुनि विद्याविजयजी, **सूरीश्वर अने सम्राट**, हिन्दीअनुवाद, आगरा वि०सं० १९८०, पृष्ठ १०७ और आगे.

७८. वही, पृष्ठ १३५, कु० नीना जैन, **मुगल सम्राटों की धार्मिक नीति**, शिवपुरी १९९१ ई०, पृष्ठ ६६.

७९. वही, पृष्ठ १२६.

80. Mohan Lal Dalichand Desui, Ed. *Bhanuchandra Gani Charitra*, S.J.S. No. 15, Ahmedabad - Calcutta 1941 A.D., Introduction, P-9-10.

८०अ. **जैनसाहित्यनोसंक्षिप्तइतिहास**, पृष्ठ

८१-८२. द्रष्टव्य, संदर्भ क्रमांक ७६-७७.

८३. **जैनऐतिहासिकगूर्जरकाव्यसंचय**, पृष्ठ १६६-१७०.

८४. वही, पृष्ठ १५९-१६५.

85. *Bhanuchandra Gani Charitra*, Introduction, P-10.

८६. वरसिं सोल बहुतरि, खंभनयर चउमास;

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८६. वरसिं सोल बहुतरि, खंभनयर चउमास;
करवा श्री अकबर पुरि, आव्या महिम निवासो रे॥४४॥
जेठ बहुल एकादशी, प्रह उगमतइ भाण;
चउसरणादि समाधिस्युं, हूइ गुरु निरवाणो रे॥४५॥
गुणविजयकृत - "विजयसेनसूरिनिर्वाणभास"
मुनि जिनविजय, संपा०- **जैनऐतिहासिकगूर्जरकाव्यसंचय**, पृष्ठ १७०.

८७. इस शाखा का स्वतंत्र रूप से इतिहास लिखा गया है जो इसी पुस्तक में यथास्थान रखता है।

८८-८९. पं० बेचरदास दोशी, संपा०- **देवानन्दमहाकाव्य**, सिंघी जैन ग्रन्थमाला, ग्रन्थांक ७, अहमदाबाद-कलकत्ता १९३७ ई०स०, प्रस्तावना, पृष्ठ ८.

९०. वही, प्रस्तावना, पृष्ठ २-३.

९१. पं० अम्बालाल प्रेमचन्द शाह, संपा०- **दिग्विजयमहाकाव्य**, सिंघी जैन ग्रन्थमाला, ग्रन्थांक १४, मुम्बई १९४५ ई०स०, परिशिष्ट, पृष्ठ १३४-१४१.

९२. **जैनगूर्जरकविओ**, भाग ९, पृष्ठ ६९-७०.

93-94. *Bhanuchandra Gani Charitra*, Introduction, P-21.

९५. मुनि जिनविजय, संपा०- **विज्ञप्तिलेखसंग्रह**, सिंघी जैन ग्रन्थमाला, ग्रन्थांक, मुम्बई १९६० ई०स०.

९६. संवत् सत्तर तेर आसाढ़ मास नी,
सुदि आठमिं दिन सुभ परई अे, ॥३४॥
.....
.....
"श्रीविजयदेवसूरिनिर्वाण", रचनाकार-सौभाग्यविजय
जैनऐतिहासिकगूर्जरकाव्यसंचय, पृष्ठ १७४.
एवं "राससार", वही, पृष्ठ ९०-९२.

९७. **जैनगूर्जरकविओ**, भाग ९, पृष्ठ ७०.

९८. मुनि जिनविजय, संपा०- **विज्ञप्तिलेखसंग्रह**, सिंघी जैन ग्रन्थमाला, ग्रन्थांक ५१, मुम्बई १९६० ई०सं०, पृष्ठ १३७-१५०.

९९. वही, पृष्ठ २०५-२१३;

१००. वही, पृष्ठ १६२-१६५.

१०१. वही, पृष्ठ १५९-१६१.

१०२. वही, पृष्ठ १७९-१८४.

१०३. वही, पृष्ठ १९५-१९८.

१०४. **श्रीतपागच्छ पट्टावलीसूत्र वृत्यनुसंधानं**, रचनाकार-मेघविजय उपाध्याय, (रचनाकाल वि०सं० १७३२/ई०सन् १६६६),
पट्टावली समुच्चय, भाग १, पृष्ठ ९८-१०१.

१०५. **दिग्विजयमहाकाव्य**, संपा-पं० अम्बालाल प्रेमचन्द शाह, सिंघी जैनग्रन्थमाला,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ग्रन्थांक १४, मुम्बई १९४५.
इस ग्रन्थ की परिशिष्ट पृष्ठ १३४-१४१ पर भी उक्त पट्टावली प्रकाशित है।

१०६. बुद्धिसागर, संपा०, **जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक ९४८.

१०७. नाहर, **जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक १७९७.

१०८. मुनि जिनविजय, संपा० **प्राचीनजैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक ३४०.

१०९. **जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक ११७७.

११०. **दिग्विजयमहाकाव्य**, सर्ग १०, पृष्ठ ९४-१०३.

१११. "तपागच्छपट्टावली", **जैनगूर्जरकविओ**, भाग १, पृष्ठ ७१.

११२. वही, पृष्ठ ७२-७३.

११३. श्री देवेन्द्रमुनि, "श्रीसौधर्मबृहत्तपागच्छगुर्वावली"
अगरचन्द नाहटा तथा अन्य, संपा० **श्रीमद्राजेन्द्रसूरिस्मारकग्रन्थ**, बागरा वि०सं० २०१३, पृष्ठ १४८.
भगवान्सहाय वशिष्ठ, **श्रीमद्विजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी-जीवनयात्रा,** राजगढ़ ई०स० १९९०, पृष्ठ १११ और आगे.

११४. श्री भंवरलाल नाहटा, **श्रीस्वर्णगिरिजालौर**, कलकत्ता १९९५ई०, प्रस्तावना, पृष्ठ ३.

११५. श्री बाबूलालजैन 'उज्जवल', संपा०, **समग्र जैन चातुर्मास सूची** १९९७ ई०, पृष्ठ १३५-१३९.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अध्याय - ४

तपागच्छ - बृहद्पौशालिक शाखा

तपागच्छ के प्रवर्तक आचार्य जगच्चन्द्रसूरि के कनिष्ठ गुरुभ्राता व शिष्य विजयचन्द्रसूरि से तपागच्छ की बृहद्पौशालिक शाखा अस्तित्व में आयी। प्राप्त विवरणानुसार आचार्य जगच्चन्द्रसूरि के शिष्य आचार्य विजयचन्द्रसूरि १२ वर्षों तक स्तम्भतीर्थ (खंभात) की उस पौषधशाला में रहे, जहां उनके गुरु ने ठहरना निषिद्ध किया था। इस अवधि में उनके ज्येष्ठ गुरुभ्राता देवेन्द्रसूरि ने मालवा प्रान्त में विचरण किया, वहां से जब वे स्तम्भतीर्थ लौटे तो उन्हें ज्ञात हुआ कि विजयचन्द्रसूरि अभी तक उसी पौषधशाला में हैं तथा उन्होंने साधु जीवन में पालन करने वाले कई कठोर नियमों को पर्याप्त शिथिल भी कर दिया है। इसी कारण वे स्तम्भतीर्थ की दूसरी पौषधशाला में, जो अपेक्षाकृत कुछ छोटी थी, ठहरे। इस प्रकार जगच्चन्द्रसूरि के दो शिष्य एक ही नगर में एक ही समय में दो अलग-अलग स्थानों पर रहे। बड़ी पौषधशाला में ठहरने के कारण विजयचन्द्रसूरि का शिष्यपरिवार **बृहद्पौशालिक** एवं देवेन्द्रसूरि का शिष्यसमुदाय **लघुपौशालिक** कहलाया[1]। साहित्यिक और अभिलेखीय दोनों ही साक्ष्यों में कई नाम मिलते हैं जैसे-बृहद्तपागच्छ, वृद्धतपागच्छ, बृहद्पौशालिक, वृद्धपौशालिक, बृहद्पौशधशालिक आदि। तपागच्छ की इस शाखा में आचार्य क्षेमकीर्ति, आचार्य रत्नाकरसूरि, जयतिलकसूरि, रत्नसिंहसूरि, जिनरत्नसूरि, उदयवल्लभसूरि, ज्ञानसागरसूरि, उदयसागरसूरि, धनरत्नसूरि, देवरत्नसूरि, देवसुन्दरसूरि, नयसुन्दरगणि आदि कई विद्वान् मुनिजन हो चुके हैं।

तपागच्छ की इस शाखा के इतिहास के अध्ययन के लिये साहित्यिक साक्ष्यों के अन्तर्गत इससे सम्बद्ध मुनिजनों द्वारा रचित कृतियों की प्रशस्तियां, उनके द्वारा प्रतिलिपि किये गये ग्रन्थों की प्रशस्तियां एवं वि०सं० की १७वीं शताब्दी में नयसुन्दरगणि द्वारा रचित एक पट्टावली[2] भी है। इसके अलावा इस शाखा के मुनिजनों द्वारा समय-समय पर प्रतिष्ठापित बड़ी संख्या में सलेख जिनप्रतिमायें भी प्राप्त हुई हैं जो वि०सं० १४५९ से लेकर वि०सं० १७८१ तक की हैं। यहाँ उक्त सभी साक्ष्यों के आधार पर तपागच्छ की इस शाखा के इतिहास पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

इस शाखा के आद्यपुरुष विजयचन्द्रसूरि द्वारा रचित कोई कृति नहीं मिलती और न ही इस सम्बन्ध में कोई उल्लेख ही प्राप्त होता है, तथापि अपने ज्येष्ठ गुरुभ्राता देवेन्द्रसूरि द्वारा रचित कुछ कृतियों की रचना में उन्होंने सहयोग अवश्य प्रदान किया था[3]। इनके शिष्यों के रूप में वज्रसेन, पद्मचन्द्र और क्षेमकीर्ति का नाम मिलता है। क्षेमकीर्ति द्वारा रचित ४२००० श्लोक परिमाण **बृहद्कल्पसूत्रवृत्ति** प्राप्त होती है जो वि०सं० १३३२/ई०स० १२७६ में रची गयी है। इसकी प्रशस्ति[4] नामक कृति में उन्होंने अपनी गुरु-परम्परा दी है, जो इस प्रकार है :

धनेश्वरसूरि
|
भुवनचन्द्रसूरि
|
देवभद्रगणि
|

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

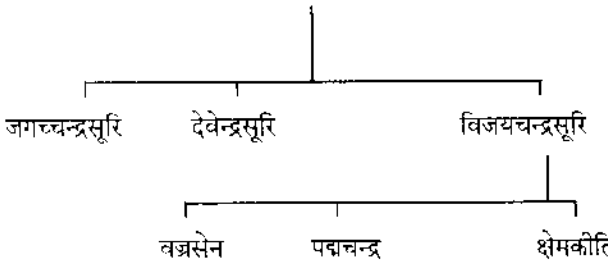

(वि०सं० १३३२/ई०स० १२७६ में **बृहद्कल्पसूत्रवृत्ति** के रचनाकार)

जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है, बृहद्पौशालिक शाखा की एक पट्टावली प्राप्त होती है। इसमें रचनाकार द्वारा विजयचन्द्रसूरि से लेकर धनरत्नसूरि एवं उनके शिष्यों तक की दी गयी गुरु-परम्परा इस प्रकार है :

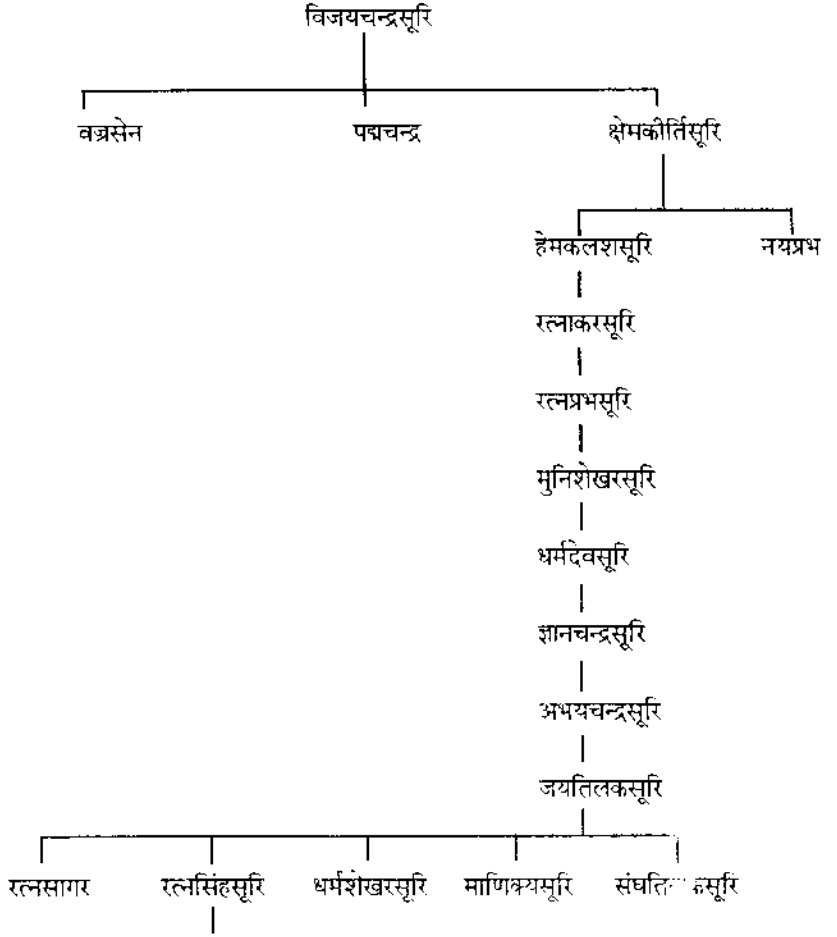

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

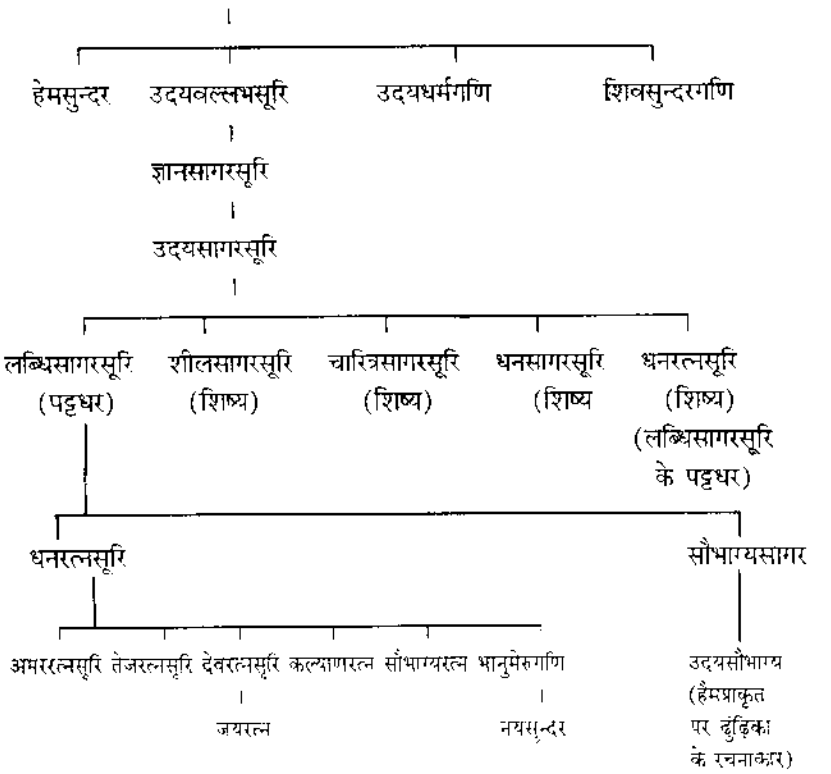

क्षेमकीर्ति के एक शिष्य हेमकलशसूरि हुए, जिनके द्वारा रचित कोई कृति नहीं मिलती। आचार्य देवेन्द्रसूरि द्वारा रचित **धर्मरत्नप्रकरणटीका**[६] (रचनाकार वि०सं० १३०४-२३) के संशोधक के रूप में धर्मकीर्ति के साथ हेमकलश का भी नाम मिलता है, जिन्हें समसामयिकता, नामसाम्य आदि के आधार पर बृहद्तपागच्छीय उक्त हेमकलशसूरि से समीकृत किया जा सकता है। क्षेमकीर्ति के दूसरे शिष्य नयप्रभ का उक्त पट्टावली को छोड़कर अन्यत्र कोई उल्लेख नहीं मिलता।

हेमकलशसूरि के शिष्य रत्नाकरसूरि एक प्रभावक आचार्य थे। इन्हीं के समय से इस शाखा का एक अन्य नाम रत्नाकरगच्छ भी पड़ गया। श्री मोहनलाल दलीचंद देसाई[७] ने **रत्नाकरपंचविंशतिका** के कर्ता रत्नाकरसूरि और बृहद्तपागच्छीय रत्नाकरसूरि को एक ही व्यक्ति होने की संभावना प्रकट की है, किन्तु श्री हीरालाल रसिकलाल कापड़िया[८] ने **अभिधानराजेन्द्रकोश** का उद्धरण देते हुए **रत्नाकरपंचविंशतिका** के रचनाकार रत्नाकरसूरि को देवप्रभसूरि का शिष्य बतलाते हुए उक्त कृति को वि०सं० १३०७ में रचित बतलाते हैं। यदि श्री कापड़िया के उक्त मत को स्वीकार करें तो **रत्नाकरपंचविंशतिका** के कर्ता बृहद्पौशालिक रत्नाकरसूरि नहीं हो सकते क्योंकि उनका समय विक्रम सम्वत् की चौदहवीं शताब्दी का उत्तरार्ध सुनिश्चित है।[९]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रत्नाकरसूरि के पट्टधर रत्नप्रभसूरि और रत्नप्रभसूरि के पट्टधर मुनिशेखरसूरि का उक्त पट्टावली को छोड़कर अन्यत्र कहीं कोई उल्लेख नहीं मिलता, प्रायः यही बात धर्मदेवसूरि, ज्ञानचन्द्रसूरि और उनके पट्टधर अभयसिंहसूरि के बारे में कही जा सकती है। अभयसिंहसूरि के पट्टधर जयतिलकसूरि हुए। इनके द्वारा रचित **आबूचैत्यप्रवाडी**[१०] (रचनाकाल वि०सं० १४५६ के आसपास) नामक कृति पायी जाती है। इनके उपदेश से **अनुयोगद्वारचूर्णी**[११] और **कुमारपालप्रतिबोध**[१२] की प्रतिलिपि तैयार की गयी।

जयतिलकसूरि के शिष्यों में रत्नसागरसूरि, धर्मशेखरसूरि, रत्नसिंहसूरि, जयशेखरसूरि और माणिक्यसूरि का नाम मिलता है। रत्नसागरसूरि से बृहद्पौशालिकशाखा/रत्नाकरगच्छ की भृगुकच्छशाखा अस्तित्त्व में आयी[१३]। रत्नसिंहसूरि की शिष्य परम्परा बृहद्तपागच्छ की मुख्य शाखा के रूप में आगे बढ़ी, जबकि जयशेखरसूरि के शिष्य जिनरत्नसूरि[१४] की शिष्यसन्तति का स्वतंत्र रूप से विकास हुआ। जयतिलकसूरि के दो अन्य शिष्यों-धर्मशेखरसूरि और माणिक्यसूरि की शिष्य-परम्परा आगे नहीं चली।

रत्नसिंहसूरि तपागच्छ की बृहद्पौशालिकशाखा के प्रभावक आचार्य थे। वि०सं० १४५९ से लेकर वि०सं० १५१८ तक के पचास से अधिक प्रतिमालेखों में प्रतिमा-प्रतिष्ठापक के रूप में इनका नाम मिलता है। इनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :

रत्नसिंहसूरि द्वारा प्रतिष्ठापित लेखों का विवरण इस प्रकार है :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रत्नसिंहसूरि द्वारा प्रतिष्ठापित लेखों की सूची

क्रमांक	सम्वत्	तिथि-वार	प्रतिमालेख/शिलालेख	प्रतिष्ठास्थान	संदर्भ ग्रन्थ
१.	१४५९	ज्येष्ठ सुदि ९ शुक्रवार	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जगवल्लभ पार्श्वनाथ देरासार, नीशापोल, अहमदाबाद	जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह, भाग १, लेखांक १२२७
२.	१४७८	--	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जिनदत्तसूरि दादावाड़ी, पालीताना	शत्रुंजयवैभव, लेखांक २४
३.	१४८१	वैशाख सुदि ३	देहरी नं० २ पर उत्कीर्ण लेख	वीरजिनालय, जीरावाला	अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैन-लेखसंदोह, लेखांक १२६
४.	१४८१	"	देहरी नं० ३ पर उत्कीर्ण लेख	"	वही, लेखांक १२७
५.	१४८१	"	देहरी नं० ४ पर उत्कीर्ण लेख	"	वही, लेखांक १२८
६.	१४८१	माघ सुदि ५ गुरुवार	चन्द्रप्रभ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख		बीकानेरजैनलेखसंग्रह, लेखांक १५७८
७.	१४८१	"	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि जी का मंदिर, बीकानेर	वही, लेखांक ७०८
८.	१४८१	माघ सुदि ९ शनिवार(?)	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, चौकसीपोल, खंभात	जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह, भाग २, लेखांक ८३५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९.	१४८१	"	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, माणेक चौक, खंभात	वही, भाग २, लेखांक १००३
१०.	१४८४	तिथिविहीन	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनदेरासर, डरभोई	वही, भाग १, लेखांक २६
११.	१४८५	वैशाख सुदि ७ सोमवार	पासुपूज्य की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथजिनालय, शेखनोपाडो,	वही, भाग १, लेखांक १०३६
१२.	१४८६	वैशाख सुदि १५ सोमवार	अजितनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वासुपूज्यजिनायल, नागरवाड़ो, खंभत	वही, भाग २, लेखांक १०८२
१३.	१४८७	माघ वदि २ शनिवार	श्रेयांसनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जेनदेरासर, पाटड़ी	प्राचीनलेखसंग्रह, लेखांक १४०
१४.	१४८७	माघ वदि ८	धर्मनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, बिजापुर	जैनधरतुप्रतिमालेखसंग्रह, भाग १, लेखांक ४३६
१५.	१४८८	वैशाख सुदि १० गुरुवार	अभिनन्दन स्वामी की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, माणेक चौक, खंभात	वही, भाग २, लेखांक १००७
१६.	१४८९	पौष वदि १० गुरुवर	अजितनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चीटरवाने कर मंदिर, दिल्ली	जैनलेखसंग्रह, भाग १, लेखांक ५०७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१७.	१४८९	पौष वदि १२ शुक्रवार	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सुपार्श्वनाथ का पंचायती बड़ा मंदिर, जयपुर	वही, भाग २, लेखांक ११४०
१८.	१४९३	तिथिविहीन	अजितनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वीर जिनालय, रीज रोड, अहमदाबार	जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह, भाग १, लेखांक ९३६
१९.	१४९६	ज्येष्ठ सुदि १० बुधवार	कुन्थुनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, सम्मेतशिखर,	जैनधातुप्रतिमालेख, लेखांक ८७
२०.	१४९९	फाल्गुन वदि ६	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	गौड़ी पार्श्वनाथ जिनालय, मुम्बई	वही, लेखांक ९१
२१.	१५००	तिथिविहीन		अजितनाथ देरासर, सुतार की खड़की, अहमदाबाद	जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह, भाग १, लेखांक १३४२
२२.	१५००	वैशाख सुदि ५	पद्मप्रभ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बालावसही, शत्रुंजय	शत्रुंजयवैभव, लेखांक ८८
२३.	१५०१	माघ सुदि १३ गुरुवार	शीतलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बड़ा देरासर, लींबड़ी	प्राचीनलेखसंग्रह, लेखांक १७९
२४.	१५०३	आषाढ़ वदि ७ सोमवार	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणिपार्श्वनाथ जिनालय, चौकसीपोल, खंभात	जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह, भाग २, लेखांक ७९९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२५.	१५०३	माघ वदि २ गुरुवार	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सुमतिनाथ जिनालय, मेहसाणा	प्राचीनलेखसंग्रह, लेखांक १९७
२६.	१५०३	माघ वदि	,,	पार्श्वनाथ जिनालय, भरुच	जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह, भाग २, लेखांक ३०७
२७.	१५०३	फाल्गुन वदि २ बुधवार	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ देरासर, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक ११३७
२८.	१५०४	ज्येष्ठ सुदि १० सोमवार	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बावन जिनालय, हठी भाई की बाड़ी, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक ७७६
२९.	१५०४	,,	चन्द्रप्रभ की धातु की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, कतार ग्राम	प्राचीनलेखसंग्रह, लेखांक २०४
३०.	१५०५	वैशाख.....	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, नेमूभाई की बाड़ी, सूरत	वही, लेखांक २१४ एवं जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह भाग १, लेखांक ५१७
३१.	१५०६	माघ सुदि ५ रविवार	तीर्थंकर की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, कतार ग्राम	प्राचीनलेखसंग्रह, लेखांक २१७
३२.	१५०७	वैशाख वदि २ गुरुवार	नमिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ देरासर, कनासानो पाड़ो, पाटण	जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह, भाग १, लेखांक ३०८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३३.	१५०७	ज्येष्ठ सुदि २	मुनिसुव्रत की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ देरासर, देवसानो पाड़ो, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक १०८६
३४.	१५०७	,,	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, शेखनोपाडो, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक १०४५
३५.	१५०७	ज्येष्ठ सुदि १० सोमवार	चन्द्रप्रभ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ देरासर, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक ११४५
३६.	१५०८	आषाढ़ सुदि २ सोमवार	पद्मप्रभ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, ऊंभा	वही, भाग १, लेखांक २००
३७.	१५०८	आषाढ़ सुदि ९ शुक्रवार	शीतलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जगवल्लभ पार्श्वनाथ देरासर, नीशापोल, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक १२१७
३८.	१५०९	ज्येष्ठ वदि ९ गुरुवार	मुनिसुव्रत की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पोरवालों का मंदिर, पुणे	प्राचीनलेखसंग्रह, लेखांक २५४
३९.	१५०९	आषाढ़ सुदि २ सोमवार	कुन्थुनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अजितनाथ देरासर, सुतार की खड़की, अहमदाबाद	जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह, भाग १, लेखांक १३४३
४०.	१५०९	पौष वदि १० गुरुवार	सुपार्श्वनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालयश कठगोला, मुर्शिदाबाद	जैनलेखसंग्रह, भाग १, लेखांक ६९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४१.	१५०९	माघ सुदि ५ गुरुवार	पद्मप्रभ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वीरजिनालय, पायधुनी, मुम्बई	जैनधातुप्रतिमालेख, लेखांक ११७
४२.	१५०९	फाल्गुन सुदि ३ गुरुवार	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जेनमंदिर, भांदक	वही, लेखांक ११३
४३.	१५१०	वैशाख वदि ५ सोमवार	सुविधिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शीतलनथ जिनालय, उदयपुर	जैनलेखसंग्रह, भाग २, लेखांक १०८६
४४.	१५१०	”	कुन्थुनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अजितनाथ जिनालय, सुतार की खड़की, अहमदाबाद	जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह, भाग १, लेखांक १३४४
४५.	१५१०	ज्येष्ठ सुदि ३ गुरुवार	सुविधिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बड़ा जिनालय, हिम्मतनगर	प्राचीनलेखसंग्रह, लेखांक २६३
४६.	१५१०	”	विमलनाथ की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	थीरुशाह का देारासर, जेसलमेर	जैनलेखसंग्रह, भाग ३, लेखांक २४५८
४७.	१५१०	”	सुविधिनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वीरदेरासर, अहमदनगर	जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह, भाग १, लेखांक ५९०
४८.	१५१०	माघ सुदि १०	अनन्तनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बालावसही, शत्रुंजय	शत्रुंजयवैभव, लेखांक १२५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४९.	१५११	ज्येष्ठ वदि ९ शनिवार	विमलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ देरासर, कनसानो पाड़ो पाटण	जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह, भाग २, लेखांक ३११
५०.	१५११	पौष वदि ६ गुरुवार	आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जलमंदिर, मधुबन, सम्मेतशिखर	जैनलेखसंग्रह, भाग २, लेखांक १६९६
५१.	१५१३	वैशाख सुदि ५ गुरुवार	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, बालूचर, मुर्शिदिरवार	वही, भाग १, लेखांक ३४
५२.	१५१३	''	''	जेनमंदिर, लध्वाड़	वही, भाग २,लेखांक १७००
५३.	१५१३	पौष सुदि १३ रविवार	संभवनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि जी का मंदिर, बीकानेर	बीकानेरजैनलेखसंग्रह, लेखांक ९७४
५४.	१५१४	माघ सुदि २ शुक्रवार	अनन्तनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अभिनन्दनस्वामी कर देरासर, करबटीया	जेनधातुप्रतिमालेखसंग्रह, भाग १, लेखांक ४८४
५५.	१५१४	माघ सुदि २.....	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ देरासर, साणंद	वही, भाग १, लेखांक ६४०
५६.	१५१४	''	कुन्थुनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बावनजिनालय, पेयापुर	वही, भाग १, लेखांक ६९०
५७.	१५१५	ज्येष्ठ वदि १२ शुक्रवार	अजितनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ चैत्य, थराद	जैनप्रतिमालेखसंग्रह, लेखांक १५४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५८.	१५१६	आषाढ़ सुदि ९ शुक्रवार	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	गौड़ीपार्श्वनाथ देरासर, विजापुर	जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह, भाग १, लेखांक ४५०
५९.	१५१६	पौष वदि ४ गुरुवार	अभिनन्दनस्वामी की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शीतलनाथ जिनालय, रिणी, तारानगर	बीकानेरजैनसंग्रह, लेखांक २४४८
६०.	१५१७	माघ सुदि ४ सोमवार	संभवनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	दि० जैनमंदिर, कांडाली, मध्य प्रदेश	जैनधातुप्रतिमालेख, लेखांक १६३
६१.	१५१७	,,	,,	वीर जिनालय, गींज गोड़,	जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह, भाग १, लेखांक ९१३
६२.	१५१८	माघ सुदि १० मंगलवार	श्रेयांसनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, रायपुर	वही, भाग १, लेखांक ६२२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वि०सं० १५०१ में **भवभावनासूत्रबालावबोध** एवं **नेमीश्वरचरित्र** के कर्ता माणिक्यसुन्दरगणि[१०] रत्नसिंहसूरि के शिष्य थे।

वि०सं० १५१४ में लिखी गयी **उत्तराध्ययनसूत्रअवचूरि** की प्रशस्ति में प्रतिलिपिकार उदयमंडन[११] ने स्वयं को रत्नसिंहसूरि का शिष्य कहा है।

वि०सं० १५०७ में **वाक्यप्रकाशऔक्तिक** के रचनाकार उदयधर्म भी रत्नसिंहसूरि[१२] के ही शिष्य थे।

वि०सं० १५०९ में **रत्नचूड़ामणिरास** एवं वि०सं० १५१६ में **जम्बूरास** के कर्ता ने अपना नाम उल्लिखित न करते हुए स्वयं को मात्र रत्नसिंहसूरिशिष्य[१३] कहा है।

रत्नसिंहसूरि शिष्य द्वारा रचित गिरनारतीर्थमाल नामक एक कृति प्राप्त होती है। इसमें स्तम्भतीर्थ के श्रेष्ठी शाणराज द्वारा गिरनार पर **इन्द्रनीलतिलकप्रासाद**[१४] नामक जिनालय बनवाने की बात भी कही गयी है।

शाणराज द्वारा यहां विमलनाथ के परिकर का निर्माण कराने का उल्लेख वि० सं० १५२३ के एक शिलालेख[१५] में प्राप्त होता है।

आचार्य विजयधर्मसूरि ने इसकी वाचना दी है, जो इस प्रकार है:

" संवत् १५२३ वर्षे वैशाख सुदि १३ गुरौ श्री वृद्धतपापक्षेगच्छनायक भट्टाकर श्री रत्नसिंहसूरिणां तथा भट्टाकर उदयवल्लभसूरिणां (च) उपदेशेन। व्य० श्रीराणा सं० भूंभवप्रमुखश्रीसंघेन श्री विमलनाथपरिकर: कारित:प्रतिष्ठाता गच्छाधीशपूज्यश्रीज्ञानसागरसूरिभि:।"

यह शिलालेख आज उपलब्ध नहीं होता।

शाणराज की गिरनार प्रशस्ति[१६] की प्रारंभिक पंक्तियां ही वहां से प्राप्त हुई हैं शेष अंश नहीं मिलता किन्तु सद्भाग्य से इसका अधिकांश भाग बृहद्पौशालिकपट्टावली में प्राप्त हो जाता है।

महीवालकथा, कुमारपालचरित, शीलदूतकाव्य, आचारोपदेश आदि के रचनाकार एवं वि०सं० १५२३ तक विभिन्न जिनप्रतिमाओं के प्रतिष्ठापक चारित्रसुन्दरगणि[१७] तथा वि०सं० १४९७ में **संग्रहणीबालावबोध** और वि०सं० १५२९ में **क्षेत्रसमासबालावबोध** के कर्ता दयासिंहगणि[१८] भी इन्हीं रत्नसिंहसूरि के शिष्य थे।

वि०सं० १५१६ में लिखी गयी **उत्तराध्ययनसूत्र** की एक प्रति से ज्ञात होता है कि इसे रत्नसिंहसूरि की शिष्या धर्मलक्ष्मी महत्तरा[१९] के पठनार्थ लिखा गया था।

रत्नसिंहसूरि के शिष्य एवं पट्टधर उदयवल्लभसूरि[२०] हुए जिनके द्वारा वि०सं० १५२० के लगभग रचित **क्षेत्रसमासबालावबोध** नामक कृति प्राप्त होती है। वि०सं० १५१८-२१ तक के कुछ प्रतिमालेखों में प्रतिमाप्रतिष्ठापक के रूप में इनका नाम मिलता है जिनका विवरण इस प्रकार है :

१. १५१८	ज्येष्ठ सुदि ३ शनिवार	शीतलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वर्धमान शाह का देरासर, जामनगर	**प्राचीनलेखसंग्रह,** लेखांक ३२३
२. १५१९	[illegible]	वासुपूज्य स्वामी की [illegible] प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सेठ नरसीनाथा का मन्दिर, पालीताणा	**जैनलेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ६६१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३.	१५१९	माघ वदि ५ शुक्रवार	मुनिसुव्रत की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	संभवनाथ देरासर, जैसलमेर	वही, भाग ३, लेखांक २४२२
४.	१५१९	माघ सुदी १३ बुधवार	विमलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वीरजिनालय, रीजरोड, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ९३०
५.	१५२०	वैशाख...?	विमलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैन मंदिर, लालबाग मुम्बई	**जैनधातुप्रतिमालेख,** भाग १, लेखांक १७८
६.	१५२१	वैशाख सुदि १०	शीतलनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, लश्कर, ग्वालियर	**जैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक १४०७
७.	१५२१	ज्येष्ठ सुदि १३ गुरुवार	संभवनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	गौड़ीपार्श्वनाथ जिनालय, अजमेर	वही, भाग १, लेखांक ५३५
८.	१५२१	"	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनदेरासर, डभोई	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक २०

उदयवल्लभसूरि की दो शिष्याओं-रत्नचूला महत्तरा एवं प्रवर्तिनी विवेकश्री का उल्लेख मिलता[२६] है। इनके पट्टधर ज्ञानसागरसूरि हुए जिनके द्वारा वि०सं० १५१७ में रचित **विमलनाथचरित्र**[२७] और अन्य कृतियाँ प्राप्त होती हैं। इन्हीं के लहिया लौका (लौकांशाह) ने वि०सं० १५२८ में अपने नाम से लोंकागच्छ का प्रवर्तन किया जिससे श्वेताम्बर सम्प्रदाय मूर्तिपूजक और अमूर्तिपूजक-दो भागों में विभक्त हो गया। वि०सं० १५२२-१५५३ तक के जिनप्रतिमाओं में प्रतिमाप्रतिष्ठापक के रूप में ज्ञानसागरसूरि का नाम मिलता है। इनका विवरण निम्नानुसार है:

१.	१५२२	--	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चौमुखजी देरासर, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक १४१
२.	१५२३	वैशाख सुदि १३ गुरुवार	कुन्थुनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, मांडल	**प्राचीनलेखसंग्रह,** लेखांक, ३७५
३.	१५२४	वैशाख सुदि ३ सोमवार	कुन्थुनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पुण्डरीक स्वामी की टूँक, शत्रुंजय	**शत्रुंजयवैभव,** लेखांक १८२
४.	१५२४	"	विमलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ देरासर, देवसानो पाड़ो, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक १०८४
५.	१५२५	वैशाख वदि ११ रविवार	नमिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनदेरासर, पाटडी	**प्राचीनलेखसंग्रह,** लेखांक ३९८
६.	१५२७	ज्येष्ठ वदि ७ सोमवार	"	जैनमंदिर, ऊँझा	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक २०३
७.	१५२७	"	वासुपूज्य की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ देरासर, करबटीया	वही, भाग १, लेखांक ४९१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८. १५२८	वैशाख सुदि ५ गुरुवार	सुविधिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ चैत्य, थराद	**जैनप्रतिमालेखसंग्रह,** संपा०-दौलतसिंह लोढ़ा, लेखांक ४९
९. १५२८	ज्येष्ठ सुदि ९ रविवार	कुन्थुनाथ की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, सुंधिटोला, लखनऊ	**जैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक १५१०
१०. १५२८	माघ सुदि १३ गुरुवार	संभवनाथ की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, खराड़ी	**अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैन-लेखसंदोह,** लेखांक २ एवं **जैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक २०१३
११. १५२८	फाल्गुन सुदि ८ सोमवार	कुन्थुनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, झँझा	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक १७८
१२. १५२९	ज्येष्ठ वदि ६	श्रेयांसनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	नवखंडा पार्श्वनाथ देरासर, घोघा	**प्राचीनलेखसंग्रह,** लेखांक ४२४
१३. १५५३	वैशाख वदि...	वासुपूज्य की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वीरजिनालय, पायधुनी, मुम्बई	**जैनधातुप्रतिमालेख,** लेखांक २६५
१४. १५...	तिथिविहीन	७२ तीर्थंकरों का पट्ट बनवाने का उल्लेख करने वाला शिलालेख	नवचतुष्किका का लेख, लूणवसही, आबू	**अर्बुदप्राचीनजैन-लेखसंदोह,** लेखांक २६३ एवं **प्राचीनजैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक १३०

ज्ञानसागर के पट्टधर उदयसागर हुए। इनके द्वारा प्रतिष्ठापित वि०सं० १५३२-१५५६ तक की जिनप्रतिमायें प्राप्त हुई हैं इनका विवरण इस प्रकार है :

१. १५३२	ज्येष्ठ वदि १३ बुधवार	आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	प्रेमाभाई हेमाभाई टोंक, शत्रुंजय	**जैनलेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ६८१
२. १५३३	पौष वदि १	सुपार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	श्रेयांसनाथ जिनालय, फताशाह की पोल, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक १३८४
३. १५३२	पौष सुदि १५	आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बालावसही, शत्रुंजय	**शत्रुंजयवैभव,** लेखांक २१३
४. १५३३	पौष सुदि १५ सोमवार	पार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बावनजिनालय, पेथापुर	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ६८३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५.	१५३३	"	सुमतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, रौशनमुहल्ला, आगरा	**जैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक १४४४
६.	१५३४	मार्गशीर्ष सुदि १० रविवार	सुमिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, सिंहपुरी	वही, भाग १, लेखांक ४२४
७.	१५३५	पौष वदि ६ शुक्रवार	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ देरासर, देवसानो पाडो, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक १०८०
८.	१५३६	वैशाख वदि ११ शुक्रवार	संभवनाथ की धातु की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	मनमोहन पार्श्वनाथ, देरासर, पाटण	वही, भाग १, लेखांक २४३
९.	१५३६	"	"	मोतीशाह की टूँक, शत्रुंजय	**शत्रुंजयवैभव,** लेखांक २२१
१०.	१५३६	ज्येष्ठ वदि ४ मंगलवार	पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, रौशनमुहल्ला, आगरा	**जैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक १४४५
११.	१५३६	--	सम्भवनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	रामचन्द्रजी का मंदिर, वाराणसी	**जैनलेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ४२०
१२.	१५४२	माघ वदि ९ शनिवार	कुंथुनाथ की चौबिसी जैनदेरासर, ड्रभोई प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख		**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक १३
१३.	१५४३	वैशाख वदि १० शुक्रवार	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ देरासर, दादर, मुम्बई	**जैनधातुप्रतिमालेख,** लेखांक २४५
१४.	१५४३	ज्येष्ठ सुदि ११ शनिवार	संभवनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैन देरासर, मोटीदेसाई पोल, सूरत	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ६०५
१५.	१५४४	वैशाख सुदि ७ शुक्रवार	वासुपूज्य की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय भिंडीबाजार, मुम्बई	**जैनधातुप्रतिमालेख,** लेखांक २४८
१६.	१५४६	माघ सुदि २	संभवनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनदेरासर, सौदागर-पोल, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ७९२
१७.	१५४६	माघ सुदि १० रविवार	वासुपूज्य की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	संभवनाथजिनालय, अजीमगंज, बंगाल	**जैनलेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक २४
१८.	१५४९	ज्येष्ठ सुदि ५ सोमवार	चन्द्रप्रभ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय लूणकरणसर, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक २४९८
१९.	१५४९	कार्तिक वदि १ सोमवार	आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सीमंधरस्वामी का मंदिर, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक ११९०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२०. १५५१	वैशाख सुदि १३ गुरुवार	सुविधिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सेठ जी का घर देरासर, कांठ	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह**, लेखांक ८६१
२१. १५५१	माघ वदि २ सोमवार	आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	त्रैलोक्यदीपक प्रासाद, राणकपुर	**जैनलेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ७०७
२२. १५५२	माघ वदि १२ बुधवार	संभवनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सुमतिनाथ जिनालय, पाथवनातीर्थ की धर्मशाला, पालीताणा	**शत्रुंजयवैभव**, लेखांक २५२
२३. १५५३	वैशाख सुदि ३	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनदेरासर, महुआ	**प्राचीनलेखसंग्रह**, लेखांक ४८९
२४. १५५३	"	मुनिसुव्रत की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	घर देरासर, दिल्ली	**जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक १८७९
२५. १५५४	पौष वदि शुक्रवार	विमलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जगवल्लभ पार्श्वनाथ देरासर, नीशापोल, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक १२५१
२६. १५५४	माघ वदि २ गुरुवार	आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आलावसही, शत्रुंजय	**शत्रुंजयवैभव**, लेखांक २५४
२७. १५५४	फाल्गुन सुदि २ गुरुवार	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	नवखंडा पार्श्वनाथ देरासर, घोघा	घोघातीर्थ, पृ० २५.
२८. १५५६	वैशाख सुदि१३	जिनालय के दरवाजे के ऊपर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, हमीरगढ़	**अर्बुदाचलप्रदक्षिणा-जैनलेखसंदोह**, लेखांक २३६

उदयसागर के प्रशिष्य एवं शीलसागर के शिष्य डूंगरकवि द्वारा रचित **माहबावनी** नामक कृति प्राप्त होती है।[२८] उदयसागर के पट्टधर लब्धिसागर हुए जिनके द्वारा वि०सं० १५५६ में रचित **ध्वजकुमारचौपाई** और **श्रीपालकथा** (वि०सं० १५५७) आदि कृतियाँ मिलती हैं।[२९] वि०सं० १५६१ से १५६६ तक के कुछ प्रतिमालेखों में प्रतिमाप्रतिष्ठापक के रूप में इनका नाम मिलता है।[३०]

वि०सं० १५७२ से १५९१ तक के कुछ प्रतिमालेखों में धनरत्नसूरि का प्रतिमा प्रतिष्ठापक के रूप में नाम मिलता है। इनका विवरण इस प्रकार है :

१. १५७२	फाल्गुन सुदि ८ सोमवार	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चौमुखजी देरासर, ईडर	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक १४४१
२. १५७६	वैशाख सुदि ६ सोमवार	चन्द्रप्रभ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बृहत्ज्ञानभंडार, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह**, लेखांक २५३१

(उक्त प्रतिमा लेख में धनरत्नसूरि के साथ-साथ उनके गुरुभ्राता सौभाग्यसागरसूरि का भी उल्लेख है)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३.	१५७६	वैशाख सुदि ६ सोमवार	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, भिंडीबाजार, मुम्बई	**जैनधातुप्रतिमालेख**, लेखांक २९०
४.	१५७७	ज्येष्ठ सुदि ५ शनिवार	सुमतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बालावसही, शत्रुंजय	**शत्रुंजयवैभव**, लेखांक २७५
५.	१५८२	ज्येष्ठ सुदि १० शुक्रवार		वीरजिनालय, जोधपुर	**जैनलेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ६१८
६.	१५८४	चैत्र वदि ५ गुरुवार	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वीरजिनालय, वडनगर	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ५४५

(उक्त लेख में भी धनरत्नसूरि के साथ-साथ सौभाग्यसागरसूरि का नाम मिलता है)

७.	१५८७	वैशाख सुदि ७ सोमवार	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बावन जिनालय, पेथापुर	वही, भाग १, लेखांक ६९२
८.	१५८९	--	श्रेयांसनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वही	वही, भाग १, लेखांक ६९४
९.	१५९०	वैशाख सुदि ५	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	भीलड़ियाजी तीर्थ	**श्रीप्रतिमालेखसंग्रह**, लेखांक ३६४
१०.	१५९१	वैशाख वदि २ सोमवार	अजितनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सुमतिनाथ जिनालय, भायखला, मुम्बई	**जैनधातुप्रतिमालेख**, लेखांक ३००
११.	१५९१				**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक १२६४

वि०सं० १५७६ से १५८९ तक के कुछ प्रतिमालेखों में सौभाग्यसागरसूरि का प्रतिमाप्रतिष्ठापक के रूप में उल्लेख है। इनका विवरण निम्नानुसार है :

१.	१५७६	वैशाख सुदि ६ सोमवार	जैन मंदिर, पटना	**जैनलेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक २९३
२.	"	"	गौड़ीपार्श्वनाथ जिनालय, पायधुनी, मुम्बई	**जैनधातुप्रतिमालेख**, लेखांक २९२
३.	"	"	बृहद्ज्ञानभंडार, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह**, लेखांक २५३९

(जैसा कि पूर्व में उल्लेख आ चुका है उक्त प्रतिमा लेख में धनरत्नसूरि का भी नाम मिलता है)

४.	१५७९	वैशाख सुदि ६ सोमवार	पंचायती मंदिर, सराफा बाजार, ग्वालियर	**जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक १३८७
५.	"	"	शांतिनाथ जिनालय, लीमडीपाड़ा, पाटण	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक २८१
६.	"	"	धर्मनाथदेरासर, उपलो गभारो, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक ११०८

(उक्त तीनों लेखों में धनरत्नसूरि के भट्टारक के रूप में सौभाग्यसागरसूरि का उल्लेख है)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लब्धिसागरसूरि के दो शिष्यों-धनरत्नसूरि और सौभाग्यसागरसूरि के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। सौभाग्यसागर के शिष्य उदयसौभाग्य द्वारा वि०सं० १५९१ में रचित **हेमप्राकृतढुंढ़िका** नामक कृति प्राप्त होती है।[३१] इनके एक शिष्य द्वारा रचित **चम्पकमालारास** (वि०सं० १५७८) नामक कृति मिलती है। इसके रचनाकार ने स्वयं अपना नाम न देते हुए मात्र 'सौभाग्यसागरसूरिशिष्य'[३२] कहा है।

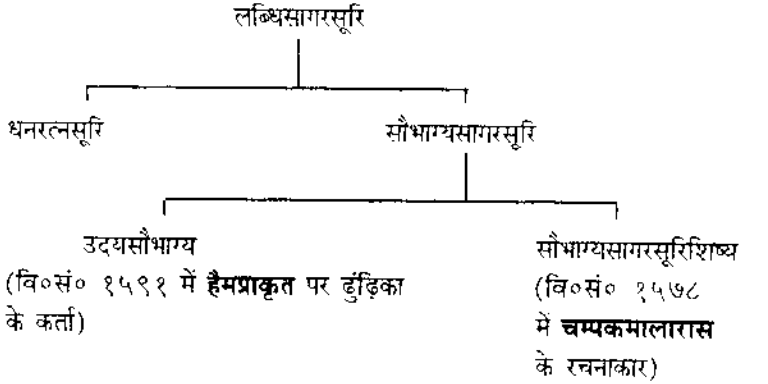

लब्धिसागरसूरि के पट्टधर धनरत्नसूरि का विशाल शिष्य परिवार था जिनमें अमररत्नसूरि, तेजरत्नसूरि, देवरत्नसूरि, भानुमेरुगणि, उदयधर्म, भानुमंदिर आदि उल्लेखनीय हैं। धनरत्नसूरि द्वारा रचित कोई कृति नहीं मिलती, यही बात इनके पट्टधर अमररत्नसूरि के बारे में कही जा सकती है। अमररत्नसूरि के पट्टधर उनके गुरुभ्राता तेजरत्नसूरि हुए जिनके शिष्य देवसुन्दर का नाम वि०सं० १६३७ के प्रशस्तिलेख[३३] में प्राप्त होता है। तेजरत्नसूरि के दूसरे शिष्य लावण्यरत्न हुए जिनकी परम्परा में हुए सुखसुन्दर ने वि०सं० १७३९ में **कल्पसूत्रसुबोधिका** की प्रतिलिपि की[३४]। इसकी प्रशस्ति[३५] में इन्होंने अपनी गुरु-परम्परा दी है, जो इस प्रकार है:

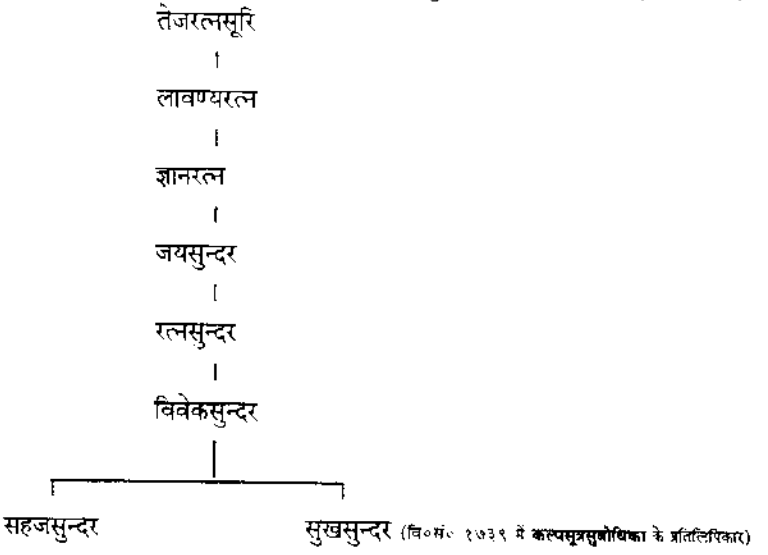

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चूंकि उक्त प्रशस्ति में प्रतिलिपिकार ने अपनी लम्बी गुरु-परम्परा दी है, अतः इस शाखा के इतिहास के अध्ययन में यह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण मानी जा सकती है।

अमररत्नसूरि के दूसरे पट्टधर देवरत्नसूरि भी इन्हीं के गुरुभ्राता थे। इनके शिष्य जयरत्न द्वारा रचित कोई कृति नहीं मिलती, किन्तु इनकी परम्परा में हुए कनकसुन्दर गणि द्वारा वि०सं० १६६२-१७०३ के मध्य रचित विभिन्न रचनायें मिलती हैं[३५], जो इस प्रकार हैं--

१- **कर्पूरमंजरीरास** (वि०सं० १६६२)
२- **गुणधर्मकनकवतीप्रबन्ध**
३- **सगालसाहरास** (वि०सं० १६६७)
४- **देवदत्तरास**
५- **रूपसेनरास** (वि०सं० १६७३)
६- **जिनपालितसज्झाय**
७- **दशवैकालिकसूत्रबालावबोध**
८- **ज्ञाताधर्मकथाङ्गस्तवन**[३७] (वि०सं० १७०३)

अपनी कृतियों की प्रशस्तियों में रचनाकार द्वारा दी गयी गुरु-परम्परा निम्नानुसार है:

अमररत्नसूरि
।
देवरत्नसूरि
।
जयरत्नसूरि
।
विद्यारत्न
।
कनकसुन्दरगणि (वि०सं० १६६२-१७०३ के मध्य विभिन्न कृतियों के रचनाकार)

जयरत्न के दूसरे शिष्य भुवनकीर्ति हुए जिनके पट्टधर रत्नकीर्ति[३८] ने वि०सं० १७२७ में **स्त्रीचरित्ररास** की प्रतिलिपि की। रत्नकीर्ति के शिष्य सुमतिविजय द्वारा वि०सं० १७४९ में रचित **रत्नकीर्तिसूरिचउपइ**[३९] नामक कृति प्राप्त होती है। सुमतिविजय द्वारा रचित **रात्रिभोजनरास** नामक एक अन्य कृति भी प्राप्त होती है।

रत्नकीर्तिसूरिचउपइ में रचनाकार ने अपने अन्य गुरु भ्राताओं--रामविजय, हेमविजय और गुणविजय का भी नाम दिया है[४०]। वि०सं० १७३४ में रत्नकीर्तिसूरि के निधन के पश्चात् गुणविजय गुणसागरसूरि के नाम से उनके पट्टधर बने। इनके द्वारा रचित न तो कोई कृति मिलती है, और न ही किसी प्रतिमालेख में नाम मिलता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भुवनकीर्ति
।
रत्नकीर्ति (वि०सं० १७२७ में **स्त्रीचरित्ररास** के प्रतिलिपिकार)

सुमतिविजय	रामविजय	हेमविजय	गुणविजय
(वि०सं० १४४९ में **रत्नकीर्तिसूरिचउपइ** एवं **रात्रिभोजनरास** के कर्ता)			अपरनाम गुणसागरसूरि

वि०सं० १७०७-३४ के मध्य रचित **भगवतीसूत्रबालावबोध**[१५] के कर्ता पद्मसुन्दर भी इसी शाखा के थे। अपनी कृति के अन्त में उन्होंने गुरु-परम्परा दी है, जो इस प्रकार है :

धनरत्नसूरि
।
अमररत्नसूरि
।
देवरत्नसूरि

जयरत्न	राजसुन्दर
।	।
भुवनकीर्ति	पद्मसुन्दर (वि०सं० १७०७-३४ के मध्य **भगवतीसूत्रबालावबोध** के कर्ता)
।	
रत्नकीर्ति	

चतुर्विंशतिजिनस्तुति के रचनाकार नयसिंहगणि[१६] भी इसी गच्छ के थे। अपनी कृति की प्रशस्ति में उन्होंने अपनी गुरु-परम्परा की लम्बी तालिका दी है, जो इस प्रकार है :

रत्नसिंहसूरि
।
उदयवल्लभसूरि
।
ज्ञानसागरसूरि
।
उदयसागरसूरि
।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लब्धिसागरसूरि
।
धनरत्नसूरि
।
मुनिसिंहगणि
।
नयसिंहगणि (वि०सं० १६२५ के आस-पास
चतुर्विंशतिजिनस्तुति के रचनाकार)

नयसिंहगणि द्वारा रचित अन्य कोई कृति नहीं मिलती।

धनरत्नसूरि के एक शिष्य भानुमेरुगणि हुए, जिनके द्वारा रचित कोई कृति नहीं मिलती, किन्तु इनके शिष्य नयसुन्दर[११] अपने समय के प्रसिद्ध रचनाकार थे। इनके द्वारा रचित कृतियां इस प्रकार हैं :

१- **रूपरत्नमाला**
२- **शत्रुंजयोद्धारस्तवन**
३- **नवसिद्धिस्तवन**
४- **सीमंधरवीनतीस्तवन**
५- **शत्रुंजयउद्धार** (वि०सं० १६३८/ई०स० १५७२)
६- **स्थूलिभद्रएकबीसो**
७- **जुहारमित्रसज्झाय**
८- **गिरनारतीर्थोद्धाररास**
९- **यशोधरनृपचौपाई** (वि०सं० १६१८/ई०स० १५५२)
१०- **रूपचन्द्रकंवररास** (वि०सं० १६३७/ई०स० १५७१)
११- **गिरनारतीर्थोद्धारप्रबन्ध**
१२- **प्रभावती (उदयन) रास** (वि०सं० १६४०/ई०स० १५७४)
१३- **सुरसुन्दरीरास** (वि०सं० १६४६/ई०स० १५९०)
१४- **नलदमयन्तीचरित्र** (वि०सं० १६६५/ई०स० १६०९)
१५- **शीलशिक्षारास** (वि०सं० १६६९/ई०स० १६१३)
१६- **शंखेश्वरपार्श्वस्तवन**
१७- **पार्श्वनाथस्तवन**
१८- **आत्मबोधकुलक**
१९- **सारस्वतव्याकरणवृत्ति**
२०- **बृहद्पोशालिकपट्टावली**

नयसुन्दर की शिष्या साध्वी हेमश्री द्वारा रचित **कनकावतीआख्यान** (रचनाकाल वि०सं० १६४४/ई०स० १५८८) और **मौनएकादशीस्तुतिथोयसंग्रह** नामक कृतियां मिलती हैं।[१२]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कर्मविवरणरास के रचनाकार लावण्यदेव[१] भी तपागच्छ की इसी शाखा से सम्बद्ध थे। अपनी कृति के अन्त में उन्होंने प्रशस्ति के अन्तर्गत गुरु-परम्परा दी है, जो इस प्रकार है:

धनरत्नसूरि
।
उदयधर्म
।
जयदेव
।
लावण्यदेव (**कर्मविवरणरास** के कर्ता)

धनरत्नसूरि के एक शिष्य भानुमंदिर हुए, जिनके द्वारा रचित कोई कृति नहीं मिलती, किन्तु वि०सं० १६१२/ई०स० १५५६ में रचित **देवकुमारचरित्र** के कर्ता ने स्वयं को भानुमंदिरशिष्य[१] के रूप में सूचित किया है :

धनरत्नसूरि
।
भानुमंदिर
।
भानुमंदिरशिष्य (वि०सं० १६१२/ई०स० १५५६ में **देवकुमारचरित्र** के कर्ता)

मुनि कांतिसागर[१] के अनुसार गलियाकोट स्थित संभवनाथजिनालय में ही प्रतिष्ठापित एक जिनप्रतिमा पर वि०सं० १७८१ का एक लेख उत्कीर्ण है, जिसमें देवसुन्दरसूरि की शिष्य परम्परा की एक पट्टावली दी गयी है, जो इस प्रकार है :

धनरत्नसूरि
।
अमररत्नसूरि
।
तेजरत्नसूरि
।
देवसुन्दरसूरि
।
विजयसुन्दरसूरि
।
लब्धिचन्द्रसूरि
।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विनयचन्द्रसूरि
|
धरचन्द्रसूरि
|
उदयचन्द्रसूरि
|
जयचन्द्रसूरि

इस प्रकार विक्रम सम्वत् की १८वीं शताब्दी के अंतिम चरण तक तपागच्छ की बृहद्पौशालिक शाखा का अस्तित्त्व सिद्ध होता है।

उक्त सभी साहित्यिक और अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर तपागच्छ की इस प्राचीन शाखा के मुनिजनों का वंशवृक्ष प्रस्तुत है :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

साहित्यिक और अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर निर्मित तपागच्छबृहद्पौशालिकशाखा के मुनिजनों की तालिका

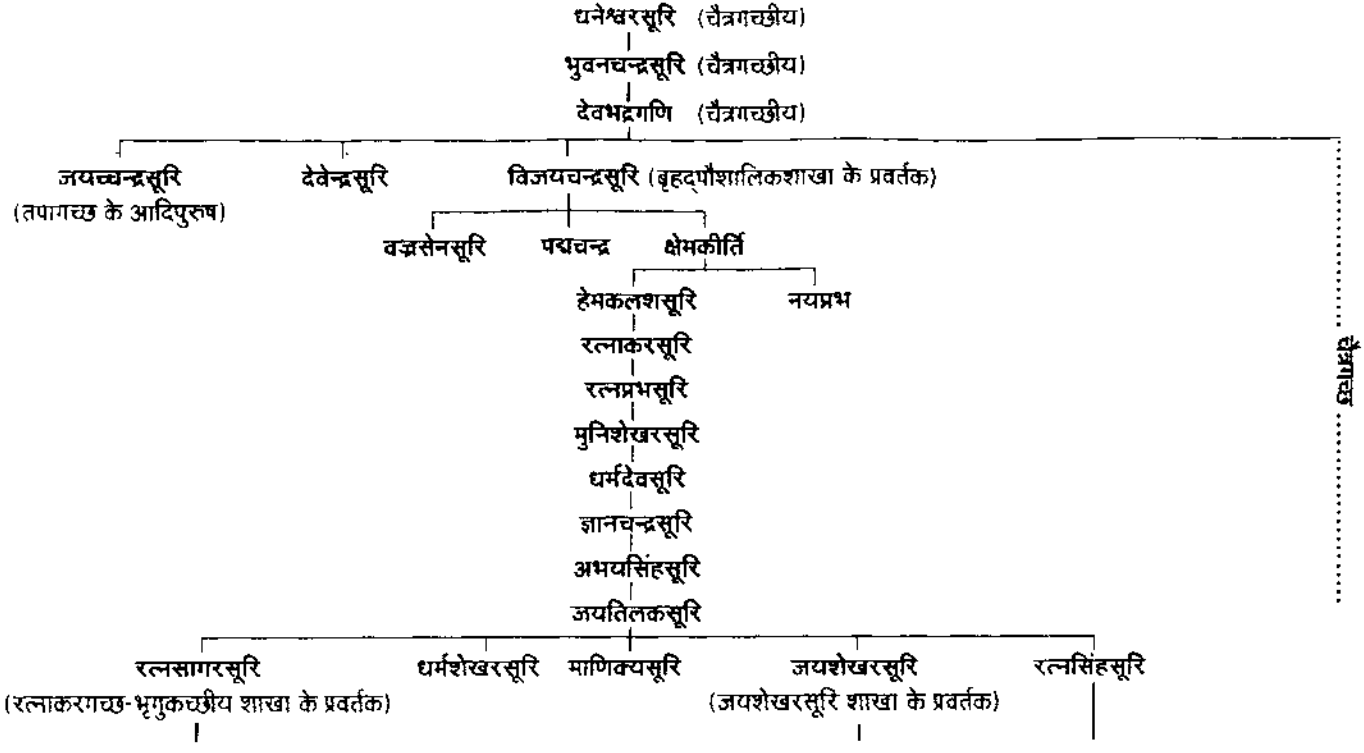

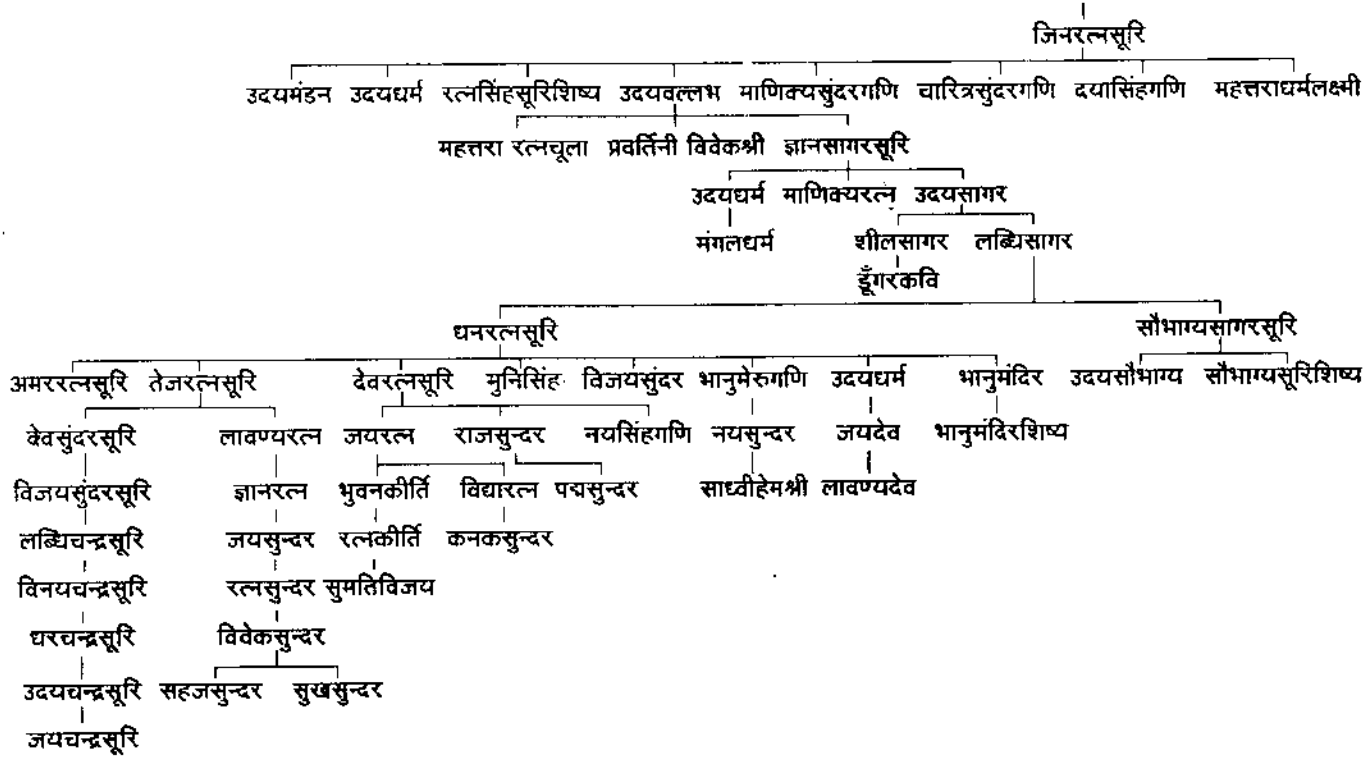

Jain Education International
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

संदर्भ

१. "बृहद्पौशालिकपट्टावली" मुनि जिनविजय, संपा०- **विविधगच्छीय पट्टावलीसंग्रह,** सिंघी जैन ग्रन्थमाला, ग्रन्थांक ५३, मुम्बई १९६१ ई० पृष्ठ २४.

२. "बृहद्पौशालिकपट्टावली", वही, पृष्ठ १३-३६.
मुनि कल्याणविजय, संपा०-**पट्टावलीपरागसंग्रह**, पृष्ठ १७४-१८१.
मोहनलाल दलीचंद देसाई, **जैनगूर्जरकविओ** भाग ९, द्वितीयसंशोधित संस्करण, संपा०-डा० जयन्तकोठारी, मुम्बई १९९७ ई०, पृष्ठ ७४-८५.

३. तत्पादाम्बुजरोलम्बावपुष्यति ..... ।
अभूवन् भूरिभाग्याढ्याः श्रीजगच्चद्रसूरयः ॥८॥
देवेन्द्रसूरिसंज्ञस्तेषामाद्यो बभूव शिष्यवरः ।
श्रीविजयचन्द्रसूरिस्तया द्वितीयो गुणैस्त्वाद्यः ॥९॥
चक्रे भव्यावबोधाय संप्रदायातथागमात् ।
सच्छ्राद्धदिनकृत्यस्य वृत्तिर्देवेन्द्रसूरिभिः ॥१०॥
श्रीविजयचन्द्रसूरिप्रमुखैर्विद्वद्गुणैर्गुणगारिष्ठैः ।
स्वपरोपकारानिरतैस्तदैव संशोधिता चेयम् ॥११॥

देवेन्द्रसूरिकृत **श्राद्धदिनकृत्य** की प्रशस्ति
उद्धृत-मुनि जिनविजय, पूर्वोक्त, पृष्ठ २३-२४.

४. C. D. Dalal. *A Descriptive Catalogue of Palm Leaf Mss in the Jaina Bhandars at Pattan*. G.O.S.. No. 76. Baroda 1937 A.D., Pp-354-56.

५. द्रष्टव्य संदर्भ क्रमांक २.

६. स्वान्ययोरुपकाराय श्रीमद्देवेन्द्रसूरिणा ।
धर्मरत्नास्य टीकेयं सुखबोधा विनिर्ममे ॥८॥
श्रीहेमकलशवाचकपण्डितवर धर्मकीर्त्तिमुख्यबुधैः ।
स्वयरसमयैकुशलैस्तदैव संशोधिता चेयम् ॥९॥
देवेन्द्रसूरिकृत **धर्मरत्नप्रकरणवृत्ति** की प्रशस्ति
उद्धृत - मुनि जिनविजय, पूर्वोक्त, पृष्ठ ३.

७. जीवनचंद साकरचंद झवेरी, संग्राहक और संशोधक-**आनन्दकाव्यमहोदधि**, भाग ६, श्री देवचंद लालभाई पुस्तकोद्धारे, ग्रन्थांक ४३, मुम्बई १९१८ ई०स०, प्रस्तावना लेखक-श्री मोहनलाल दलीचंद देसाई, पृष्ठ १०.

८. हीरालाल रसिकलाल कापड़िया, **जैनसंस्कृतसाहित्यनोइतिहास,** भाग २, खंड १, श्री मुक्तिकमल जैनमोहनमाला, ग्रन्थांक ६४, बड़ोदरा १९६८ ई०स०, पृष्ठ ३५६-५७.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९. रत्नाकरसूरि के उपदेश से वि०सं० १३७०/ई०स० १३१४ में स्तम्भतीर्थ में हेमचन्द्रकृत **शब्दानुशासन** की प्रतिलिपि की गयी।
P.Peterson, *A Fifth Report of Operation in search of Sanskrit Mss in Bombay Circle*, April 1892 - March 1895, P-110.

१०. Vidhatri Vora, Ed - *Catalogue of Gujrati Mss : Muni Shree Punya Vijayjis Collection*, L.D. Series No. 71, Ahmedabad, 1978, A.D. P-166.

११. P.Peterson, *A Fifth Report of Operation in search of Sanskrit Mss in Bombay Circle*, No 51.

१२. Ibid. No. 396

१३. वृद्धतपागच्छ/रत्नाकरगच्छ की इस शाखा का विवरण स्वतंत्र रूप से यथा स्थान दिया गया है।

१४. जिनरत्नसूरि की शिष्य परम्परा का विवरण इसी आलेख के साथ दिया गया है।

१५. मोहनलाल दलीचंददेसाई, **जैनगूर्जरकविओ,** भाग १, द्वितीयसंशोधित संस्करण, संपा०-डा० जयन्त कोठारी, मुम्बई १९८६ ई०स०, पृष्ठ ८५ और आगे.

१६. A.P.Shah, Ed. *Catalogue of Sanskrit & Prakrit Mss : Muni Shree Punya Vijayjis Collection*, Part I, L.D.Series No.2, Ahmedabad, 1963 A.D., No - 991, P -81.

१७. मोहनलाल दलीचंद देसाई, **जैनसाहित्यनो संक्षिप्तइतिहास**, कंडिका ७४९.

१८. **जैनगूर्जरकविओ**, पूर्वोक्त, भाग १, पृष्ठ ९८-१०१.

१९. अम्बालाल प्रेमचन्द शाह, **जैनतीर्थसर्वसंग्रह**, भाग १, खंड १, अहमदाबाद १९५३ ई०, पृष्ठ ११६-११८.

२०. विजयधर्मसूरि, संपा०- **प्राचीनतीर्थमालासंग्रह**, भाग १, भावनगर वि०सं० १९७८ ई०, पृष्ठ ५६-५७.

२१. James Burges, *Antiquities of Kathiawad and Kuchh*, Reprint Varanasi 1971 A.D. Pp. 159-61.

२२. **जैनसाहित्यनो संक्षिप्तइतिहास**, कंडिका ६८१, ६८६.

२३. **जैनगूर्जरकविओ**, पूर्वोक्त, भाग १, पृष्ठ ६२-६३.
मुनि कांतिसागर, **शत्रुंजयवैभव**, जयपुर १९९० ई०स०, पृष्ठ १८६.

२४. मुनि कांतिसागर, पूर्वोक्त, पृष्ठ १८७-८८.

२५. **जैनगूर्जरकविओ**, पूर्वोक्त, भाग १, पृष्ठ १२९-३०.

२६. त्रिपुटी महाराज, संपा० - **पट्टावलीसमुच्चय**, भाग २, श्रीचारित्र स्मारक ग्रन्थमाला, ग्रन्थांक ४४, अहमदाबाद १९५० ई०स०, पुरवणी, पृष्ठ २४०-४१.

२७. H.D. Velanker, *Jinratnakosha*, P - 358.

२८. Vidhatri Vora, *Catalogue of Gujrati Mss : Muni Shree Punya Vijayjis Collection*, P - 850.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२९. **जैनसाहित्यनो संक्षिप्तइतिहास**, कंडिका ७५७, ७७५.
जैनगूर्जरकविओ, पूर्वोक्त, भाग १, पृष्ठ २१३.

३०. (१) १५६१ वैशाख सुदि १३ शुक्रवार, **जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ११८३.
(२) १५६५ ज्येष्ठ सुदि ६ शुक्रवार, **जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ९८५.
(३) १५६६ माघ सुदि ५ सोमवार, **जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ७६६.

३१. A.P. Shah, *Ed. Catalogue of Sanskrit & Prakrit Mss : Muni Shree Punya Vijayjis Collection*, Part II, L. D. Series No 5, No.6085, P-390-1.

३२. **जैनगूर्जरकविओ**, भाग १, पृष्ठ २७४-७६.

३३. श्री विनयसागर जी के अनुसार यह प्रशस्ति संभवनाथ जिनालय, गलियाकोट के एक चैत्यालय पर उत्कीर्ण है। उन्होंने इसकी वाचना दी है, जो इस प्रकार है:
॥ॐ॥ संवत् १६३७ वर्षे माह सुदि ५ सोमे वागडदेशे राउल श्रीसहसमलजी विजयराज्ये श्रीकोटनगरवास्तव हुंबडज्ञातीय वृद्धशाखायां। गां० श्रीउदयसिंह सुत गां० नाभा सु० गां० दाखा सुत गां० आणंद भार्या दाडिमदे सुत गां० धीसकर भार्या कनकादे अमरी सुपराणदे रूपादे। सुपराणदे सुत गां० धीरू माऊ वीला भा० कनकादे सुत गां० थीसकरा भार्या कल्याणदे रूपा भार्या केसरदे गां० धीसकर वि। हेनीबाई रङ्गाबाई चगा। समस्त कुटुम्बश्रेयसे श्रीसंभवनाथचैत्यालये देवकुलिका कारिता। श्रीचन्द्रप्रभबिंबं स्थापितं श्रीवृद्धतपागच्छे भट्टारिक श्रीधनरत्नसूरिभिस्तत्पट्टे भट्टारिक श्रीतेजरत्नसूरिभिस्तत्पट्टे भट्टारिक श्री देवसुन्दरसूरिभिः प्रतिष्ठितं। श्रेयसे। शुभंभवतु। यात्रा शुभंभवतु। श्रीश्रीश्रीश्रीश्रीश्री पं० विनयचारित्र पं० विमलरत्न पं० जयसिंह पं० वीसल चेला आणंदरत्न लिखितम्॥
म०विनयसागर, संपा०-**प्रतिष्ठालेखसंग्रह**, जिनमणिमाला : चतुर्थमणि, कोटा १९५३ ई०, लेखांक १०३४.

॥ॐ॥ संवत् १६३७ वर्षे माह सुदि ५ वागडदेशे राउल श्रीसहसमलजी विजयराज्ये श्रीकोटनगरवास्तव्य हुंबडज्ञातीय वृद्धशाखायां गांधी.....
श्रीपाल भ्रातृ गां० धीहर जयपाल भार्या सरूपदे सुत गांधी गांगा भार्या मेलादे ह०.....भार्या खीमदे सुत गांधी सांगा गांधी जेवंतया भार्या स०.....मदि सुत गांधी बल गांधी जेवंत भार्या भगादे सुत गांधी भारिमल्ल भार्या मिलापदे समस्तकुटुम्बयुतेन श्रेयसे श्रीसंभवनाथचैत्यालये देवकुलिका कारापिता श्रीवृद्धतपापक्षे भट्टारिक श्रीधनरत्नसूरिभिस्तत्पट्टे भ० श्रीतेजरत्नसूरिभिस्तत्पट्टे भ० श्रीदेवरत्नसूरिभिः प्रतिष्ठितं शुभंभवतु॥
वही, लेखांक, १०३३.

॥सम्वत् १६३७ वर्षे फागुण सुदि ५ बुधे बागडदेशे राउलश्री सहसमल श्रीविजयराज्ये श्री गिरपुरवास्तव्य हुंबडज्ञातीय वृद्धशाखीय मढासाआ जीवा भार्या

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जीवादे सुत गुढसीआ भार्या भाखणादे मू.....भार्या जूढिआ समस्तकुटुम्बयुतेन श्रीकोटनगरमध्ये श्रीसंभवनाथचैत्यालये देवकुलिकाकारी(रि)ता मध्ये श्रीसुविधिनाथबिंबं स्वस्य श्रेयसेः श्रीवृद्धतपागच्छे भट्टारिक श्रीधनरत्नसूरिभिस्तत्पट्टे भट्टारिक श्रीतेजरत्नसूरिभिस्तत्पट्टे भट्टारिक श्री ५ श्रीदेवसुन्दरसूरिभिः प्रतिष्ठित शुभंभवतु।। पं० विनयचारित्र पं० विमलरत्न पं०जयसिंह पं० ज्ञानरत्न पं० वीरत्न शि० आणंदरत्नेनलिखितं।। वही, लेखांक १०३२.

३४-३५. A.P.Shah, *Ed. Catalogue of Sanskrit & Prakrit Mss : Muni Shree Punya Vijayjis Collection*, Part I, No.645, P - 51.

३६. **जैनगूर्जरकविओ**, द्वितीयसंशोधित संस्करण, भाग ३, पृष्ठ १०-१७, ३७३-७४.

३७. Vora. *Catalogue of Gujrati Mss : Muni Shree Punya Vijayjis Collection*, P-1.

३८. **जैनगूर्जरकविओ**, द्वितीयसंशोधित संस्करण, भाग ४, पृष्ठ १६९.

३९. मुनि जिनविजय, संग्रा०संपा०-**जैनऐतिहासिकगूर्जरकाव्यसंचय**, प्रवर्तक श्रीकांतिविजयजी जैन ऐतिहासिक ग्रन्थमाला:पुष्प ७, भावनगर १९२६ ई०स० पृष्ठ १-१३. रास सार, पृष्ठ१-५.

४०. वही, पृष्ठ १३.

४१. **जैनगूर्जरकविओ**, द्वितीय संशोधित संस्करण, भाग ४, पृष्ठ १६३-६४.

४२. वही, भाग १, पृष्ठ ३७९-८०.

४३. वही, भाग २, पृष्ठ ९३-१११.

४४. वही, भाग २, पृष्ठ २३०.

४५. वही, भाग १, पृष्ठ ३४५-४६.

४६. वही, भाग २, पृष्ठ ५३.

४७. मुनि कांतिसागर, पूर्वोक्त, पृष्ठ १३३-३४.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वृद्धतपागच्छ - जयशेखरसूरिशाखा

बृहद् पौशालिक शाखा के अन्तर्गत जैसा कि हम देख चुके हैं यद्यपि जयतिलकसूरि के एक शिष्य जयशेखरसूरि की शिष्य सन्तति वृद्धतपागच्छ की एक स्वतंत्रशाखा के रूप में अस्तित्त्व में आयी, तथापि इसका कोई अन्य नाम नहीं मिलता। इस शाखा के मुनिजन स्वयं को वृद्धतपागच्छीय बतलाते हैं अध्ययन की सुविधा के लिये हम इसका नामकरण **वृद्धतपागच्छ-जयशेखरसूरिशाखा** कर रहे हैं।

जयशेखरसूरि द्वारा रचित कोई ग्रन्थ नहीं मिलता किन्तु इनके द्वारा वि० सं० १४८८ माघ वदि ४ शुक्रवार को प्रतिष्ठापित अजितनाथ की धातु की एक प्रतिमा प्राप्त हुई है जो आज महावीर जिनालय, पायधुनी मुम्बई में संरक्षित है। मुनि कान्तिसागर जी ने इसकी वाचना दी है, जो इस प्रकार है :

सम्वत् १४८८ माघ वदि २ शुक्रे श्री वायडजा(ज्ञा)तीय लींबा भा० चांपलदे सुत सूराकेन भा० सूहवदेसहितेन माताश्रेयसे अजितनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीबृहत्तपापक्षे श्रीजयशेखरसूरिभिः।

जैनधातुप्रतिमालेख, लेखांक ७९

जयशेखरसूरि के शिष्य एवं पट्टधर जिनरत्नसूरि हुए जिनके द्वारा वि० सं० १५०३ से १५४४ के मध्य प्रतिष्ठापित कुछ जिनप्रतिमायें प्राप्त हुई हैं। इनका विवरण इस प्रकार है:

क्रमांक	संवत्	तिथि/मिति	लेख का स्वरूप	प्रतिष्ठास्थान	संदर्भग्रन्थ
१.	१५०३	आषाढ़ सुदि १०शुक्रवार	मुनिसुव्रत की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ जिना०, देलवाड़ा, उदयपुर	**प्राचीनलेखसंग्रह,** लेखांक २००
२.	१५०३	"	"	वल्लभविहार, पालीताना	**शत्रुंजयवैभव,** लेखांक ९९.
३.	१५१२	वैशाख सुदि ३	वासुपूज्य की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वालावसही, शत्रुंजय	वही, लेखांक १३४.
४.	१५१६	वैशाख सुदि १ सोमवार	चन्द्रप्रभ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ देरासर, लाडोल	**जैनधातुप्रतिमालेख-संग्रह**, भाग १, लेखांक ४६४.
५.	१५१७	वैशाखसुदि ३ सोमवार	वासुपूज्य की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वीरजिनालय, वैदों का चौक, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक १२४५.
६.	१५१७	माघवदि ८ सोमवार	सुमतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिना०, राधनपुर	**प्राचीनलेखसंग्रह,** लेखांक ३०७.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७.	१५२०	वैशाखसुदि १२ बुधवार	अजितनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वीर जिनालय, रीलगेट, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेख-संग्रह**, भाग १, लेखांक १४८.
८.	१५२२	माघसुदि ९ शनिवार	मुनिसुव्रत की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	भीलडियाजीर्थ	**जैनप्रतिमालेखसंग्रह**, लेखांक ३५७.
९.	१५२२	"	सुमतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	" बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह**, लेखांक १२७७.
१०.	१५२२	"	"	जैनमंदिर, प्रांतीज	**प्राचीनलेखसंग्रह**, लेखांक ३६२.
११.	१५२२	"	विमलनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिनालय, लींबड़ीपाड़ा, पाटण	**जैनधातुप्रतिमालेख-संग्रह**, भाग १, लेखांक २६७.
१२.	१५२२	"	मुनिसुव्रत की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह**, लेखांक १६०८.
१३.	१५२३	वैशाख वदि ४ शुक्रवार	कुन्थुनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनदेरासर, सौदागरपोल, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेख-संग्रह**, लेखांक ७८६.
१४.	१५२३	वैशाख सुदि ३	सुमतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	खरतरवसही, शत्रुंजय	**शत्रुंजयवैभव**, लेखांक १७७.
१५.	१५२७	पौष वदि १	नेमिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	गौड़ीपार्श्वनाथ जिनालय, अजमेर	**जैनलेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ५३८.
१६.	१५३०	माघ सुदि १३ रविवार	कुन्थुनाथ की प्रतिमा उत्कीर्ण लेख	गौड़ीपार्श्वनाथ जिनालय, धीजापुर	**जैनधातुप्रतिमालेख-संग्रह**, भाग १, लेखांक ४५१.
१७.	१५३२	ज्येष्ठ वदि १३ बुधवार	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वासुपूज्य जिनालय, पेढ़ना	**जैनलेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ७५१.
१८.	१५३४	फाल्गुन सुदि ३ गुरुवार	चन्द्रप्रभ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, सूरत	**प्राचीनलेखसंग्रह**, लेखांक ४५७.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१९.	१५३५	माघ.....।	कुन्थुनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	धर्मनाथ जिना०, मडार	**अर्बुदाचलप्रदक्षिणा-जैनलेखसंदोह,** लेखांक ८९.
२०.	१५३६	आषाढ़ सुदि ६	"	सुविधिनाथ जिना०, घोघा	**प्राचीनलेखसंग्रह,** लेखांक ४७१.
२१.	१५४१	वैशाख.....	संभवनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथ जिना०, करेड़ा	**जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक १९१४.
२२.	१५४४	वैशाख सुदि ३ सोमवार	सुमतिनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	महावीर जिनालय, झवेरीवाड़, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेख,** लेखांक ७९
२३.	१५५१	वैशाख वदि १० गुरुवार	संभवनाथ की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिना०, पायधुनी, मुम्बई	**जैनधातुप्रतिमालेख,** लेखांक २६०.

वि०सं० १५१८ में इनके द्वारा प्रतिलिपि की गयी **सूरिमन्त्र** नामक पुस्तक की एक प्रति मुनि पुण्यविजयजी के संग्रह में है।

सुमतिनाथमुख्य बावनजिनालय, मातर में संरक्षित और जिनरत्नसूरि द्वारा वि०सं० १५२५ में स्थापित श्रेयांसनाथ की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख में हेमसुन्दरगणि का नाम भी मिलता है, जो इनके शिष्य प्रतीत होते हैं।

जिनरत्नसूरि के एक शिष्य धनेश्वरसूरि हुए, जिनके द्वारा प्रतिष्ठापित तीन जिनप्रतिमायें मिली हैं। इनका विवरण निम्नानुसार है :

१.	१५१८	फाल्गुन वदि ६ गुरुवार	श्रेयांसनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	मुनिसुव्रत जिनालय, मालपुरा	**प्रतिष्ठालेखसंग्रह,** लेखांक ५८८
२.	१५२३	वैशाख सुदि ३ गुरुवार	सुमतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	बालावसही, शत्रुंजय	**शत्रुंजयवैभव,** लेखांक १७७.
३.	१५३६	फाल्गुन	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	चिन्तामणि जी का मंदिर, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह,** लेखांक १०९९

जिनरत्नसूरि के एक शिष्य जिनसाधु हुए, जिनके द्वारा रचित **मृगावतीस्वाध्याय** और **भरतबाहुबलिरास** (रचनाकाल वि०सं० १५५०/ई०स० १४९४) नामक कृतियाँ प्राप्त होती हैं।[२] इनके एक शिष्य (नाम अज्ञात) द्वारा वि०सं० १५४८/ई०सं० १४९२ में **श्राद्धप्रतिक्रमणस्तवक** की प्रतिलिपि की गयी। प्रशस्ति का पाठ निम्नानुसार है :[३]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सं० १५४८ वर्षे माघ वदि १३ शुक्रवारे सुषालयपुरे श्रीवृद्धतपापक्षे प्रभुभट्टारककलिकालश्रीगौतमावतारषट्त्रिंशतसूरि (? गुण) विराजमानगच्छाधीशश्रीपूज्य-श्री ५ जिनरत्नसूरिगुरु-तत्पट्टे श्रीजिनसाधुसूरि-तत्शिष्येणालेखि।

जिनरत्नसूरि

।

जिनसाधुसूरि (वि०सं० १५५०/ई०स० १४९४ में **भरतबाहुबलिरास** । तथा अन्य कृतियों के कर्ता)

जिनसाधुसूरिशिष्य (वि०सं० १५४८/ई०स० १४९२ में **श्राद्धप्रति-क्रमणस्तवक** के प्रतिलिपिकार)

जिनरत्नसूरि के एक अज्ञात नाम शिष्य द्वारा वि०सं० १५३२ में रचित **मंगलकलशरास**[४] नामक कृति प्राप्त होती है।

वि०सं० १५४८ में लिखी गयी **उत्तराध्ययनसूत्र**[५] की दाता प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि तपागच्छ के जिनरत्नसूरि के शिष्य पुण्यकीर्तिगणि के शिष्य साधुसुन्दरगणि के पठनार्थ एक श्रावक परिवार द्वारा उक्त ग्रन्थ की प्रतिलिपि करायी गयी।

जिनरत्नसूरि

।

पुण्यकीर्तिगणि

।

साधुसुन्दरगणि (वि०सं० १५४८ में इनके पठनार्थ उत्तराध्ययनसूत्र की प्रतिलिपि की गयी)

चूंकि उक्त प्रशस्ति में जिनरत्नसूरि और उनके शिष्यों को तपागच्छ से सम्बद्ध बताया गया है किन्तु तपागच्छ की वृद्धशाखा को छोड़कर अन्य किसी शाखा में उक्त नामधारी मुनिजन उक्त काल में नहीं हुए हैं अतः इस में उल्लिखित जिनरत्नसूरि को वृद्धतपागच्छीय जिनरत्नसूरि से अभिन्न मानने में कोई बाधा नहीं है।

वृद्धतपागच्छीय सोमशीलगणि द्वारा वि०सं० १५९० में लिखी गयी **पर्यन्ताराधना** की एक प्रति मुनि पुण्यविजयजी के संग्रह में है।[६] इसकी प्रशस्ति के अन्तर्गत प्रतिलिपिकार ने अपनी गुरु-परम्परा दी है, जो इस प्रकार है :

जयशेखरसूरि

।

जिनरत्नसूरि

।

पं० पुण्यकीर्तिगणि

।

पं० साधुसुन्दरगणि

।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पं० सोमधर्मगणि

पं० सोमशीलगणि (वि०सं० १५९०/ई०स० १५३४ में **पर्यन्ताराधना** के प्रतिलिपिकार)

पं० सोमशीलगणि के प्रगुरु पं० साधुसुन्दरगणि द्वारा वि०सं० १५४८ में लिखी गयी **उत्तराध्ययनसूत्र** की चर्चा ऊपर की जा चुकी है।

वि०सं० १५४८/ई० स० १४९२ में **सारशिखामणरास** के रचनाकार संवेगसुन्दर भी इसी शाखा से सम्बद्ध थे। श्रीमोहनलाल दलीलचंद देसाई ने इनकी गुरु-परम्परा दी है, जो इस प्रकार है :

जयशेखरसूरि

जिनसुन्दरसूरि

जिनरत्नसूरि

जयसुन्दर

संवेगसुन्दर (वि०सं० १५४८ में **सारशिखामणरास** के रचनाकार)

जैसा कि पूर्व में विभिन्न साक्ष्यों में हम देख चुके हैं जयशेखरसूरि के पट्टधर के रूप में जिनरत्नसूरि का नाम मिलता है न कि जिनसुन्दरसूरि का ; अतः सारशिखरमाणरास के प्रशस्तिगत विवरण को स्वीकार करते हुए जिनरत्नसूरि को जिनसुन्दरसूरि का गुरु मानना उचित प्रतीत होता है। इस प्रकार उक्त प्रशस्तिगत गुरु परम्परा की तालिका को इस प्रकर रखा जा सकता है : जयशेखासूरि - जिनरत्नसूरि - जिनसुन्दरसूरि - जयसुन्दर - संवेगसुन्दर।

वि०सं० १५२९ के एक प्रतिमालेख में भी संवेगसुन्दर का नाम मिलता है।[८]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संदर्भ

१. A.P.Shah Ed., *Catalogue of Sanskrit & Prakrit Mss : Muni Shree Punya Vijayjis Collection*, Part II. L.D. Series No. , Ahmedabad 196 A.D., No. 4921.

२. Vidhatri Vora. Ed. *Catalogue of Gujrati Mss*, P 502.

३. A.P. Shah, Ibid, Part I. No. 854, P-73.

४. **जैनगूर्जरकविओं,** भाग १, पृष्ठ १५२-५३.

५. अमृतलाल मगनलाल शाह, संपा० **प्रशस्तिसंग्रह**, अहमदाबाद वि०सं० १९९३, भाग २, पृष्ठ ५०, प्रशस्तिक्रमांक १९७.

६. A.P. Shah, Ibid, part I. No. 557, P-46.

७. Vora, Ibid, P-678.
जैनगूर्जरकविओ, भाग १, पृष्ठ १९२-९४.

८. पूरनचन्द नाहर, संपा० **जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक १७६६.

बृहद्पौशालिकशाखा की यह उपशाखा कब और किस कारण अस्तित्त्व में आयी, इस सम्बन्ध में हमें आज कोई जानकारी नहीं प्राप्त होती।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International

For Private & Personal Use Only

www.jainelibrary.org

जयशेखरसूरि और उनकी शिष्य-परम्परा की तालिका

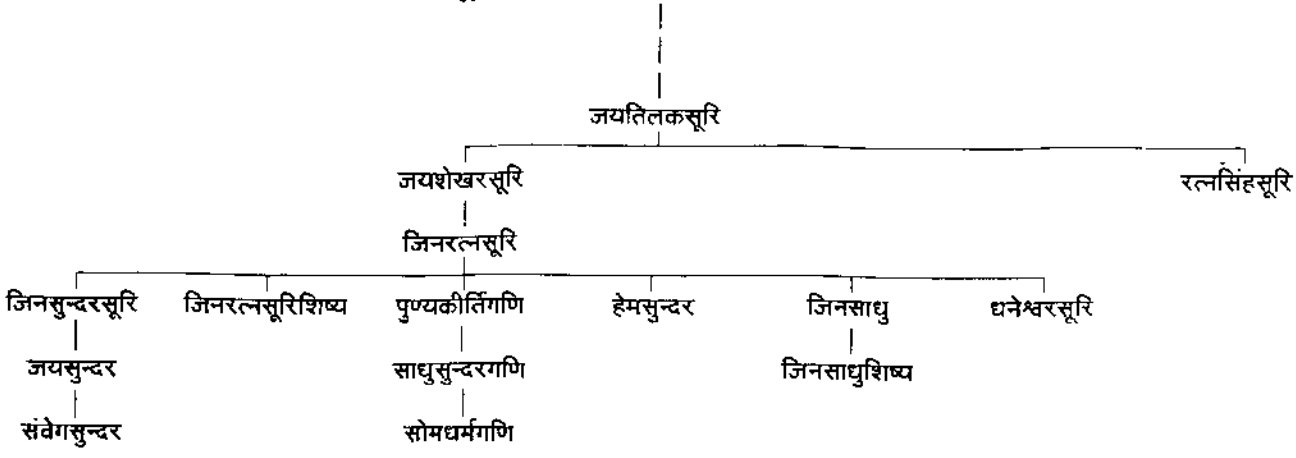

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वृद्धतपागच्छ/रत्नाकरगच्छ-
भृगुकच्छीयशाखा

जैसा कि पिछले पृष्ठों में कहा जा चुका है जयतिलकसूरि के एक शिष्य रत्नसागर से बृहद्तपागच्छ की भृगुकच्छीयशाखा अस्तित्त्व में आयी। शांतिनाथ जिनालय, पादरा में प्रतिष्ठापित वासुपूज्य की चौबीसी प्रतिमा पर वि०सं० १४७८ का एक लेख उत्कीर्ण है। बुद्धिसागरसूरि ने इसकी वाचना दी है, जो इस प्रकार है :

सं० १४७८ वर्षे पौष सुदि १५ बुधे मोढज्ञातीय ठ० बहुरा भा० मनू पु०ठ० धर्मा भार्या राणी सु०ठ० वरसिंहेन भार्या वयडू भ्रातृ नरसिंह रयणायर सुत समधर धोघर सहसा हांसा नागराज समस्तकुटुम्बसहितेन निजश्रेयोऽर्थं श्रीवासुपूज्यादि चतुर्विंशतिजिनपट्टकः कारितः प्रतिष्ठितस्तपाश्रीरत्नसागरसूरिक्रमेण श्रीजिनतिलकसूरिपट्टे श्रीज्ञानकलशसूरिभिः शुभं भवतु।

जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह, भाग २, लेखांक ९

जैसा कि उक्त लेख से स्पष्ट है, इसमें प्रतिमाप्रतिष्ठापक के रूप में ज्ञानकलशसूरि का नाम मिलता है, साथ ही उनके गुरु जिनतिलक और प्रगुरु रत्नसागर का भी उल्लेख है :

रत्नसागरसूरि

।

जिनतिलकसूरि

।

ज्ञानकलशसूरि (वि०सं० १४७८/ई०स० १४२२ में
वासुपूज्य की धातु की चौबीसी प्रतिमा के प्रतिष्ठापक)

ज्ञानकलशसूरि द्वारा प्रतिष्ठापित वि०सं० १४८८-८९ की जिनप्रतिमायें भी प्राप्त हुई हैं। बुद्धिसागरसूरि ने इनकी वाचना दी है, जो निम्नानुसार है :

संवत् १४८८ वर्षे वैशाख सुदि १३ रवौ श्रीबुद्धगोत्रे श्रीहुंबडज्ञातीयव० नरसिंहभार्यावा० जाम् तया (श्रे० देवडभार्यादेवलदे?) पुत्रठ० हीराठ० वईराठ० पेथाकेन श्रीआदिनाथ (बिंबं) कारापितं स्वश्रेयसे प्रतिष्ठितं श्रीवृद्धतपापक्षे भट्टा० श्रीज्ञानकलस(श)सूरिभिः शुभं भवतु।।

जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह, भाग २, लेखांक ७०३.

प्रतिष्ठास्थान - महावीर जिनालय, गोपटी, खंभात

संवत् १४८९ वर्षे वैशाख सुदि ३ बुधे श्रीहुंबडज्ञातीयमहं० सूरा भार्या वा० सोमलदेपुत्रमहं० वणसीपत्नीवा० शाणीपु० सं० वीरधवलभार्यावाईचापूयुतेन स्वकुटुंबश्रेयसे श्रीअजितनाथबिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्रीज्ञानकलस(श)सूरिभिः शुभं भवतु।।

वही, भाग २, लेखांक ३२३.

प्रतिष्ठास्थान - मुनिसुव्रत जिनालय, भरुच

संवत १४८९ वर्षे वैशाख सुदि ३ बुधे श्रीहुंबडज्ञातीयठ० राजसीहभार्यावा० राजलदे तयोः पुत्रठ० माजाप्रियावा०नान्हीसुतठ० हेमराजभार्या तेजलदेयुतेन श्रीधर्मनाथबिंबं स्वश्रेयसे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कारापितं प्रतिष्ठितं श्रीवृद्धतपापक्षे भट्टा० श्रीज्ञानकलससूरिभिः।।

वही, भाग २, लेखांक ११४६

प्रतिष्ठास्थान - श्रीसंभवनाथ जिनालय, बोलपीपलो, खंभात

महावीर जिनालय मेड़ता में प्रतिष्ठापित कुन्थुनाथ की प्रतिमा पर वि०सं० १५१२ फाल्गुन सुदि ८ शनिवार का एक लेख उत्कीर्ण है। श्री पूरनचन्द नाहर ने इसका पाठ दिया है, जो इस प्रकार है :

संवत् १५१२ फाल्गुन सुदि ८ शनिवार श्री उसभ से० भार्या माणिकदे सुत रणाग्र भार्यायां ४० पिधा भार्या चां सुतयो याते जूरमाण श्री कुंथुनाथ विंबं (बिंबं) कारितं प्रतिष्ठित (तं) श्रीबृहद् तपापंकज श्री बि (वि) जयतिलक सूरि पट्टे श्री विजय धर्म्म सूरि श्रीभूयात्।।

जैनलेखसंग्रह, भाग १, लेखांक ७९७.

जैसा कि लेख से स्पष्ट है, इसमें विजयतिलकसूरि के पट्टधर विजयधर्मसूरि का प्रतिमा प्रतिष्ठापक के रूप में उल्लेख है।

विजयतिलकसूरि

।

विजयधर्मसूरि (वि०सं० १५१२ में कुन्थुनाथ की प्रतिमा के प्रतिष्ठापक)

विजयधर्मसूरि के पट्टधर विजयरत्नसूरि हुए। इनके द्वारा वि०सं० १५१३ से वि०सं० १५३७ के मध्य प्रतिष्ठापित कई जिन प्रतिमायें मिली हैं। इनका विवरण इस प्रकार है :

क्रमांक	वि०सं०	तिथि/मिति	लेख का स्वरूप	प्राप्तिस्थान	संदर्भग्रन्थ
१.	१५१३	वैशाख सुदि २ सोमवार	सुमतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पद्मप्रभ जिना०, खेड़ा	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह** भाग २, लेखांक ४३६.
२.	१५२९	आषाढ़वदि ३	सुपार्श्वनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अनन्तनाथ जिना०, खारवाड़ो, खंभात	वही, भाग २, लेखांक १०४०.
३.	१५२९	आषाढ़वदि ३	वासुपूज्य की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	नवपल्लव पार्श्वनाथ जिना०, बोलपीपलो, खंभात	वही, भाग २, लेखांक १०९४.
४.	१५३७	वैशाख सुदि १० सोमवार	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	मनमोहन पार्श्वनाथ जिनालय, मीयागाम	वही, भाग २, लेखांक २७३.
५.	१५३७	"	शीतलनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सुमतिनाथ जिना०, चोलापोल, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ६९२.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६.	१५३७	"	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ जिना०, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ७३७.
७.	१५३७	"	आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शामला पार्श्वनाथ जिना०, डभोई	वही, भाग १ लेखांक ३४.
८.	१५३७	"	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	धर्मनाथ जिना०, डभोई	वही, भाग १ लेखांक ५८.
९.	१५३७	"	कुंथुनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शांतिनाथ देरासर, वीसनगर	वही, भाग १ लेखांक ५२७.

वि०सं० १५७३/ई०स० १५१७ के पूर्व रचित **श्रीपालचरित्र** के रचनाकार धर्मधीर बृहद्तपागच्छ की भृगुकच्छ शाखा से सम्बद्ध विजयरत्नसूरि के शिष्य थे। विजयरत्नसूरि के दूसरे शिष्य धर्मरत्नसूरि हुए, जिनके द्वारा प्रतिष्ठापित कुछ जिनप्रतिमायें प्राप्त हुई हैं जो वि०सं० १५४४ से वि०सं० १५८७ तक की हैं। इनका विवरण इस प्रकार है :

क्रमांक	वि०सं०	तिथि/मिति	लेख का स्वरूप	प्राप्तिस्थान	संदर्भग्रन्थ
१.	१५४४	वैशाख सुदि ६ गुरुवार	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	नटोदादा की टूंक	**शत्रुंजयवैभव,** लेखांक २३४ अ.
२.	१५५२	पौष वदि ७ सोमवार	शिलालेख	जैनमंदिर, हमीरगढ़	**अर्बुदाचलप्रदक्षिणा-जैनलेखसंदोह**, (आबू, भाग ५), लेखांक २३४.
३.	१५५५	वैशाख सुदि ३ शनिवार	अजितनाथ की प्रतिमा का लेख	सुविधिनाथ जिना०, घोघा, काठियावाड़	**जैनलेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक १७७१
४.	१५८७	वैशाख.....	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	बालावसही, शत्रुंजय	**शत्रुंजयवैभव,** लेखांक २८१.

धर्मरत्नसूरि के एक शिष्य विनयमंडन हुए, जिनके द्वारा रचित कोई कृति नहीं मिलती परन्तु इनके शिष्यों विवेकधीरगणि और जयवंतमुनि अपरनाम गुणसौभाग्यसूरि द्वारा रचित कृतियां प्राप्त होती हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विवेकधीरगणि ने वि०सं० १५८७/ई०स० १५३१ में **शत्रुंजयोद्धारप्रबन्ध** की रचना की।[१] जयवंतमुनि अपरनाम गुणसौभाग्यसूरि द्वारा रचित विभिन्न कृतियां मिलती है,[२] जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं --

१.	**अंतरंगगीत**	२.	**अजितनाथगीत**
३.	**कर्णेन्द्रियगीत**	४.	**कर्णेन्द्रियपरवश हरिणगीत**
५.	**घ्राणेन्द्रियगीत**	६.	**नेमिराजीमतिवारमास**
७.	**नेत्रपरवश पतंगगीत**	८.	**पंचेन्द्रियगीत**
९.	**मनभमरागीत**	१०.	**वैराग्यगीत**
११.	**स्पर्शेन्द्रियगीत**	१२.	**स्थूलिभद्रकोशालेख**
१३.	**शृंगारमंजरी** (रचनाकाल वि०सं०१६१४)	१४.	**सीमंधरजिनस्तवन**

धर्मरत्नसूरि के दूसरे शिष्य विद्यामंडन हुए। वि०सं० १५८७ और १५९७ के प्रतिमालेखों में इनका नाम मिलता है।

क्रमांक	वि०सं०	तिथि/मिति	लेख का स्वरूप	प्राप्तिस्थान	संदर्भग्रन्थ
१.	१५८७	पौष वदि ६ रविवार	सुपार्श्वनाथ की धातु प्रतिमा का लेख	संभवनाथदेरासर, पादरा	जैनधातुप्रतिमालेख-संग्रह, भाग २, लेखांक १०.
२.	१५८७			शांतिनाथ जिना०, नदियाड	वही, भाग २, लेखांक ३८३.
३.	१५९७	पौष वदि ६ रविवार	जिनप्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	धर्मनाथ जिना०, उपलो गभारो, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक ११०७.

विद्यामंडनसूरि के शिष्यों के रूप में जयमंडन, विवेकमंडन, रत्नसागर (द्वितीय), सौभाग्यरत्न और सौभाग्यमंडन का नाम मिलता है। संभवनाथ जिनालय, खंभात में प्रतिष्ठापित सुपार्श्वनाथ की धातु की एक प्रतिमा पर प्रतिष्ठापक के रूप में वृद्धतपागच्छ के सौभाग्यरत्नसूरि का नाम मिलता है।[३] लेख के पाठ के अनुसार यह प्रतिमा वि०सं० १६३४ फाल्गुन सुदि १० सोमवार को प्रतिष्ठापित की गयी है। मुनि जिनविजयजी ने इस लेख के प्रतिष्ठापक सौभाग्यरत्नसूरि और विद्यामंडनसूरि के शिष्यों में हुए सौभाग्यरत्न को एक ही माना है।[४] इस काल के पश्चात् इस शाखा से सम्बद्ध अन्य कोई साक्ष्य नहीं मिलता।

उक्त सभी साक्ष्यों के आधार पर वृद्धतपागच्छ/रत्नाकरगच्छ-भृगुकच्छीयशाखा के मुनिजनों की एक तालिका संकलित की जा सकती हैं, जो इस प्रकार हैं :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

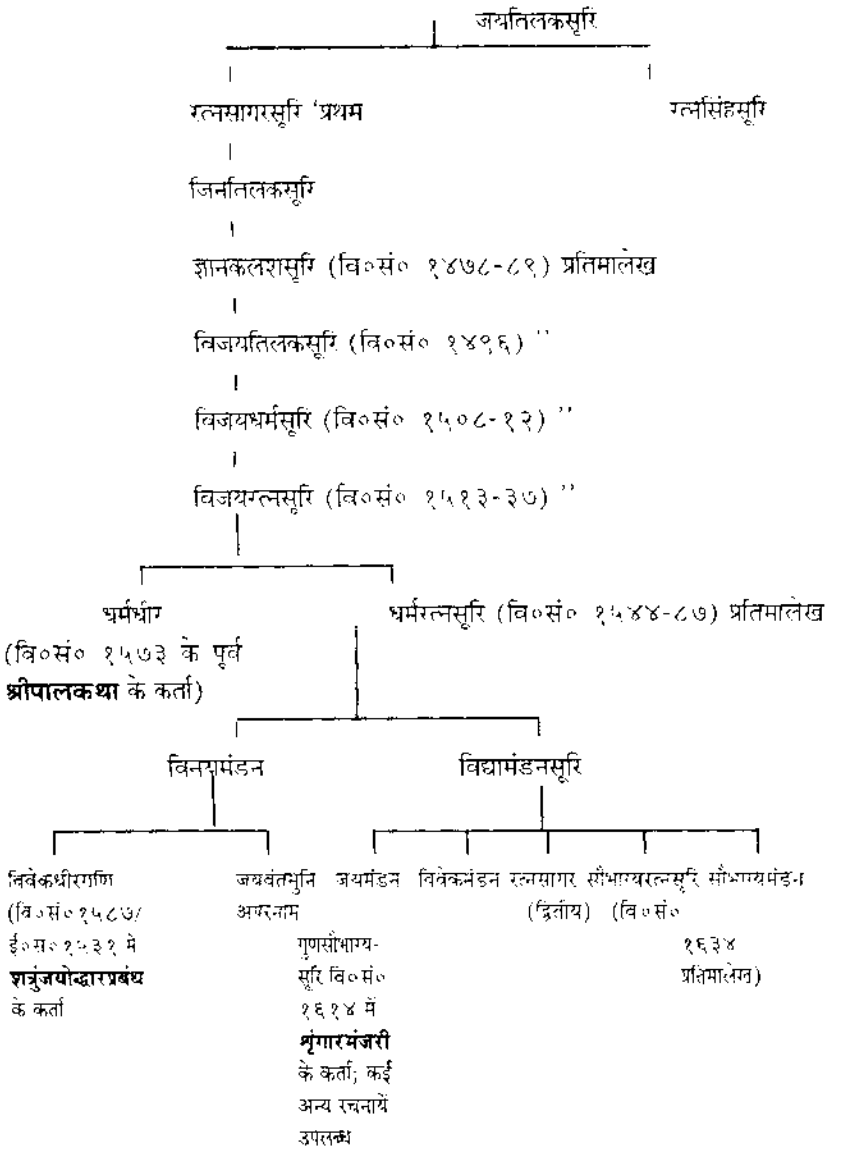

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संदर्भ

१. **जिनरत्नकोश,** पृ० ३९७.

२. वही, पृ० ३७३.
जैनगूर्जरकविओ, द्वितीयसंशोधितसंस्करण, भाग २, पृ० ६९-७१ और आगे

३. Vidhatri Vora, Ibid. P-739-42.

४. **जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक १११९.

५. विवेकधीरगणि, **शत्रुंजयोद्धारप्रबन्ध**, प्रस्तावना.
मूलग्रन्थ उपलब्ध न होने से यह संदर्भ श्री मोहनलाल दलीचंद देसाई कृत **जैनगूर्जरकविओ,** भाग २, पृष्ठ ७०-७१ के आधार पर दिया गया है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तपागच्छ-कमलकलशशाखा

तपागच्छीय आचार्य सोमसुन्दरसूरि के शिष्य और मुनिसुन्दरसूरि, रत्नशेखरसूरि आदि के आज्ञानुवर्ती आचार्य सोमदेवसूरि अपने समय के समर्थ कवि और प्रमुख वादी थे। मेवाड़ के शासक राणाकुम्भा, जूनागढ़ के शासक खेंगार और चांपानेर के शासक जयसिंह को अपनी काव्यकला से इन्होंने प्रभावित किया था।[1] इनके द्वारा रचित **सिद्धान्तस्तवअवचूरि, कथामहोदधि, चतुर्विंशतिजिनस्तोत्र, युस्मदस्महष्टादशस्तव की अवचूरि** (रचनाकाल वि०सं० १४९७/ई०स० १४४१) आदि कृतियां मिलती हैं।[2] वि०सं० १५१७, १५१८ और १५२० के प्रतिमा लेखों में इनका नाम मिलता है।

दिल्ली स्थित नवघरे के मंदिर में भगवान् शांतिनाथ की प्रतिमा पर वि०सं० १५१७ वैशाख सुदि ८ का एक लेख उत्कीर्ण है[3]। इसमें रत्नशेखरसूरि और लक्ष्मीसागरसूरि के साथ सोमदेवसूरि का भी नाम मिलता है।

अचलगढ़ स्थित चौमुख जिनालय में प्रतिष्ठापित आदिनाथ की प्रतिमा पर वि०सं० १५१८ वदि४ का एक लेख उत्कीर्ण है। इसमें तपागच्छीय आचार्य सोमसुन्दरसूरि के पट्टधर के रूप में मुनिसुन्दरसूरि और जयचन्द्रसूरि तथा इन दोनों के पट्टधर के रूप में रत्नशेखरसूरि एवं रत्नशेखरसूरि के शिष्य के रूप में सोमदेवसूरि और लक्ष्मीसागरसूरि का नाम मिलता है[4]। ठीक यही बात इसी जिनालय में प्रतिष्ठापित इसी समय की शांतिनाथ और नेमिनाथ की प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण लेखों से भी ज्ञात होती है[5]। पार्श्वनाथदेरासर, देवसानो पाड़ो, अहमदाबाद में संरक्षित अभिनन्दन स्वामी की धातु की प्रतिमा वि०सं० १५२० आषाढ़ सुदि २ गुरुवार का एक लेख उत्कीर्ण है[6]। इसमें सोमदेवसूरि का उल्लेख करते हुए उन्हें लक्ष्मीसागरसूरि का शिष्य कहा गया है। ठीक यही बात वि०सं० १५२० के दो अन्य प्रतिमालेखों; वि०सं० १५२१ के एक प्रतिमालेख एवं वि०सं० १५२२ के दो प्रतिमालेखों के बारे मे भी कही जा सकती है। इनका विवरण इस प्रकार है:

१.	१५२०	कुन्थुनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	सीमंधर स्वामी का देरासर, उपलो मंभारो, अहमदाबाद	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, ११९९
२.	१५२०	विमलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शान्तिनाथ जिनालय, शांतिनाथ पोल, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक १२५८
३.	"	वासुपूज्य की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	संभवनाथ देरासर, झवेरीवाड़, अहमदाबाद	वही, भाग १, लेखांक ८३४
४.	"	शीतलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिनालय, माणेकचौक, खम्भात	वही, भाग १, लेखांक १०५४
५.	१५२१ माघ सुदि १३	"	जैन देरासर, बड़ोदरा	**प्राचीनलेखसंग्रह,** लेखांक ३५५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६.	१५२२	संभवनाथ की धातु की प्रतिमा पौष वदि पर उत्कीर्ण लेख १ गुरुवार	गौड़ीजी का मंदिर, उदयपुर	वही, लेखांक ३६१
७.	"	--	जैनदेरासर, बंभोई	**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक १६

रत्नशेखरसूरि के पश्चात् लक्ष्मीसागरसूरि तपागच्छ के नायक बने तब सोमदेवसूरि ने अपने शिष्य शुभलाभ को आचार्य पद प्रदान कर सुधानन्दनसूरि नाम दिया[७]। वि०सं० १५११ में लिखी गयी **शांतिनाथचरित** की प्रतिलेखन प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि उक्त प्रति सोमदेवसूरि के शिष्य के उपदेश से लिखी गयी[८]। सोमदेवसूरि के एक अन्य शिष्य चारित्रहंसगणि हुए जिनके द्वारा रचित कोई कृति नहीं मिलती किन्तु इनके शिष्य सोमचारित्र ने वि०सं० १५४१/ई०स० १४८५ में **गुरुगुणरत्नाकरकाव्य** की रचना की[९]। इस काव्य में आचार्य लक्ष्मीसागरसूरि का जीवनवृत्तांत वर्णित है।

सोमदेवसूरि के एक शिष्य सुमतिसुन्दर हुए जिनके उपदेश से चालिग (?) नामक एक श्रावक, जो राणकपुर स्थित त्रैलोक्यदीपक प्रासाद के निर्माता धरणाशाह के भाई रत्नसिंह का पुत्र और मालवा के सुल्तान गयासुद्दीन खिलजी का धर्मभ्राता था, ने राणा लक्षसिंह की अनुमति से अचलगढ़ पर विशाल चौमुख प्रासाद का निर्माण कराया और उसमें पित्तल की १२० मन वजन की जिन प्रतिमा प्रतिष्ठापित करायी[१०]।

सुमतिसुन्दरसूरि के उपदेश से मांडवगढ़ के संघवी वेलाक ने सुल्तान से फरमान प्राप्त कर संघ के साथ जीरापल्ली, अर्बुदगिरि, राणकपुर आदि तीर्थों की यात्रा की[११]।

सुधानन्दनसूरि के एक शिष्य (नाम अज्ञात) ने वि०सं० १५३३/ई०स० १४७७ के आस-पास **ईडरगढ़चैत्यपरिपाटी**[१२] की रचना की।

सुमतिसुन्दर के शिष्य कमलकलश हुए। इन्हीं से वि०सं० १५५४ या १५५५[१३] (अन्य मतानुसार वि०सं० १५७२[१४]) में तपागच्छ की एक नई उपशाखा-**कमलकलशशाखा** अस्तित्व में आयी। किस कारण से और कहाँ इस शाखा का जन्म हुआ, इस सम्बन्ध में कोई जानकारी नहीं मिलती।

कमलकलशसूरि द्वारा प्रतिष्ठापित कुछ जिन प्रतिमायें प्राप्त हुई हैं जो वि०सं० १५५१ से लेकर १६०३ तक की हैं। इनका विवरण इस प्रकार है :

	वि०सं०	तिथि/मिति	लेख का स्वरूप	प्राप्तिस्थान	संदर्भग्रन्थ
१.	१५५१	वैशाख सुदि १३ गुरुवार	पद्मप्रभ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	महावीरस्वामी का मंदिर, बीकानेर	अगरचन्द भंवरलाल नाहटा, संपा०- **बीकानेरजैनलेखसंग्रह**, लेखांक १२५३.
२.	१५५३	वैशाख सुदि	शांतिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	नेमिनाथ का पंचायती बड़ा मंदिर, अजीमगंज, मुर्शिदाबाद	पूरनचन्द नाहर, संपा० **जैनलेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक १५.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३.	१५५३	फाल्गुन सुदि४	शांतिनाथ की धातु की प्रतिमा उत्कीर्ण लेख	जैनमंदिर, चाणस्मा	बुद्धिसागरसूरि, संपा०, **जैनधातुप्रतिमालेख-संग्रह**, भाग १, लेखांक ११५.
४.	१५६०	वैशाख सुदि३	वासुपूज्य की धातु प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ चैत्य, थराद	दौलत सिंह लोढा, संपा०, **जैनप्रतिमालेख-संग्रह**, लेखांक १२५.
५.	१६०३	माघ वदि८ शुक्रवार	चारसाख पर उत्कीर्ण लेख	महावीर जिनालय, पींडवाड़ा	मुनिजयन्तविजय, संपा०, **अर्बुदाचल-प्रदक्षिणाजैनलेख-संदोह**, लेखांक ३८२. एवं **जैनलेखसंग्रह** भाग १, लेखांक९४९.

कमलकलशसूरि के एक शिष्य भुवनसोमगणि हुए जिन्होंने वि०सं० १५५१ में डीसा में आनन्दभुवन के पठनार्थ **दशवैकालिकसूत्र** की प्रतिलिपि की[१५]। आनन्दभुवन कौन थे! भुवनसोमगणि और कमलकलशसूरि से उनका क्या सम्बन्ध था! इस बारे में कोई जानकारी नहीं मिलती। कमलकलशसूरि के एक शिष्य कुलउदय गणी हुए जिनकी अचलगढ़ स्थित ऋषभदेव लघुप्रासाद में उत्कीर्ण वि०सं० १५५८ कार्तिक वदि १३ के एक शिलालेख में उल्लेख मिलता है।[१५अ]

कमलकलशसूरि के पट्टधर उनके दूसरे शिष्य जयकल्याणसूरि हुए। इनके द्वारा प्रतिष्ठापित कई जिन सलेख प्रतिमायें मिली हैं, जिनका विवरण निम्नानुसार है :

	वि०सं०	तिथि/मिति	लेख का स्वरूप	प्राप्तिस्थान	संदर्भग्रन्थ
१.	१५६६	फाल्गुन वदि६ गुरुवार	पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	शीतलनाथ जिना०, उदयपुर	**जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक ११०३.
२.	१५६६	फाल्गुन सुदि१०	शिलालेख	चतुर्मुख विहार, आदिनाथ प्रासाद, अचलगढ़	मुनि जयन्तविजय, संपा०, **अर्बुदप्राचीन-जैनलेखसंदोह**, लेखांक ४६४, ४७१, ४७३, ४७४, ४८२, ४८३ एवं ४८४. मुनिजिनविजय, संपा०, **प्राचीनजैनलेखसंग्रह**, भाग२, लेखांक २६३, २६८.
३.	१५६६	फाल्गुन सुदि१० सोमवार	आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	आदिनाथ जिना०, अचलगढ़	**जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक २०२७-२०२.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४.	१५६७	वैशाख वदि १ गुरुवार	अजितनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	घर देरासर, बड़ोदरा	**जैनधातुप्रतिमालेख-संग्रह**, भाग २, लेखांक २४६.
५.	१५७२	वैशाख सुदि ५ सोमवार	धर्मनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	पार्श्वनाथजिनालय, नाहटों की गवाड़, बीकानेर	**बीकानेरजैनलेखसंग्रह**, लेखांक १५११.
६.	१५७३	फाल्गुन वदि २ रविवार	वासुपूज्य की धातु की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	वासुपूज्य जिनालय, बीकानेर	वही, लेखांक १३८९.
७.	१५७५	फाल्गुन वदि ४	संभवनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख	अजितनाथ जिना०, कटरा, अयोध्या.	**जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक १६४६.
८.	१५८७	पौष सुदि ६ रविवार	"	सुमतिनाथ जिना०, जयपुर	विनयसागर, संपा०, **प्रतिष्ठालेखसंग्रह**, लेखांक ९७७.

जयकल्याण के एक शिष्य चारित्रसुन्दर अपरनाम चरणसुन्दर[१६] हुए जो वि०सं० १५६६ फाल्गुन सुदि १० को अचलगढ़ पर निर्मित आदिनाथ प्रासाद में प्रतिमाप्रतिष्ठा के समय उपस्थित थे।

जयकल्याण के एक अन्य शिष्य विमलसोम हुए जिनके द्वारा रचित न कोई कृति मिलती है और न ही कोई जिन प्रतिमा। ठीक यही बात इनके शिष्य लक्ष्मीरत्न के बारे में भी कही जा सकती है, किन्तु इनके शिष्य ने (अपने को लक्ष्मीरत्नशिष्य बतलाते हुए) वि०सं० की १७वीं शताब्दी में **सुरप्रियरास** की रचना की।[१७]

कमलकलशशाखा से सम्बद्ध अगला साक्ष्य इसके लगभग १०० वर्ष पश्चात् का है। वि०सं० १६५६ में **कोकशास्त्रचतुष्पदी** के कर्ता नर्बुदाचार्य ने स्वयं को कमलकलशशाखा के मतिलावण्य का शिष्य कहा है[१८]। चारित्रसुन्दर एवं लक्ष्मीरत्न आदि के साथ इनका क्या सम्बन्ध रहा, प्रमाणों के अभाव में यह जान पाना कठिन है।

कमलकलशशाखा से सम्बद्ध अगला साक्ष्य इसके लगभग १३५ वर्ष पश्चात् का है। यह वि०सं० १७८५ का एक शिलालेख है। जो विमलवसही, आबू[१९] से प्राप्त हुआ है। इसमें कमलकलशशाखा के पद्मरत्नसूरि और उनके शिष्यों-उमंगविजय, भावविजय आदि द्वारा यहां की यात्रा करने का उल्लेख है।

जैन मंदिर माकरोरा, सिरोही से प्राप्त वि०सं० १७९० के एक शिलालेख में तपागच्छीय कमलकलशशाखा के रत्नसूरि और उनके शिष्य कमलविजयगणि के चातुर्मास करने का उल्लेख है।

जैसा कि ऊपर हम देख चुके हैं वि०सं० १७८५ के लेख में पद्मरत्नसूरि का नाम आ चुका है, अतः वि०सं० १७९० के शिलालेख[२०] में उल्लिखित रत्नसूरि को समसामयिकता,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नामसाम्य आदि के आधार पर उक्त पद्मरत्नसूरि से अभिन्न माना जा सकता है। इस आधार पर दोनों शिलालेखों में उल्लिखित भावविजय और कमलविजय परस्पर गुरुभ्राता सिद्ध होते हैं।

नर्बुदाचार्य और भावरत्नसूरि के बीच किस प्रकार का सम्बन्ध था, यह ज्ञात नहीं होता।

भावरत्नसूरि (वि०सं० १७८५-९०) शिलालेख

भावविजय कमलविजय

कमलकलशशाखा से सम्बद्ध अगला साक्ष्य वि०सं० १८३८ का एक लेख[२१] है जो अचलगढ़ से प्राप्त हुआ है। यह लेख इस शाखा के हर्षरत्नसूरि और सुन्दरविजयगणि की चरण पादुका पर उत्कीर्ण है।

चूंकि वि०सं० १७८५ और १७९० में इस शाखा के आचार्यों का रत्नान्त नाम मिलता है, यही बात वि०सं० १८३८ के चरणपादुका के लेख में भी हम देखते हैं, अतः यह कहा जा सकता है कि भावरत्नसूरि के पश्चात् और वि०सं० १८३८ के पूर्व कमलकलशशाखा में हर्षरत्नसूरि नामक आचार्य हुए जिनके शिष्य जीवणविजय ने वि०सं० १८३८ में अपने गुरु की चरणपादुका स्थापित करायी। उक्त साक्ष्यों के आधार पर इस शाखा के मुनिजनों के गुरु-परम्परा की एक तालिका निर्मित होती है, जो इस प्रकार है : द्रष्टव्य तालिका -१.

ऋषभदेव जिनालय, अचलगढ में उत्कीर्ण वि.सं० १९६३ वैशाख शुक्ल ११ शुक्रवार के एक अभिलेख में इस शाखा के भट्टारक यशोभद्रसूरि की पादुका और अपनी पादुका को भट्टारक विजयमहेन्द्रसूरि ने सिरोहीदेश के अचलदुर्ग में श्रीकेशरी सिंह के राज्य में स्थापित करायी। मुनि जयन्तविजय-**अर्बुदप्राचीनजैनलेखसंदोह**, लेखांक ४९०।

मूल लेख की वाचना निम्नानुसार है:

सं. १९६३ वैशाख सुदि ११ शुक्रवासरे कमलकलशशाखायां श्रीमतपागच्छे भट्टारक श्रीयशोभद्रसूरीश्वर पुनःनिजपादुक० भट्टारक श्री विजयमहेन्द्रसूरिभिः प्रतिष्ठितम् (ता) श्री सिरोहीदेशे श्रीकेशरीसिंधराज्ये श्रीअचलमहादुर्गे।

चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, लाज, अचलगढ़ में उत्कीर्ण वि०सं० १९७७ ज्येष्ठ वदि १३ रविवार के एक शिलालेख में इस शाखा के पट्टधर मुनिजनों के नाम मिलते हैं, जो इस प्रकार है:

कमलकलशसूरि-जयकल्याणसूरि-भट्टारक विशालसूरि-भ०लक्ष्मीरत्नसूरि-भ०हंसरत्नसूरि-भ०कल्याणरत्नसूरि-भ०धर्मरत्नसूरि-भ० देवरत्नसूरि-भ०जयरत्नसूरि- भ०पद्मरत्नसूरि-भ०हर्षरत्नसूरि-भ० राजेन्द्रसूरि-भ०यशोभद्रसूरि-भ०रविरत्नसूरि-विद्यमान कमलकलशगच्छ (शाखा) पति विजयमहेन्द्रसूरि। लेख में इनकी पादुका स्थापित करने का उल्लेख है। मुनि जयन्तविजय-**अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेखसंदोह**, लेखांक ४८२।

यहीं से प्राप्त उक्त तिथि एवं संवत् के उल्लेख वाला एक अन्य शिलालेख भी है जिसमें उक्त आचार्य द्वारा चिन्तामणि पार्श्वनाथ के जिनालय की प्रतिष्ठा का उल्लेख हैं, **अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेखसंदोह**, लेखांक ४८३। वि०सं० १९७८ के उक्त शिलालेख में

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्राप्त इस शाखा के मुनिजनों के गुरु-परम्परा की नामावली के आधार पर कमलकलश शाखा के मुनिजनों के गुरु-परम्परा की पूर्वोक्त तालिका के जो नवीन स्वरुप प्राप्त होता है वह इस प्रकार है : द्रष्टव्य तालिका -२.

इस प्रकार वि०सं० की २० वीं शताब्दी तक इस शाखा का किसी न किसी प्रकार अस्तित्व बना रहा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

तपागच्छ-कमलकलशशाखा के मुनिजनों की गुरु-परम्परा की तालिका-१

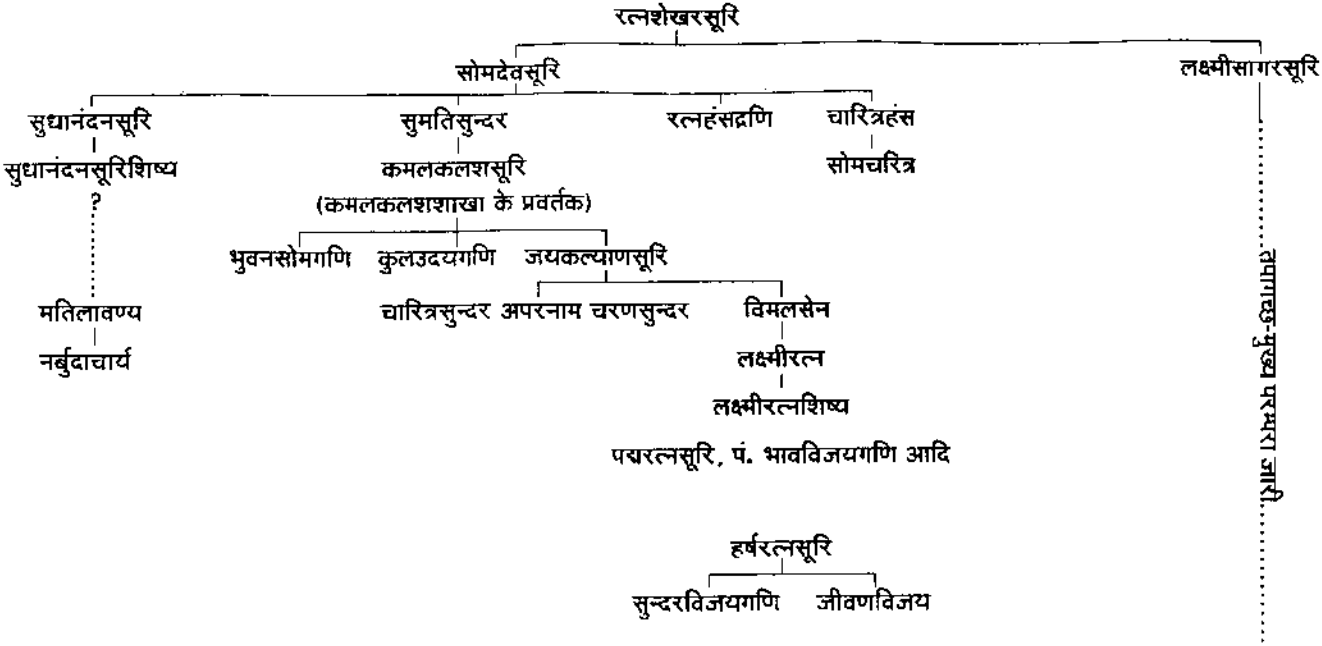

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International

For Private & Personal Use Only

www.jainelibrary.org

तपागच्छ-कमलकलशशाखा के मुनिजनों की गुरु-परम्परा की तालिका-२

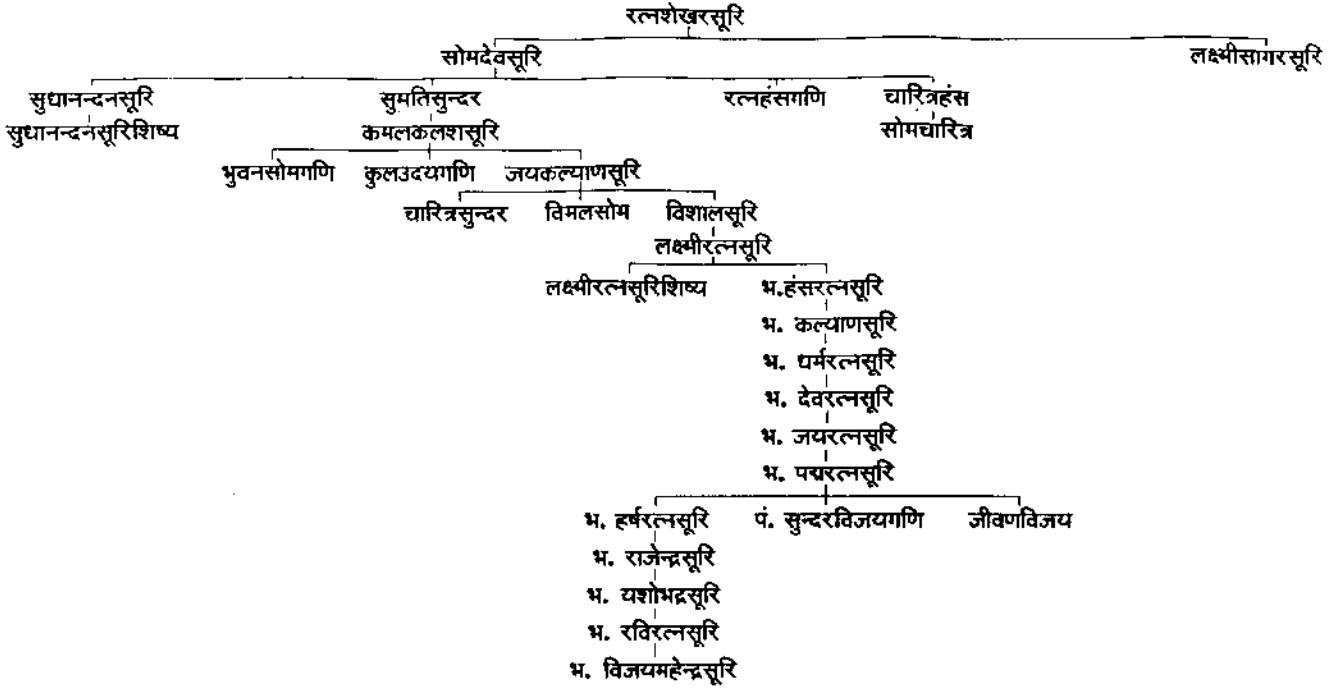

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संदर्भ

१-२. "तपागच्छ-कमलकलशशाखा की पट्टावली" मोहनलाल दलीचंद देसाई, **जैनगूर्जरकविओ**, भाग ९, संपा०, जयन्त कोठारी, पृष्ठ १०६-७.

३. पूरनचंद नाहर, संपा०-संग्रा०- **जैनलेखसंग्रह**, भाग १, कलकत्ता १९१८ ई०, लेखांक ४८३.

४. मुनि जिनविजय, संपा० **प्राचीनजैनलेखसंग्रह**, भाग २, भावनगर १९२१ ई०स०, लेखांक २६४.

५. वही, लेखांक २६५, २६७.
मुनि जयन्तविजय, संपा०-**अर्बुदप्राचीनजैनलेखसंदोह**, लेखांक ४६७, ४६९.

६. बुद्धिसागरसूरि, संपा०- **जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक १०६०.

७. **तपागच्छ-कमलकलशशाखा** की पट्टावली
देसाई, पूर्वोक्त, पृष्ठ १०६.

८. मुनि चतुरविजय, संपा०-**श्रीजैनस्तोत्रसन्दोह**, भाग २, प्रस्तावना, पृष्ठ १०४.
मोहनलालदलीचंद देसाई, **जैनसाहित्यनो संक्षिप्तइतिहास**, कंडिका ७२९, पृष्ठ ५०२.

१०. वही, कंडिका ७२५, पृष्ठ ४९९-५००.

११. वही, कंडिका ७२६, पृष्ठ ५००.

१२. वही, कंडिका ७२६, टिप्पणी, पृष्ठ ४९९.

१३. द्रष्टव्य-संदर्भ संख्या ७.

१४. मुनि चतुरविजय, **पूर्वोक्त**, प्रस्तावना, पृष्ठ ११०.

१५. वही, पृष्ठ ११०-११.

१५ अ. मुनि जयन्तविजय, वही, लेखांक ४८८

१६. मुनि जयन्तविजय, पूर्वोक्त, लेखांक ४६४, ४७१, ४७३, ४७४, ४८२, ४८३ एवं ४८४.
मुनि जिनविजय, **प्राचीनजैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक २६३, २६८.

१७. **जैनगूर्जरकविओ**, भाग १, पृष्ठ २४४-४५.

१८. Vidhatri Vora, *Ed. Catalogue of Gujarati Mss. Muni Shree Punya Vijayji's Collecetion*, L.D. Series, No-71, Ahmedabad 1978, P-477
जैनगूर्जरकविओ, भाग २, पृष्ठ ३००, ३०३.

१९. **अर्बुदप्राचीनजैनलेखसंदोह**, लेखांक १९७.

२०. **जैनलेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ९७०.

२१. **अर्बुदप्राचीनजैनलेखसंदोह**, लेखांक ४८९.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तपागच्छ-कुतुबपुरा शाखा का इतिहास

तपागच्छ के ५०वें पट्टधर प्रसिद्ध रचनाकार आचार्य सोमसुन्दरसूरि के शिष्य और मुनिसुन्दरसूरि, रत्नशेखरसूरि, लक्ष्मीसागरसूरि आदि के आज्ञानुवर्ती सोमदेवसूरि हुए। इनके एक शिष्य सुधानन्दन हुए जिनके प्रशिष्य कमलकलशसूरि से तपागच्छ की कमलकलशशाखा अस्तित्व में आयी। सोमदेवसूरि के दूसरे शिष्य रत्नहंसगणि की शिष्यसंतति के बारे में कोई जानकारी नहीं मिलती। सोमदेवसूरि के तीसरे शिष्य चारित्रहंस हुए जिनके शिष्य सोमचारित्र ने वि०सं० १५४१ में गुरुगुणरत्नाकरकाव्य की रचना की। सोमदेवसूरि के चौथे शिष्य रत्नमंडनगणि हुए। इनके द्वारा रचित **रंगरत्नाकरनेमिफाग** (रचनाकाल वि०सं० १४९९/ ई०स० १४४३), **जल्पमंजरी, नारीनिरासफाग, सुकृतसागर** (रचनाकाल वि०सं० १५१७/ ई०स० १४६१) आदि रचनायें प्राप्त होती हैं।[१]

रत्नमंडनगणि के शिष्य सोमजय हुए। लक्ष्मीसागरसूरि द्वारा इन्हें आचार्य पद प्राप्त हुआ। मंत्रीश्वर गदाशाह द्वारा निर्मित १०८ मन वजन की ऋषभदेव की पित्तल की एक प्रतिमा जो आबू स्थित भीमाशाह के मंदिर में संरक्षित है, जिस पर उत्कीर्ण वि०सं० १५२५ फाल्गुन सुदि ७ शनिवार के चार लेख[२] और वि०सं० १५२९ के एक लेख[३] तपागच्छीय आचार्य लक्ष्मीसागरसूरि, जिनहंस, सुमतिसुन्दरगणि आदि के साथ सोमजय और उनके शिष्य जिनसोम का भी नाम मिलता है। जिनसोम द्वारा रचित **स्तम्भनपार्श्वजिनस्तोत्र, ऋषभवर्धमानजिनस्तोत्र, तारंगामंडनअजितनाथजिनस्तवन, महावीरस्तवन** आदि कृतियां मिलती हैं।[४]

सोमजय के दूसरे शिष्य इन्द्रनंदि हुए, जिनके द्वारा प्रतिष्ठापित कई जिनप्रतिमायें मिलती हैं, जो वि०सं० १५४० से वि०सं० १५७९ तक की हैं। इनका विवरण इस प्रकार है :

क्रमांक	संवत्	तिथि/मिति	प्राप्तिस्थान	संदर्भग्रन्थ
१.	१५४०	ज्येष्ठ सुदि २ सोमवार	सुविधिनाथ जिनालय, पित्तलहर, आबू	मुनि जयन्तविजय संपा०, **अर्बुदप्राचीनजैनलेख-संदोह**, लेखांक ४३२, ४३४, ४३५.
२.	१५४८	तिथिविहीन	सीमंधरस्वामी का मंदिर, बीकानेर	अगरचन्द भंवरलाल नाहटा, संपा०, **बीकानेरजैनलेखसंग्रह**, लेखांक ११९०.
३.	१५५६	माघ सुदि६	शांतिनाथ जिनालय, खंभात	आचार्य बुद्धिसागर, संपा०, **जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक ८९८.
४.	१५५८	आषाढ़ सुदि८	घर देरासर, बड़ोदरा	वही, भाग २,लेखांक २३१.
५.	१५५९	आषाढ़ सुदि८	जैनमंदिर, सूतटोला, वाराणसी	पूरनचन्द नाहर, संपा०, **जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक ४०४.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६.	१५६१	ज्येष्ठ सुदि २ सोमवार	सुमतिनाथ मुख्यबावन जिनालय, मातर	आचार्य बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ५०६.
७.	१५६३	आषाढ़ सुदि....गुरुवार	घर देरासर, लखनऊ	पूरनचन्द नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १६१०.
८.	१५६३	"	शांतिनाथ जिनालय, कनासानो पाड़ो, पाटण	आचार्य बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग१, लेखांक ३७५.
९.	१५६३	"	संभवनाथ देरासर, पादरा	वही, भाग २, लेखांक १५.
१०.	१५६९	मितिविहीन	आदिनाथ जिनालय, नाडलाई	नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ८४९ तथा मुनि जिनविजय, संपा०, **प्राचीनजैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक ३३८.
११.	१५७१	मितिविहीन	वही	नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ८५७, तथा मुनि जिनविजय, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ३३९.
१२.	१५७९	मितिविहीन	जैनमंदिर, भांमासर, बीकानेर	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १३५४.

वि०सं० १५५८ में इन्होंने अपने एक शिष्य धर्महंस को कुतुबपुरा नामक ग्राम में अपने पट्ट पर स्थापित किया। कुतुबपुरा नामक स्थान से अस्तित्त्व में आने के कारण इसका नाम कुतुबपुराशाखा पड़ा।[७] धर्महंस द्वारा रचित कोई कृति नहीं मिलती और न ही इस सम्बन्ध में कोई उल्लेख ही प्राप्त होता है किन्तु इनके शिष्य इन्द्रहंस द्वारा रचित कुछ कृतियाँ मिलती हैं जो इस प्रकार हैं-

१. **भुवनभानुचरित्र** (वि०सं० १५५४/ई०स० १४९८)
२. **उपदेशकल्पवल्लीटीका** (वि०सं० १५५५/ई०स० १४९९)
३. **बलिनरेन्द्रकथा** (वि०सं० १५५७/ई०स० १५०१)
४. **विमलचरित्र** (वि०सं० १५७८/ई०स० १५२२)

इन्द्रनन्दिसूरि के एक शिष्य सिद्धान्तसागर ने वि०सं० १५७० में **दर्शनरत्नाकर**[८] की रचना की। सिद्धान्तसागर की शिष्यपरम्परा आगे चली अथवा नहीं इस सम्बन्ध में हमारे पास कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है।

इन्द्रनन्दिसूरि के एक अन्य शिष्य सौभाग्यनन्दि हुए, जिनके द्वारा रचित **मौनएकादशीकथा**[९] नामक कृति प्राप्त होती है। इनके द्वारा प्रतिष्ठापित कुछ जिन प्रतिमायें भी प्राप्त हुई हैं जो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वि०सं० १५७१ से वि०सं० १५९७ तक की हैं। इनका विवरण इस प्रकार है :

१.	१५७१	तिथिविहीन	देवकुलिका का लेख, आदिनाथ जिनालय, हस्तिकुण्डी (हथुंडी)	मुनि जिनविजय, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ३३.
२.	१५७६	माघ सुदि ५ गुरुवार	शांतिनाथ जिनालय, शांतिनाथपोल, अहमदाबाद	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १३११.
३.	१५८८	ज्येष्ठ सुदि ५ गुरुवार	वही	वही, भाग १, लेखांक १३२५.
४.	१५९१	वैशाख वदि ६ शुक्रवार	संभवनाथ जिनालय, बालूचर, मुर्शिदाबाद	नाहर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ५४.
५.	१५९७	चैत्र सुदि १३ गुरुवार	जैनमंदिर, चाणस्मा	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक १३१.

इन्द्रनंदिसूरि के चौथे शिष्य संयमसागर का भी उल्लेख मिलता है[१०]। इनके द्वारा रचित कोई कृति नहीं मिलती और न ही किन्हीं अन्य साक्ष्यों से इस सम्बन्ध में कोई जानकारी ही प्राप्त होती है। इनके शिष्य के रूप में हंसविमल का नाम मिलता है[११]।

सौभाग्यनन्दि के पट्टधर हंससंयम हुए, जिनके समय की वि०सं० १६०६ में लिखित एक ग्रन्थ की प्रति प्राप्त हुई है[१२]। हंससंयम के शिष्य हंसविमल का नाम वि०सं० १६२१ के एक शिलालेख में उत्कीर्ण है[१३]। यह शिलालेख विमलवसही, आबू से प्राप्त हुआ है। इस शाखा से सम्बद्ध यह अंतिम साक्ष्य है।

संयमसागर के शिष्य हंसविमल तथा हंससंयम के शिष्य हंसविमल एक ही व्यक्ति थे अथवा अलग-अलग! पर्याप्त साक्ष्यों के अभाव में इस सम्बन्ध में ठीक-ठीक कुछ भी कह पाना कठिन है, फिर भी समसामयिकता, नामसाम्य, गच्छसाम्य आदि को देखते हुए दोनों हंसविमलसूरि को एक ही व्यक्ति माना जा सकता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

तपागच्छ-कुतुबपुराशाखा के मुनिजनों की गुरु-परम्परा की तालिका

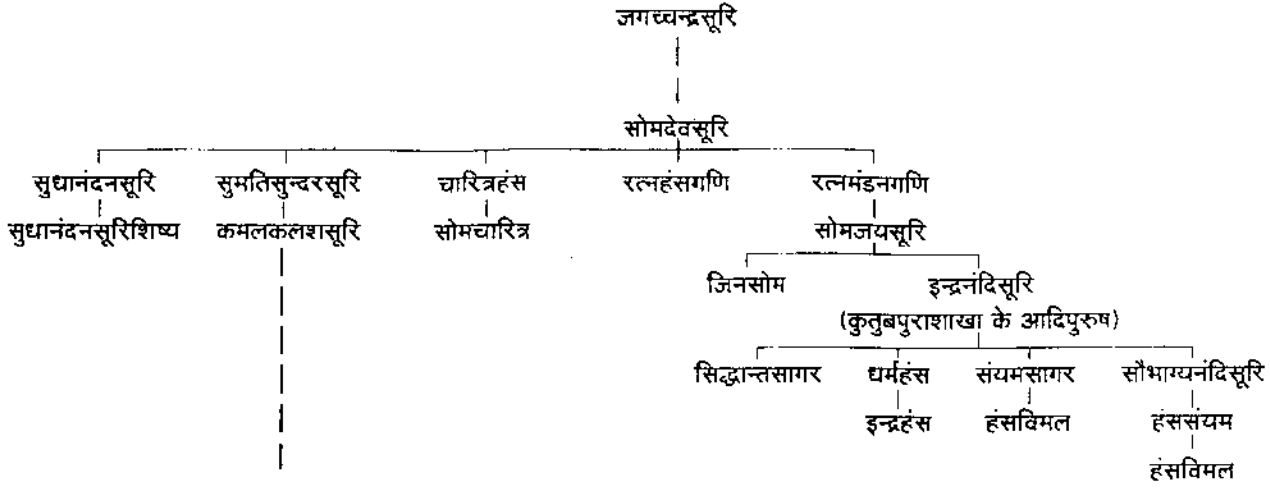

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संदर्भ

१. मोहनलाल दलीचंद देसाई, **जैनसाहित्यनो संक्षिप्तइतिहास**, पृष्ठ ४९८, कंडिका ७०९.

मुनि चतुरविजय, **मंत्राधिराजचिन्तामणि** अपरनाम **जैनस्तोत्रसंदोह**, भाग २, प्रस्तावना, पृष्ठ १०४ तथा आगे।

२-३. मुनि जिनविजय, संपा०, **प्राचीनजैनलेखसंग्रह**, लेखांक २४५, २५१, २५२, २५६.
मुनि जयन्तविजय, संपा० **अर्बुदप्राचीनजैनलेखसंदोह**, लेखांक ४०७,४०८, ४१०,४११,४१८,४१९,४७२.

४. मुनि चतुरविजयजी, पूर्वोक्त, पृष्ठ १०५-१०७.

५. वही, पृष्ठ १०६.

६. मोहनलाल दलीचंद देसाई, पूर्वोक्त, पृष्ठ ५२४-२५, कंडिका ७७०-७२.

७. मोहनलाल दलीचंद देसाई, **जैनगूर्जरकविओ**, भाग ९, संपा०, जयन्त कोठारी, "तपागच्छ कुतुबपुराशाखानिगममत पट्टावली" पृष्ठ १०७.

८. **जैनसाहित्यनो**....., कंडिका ७५८,

९. वही, कंडिका ७५८.

१०. **जैनगूर्जरकविओ**, भाग ९, पृष्ठ १०७.

११-१२वही।

१३. मुनि जयन्तविजय, **अर्बुदप्राचीन**....., लेखांक १९६.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तपागच्छ-लघुपौशाालिक शाखा अपरनाम हर्षकुलशाखा या सोमशाखा

तपागच्छ से समय-समय पर विभिन्न कारणों से विभिन्न शाखायें अस्तित्त्व में आयी। लघु पौशालिक शाखा भी एक है। यह शाखा हर्षकुलशाखा और सोमशाखा के नाम से भी जानी जाती है। प्राप्त विवरणानुसार तपागच्छ के ५५वें पट्टधर आचार्य हेमविमलसूरि ने अपने शिष्य आनन्दविमल को सूरि पद प्रदान कर अपना पट्टधर नियुक्त किया था। बाद में आनन्दविमलसूरि द्वारा एक अल्पवयस्क बालिका को दीक्षा देने के कारण गुरु-शिष्य में परस्पर मतभेद हो गया जो आगे चलकर बढ़ता ही गया, तब हेमविमलसूरि ने अपनी मृत्यु से पूर्व सौभाग्यहर्ष को अपना पट्टधर नियुक्त किया, जिनकी परम्परा लघु पौशालिक शाखा के नाम से विख्यात हुई। इस शाखा का उक्त नामकरण क्यों हुआ, इस सम्बन्ध में आज हमें कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है। इस शाखा के इतिहास के अध्ययन के लिये कुछ ग्रन्थ प्रशस्तियां, पुस्तक प्रशस्तियां तथा एक पट्टावली और सीमित संख्या में अभिलेखीय साक्ष्य उपलब्ध हैं जिनके आधार पर इस शाखा के इतिहास की एक झलक प्रस्तुत करने का यहां प्रयास किया जा रहा है।

जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है इस शाखा की एक पट्टावली[1] भी मिलती है जो विक्रम सम्वत् की १९वीं शती के अंतिम चरण में संकलित गयी प्रतीत होती है। इसमें आचार्य हेमविमलसूरि के पट्टधर एवं इस शाखा के आदिपुरुष सौभाग्यहर्षसूरि से लेकर अंतिम पट्टधर गयचन्द्रजी तक हुए प्रत्येक पट्टधर आचार्यों का न्यूनाधिक विवरण प्राप्त होता है, जिसे एक तालिका के रूप में निम्न प्रकार से रखा जा सकता है :

तालिका-क्रमांक-१

हेमविमलसूरि (तपागच्छ के ५५वें पट्टधर; वि०सं० १५८३ में स्वर्गस्थ

आनन्दविमलसूरि

.....तपागच्छ मूल परम्परा जारी.....

सौभाग्यहर्षसूरि (वि०सं० १५८३ में गुरु के पट्टधर;
।
वि०सं० १५९७ में स्वर्गस्थ)
सोमविमलसूरि (वि०सं० १५९७ में आचार्य पद
।
प्राप्त; वि०सं० १६३६ में स्वर्गस्थ)
हेमसोमसूरि (वि०सं० १६३६ में गुरु के पट्टधर;
।
वि०सं० १६७९ में स्वर्गस्थ)
विमलसोमसूरि (वि०सं० १६६७ में आचार्यपद प्राप्त,
।
वि०सं० १६८८ मार्गशीर्ष सुदि १५
।
को स्वर्गस्थ)
विशालसोमसूरि
।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

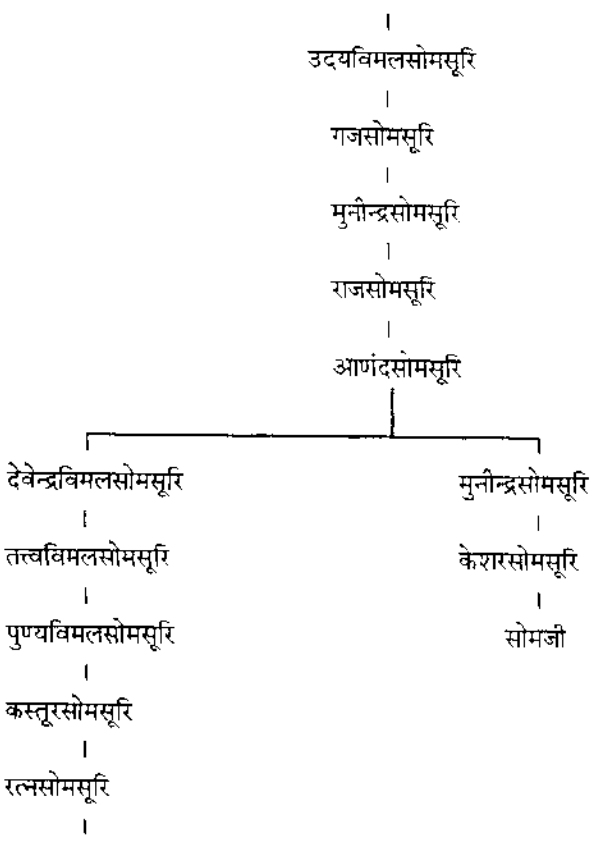

जैसा कि ऊपर हम देख चुके हैं वि०सं० १५८३ में आचार्य हेमविमलसूरि के निधन के पश्चात् सौभाग्यहर्षसूरि उनके पट्टधर बने। इनके द्वारा प्रतिष्ठापित कुछ जिनप्रतिमायें प्राप्त हुई हैं जो वि०सं० १५८४ से वि०सं० १५९५ तक की हैं। इनका विवरण इस प्रकार है :

१. सं० १५८४ वर्षे चैत्र वदि ५ गुरौ प्राग्वाट्ज्ञातीय वीसलनगर-वास्तव्य सं० रत्नाकेन भा० पूतलि पुत्र सं० कान्हा पुत्रा रमाई प्रमुखयुतेन श्रेयोर्थं श्रीकुन्थुनाथबिंबं कारितं तपागच्छे श्रीहेमविमलसूरि पट्टे **श्रीसौभाग्यहर्षसूरिभिः**॥

कुन्थुनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख,
प्रतिष्ठास्थान-मोतीशाह की टूंक, शत्रुंजय, पालिताना
मुनिकांतिसागर, संपा० **शत्रुंजयवैभव,** लेखांक २७९.

२. सं० १५८४ वर्षे चैत्र वदि ९ सोमे आमलेश्वरवास्तव्य ला० श्रीमाल० ज्ञा० श्रीजिनधर्मनिष्ठिकश्रे० सदाभा० नाथीपुत्रश्रे० जिणदासभा० पूतलिनाम्न्या भ्रा०श्रे० डूंगरश्रेष्ठिवर्द्धमान श्रे० हेमादियुतेन पुत्रभूपामंगासहितेन स्वश्रेयोऽर्थं श्रीमुनिसुव्रतचतु० का०प्र० तपागच्छे **श्रीश्रीश्रीसौभाग्यहर्षसूरिभिः**॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुनिसुव्रत की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

प्रतिष्ठास्थान-मुनिसुव्रत जिनालय, भरुच

बुद्धिसागरसूरि, संपा०-**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ३२९.

३. सं० १५८४ वर्षे माघ सुदि ९ गुरौ प्राग्वाट्ज्ञातीय दो० आशधर भा० माणिकि पुत्र हरषा भार्या हरषादे पुत्री रूपाई आत्मश्रेयसे श्रीचन्द्रप्रभस्वामिबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छे **श्रीसौभाग्यहरष (हर्ष) सूरिभिः**।।

चन्द्रप्रभस्वामी की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

प्रतिष्ठास्थान - बालावसही, शत्रुंजय, पालीताना

मुनि कांतिसागर, पूर्वोक्त, लेखांक २८०.

४. सं० १५९५ वर्षे मा० व० ( ) दलुलिवास्तव्य हुंबडज्ञाति मुहडासीया श्रे० वीरपाल भा० मानूं पुत्र श्रे० नीसल भा० जीविणी पु० श्रे० लहुआकेन भा० ललतादे वृद्धभ्रातृ दो० आसा चांपा पोपट लखमादिकुटुम्बयुतेन श्रेयोर्थं श्रीश्रेयांसनाथबिंबं कारितं प्रति० तपा० श्रीहेमविमलसूरि तत्पट्टे **श्रीसौभाग्यहर्षसूरिभिः।।**

श्रेयांसनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख

प्रतिष्ठास्थान - माणिकसागरजी का मंदिर, कोटा

महो० विनयसागर, संपा०, **प्रतिष्ठालेखसंग्रह**, लेखांक ९९१.

पूर्वप्रदर्शित पट्टावली के अनुसार वि०सं० १५९७ में सौभाग्यहर्षसूरि की मृत्यु के पश्चात् इनके शिष्य और पट्टधर सोमविमलसूरि ने इस शाखा का नायकत्त्व ग्रहण किया। लगभग ४० वर्षों तक इस शाखा का नेतृत्त्व करने के उपरान्त वि०सं० १६३६ में इनकी मृत्यु हुई। इनके द्वारा प्रतिष्ठापित दो जिनप्रतिमायें मिली हैं जो वि०सं० १६०३ और वि०सं० १६२२ की हैं। इनका विवरण इस प्रकार है :

प्रथम प्रतिमा पार्श्वनाथ की है जो आज आदिनाथ जिनालय, वेजलपुरा, भरुच में संरक्षित है। बुद्धिसागरसूरि[२] ने इसकी वाचना दी है, जो इस प्रकार है :

स्वस्तिश्री संवत् १६०३ वर्षे वैशाख सुदि ५ दिने आमथडावास्तव्यमं० नरसिंगभार्यानामलदेपुत्रभाणाकेन निजश्रेयसे श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छे श्रीसोमविमलसूरिभिः।।

द्वितीय प्रतिमा जो इन्होंने हीरविजयसूरि के साथ प्रतिष्ठापित की थी, आज अमीझरा पार्श्वनाथ जिनालय, जीरारवाड़ो, खंभात में है। बुद्धिसागरसूरि[३] ने इस पंचतीर्थी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख की भी वाचना दी है जो निम्नानुसार है :

संवत् १६२२ वर्षे माघ वदि २ बुधे श्रीश्रीमालज्ञातीयवृद्धशाखायां सा० भावडभार्यावा० सबूसुतदोसीज (?) नपालभार्या वा० जीवादेसुतदो० जयवंतेन श्रीश्रीचतुर्विंशतिपट्टः कारापितः श्रीतपागच्छे श्री ५ सोमविमलसूरिप्रतिष्ठितं श्री ५ श्रीहीरविजयसूरिभिः प्रतिष्ठितं श्रीस्तम्भतीर्थवास्तव्यः।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संभवनाथ की एक प्रतिमा पर उत्कीर्ण वि०सं० १६२२ के लेख[४] से से ज्ञात होता है कि इसकी प्रतिष्ठापना सोमविमलसूरि के समय हुई थी। लेख का मूलपाठ निम्नानुसार है:

संवत् १६२२ वर्षे पौष वदि १ रवौ ओसवालज्ञातीय मडावगगोत्रे सा० धवकरणभार्यासिवदेपुत्रसा० पा.....भार्याअमर.....पुत्र सा० धनपति सर्वकुटुम्बश्रेयोऽर्थं श्री संभवनाथ बिंबं कारितं प्रति० श्री सोमविमलसूरि विजयराज्ये।।

प्रतिष्ठास्थान - शांतिनाथ जिना०, कडाकोटडी, खंभात।

सोमविमलसूरि द्वारा रचित विभिन्न कृतियां[५] प्राप्त होती हैं जो इस प्रकार हैं :

१. **धम्मिलरास** - रचनाकाल वि०सं० १५९१ पौष सुदि १ शनिवार
२. **आनन्दविमलसूरिसज्झाय** - रचनाकाल वि०सं० १५९६
३. **चम्पकश्रेष्ठीरास** - रचनाकाल वि०सं० १६२२
४. **श्रेणिकरास**
५. **क्षुल्लककुमाररास**
६. **रत्नदृष्टांतस्वाध्याय**
७. **राजीमतीस्वाध्याय**
८. **मनुष्यभवोपरिदशदृष्टान्तना गीतो**
९. **कुमरगिरीमण्डन शांतिनाथस्तवन**
१०. **दशवैकालिकसूत्रबालावबोध**
११. **कुमारपालचरितकाव्य**
१२. **कल्पसूत्रबालावबोध**
१३. **चसिमा शब्द के १०१ अर्थ की सज्झाय** (वि०सं० १६३२)
१४. **नेमिगीत**
१५. **दसदृष्टांत त्रुटक**

वि०सं० १६०२ में रचित **पट्टावलीसज्झाय**[६] भी इन्हीं की कृति है। वि०सं० १५९१ माघ सुदि १० को इन्होंने स्वरचित **धम्मिलरास**[७] की प्रतिलिपि करायी। वि०सं० १५९७ में इनके समय में विद्याविजयगणि के शिष्य श्रीविजयगणि द्वारा नन्दवारपुर (?) में **सिद्धान्तविचाररास**[८] की रचना की। वि०सं० १५९७ में इनके उपदेश से **भगवतीसूत्र**[९] की प्रतिलिपि करायी गयी। वि०सं० १६०४ में इन्होंने अपने शिष्यों-प्रशिष्यों के पठनार्थ **अन्तकृद्दशांग** की प्रतिलिपि करायी।[१०]

सौभाग्यहर्षसूरि के दूसरे शिष्य और सोमविमलसूरि के गुरुभ्राता कल्याणजय ने वि०सं० १५९४ में **कृतकर्मराजाधिकाररास**[११] की रचना की।

सौभाग्यहर्षसूरि के एक शिष्य प्रमोदमंडन हुए जिनके द्वारा रचित कोई कृति नहीं मिलती, यही बात इनके शिष्य विमलमंडन के बारे में भी कही जा सकती है किन्तु इनके शिष्य रत्नविमल ने **दामनकरास** नामक ग्रन्थ की रचना की जिसकी वि०सं० १६३३ में लिखी गयी प्रति प्राप्त हुई है।[१२] इसकी प्रशस्ति में रचनाकार ने अपनी गुरु-परम्परा दी है, जो इस प्रकार है :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हेमविमलसूरि

।

सौभाग्यहर्षसूरि

।

प्रमोदमंडन

।

विमलमंडन

।

रत्नविमल (वि०सं० १६३३ से पूर्व **दामनकरास** के कर्ता)

विभिन्न ग्रन्थ प्रशस्तियों से सोमविमलसूरि की शिष्य परम्परा के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

वि०सं० १६०५ में **नवकाररास** के कर्ता विमलचारित्र ने स्वयं को उक्त कृति की प्रशस्ति में संघचारित्र का शिष्य और सोमविमलसूरि का प्रशिष्य कहा है।[१३]

सोमविमलसूरि

।

संघचारित्र

।

विमलचारित्र (वि०सं० १६०५/ई०स० १५४९ में
नवकाररास के रचनाकार)

वि०सं० १६१८/ई०स० १५६२ में **सुरप्रियरास** के प्रतिलिपिकर्ता लक्ष्मीचन्द्रगणि ने स्वयं को सोमविमलसूरि का शिष्य बताया है।[१४]

सोमविमलसूरि

।

लक्ष्मीचन्दगणि (वि०सं० १६१८/ई०स० १५६२ में
सुरप्रियरास के प्रतिलिपिकार)

सोमविमलसूरि की परम्परा में हुए देवशील ने वि०सं० १६१९/ई०स० १५६३ में **बेतालपच्चीसी** की रचना की।[१५] अपनी कृति की प्रशस्ति में उन्होंने अपने गुरु-परम्परा की लम्बी तालिका दी है, जो इस प्रकार है :

सौभाग्यहर्षसूरि

।

सोमविमलसूरि

।

लक्ष्मीभद्र

।

उदयशील

।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

।

चारित्रशील

।

प्रमोदशील

।

देवशील (वि०सं० १६१९ द्वितीय श्रावण वदि ९ रविवार को **बेतालपच्चीसी** के रचनाकार)

सोमविमलसूरि के एक शिष्य सोमरत्न हुए जिनके द्वारा रचित न तो कोई कृति मिलती है और न ही इस सम्बन्ध में कोई उल्लेख ही प्राप्त होता है किन्तु सोमरत्न के शिष्य विद्यासोम का वि०सं० १६८७/ई०स० १६३१ में **शांतिनाथचरित** के प्रतिलिपिकार के रूप में नाम मिलता है[१६] -

सोमविमलसूरि

।

सोमरत्न

।

विद्यासोम (वि०सं० १६८७/ई०स० १६३१ में **शांतिनाथचरित** के प्रतिलिपिकार)

सोमविमलसूरि के एक शिष्य हेमसोम भी थे, जो उनके निधन के पश्चात् उनके पट्टधर बने।

इस प्रकार उक्त साक्ष्यों के आधारपर सोमविमलसूरि के कुल ५ शिष्यों के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

तालिका-क्रमांक-२

सोमविमलसूरि

संघचारित्र	लक्ष्मीचन्द्रगणि	लक्ष्मीभद्र	सोमरत्न	हेमसोम
।	(वि०सं०१६१८ में	।	।	(पट्टधर)
विमलचारित्र	**सुरप्रियरास** के	उदयशील	विद्यासोम	
(वि०सं०१६०५	प्रतिलिपिकार)	।	(वि०सं०१६८७ में	
में **नवकाररास** के		चारित्रशील	**शांतिनाथचरित** के	
कर्ता)		।	प्रतिलिपिकार)	
		प्रमोदशील		
		।		
		देवशील		
		(वि०सं०१६१९ में **बेतालपंचवीसीरास**		
		के कर्ता)		

सोमविमलसूरि के वि०सं० १६३६ में निधन हो जाने के पश्चात् उनके शिष्य हेमसोम ने तपागच्छ की लघुपौशालिक शाखा का नायकत्त्व ग्रहण किया। वि०सं० १६६७ के एक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खण्डित प्रतिमालेख में प्रतिमाप्रतिष्ठापक के रूप में इनका नाम मिलता है। लेख का मूलपाठ निम्नानुसार है :

संवत् १६६७.....

.....तपागच्छे श्रीहेमसोमसूरिभिः .....।

प्रतिष्ठास्थान - शामला पार्श्वनाथ जिनालय, डभोई, बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक २५.

वि०सं० १६४६ में लिखी गयी **कल्पान्तरवाच्यवृत्ति** की प्रतिलेखन प्रशस्ति मे भी इनका नाम मिलता है।[१७] इन्हीं के समय वि०सं० १६५४ मे संघवीरगणि के शिष्य उदयवीरगणि ने **पार्श्वनाथगद्यबन्ध लघुचरित्र** की रचना की।[१८] वि०सं० १६७९में इनका निधन हुआ।

हेमसोमसूरि के पश्चात् विमलसोमसूरि ने इस शाखा का नेतृत्व किया। वि०सं० १६६७ के दो प्रतिमालेखों और वि०सं० १६७१ के एक शिलालेख में इनका नाम मिलता है। इन लेखों की वाचना निम्नानुसार है :

संवत् १६६७ वैशाख वदि ७ बुधे श्रीस्तम्भतीर्थवास्तव्य उपकेशज्ञातीयवृद्धशाखायां सा० धर्मसीभा० धर्मदिसुतसा० कर्मसीभार्या .....भार्यं सषमादेसुतउदयवंतरहीयायुतेन स्वकुटुम्बश्रेयोर्थं श्रीआदिनाथबिंबं कारितं तपागच्छे श्रीसोमविमलसूरिपट्टे श्रीहेमसोमसूरिभिः आचार्य श्रीविमलसोमसूरियुतैः प्रतिष्ठितं स्तम्भतीर्थे श्रीप्रतिष्ठाकारि श्रा० पाची।।

प्रतिष्ठास्थान - श्री शांतिनाथ जिनालय, कडाकोटड़ी, खंभात

बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ६११.

संवत् १६६७ वर्षे वैशाखवदि ७ बुधे श्रीस्तम्भतीर्थवास्तव्य ऊकेशज्ञातीयसा० कर्मसीभा० सषमादे स्वकुटुम्बश्रेयसे श्रीसुपार्श्वनाथबिंबं कारितं तपागच्छे श्रीसोमविमलसूरिपट्टधारि श्रीहेमसोममूरिभिः आचार्य श्रीविमलसोमसूरियुतैः प्रति० स्तम्भतीर्थे प्रतिष्ठाकारि श्रा० पांचीकेन।।

सुपार्श्वनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख,

प्रतिष्ठास्थान - कुन्थुनाथ जिनालय, मांडवीपोल, खंभात, बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ६४२.

सं० १६७१ वर्षे वैशाख वदि ५ रवौ श्रीवागड़देशमण्डने भूभामिनीभालतिलकायमान सर्वनगर शिरोमणि श्रीगिरिपुरे वागड़महाराउल श्रीपुंजराजजीविजयराज्ये प्रधानपदधारि गांधी रघासुत रत्नगांधी श्रीजोगीदास मेघजीकलाजी विजयिनित्रनगरनिवासि लघुसज्जन प्राग्वाटज्ञाति शृंगारहार श्रेष्ठी मांडण भार्या शीलालंकारधारिणी मनरंगदे नाम्नी तदधिक प्रथमपुत्र सकलगुण सम्पूर्णदानादि कृतसुर होम वत् धर्मभारधुरंधर सुकृतजसवीरभार्या द्विक प्रथम भार्या जोडीमदे द्वितीया पागरदे प्रथम भार्या पुत्र रत्नकहानजी भ्रातृ जोगा भार्या जोडीमदे पुत्र रहीया भगिनी द्वीकमइत्यादि सकलपरिवार श्रेयोर्थं श्रीसिहलाकारित श्रीपार्श्वनाथभुवने भद्रप्रासादः कारापितः प्रतिष्ठाकारापिता तपागच्छनायक श्रीपूज्यश्री५ श्रीसोमविमलसूरितच्छिष्यकलिकालसर्वज्ञ जगद्गुरु विरुद्धारि संप्रतिविजयमान श्रीपूज्यश्री५ हेमसोमसूरीश्वरपट्ट प्रभाकर तत्क्षण प्रत्यक्षणोत्तमावतार आचार्यश्रीविमलसोमसूरीश्वरआदेशात् महोपाध्याय श्री आनंदप्रमोदगणि शिष्यपंडितश्रेणीशिरोमणि पं० श्रीसकलप्रमोदगणि शिष्य पं० तेजप्रमोदगणि प्रतिष्ठाकृता।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पार्श्वनाथ जिनालय, डूंगरपुर, ईडर से प्राप्त शिलालेख

बुद्धिसागरसूरि, संपा०-**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग १, लेखांक १४६२.

विमलसोमसूरि के पट्टधर विशालसोमसूरि हुए। इनके द्वारा शोलका में धातु की पंचतीर्थी पट्ट की स्थापना की गयी।[२२] इन्हीं के काल में वि०सं० १७०३ में संघसोम ने **चौबीसी**[२३] और राजरत्न ने वि०सं० १७०५ में **गजसिंहकुमाररास**[२४] की रचना की।

विशालसोमसूरि के पट्टधर उदयविमलसोमसूरि हुए। इनके पश्चात् क्रमशः गजसोम, मुनीन्द्रसोम, गजसोम और आनन्दसोम पट्टधर बने। इनके बारे में उक्त पट्टावली को छोड़कर अन्यत्र कोई जानकारी नहीं मिलती।[२५] आनन्दसोमसूरि के काल में वि०सं० १८७८ में उत्तमविजय ने **धनपालशीलवतीरास**[२६] की रचना की। आनन्दसोम के एक शिष्य भानु उदयसोम हुए। इन्होंने वि०सं० १८८९ में **श्रीपालरास**[२७] की रचना की। इनके द्वारा **नेमिनाथरसबेलि** की वि०सं० १८९४ में की गयी प्रतिलिपि[२८] भी प्राप्त हुई है।

उक्त सभी साक्ष्यों के आधार पर लघुपौशालिकशाखा के मुनिजनों के गुरु-परम्परा की एक विस्तृत तालिका बनती है। द्रष्टव्य तालिका क्रमांक ३.

जैसा कि ऊपर इस पट्टावली में हम देख चुके हैं आनन्दसोम के शिष्य देवेन्द्रविमलसोम और मुनीन्द्रसोम से यह शाखा भी दो भागों में विभाजित हो गयी। देवेन्द्रविमलसोम के पश्चात् क्रमशः तत्त्वविमलसोम, पुण्यविमलसोम, कस्तूरसोम, रत्नसोम और अंतिम पट्टधर रायचन्दजी हुए जिनका वि०सं० १८६८ में निधन हुआ। इनके साथ ही तपागच्छ की इस शाखा की परम्परा भी समाप्त हो गयी।

लघुपौशालिक शाखा की दूसरी उपशाखा जो मुनीन्द्रसोम से प्रारम्भ हुई थी, उसमें उनके पश्चात् केसरसोम और तत्पश्चात् सोमजी हुए। सोमजी के पश्चात् ही उनकी परम्परा समाप्त हो गयी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संदर्भ

१. तपागच्छ-"लघुपौशालिक पट्टावली"
मुनि जिनविजय, संपा०- **विविधगच्छीयपट्टावलीसंग्रह**, सिंघी जैन ग्रन्थमाला, ग्रन्थांक ५३, मुम्बई १९६१ ई०, पृष्ठ ३७-४७.
मुनि कल्याणविजय गणि, संपा०-**पट्टावलीपरागसंग्रह,** श्री कल्याणविजय शास्त्र संग्रह समिति, जालौर १९६६ ई०, पृष्ठ १८२-१८६.
मोहनलाल दलीचन्द देसाई, **जैनगूर्जरकविओ**, भाग ९, द्वितीय संशोधित संस्करण, पृष्ठ ८५-८९.

२. बुद्धिसागरसूरि, संपा०-**जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह,** भाग २, लेखांक ६३६.

३. वही, लेखांक ७५२.

४. वही, लेखांक ६१६.

५-६. देसाई, पूर्वोक्त, भाग २, द्वितीय संशोधित संस्करण, पृष्ठ २-९.

७. श्री अमृतलाल मगनलालशाह, संपा०- **श्रीप्रशस्तिसंग्रह**, श्री देशविरति धर्माराधक संघ, अहमदाबाद वि०सं० १९९३; भाग २, पृष्ठ ९२, प्रशस्ति क्रमांक ३२९.

८. वही, भाग २, पृष्ठ ९७, प्रशस्ति क्रमांक ३५३.

९. वही, भाग २, पृष्ठ ९७, प्रशस्ति क्रमांक ३५०.

१०. वही, भाग २, पृष्ठ १०१, प्रशस्ति क्रमांक ३७१.

११. शीतिकण्ठ मिश्र, **हिन्दीजैनसाहित्य का बृहद् इतिहास**, भाग १, पार्श्वनाथ विद्याश्रम ग्रन्थमाला, ग्रन्थांक ५३, वाराणसी १९८९ ई०. पृष्ठ३४२-४३.

१२. वही, भाग २, पृष्ठ ३८६.

१३. शीतिकण्ठ मिश्र, पूर्वोक्त, भाग २, पृष्ठ ४८२. देसाई, पूर्वोक्त, भाग २, द्वितीय संशोधित संस्करण, पृष्ठ२१-२३.

१४. **श्रीप्रशस्तिसंग्रह**, भाग २, पृष्ठ ११४, प्रशस्ति क्रमांक ४३१.

१५. शीतिकण्ठ मिश्र, पूर्वोक्त, भाग २, पृष्ठ २३१-३२.
देसाई, पूर्वोक्त, भाग २, द्वितीय संशोधित संस्करण, पृष्ठ ११४-११६.

१६. **श्रीप्रशस्तिसंग्रह**, भाग २, पृष्ठ १९८, प्रशस्ति क्रमांक ६९८.

१७. वही, भाग २, पृष्ठ १३७, प्रशस्ति क्रमांक ५३०.

१८-१९. देसाई, पूर्वोक्त, भाग ९, द्वितीय संशोधित संस्करण, पृष्ठ ८८.

२०. वही, भाग ४, द्वितीय संशोधित संस्करण, पृष्ठ ७९-७९.

२१. वही, भाग ४, पृष्ठ १४४-१४५.

२२. द्रष्टव्य-लेख के प्रारम्भ में दी गयी लघुपौशालिक शाखा की पट्टावली.

२३. देसाई, भाग ६, द्वितीय संशोधित संस्करण, पृष्ठ २८२.

२४. वही, भाग ६, पृष्ठ ३१४.

२५. वही, भाग ९, पृष्ठ ८९.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

साहित्यिक और अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर निर्मित तपागच्छ-लघुपौशालिक शाखा के मुनिजनों की गुरु-शिष्य परम्परा की तालिका

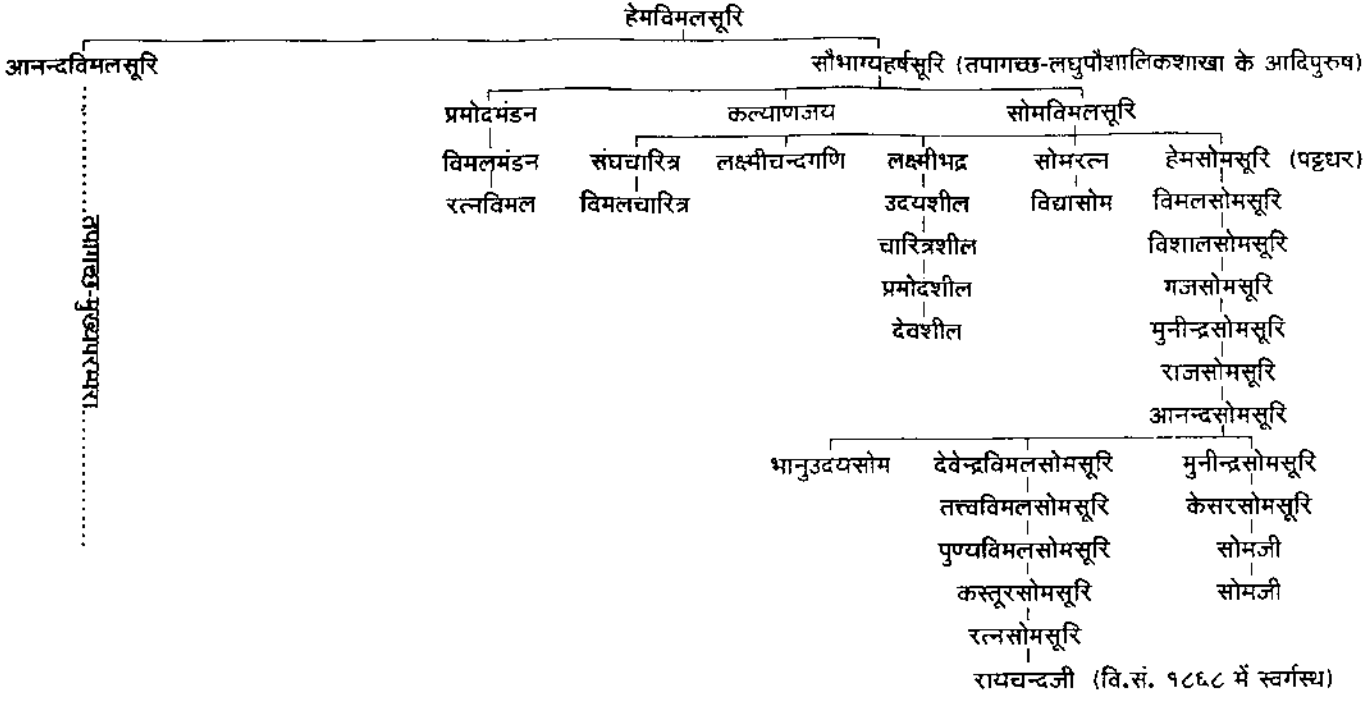

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तपागच्छ-सागरशाखा

तपागच्छ से समय-समय पर विभिन्न कारणों से अस्तित्व में आये विभिन्न उपशाखाओं में सागरशाखा भी एक है। तपागच्छीय उपाध्याय धर्मसागरगणि के प्रशिष्य और लब्धिसागर के शिष्य मुक्तिसागरगणि जो बाद में राजसागरसूरि के नाम से प्रसिद्ध हुए, से वि०सं० १६८६ में यह शाखा अस्तित्व में आयी। राजसागरसूरि को आचार्य पद दिलवाने में अहमदाबाद के गजमान्य जैन श्रावक श्रेष्ठी शांतिदास झवेरी की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। तपागच्छ की यह शाखा सागरशाखा के नाम से प्रसिद्ध हुई। इस शाखा में वृद्धिसागरसूरि, लक्ष्मीसागरसूरि, विनयसागर, कल्याणसागरसूरि, दयासागर, तिलकसागर, हेमसौभाग्य, शांतसौभाग्य, पुण्यसागरसूरि, उद्योतसागर, उदयसागर, आनन्दसागरसूरि, शांतिसागरसूरि आदि विभिन्न विद्वान मुनिजन हो चुके हैं।

तपागच्छ की इस शाखा के इतिहास के अध्ययन के लिये इससे सम्बद्ध विभिन्न मुनिजनों की कृतियों की प्रशस्तियों के साथ-साथ राजसागरसूरि, वृद्धिसागरसूरि और कल्याणसागरसूरि पर रचित **निर्वाणरास** भी उपलब्ध हुए हैं जिनसे गच्छ के इतिहास की महत्त्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। इसके अलावा इस गच्छ की एक पट्टावली भी मिलती है जिसका संक्षिप्तसार गुजराती भाषा में श्री मोहनलाल दलीचंद देसाई[1] और हिन्दी भाषा में मुनि कल्याणविजयजी[2] ने दिया है। इस गच्छ से सम्बद्ध कुछ अभिलेखीय साक्ष्य भी प्राप्त हुए हैं। यहाँ उक्त सभी साक्ष्यों के आधार पर तपागच्छ की इस शाखा के इतिहास पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है :

सागरशाखा की पट्टावली में प्रस्तुत गुरु-परम्परा को एक तालिका के रूप में इस प्रकार दर्शाया जा सकता है :

(उपाध्याय धर्मसागरगणि)
|
(लब्धिसागर)
|
मुक्तिसागरगणि अपरनाम राजसागरसूरि (वि०सं० १६८६/ई०स० १६३० में
| सागरशाखा के प्रवर्तक; वि०सं० १७२१ में मृत्यु)
वृद्धिसागरसूरि (वि०सं० १६ में सूरिपद प्राप्त; वि०सं० १७२ में
| गच्छनायक; वि०सं० १७४७ में मृत्यु)
लक्ष्मीसागरसूरि (वि०सं० १७४५ में सूरिपद प्राप्त; १७८८ में स्वर्गस्थ)
|
कल्याणसागरसूरि (वि०सं० १७८८ में सूरिपद प्राप्त; वि०सं० १८११
| में स्वर्गस्थ)
पुण्यसागरसूरि (वि०सं० १८०८ में सूरिपद प्राप्त; वि०सं०
| में जिनप्रतिमा व गुरु की चरणपादुका के प्रतिष्ठापक)
|

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

।

उदयसागरसूरि (वि०सं० १८४५ के लेख में उल्लिखित)

।

आनन्दसागरसूरि

।

शांतिसागरसूरि (वि०सं० १८९२-१९०५) अभिलेखीय साक्ष्य उपलब्ध

जैसा कि ऊपर हम देख चुके हैं, शाखा प्रवर्तक आचार्य राजसागरसूरि का सूरिपद प्राप्ति से पूर्व नाम मुक्तिसागरगणि था। अहमदाबाद के निकट बारेज नामक ग्राम में स्थित आदिनाथ जिनालय में रखी गयी शांतिनाथ की प्रतिमा पर वि०सं० १६८१ ज्येष्ठ वदि ९ गुरुवार का एक लेख उत्कीर्ण है। इसमें प्रतिमा प्रतिष्ठापक के रूप में विजयदेवसूरि के परिवार के महोपाध्याय विवेकहर्षगणि के शिष्य के रूप में महोपाध्याय मुक्तिसागरगणि का नाम मिलता है। मुनि जिनविजय[३] ने इस लेख की वाचना दी है, जो इस प्रकार है :

संवत् १६८१ वर्षे ज्येष्ठ वदि ९ गुरुवासरे श्रीअहम्मदपुरवास्तव्यवृद्धशाखीयडी-सावालज्ञातीय सा० वीरा भार्या बाई सुहडदे पुत्रेण सा० वर्धमान..... बाई बइजल पुत्र सा०.....लजी प्रमुखकुटुम्बयुतेन स्वश्रेयोऽर्थं सपरिकरं श्रीशांतिनाथबिंबं कारितं सा० श्रीशांतिदासप्रतिष्ठायां प्रतिष्ठापितं प्रतिष्ठितं च तपागच्छे भ० श्रीविजयदेवसूरिपरिवारके महोपाध्यायश्रीविवेकहर्षगणिनामनुशिष्यमहोपाध्याय-श्रीश्रीमुक्तिसागरगणिभिः श्रियेस्तु।।

मुक्तिसागरगणि द्वारा वि०सं० १६८२ ज्येष्ठ वदि ९ गुरुवार को प्रतिष्ठापित ४ जिनप्रतिमायें प्राप्त हुई हैं। इनकी वाचनायें निम्नानुसार हैं :

१. संवत् १६८२ वर्षे ज्येष्ठ वदि ९ गुरुवासरे श्री अहिमदाबाद नगरवास्तव्य-श्रीओसवालज्ञातीय सा० सहसकिरणभार्यया बाई कुंवरि नाम्न्या स्वश्रेयोर्थं श्रीमुनिसुव्रतस्वामिबिंबं कारितं सा० शांतिदासकारितप्रतिष्ठायां प्रतिष्ठापितं प्रतिष्ठितं श्रीतपागच्छे भट्टारकश्रीविजयसेनसूरीश्वरपट्टालंकार भट्टारकश्रीविजयदेवसूरिपरिवारके महोपाध्यायविवेकहर्षगणीनामनुशिष्या (ष्यैः) महोपाध्यायश्रीमुक्तिसागरगणिभिः।।

मुनिसुव्रत की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख, प्रतिष्ठास्थान - जैनमंदिर, सूरत के निकट स्थित लाइन्स में

संदर्भग्रन्थ - मुनि जिनविजय, संपा०- **प्राचीनजैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक ५४१.

२. संवत् १६८२ वर्षे ज्येष्ठवदि ९ गुरौ अहिमदाबादनगरे ओसवालज्ञातीय सा० श्रीशांतिदास भार्यया श्रीआदिनाथबिंबं प्रतिष्ठापितं प्रतिष्ठितं च तपागच्छे महोपाध्याय-श्रीमुक्तिसागर.....

आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख, प्रतिष्ठास्थान - जैनमंदिर, सूरत के निकट लाइन्स में

संदर्भग्रन्थ - मुनि जिनविजय, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ५४२.

३. संवत् १६८२ वर्षे ज्येष्ठ वदि ९ गुरुवासरे श्रीअहिम्मदाबादवास्तव्य श्रीओसवालज्ञातीय सा० श्री वच्छा भार्या गोरदे सुत सा० सहस्रकिरण भार्या कुआरबाइ बाइ सोभागदे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुत्रेण सुत सा पत्नजी प्रमुख कुटुंबयुतेन श्रीशत्रुंजयादितीर्थमहामह० पुरस्त रथयात्रासमवाप्त-संघपतितिलकेन सा० श्रीशांतिदासनाम्ना स्वश्रेयोर्थं श्रीशीतलनाथबिंबं स्वयं कारितं प्रतिष्ठितं च तपागच्छे भट्टारक श्रीविजयसेनसूरिपट्टालंकारभट्टारक श्रीविजयदेवसूरिपरिवारके महोपाध्याय श्रीविवेकहर्षगणिनामनुशिष्य महोपाध्याय श्रीमुक्तिसागरगणिभिः।।

शीतलनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख, प्रतिष्ठास्थान - लोढण पार्श्वनाथ देरासर, डभोई

संदर्भग्रन्थ - बुद्धिसागरसूरि, संपा०, **जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ३६.

४. संवत् १६८२ वर्षे ज्येष्ठ वदि ९ गुरौ श्रीअहमदावाद वास्तव्य उसवालज्ञातीय वृद्धशाखा (खा) यां श्रीशांतिदास भा० वाई रूपाई सुत सा० पनजी कारितं श्रीशांतिनाथबिंबं प्रतिष्ठितं श्री तपागच्छे भ० श्रीविजयदेवसूरि वरैकि (?) महोपाध्याय श्री श्री श्री मुनिसागर (मुक्तिसागर) गणिभिः श्रेयोस्तु।।

शांतिनाथ की चौबीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख, प्रतिष्ठास्थान - शांतिनाथ जिनालय, सहादतगंज, लखनऊ

संदर्भग्रन्थ - पूरनचन्द नाहर, संपा०, **जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक १६३५.

वि०सं० १६८२ ज्येष्ठ वदि ९ गुरुवार के उक्त चारों प्रतिमालेखों में समान रूप से मुक्तिसागरगणि और शांतिदास का नाम मिलता है। एक ही समय उत्कीर्ण कराये जाने के कारण इनमें स्वाभाविक रूप से भाषागत समानता भी दृष्टिगोचर होती है। यही भाषागत समानता हमें वि०सं० १६८१ ज्येष्ठ वदि ९ गुरुवार के लेख में भी दिखाई देती है, साथ ही इसमें भी मुक्तिसागरगणि और शांतिदास का नाम मिलता है, इस आधार पर इस लेख को भी वि०सं० १६८२ का ही मानने में कोई बाधा नहीं दिखाई देती। दूसरे वर्ष सम्वत् १६८१ के ज्येष्ठ माह के कृष्णपक्ष की नवमी की तिथि को भी गुरुवार ही रहा होगा, जैसा कि वर्ष १६८२ के ज्येष्ठ माह के कृष्णपक्ष की नवमी की तिथि को रहा, ऐसा होना संभव नहीं लगता।

सागरशाखा की पूर्वोक्त पट्टावली में मुक्तिसागरगणि को लब्धिसागर का शिष्य और उपा० धर्मसागरगणि का प्रशिष्य कहा गया है वहीं उक्त अभिलेखीय साक्ष्यों में हम मुक्तिसागरगणि को विवेकहर्षगणि के शिष्य के रूप में पाते हैं, अतः यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि दोनों मुक्तिसागर एक ही व्यक्ति हैं या अलग-अलग। इसका उत्तर यही है कि चूंकि शांतिदास द्वारा निर्मित जिनालय की प्रतिष्ठा का कार्य वि०सं० १६८२ में तपागच्छ की भट्टारक शाखा के आचार्य विजयदेवसूरि की परम्परा के विवेकहर्षगणि के निर्देशन में मुक्तिसागरगणि ने सम्पन्न किया था[४], अतः यही कारण है कि इस समय के प्रतिमालेखों में इन्हें विवेकहर्षगणि का शिष्य कहा गया है। इस प्रकार लब्धिसागर के शिष्य मुक्तिसागरगणि उक्त प्रतिमालेखों में प्रतिमाप्रतिष्ठापक के रूप में उल्लिखित मुक्तिसागरगणि से अभिन्न सिद्ध होते हैं।

श्रेष्ठी शांतिदास के प्रयत्न से वि०सं० १६८६ में मुक्तिसागरगणि को आचार्य पद प्राप्त हुआ और वे राजसागरसूरि के नाम से जाने गये।[५] वि०सं० १६९८ पौष पूर्णिमा को इन्होंने वृद्धिसागर को आचार्यपद प्रदान कर अपना पट्टधर नियुक्त किया।[६] अपने जीवन काल में राजसागरसूरि ने बिम्बप्रतिष्ठा, पंडित तथा वाचकपद प्रदान, उपधान, मालारोपण आदि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धार्मिक विधि-विधानों के साथ-साथ विभिन्न तीर्थों की यात्रायें भी कीं। वि०सं० १७२१ में इनका निधन हुआ।[७]

राजसागरसूरि पर रची गयी तीन रचनायें आज उपलब्ध हैं, जो इस प्रकार हैं :

१. राजसागरसूरि के प्रशिष्य और वृद्धिसागरसूरि के शिष्य विनयसागर द्वारा रचित **राजसागरसूरिसज्झाय**[८] (रचनाकाल वि०सं० १७१५)

२. हेमसौभाग्य द्वारा रचित **राजसागरसूरिनिर्वाणरास**[९] (रचनाकाल वि०सं० १७२१)

हेमसौभाग्य ने अपने उक्त कृति में अपनी गुरु-परम्परा इस प्रकार दी है :

वृद्धिसागरसूरि
|
सत्यसौभाग्य
|
इन्द्रसौभाग्य
|
हेमसौभाग्य (वि०सं० १७२१ **राजसागरसूरिनिर्वाणरास** के कर्ता)

३. तिलकसागर द्वारा रचित **राजसागरसूरिनिर्वाणरास**[१०] (रचनाकाल वि०सं० १७२१ के आसपास)

तिलकसागर ने इस कृति के अन्त में अपनी गुरु-परम्परा दी है जो इस प्रकार है :

वृद्धिसागरसूरि
|
कृपासागर
|
तिलकसागर (वि०सं० १७२१ के लगभग **राजसागरसूरि निर्वाणरास** के रचनाकार)

राजसागरसूरि के प्रशिष्य और शांतिसागर के शिष्य दयासागर ने वि०सं० १७२२ में **राजसागरसूरिनिर्वाणरास** की प्रतिलिपि की।[१०अ]

राजसागरसूरि तथा श्रेष्ठी शांतिदास के बारे में उक्त रचनाओं से महत्त्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।

राजसागरसूरि के पश्चात् उनके पट्टधर वृद्धिसागरसूरि हुए। दीपसौभाग्य द्वारा रचित **वृद्धिसागरसूरिरास**[११] (रचनाकाल-वि०सं० १७४७ के आसपास) इनके बारे में महत्त्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। दीपसौभाग्य ने अपनी उक्त कृति के अन्त में अपनी गुरु-परम्परा दी है, जो इस प्रकार है :

राजसागरसूरि
|
वृद्धिसागरसूरि
|

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

माणिक्यसौभाग्य

चतुरसौभाग्य

दीपसौभाग्य (वि०सं० १७४७ के आसपास **वृद्धिसागरसूरिरास** के रचनाकार)

दीपसौभाग्य द्वारा वि०सं० १७३९ में रचित **चित्रसेनपद्मावतीचौपाई**[११] नामक कृति भी प्राप्त होती है।

उक्त रास के अनुसार वि०सं० १६८० में इनका जन्म हुआ था, वि०सं० १६८९ में इन्होंने अपनी माता के साथ पाटण में राजसागरसूरि से दीक्षा ग्रहण की और हर्षसागर नाम प्राप्त किया। गुरु के पास इन्होंने श्रमपूर्वक विद्याभ्यास किया और वि०सं० १६९८ में इन्हें आचार्य पद प्राप्त हुआ, तत्पश्चात् ये वृद्धिसागरसूरि के नाम से विख्यात हुए। अपने जीवनकाल में इन्होंने शत्रुंजय, तारंगा, गिरनार, राणकपुर, आबू आदि तीर्थों की यात्रायें की तथा विभिन्न धार्मिक विधि-विधानों का सम्यक् रूप से पालन किया। वि०सं० १७४७ में अहमदाबाद में इनका निधन हुआ। इनके निधन के समय इनके पास इनके विभिन्न शिष्य-यथा उपा० कांतिसागर, पं० क्षेमसागरगणि, नयसागरगणि, हितसागरगणि, वीरसागर, कीर्तिसागर आदि शिष्य उपस्थित थे।[१३]

वृद्धिसागरसूरि के पश्चात् उनके शिष्य लक्ष्मीसागरसूरि गच्छनायक बनाये गये। लक्ष्मीसागरसूरि के बारे में विशेष जानकारी प्राप्त नहीं होती। **वृद्धिसागरसूरिरास** के अनुसार इनका पूर्वनाम निधिसागर था, वि०सं० १७४५ में वृद्धिसागरसूरि ने सूरि पद पर प्रतिष्ठित कर लक्ष्मीसागरसूरि नाम दिया था।[१४] वि०सं० १७८८ में इन्होंने अपने एक शिष्य प्रमोदसागर को आचार्य पद प्रदान कर गच्छभार सौंप दिया। यही प्रमोदसागर कल्याणसागरसूरि के नाम से विख्यात हुए।[१५]

कल्याणसागरसूरि के बारे में इन्हीं के गुरुभ्राता क्षीरसागर के शिष्य माणिक्यसागर द्वारा रचित **कल्याणसागरसूरिरास**[१६] से विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है।

लक्ष्मीसागरसूरि

कल्याणसागरसूरि — क्षीरसागर

माणिक्यसागर

(वि०सं० १८१७ फाल्गुन वदि ५ बुधवार को **कल्याणसागरसूरिरास** के रचनाकार)

उक्त रास के अनुसार इन्होंने १० वर्ष की आयु में वि०सं० १७५२ में इन्होंने अपनी माता और अपने भाई के साथ लक्ष्मीसागरसूरि के पास दीक्षा ग्रहण की। इनका नाम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रमोदसागर और इनके सहोदर भ्राता का नाम क्षीरसागर रखा गया। गुरु के साथ इन्होंने विभिन्न तीर्थस्थानों की यात्रायें कीं। वि०सं० १८०८ में अहमदाबाद में इन्होंने अपने एक शिष्य को आचार्य पद देकर पुण्यसागरसूरि नाम प्रदान किया जो वि०सं० १८११ में इनके निधन के पश्चात् गच्छनायक बने।[१०]

सत्यसौभाग्य के पट्टधर इन्द्रसौभाग्य की परम्परा में हुए शांतसौभाग्य ने वि०सं० १७८७ में गुजराती भाषा में **अगडदत्तऋषिनीचौपाई**[१८] की रचना की। श्री देसाई ने शांतसौभाग्य की गुरु-परम्परा दी है[१९], जो इस प्रकार है :

राजसागरसूरि
।
वृद्धिसागरसूरि
।
लक्ष्मीसागरसूरि
।
कल्याणसागरसूरि
।
उपा०सत्यसौभाग्य
।
उपा०इन्द्रसौभाग्य
।
उपा०वीरसौभाग्य
।
प्रेमसौभाग्य
।
शांतसौभाग्य (वि०सं० १७८७ में पाटण में **अगडदत्तऋषिनीचौपाई** के रचनाकार)

शामलापार्श्वनाथ जिनालय, डभोई में संरक्षित आदिनाथ की धातु की प्रतिमा पर वि०सं० १८२८ फाल्गुन वदि २ शुक्रवार का एक लेख उत्कीर्ण[१९अ] है जिसमें पुण्यसागरसूरि का प्रतिमाप्रतिष्ठापक के रूप में नाम मिलता है। राधनपुर स्थित शांतिनाथ जिनालय के भोंयरे में एक मोटे पाषाणखण्ड पर ४१ पंक्तियों का एक शिलालेख[२०] उत्कीर्ण है। इस प्रशस्तिलेख की प्रथम १५ पंक्तियों में सागरगच्छ के प्रवर्तक राजसागरसूरि से लेकर पुण्यसागरसूरि तक के पट्टधरों की नामावली दी गयी है साथ ही वि०सं० १८३८ में पुण्यसागरसूरि द्वारा यहां जिनप्रतिमाओं की प्रतिष्ठा करने की बात कही गयी है। प्रशस्ति की अगली पंक्तियों में जिनालय के निर्माता श्रावक परिवार का परिचय है। प्रशस्ति के अन्त में प्रशस्ति के रचनाकार अमृतसागर ने अपना परिचय देते हुए स्वयं को पुण्यसागरसूरि का शिष्य बतलाया है।[२१]

पुण्यसागरसूरि के एक शिष्य ज्ञानसागर हुए, जिनके द्वारा रचित कोई कृति नहीं मिलती, किन्तु इनके शिष्य उद्योतसागर द्वारा रचित कुछ कृतियां मिलती हैं[२२], जो इस प्रकार हैं :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१. **इक्कीसप्रकारीपूजा** (रचनाकाल वि०सं० १८२३)

२. **अष्टप्रकारीपूजा** (रचनाकाल वि०सं० १८२३)

३. **आराधना बत्तीसद्वारनो रास**

४. **वीरचरित्रवेलि**

५. **सम्यकत्त्वबारव्रतविवरण**

पुण्यसागरसूरि के पश्चात् उनके पट्टधर उदयसागर ने गच्छ का नायकत्त्व ग्रहण किया।

शामला पार्श्वनाथ जिनालय, डभाई में संरक्षित चन्द्रप्रभ की धातु की एक प्रतिमा पर वि०सं० १८४५ फाल्गुन सुदि ३ का लेख उत्कीर्ण है। इस लेख में प्रतिमा प्रतिष्ठापक के रूप में उदयसागरसूरि का नाम मिलता है। बुद्धिसागरसूरि[२३] ने इस लेख की वाचना दी है, जो इस प्रकार है :

संवत् १८४५ फागुण सुद ३.....चन्द्रप्रभबिंबं श्री उदयसागरसूरिभिः।।

यद्यपि इस लेख में प्रतिमा प्रतिष्ठापक आचार्य के गच्छ का निर्देश नहीं है, तथापि इस समय केवल सागरशाखा में ही उक्त नामधारी आचार्य हुए हैं अतः समसामयिकता की दृष्टि से उक्त प्रतिमालेख में उल्लिखित उदयसागरसूरि को सागरशाखा के उदयसागरसूरि से अभिन्न माना जा सकता है।

उदयसागरसूरि के समय में वि०सं० १८४२ में **विवाहपटलबालावबोध** और वि०सं० १८६३ में **उपदेशमालाबालावबोध** की प्रतिलिपि की गयी।[२४]

उदयसागर के पश्चात् आनन्दसागर ने इस शाखा का नायकत्त्व ग्रहण किया। इनके बारे में हमें सागरशाखा की पट्टावली तथा कुछ प्रशस्तियों में नामोल्लेख के अतिरिक्त अन्य कोई जानकारी नहीं मिलती।

आनन्दसागरसूरि के पट्टधर शांतिसागरसूरि हुए। इनके भी प्रारम्भिक जीवन आदि के बारे में हमें कोई जानकारी नहीं मिलती तथापि कुछ रचनाओं की प्रशस्तियों में इनका नाम मिलता है। तपागच्छीय मुनि क्षेमवर्धन द्वारा वि०सं० १८७०/ई०स० १८१४ में रचित **शांतिदास अने वखतचंदसेठनो रास** के अन्त में रचनाकार ने सागरशाखा के मुनिजनों की नामावली दी है जिसमें राजसागरसूरि से लेकर शांतिसागरसूरि तक का नाम मिलता है।[२५]

क्षेमवर्धन द्वारा ही वि०सं० १८७९/ई०स० १८२३ में रचित **श्रीपालरास** के अन्त में भी सागरगच्छ के नायक के रूप में इनका नाम मिलता है[२६]—

सागरगच्छ सोभाकर सुंदर,
शांतिसागर सूरि राया,
.....

तपागच्छ-विजयसंविग्न शाखा के प्रसिद्ध रचनाकार वीरविजय द्वारा वि०सं० १९०३ में रचित **हठीसिंहनीसंधनु वर्णन** अथवा **हठीसिंहनी अंजनशलाकाना ढालिया** में भी आचार्य शांतिसागरसूरि का प्रसंगवश नामोल्लेख हुआ है।[२७]

वि०सं० १८८९ से लेकर वि०सं० १९२१ तक के विभिन्न अभिलेखीय साक्ष्यों में शांतिसागरसूरि का नाम मिलता है। इनका विवरण निम्नानुसार है :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आचार्य शांतिसागरसूरि के पश्चात् इस शाखा में कौन-कौन से मुनिजन हुए, अथवा उनके पश्चात् यह शाखा आगे चली या नहीं, इस बारे में जानकारी हेतु हमारे पास कोई भी साक्ष्य नहीं है। साक्ष्यों के अभाव में यह स्वीकार करना पड़ता है कि २०वीं शती के प्रथम चरण के पश्चात् इस शाखा का स्वतंत्र अस्तित्त्व समाप्त हो गया होगा और इसके अनुयायी तपागच्छ की किन्हीं अन्य शाखाओं में सम्मिलित हो गये होंगे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

साहित्यिक और अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर निर्मित तपागच्छ-सागरशाखा (सागरगच्छ) के मुनिजनों के गुरु-परम्परा की तालिका

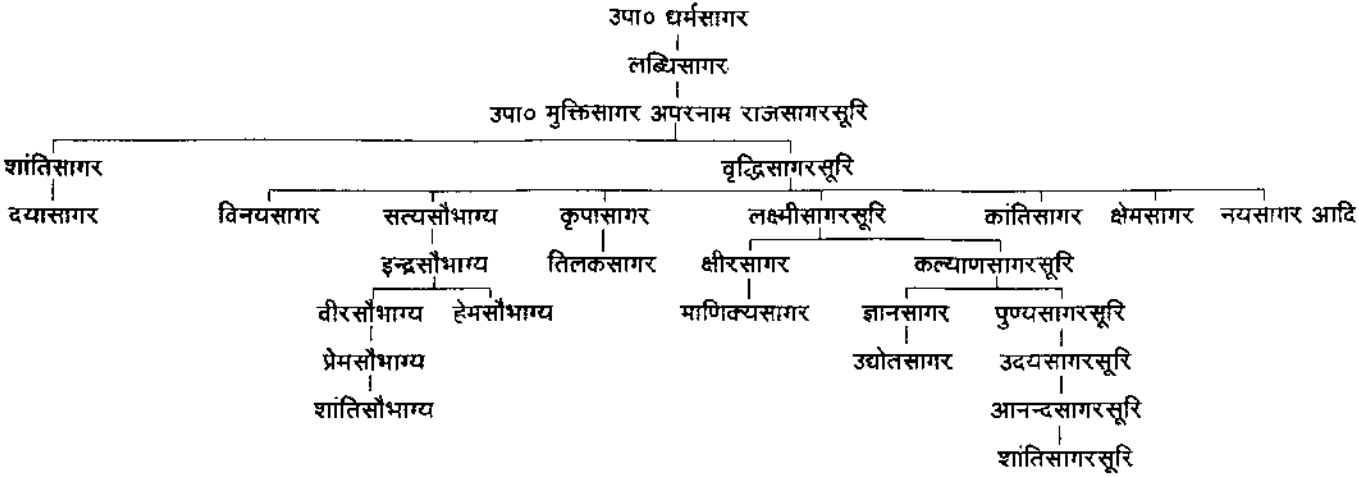

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संदर्भ

१. मोहनलाल दलीचद देसाई, **जैनगूर्जरकविओ**, भाग ९, द्वितीय संशोधित संस्करण, पृष्ठ ८४-८५.
यहाँ पट्टावली का प्रारम्भ विजयसेनसूरि से दिया गया है।

२. मुनि कल्याणविजयगणि, संपा०- **पट्टावलीपरागसंग्रह**, पृष्ठ २१२-१४.

३. संपा०- **प्राचीनजैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक ५३८.

४. त्रिपुटीमहाराज, **जैनपरम्परानो इतिहास**, भाग ४, श्री चारित्रस्मारक ग्रन्थमाला, ग्रन्थांक ६०, भावनगर १९८३ई०, पृष्ठ १३२-३३.

५. "राजसागरसूरिनिर्वाणरास" रचनाकार तिलकसागर
मुनि जिनविजय, संपा०- **जैनऐतिहासिकगूर्जरकाव्यसंचय**, प्रवर्तक श्रीकांति विजय जैन इतिहास माला, पुष्प ७, श्रीआत्मानन्दसभा, भावनगर १९२६ई०, पृष्ठ ४५-६७; राससार, वही, पृष्ठ २१-२७.

६-७. वही, पृष्ठ ५२-५३.

८. देसाई, पूर्वोक्त, भाग ४, द्वितीय संशोधित संस्करण, संपा०- जयन्तकोठारी, पृष्ठ २७४-७५.

९. वही, पृष्ठ ३०५-३०६.

१०. द्रष्टव्य - संदर्भ क्रमांक ५.

१०.अ. देसाई, पूर्वोक्त, भाग ४, पृष्ठ ३०७.

११. देसाई, पूर्वोक्त, भाग ५, पृष्ठ ३५-३६.
विजयधर्मसूरि, संपा०- **ऐतिहासिकरासंग्रह**,भाग ३, यशोविजयजैनग्रन्थमाला, भावनगर सं० १९७८, पृष्ठ ४८-५९ तथा मूलरास, पृष्ठ ४९-५६.

१२. देसाई, पूर्वोक्त, भाग ४, पृष्ठ ३३-३५.

१३. विजयधर्मसूरि, पूर्वोक्त, भाग ३, पृष्ठ ५६.

१४. वही, पृष्ठ ५२-५३.

१५. वही, पृष्ठ ५६, पादटिप्पणी,

१६. मुनि जिनविजय, **जैनऐतिहासिक**....., पृष्ठ २५४-२६४; राससार, पृष्ठ १७०-७३.

१७. वही, राससार, पृष्ठ १७३.

१८-१९. मोहनलाल दलीचंद देसाई, **जैनगूर्जरकविओ**, भाग ५, नवीन संशोधित संस्करण, पृष्ठ ३३७-३८.

१९अ. बुद्धिसागर, संपा०- **जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ३५.

२०. जिनविजय, संपा०- **प्राचीनजैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक ४६०, राधनपुर प्रशस्ति, पृष्ठ ३००-३०५.

२१. पुण्यसागरसूरीणां शिष्यैरमृतसागरैः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कृता प्रशस्तिः शस्तेयं विलसत्सर्वमंगला।। श्रियः सं०
राधनपुर प्रशस्ति की अंतिम पंक्ति, मुनि जिनविजय, पूर्वोक्त, भाग २, पृष्ठ ३०५.

२२. देसाई, पूर्वोक्त, भाग ६, पृष्ठ १०९-११४.

२३. संपा०- **जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ३१, वि०सं० १८४३ और १८४५ के लेखों मे भी प्रतिमाप्रतिष्ठापक के रूप में उदयसागरसूरि का नाम मिलता है। द्रष्टव्य, वही, भाग १, लेखांक ४६, ५९.

२४. देसाई, पूर्वोक्त, भाग ९, पृष्ठ ९५.

२५. देसाई, पूर्वोक्त, भाग ६, पृष्ठ १८१-८४.

२६. वही, पृष्ठ १८५.

२७. वही, पृष्ठ २४८.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तपागच्छ-विजयाणंदसूरि शाखा

तपागच्छ की विभिन्न शाखाओं में विजयानन्दसूरिशाखा अपरनाम आनन्दसूरिशाखा भी एक है। तपागच्छीय आचार्य विजयसेनसूरि के शिष्य रामविजय (बाद में विजयतिलकसूरि) इस शाखा के आदिम आचार्य माने जाते हैं। विजयतिलकसूरि के पट्टधर विजयाणंदसूरि हुए जिनकी शिष्यसंतति उनके नाम के आधार पर विजयाणंदसूरिशाखा या आणंदसूरिशाखा के नाम से प्रसिद्ध हुई। इस शाखा में विजयराजसूरि, विजयमानसूरि, विजयऋद्धिसूरि, विजयसौभाग्यसूरि, विजयलक्ष्मीसूरि आदि कई आचार्य हुए हैं।

विजयाणंदसूरिशाखा के इतिहास के अध्ययन के लिये इससे सम्बद्ध मुनिजनों की अल्पसंख्या में प्राप्त रचनाओं की प्रशस्तियों तथा उनके समय में लिखी गयी विभिन्न रचनाओं की प्रतिलिपिप्रशस्तियों से पर्याप्त जानकारी प्राप्त होती है। इसी प्रकार **वीरवंशावली**[1] (रचनाकाल वि०सं० १९वीं शती का प्रारम्भ) और दीपविजय द्वारा रचित **सोहमकुलपट्टावलीसज्झाय**[2] (रचनाकाल वि०सं० १८७७) से इस शाखा के इतिहास पर महत्त्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है। संभवतः उक्त दोनों साक्ष्यों के आधार पर ही श्री मोहनलाल दलीचंद देसाई[3] और मुनिश्री कल्याणविजयगणि[4] ने इस शाखा के पट्टधर आचार्यों की एक नामावली प्रस्तुत की है। इस शाखा से सम्बद्ध कुछ अभिलेखीय साक्ष्य भी प्राप्त हुए हैं जो वि०सं० १६७१ से लेकर वि०सं० १८६८ तक के हैं। यहाँ उक्त सभी साक्ष्यों के आधार पर इस शाखा के इतिहास की एक झलक प्रस्तुत है।

जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है **वीरवंशावली** और **सोहमकुलपट्टावलीसज्झाय** के अनुसार आचार्य विजयसेनसूरि ने अपने शिष्य विजयदेवसूरि को अपना पट्टधर नियुक्त किया था। इस समय आचार्य हीरविजयसूरि का शिष्य समुदाय-सागर और विजय-इन दो समुदायों में बंटा हुआ था। आचार्य विजयदेवसूरि का झुकाव सागरों की ओर देखकर उनके गुरु विजयसेनसूरि अत्यन्त क्षुब्ध हो गये और उन्होंने रामविजय नामक एक विद्वान् मुनि को आचार्य पद देकर विजयतिलकसूरि नाम रखा।[5] इस प्रकार हीरविजयसूरि की शिष्यसंतति जो विजयसेनसूरि के समय तक प्रायः अखंड रूप से रही, अब औपचारिक रूप से दो भागों में विभाजित हो गयी। विजयदेवसूरि की शिष्य-संतति से तपागच्छ की मूलपरम्परा आगे चली तथा विजयतिलकसूरि की शिष्यसंतति आगे चलकर विजयाणंदसूरिशाखा अपरनाम आणंदसूरिशाखा के नाम से जानी गयी।

श्री मोहनलाल दलीचंद देसाई और मुनि कल्याणविजयगणि ने इस शाखा के मुनिजनों की जो नामावली दी है, वह इस प्रकार है :

आचार्य विजयसेनसूरि

|

आचार्य विजयतिलकसूरि (वि०सं० १६५१ में जन्म; वि०सं० १६६२
| में दीक्षा; वि०सं० १६७३ में आचार्य पद;
वि०सं० १६७६ में मृत्यु)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आचार्य विजयाणंदसूरि (वि०सं० १६४२ में जन्म; वि०सं० १६५१ में दीक्षा; वि०सं० १६७६ में आचार्य पद; वि०सं० १७११ में निधन)

आचार्य विजयराजसूरि (वि०सं० १६७९ में जन्म; वि०सं० १६८९ में दीक्षा; वि०सं० १७०४ में आचार्यपद; वि०सं० १७४२ में स्वर्गस्थ)

आचार्य विजयमानसूरि (वि०सं० १७०७ में जन्म; वि०सं० १७१९ में दीक्षा; वि०सं० १७३१ में उपाध्यायपद; वि०सं० १७३६ में आचार्य पद; वि०सं० १७७० में स्वर्गस्थ)

आचार्य विजयऋद्धिसूरि (वि०सं० १७२७ में जन्म; सं० १७४२ में दीक्षा;

वि०सं० १७६६ में आचार्य पद; वि०सं० १७९७ में निधन)

विजयसौभाग्यसूरि	विजयप्रतापसूरि
विजयलक्ष्मीसूरि (वि०सं० १७९७ में जन्म; वि०सं० १८१४ में दीक्षा; वि०सं० १८५८ में स्वर्गस्थ)	विजयतिलकसूरि (वि०सं० १८३७ में स्वर्गस्थ)

विजयदेवेन्द्रसूरि (वि०सं० १८५७ में आचार्यपद; वि०सं० १८६१ में स्वर्गवास)

विजयमहेन्द्रसूरि (वि०सं० १८२७ में दीक्षा; वि०सं० १८६१ में आचार्यपद; वि०सं० १८६५ में स्वर्गस्थ)

विजयसमुद्रसूरि (वि०सं० १८६५ में आचार्य पद)

इन्हीं के समय वि०सं० १८७७ में दीपविजय ने **सोहमकुलपट्टावली-सज्झाय** की रचना की थी।

विजयधनेश्वरसूरि (वि०सं० १८९३) प्रतिमालेख

विजयविद्यानन्दसूरि (वि०सं० १९११) लेख

वीरवंशावली तथा **सोहमकुलपट्टावलीसज्झाय** में इस शाखा के पट्टधर आचार्यों की विभिन्न तिथियों में प्रायः मतभेद है किन्तु उनके पट्टक्रम के बारे में दोनों ही साक्ष्यों में कोई भी अन्तर नहीं है।

विजयतिलकसूरि—जैसा कि ऊपर हम देख चुके हैं वि०सं० १६५१ में इनका जन्म हुआ था; वि०सं० १६६२ में इन्होंने दीक्षा ग्रहण की और रामविजय नाम प्राप्त किया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वि०सं० १६७३ में इन्हें सिरोही में आचार्यपद प्राप्त हुआ और वि०सं० १६७६ में इनका निधन हुआ। यह सूचना **वीरवंशावली** से ज्ञात होती है।[६]

आचार्य हीरविजयसूरि की परम्परा में हुए दर्शनविजय द्वारा रचित **विजयतिलकसूरिनिर्वाणरास**[७] (रचनाकाल वि०सं० १६९७) से भी इनके बारे में महत्त्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। वि०सं० १६७४ में जीवविजय द्वारा लिखित **शांतिनाथस्तवन**[८], वि०सं० १६७४ में ही संघविजयगणि के शिष्य वृद्धिविजय द्वारा लिखी गयी **श्राद्धप्रतिक्रमणवृत्ति**[९], वि०सं० १६७५ में देवविजय के शिष्य मानविजय द्वारा लिखित **सप्तपदार्थी**[१०] और वि०सं० १६७५ चैत्र सुदि २ को लिखी गयी **मृगावतीआख्यान**[११] की प्रति में विजयतिलकसूरि का सादर उल्लेख करते हुए उक्त ग्रन्थों की प्रतिलिपियों को उनके काल में लिखा बतलाया गया है।

आदिनाथ जिनालय, सिरोही में प्रतिष्ठापित हीरविजयसूरि की प्रतिमा पर वि०सं० १६७१ का एक लेख उत्कीर्ण है। इस लेख में प्रतिमाप्रतिष्ठापक आचार्य के रूप में विजयसेनसूरि के शिष्य विजयतिलकसूरि का नाम मिलता है। मुनि जयन्तविजयजी[१२] ने इस लेख की वाचना दी है, जो निम्नानुसार है :

सं० १६७१ वर्षे वै० शु० ३ बुधे भट्टा० श्रीहीरविजयसूरिमूर्तिः प्राग्वाटज्ञातीय सा पुजा भा०वा० उछरगदेनाम्न्या स्वसुत तेजपाल तत्सुत सा० वस्तुपाल वर्धमान प्रमुख श्रेयोर्थं कारित (ता) प्रतिः तपागच्छे भ० **श्रीविजयसेनसूरि** पट्टधारि **श्रीविजयतिलकसूरिभिः** श्रीरस्तु संघस्य।।

यदि मुनिश्री की उक्त वाचना सही माना जाये तो **वीरवंशावली** द्वारा दी गयी विजयतिलकसूरि को आचार्यपद प्राप्ति की उक्त तिथि (वि०सं० १६७३) की प्रामाणिकता संदिग्ध हो जाती है।

वसन्तगढ़ के एक जिनालय में एक स्तम्भ पर उत्कीर्ण वि०सं० १६७५ का एक लेख मुनि जयन्तविजयजी[१३] को प्राप्त हुआ है। उन्होंने इस लेख की वाचना दी है, जो इस प्रकार है :

ॐ।।संवत् १६७५ वर्षे तपागच्छभट्टारकपुरंदर भट्टारक श्रीश्रीश्री श्रीश्रीश्रीश्रीविजयतिलकसूरिविजय (यिनि) राज्यमाने महोपाध्याय श्री ५ श्रीसोमविजयगणि शिष्यपंडितश्री ३ अमृतविजयगणि नेमविजय मु० कनकविजय चवरडिया नगरे चोमासुं रहीया श्रीश्रीशांतिनाथ रा कृता।।

उक्त लेख में उल्लिखित मुनिजन आचार्य विजयतिलकसूरि के आज्ञानुवर्ती माने जा सकते हैं।

विजयाणंदसूरि—विजयतिलकसूरि के निधन के पश्चात् ये उनके पट्टधर बने। इन्हीं के नाम पर तपागच्छ की इस शाखा का नामकरण विजयाणंदसूरिशाखा या आणंदसूरिशाखा हुआ प्रतीत होता है। उपा० मेघविजय के प्रशिष्य और लब्धिविजय के शिष्य भाणविजय (भानुविजय) द्वारा रचित **विजयाणंदसूरिनिर्वाणसज्झाय**[१४] (रचनाकाल वि०सं० १७११) से इनके बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है। विजयाणंदसूरि द्वारा रचित न तो कोई कृति मिलती है और न ही इस सम्बन्ध में कोई उल्लेख ही प्राप्त होता है किन्तु इनकी परम्परा के मुनिजनों द्वारा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कतिपय रचित और प्रतिलिपि की गयी विभिन्न ग्रन्थों की प्रतियों की प्रशस्तियों में इनका सादर उल्लेख मिलता है।

विजयाणंदसूरि के प्रशिष्य तेजविजय ने वि०सं० १६८२/ई०स० १६२६ में **शांतिनाथस्तव**[१५] की रचना की। कृति के अन्त में उन्होंने अपने गुरु-प्रगुरु का सादर उल्लेख किया है :

विजयाणंदसूरि
|
विजयविबुध
|
तेजविजय (वि०सं० १६८२/ई०स० १६२६ में **शांतिनाथस्तव** के रचनाकार)

वि०सं० १६८६/ई०स० १६३० में विजयाणंदसूरि के एक श्रावक शिष्य वाना ने जयानन्दरास[१६] की रचना की। कृति के अन्त में रचनाकार ने अपने गुरु का सादर स्मरण किया है।

परिशिष्टपर्व की वि०सं० १६९६/ई०स० १६३७ की लिखी गयी प्रति की प्रशस्ति[१७] से ज्ञात होता है कि इसके प्रतिलिपिकार कनकविजय, शांतिविजय, शिवविजय आदि विजयाणंदसूरि के शिष्य थे। इन्होंने स्वपठनार्थ उक्त कृति की प्रतिलिपि की थी।

शांतिविजय के शिष्य मानविजय हुए जिनके द्वारा रचित विभिन्न कृतियां मिलती हैं।[१७अ] इनका विवरण इस प्रकार है :

१. **भवभावना बालावबोध** (वि०सं० १७२५)
२. **सुमतिकुमारस्तव** (वि०सं० १७२८ के आसपास)
३. **गुरुतत्त्वप्रकाश** (वि०सं० १७३१)
४. **धर्मसंग्रह** (वि०सं० १७३१)
५. **उत्तराध्ययनबालावबोध** (वि०सं० १७४१)
६. **नयविचाररास**
७. **चौबीसी**
८. **चौबीस जिननमस्कार**
९. **सिद्धचक्रस्तवन**
१०. **गुणस्थानगर्भित शांतिनाथविज्ञप्तिरूपस्तव**
११. **आठमदसज्झाय**
१२. **श्रावकना २१ गुणसज्झाय**
१३. **श्रावकबारव्रत सज्झाय**

वि०सं० १६९८ के तीन प्रतिमालेखों में मानविजय को विजयाणंदसूरि के शिष्य के रूप में दर्शाया गया है जबकि अपनी विभिन्न कृतियों की प्रशस्तियों में मानविजय ने स्वयं को विजयाणंदसूरि का प्रशिष्य और शांतिविजय का शिष्य बताया है:

विजयाणंदसूरि
|
शांतिविजय

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

|

मानविजय (रचनाकार)

वि०सं० १७३२/ई०स० १६७६ में लिखी गयी **सुबोधिकावृत्ति** की प्रशस्ति[१५] में प्रतिलिपिकार ने स्वयं को विजयाणंदसूरि का प्रशिष्य और विजयगणि का शिष्य कहा है।

विजयाणंदसूरि

|

विजयगणि

|

गुणविजय (वि०सं० १७३२/ई०स० १६७६ में **सुबोधिका वृत्ति** के प्रतिलिपिकार)

वि०सं० १६८३ फाल्गुन वदि ४ के तीन प्रतिमालेखों[१६] तथा वि०सं० १६९१ के एक प्रतिमालेख[१७] में प्रतिमाप्रतिष्ठापक के रूप में विजयाणंदसूरि का नाम मिलता है। इसी प्रकार वि०सं० १६९८ के तीन लेखों[१८] में इनके शिष्य मानविजय और प्रशिष्य अमृतविजय का नाम मिलता है। वि०सं० १६९८ के ही दो अन्य लेखों[१९] में केवल अमृतविजय और उनके प्रगुरु विजयाणंदसूरि का नाम मिलता है।

प्रसिद्ध श्रावक कवि ऋषभदास ने स्वरचित **नवतत्त्वरास** (वि०सं० १६७६), **हीरविजयसूरिनोबारहबोलनोरास** (वि०सं० १६८४), **मल्लिनाथरास** (वि०सं० १६८५) आदि की प्रशस्तियों में उन्हें विजयाणंदसूरि के काल में रचा बताया है।[२१] यही बात वि०सं० १६७९ में संघविजय द्वारा रचित **अमरसेनवयरसेनराजर्षिआख्यान** की प्रशस्ति[२४], वि०सं० १६७८ में कीर्तिविजय द्वारा प्रतिलिपित **सामाचारी** की प्रशस्ति[२५], वि०सं० १६८८ में अमृतविजय द्वारा प्रतिलिपित **विचारसारप्रकीर्णक** की प्रशस्ति[२६] और उनके शिष्य मुक्तिविजय द्वारा लिखित वि०सं० १६९४ की **प्राकृतनाममाला** की प्रशस्ति[२७] में भी कही गयी है।

वि०सं० १६९७-१७३५ के मध्य भावविजय द्वारा रचित विभिन्न कृतियों की प्रशस्तियों में विजयतिलकसूरि और उनके पट्टधर विजयाणंदसूरि का सादर उल्लेख मिलता है[२८] जिससे स्पष्ट होता है कि ये उनके आज्ञानुवर्ती रहे होंगे।

विजयराजसूरि—वि०सं० १७११ में विजयाणंदसूरि के निधन के उपरान्त इन्होंने तपागच्छ की इस शाखा का नायकत्त्व ग्रहण किया। इनके द्वारा भी रचित कोई कृति नहीं मिलती है। वि०सं० १७०६ से वि०सं० १७२१ तक के प्रतिमालेखों में प्रतिमा-प्रतिष्ठापक के रूप में इनका नाम मिलता है। इनका विवरण निम्नानुसार है :

क्रमांक	वि०सं०	तिथि/मिति	प्राप्तिस्थान	संदर्भग्रन्थ
१.	१७०६	ज्येष्ठ सुदि १३ रविवार	कुन्थुनाथ जिनालय, मांडवीपोल, खंभात	बुद्धिसागर, संपा०, **जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक ६४८.
२.	१७०६	ज्येष्ठ.....गुरुवार	नेमिनाथ जिनालय, मुर्शिदाबाद	पूरनचन्दनाहर, संपा०, **जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक १०१४.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३.	१७१०	ज्येष्ठ सुदि ६ गुरुवार	शांतिनाथ जिनालय, नदियाड	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ३८१.
४.	१७१०	ज्येष्ठ सुदि ६ गुरुवार	बालावसही, शत्रुंजय	मुनि कांतिसागर, संपा०, **शत्रुंजयवैभव**, लेखांक ३०६ए तथा मुनिजिनविजय, संपा०, **प्राचीनजैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक ३१.
५.	१७१०	ज्येष्ठ सुदि ६	घर देरासर, लखनऊ	नाहर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक १६१४.
६.	१७१०	पौष वदि ६ गुरुवार	सुमतिनाथ जिनालय, सीनोर	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक ३६८.
७.	१७२१	ज्येष्ठ सुदि ३ रविवार	अरनाथ जिनालय, जीरावाड़ो, खंभात	वही, भाग २, लेखांक ७७१.
८.	१७२१	"	ऋषभदेव का लघुप्रासाद, अचलगढ़	मुनि जयन्तविजयजी, संपा०, **अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेख-संदोह**, (आबू, भाग ५), लेखांक ४८५. एवं मुनि जिनविजयजी, पूर्वोक्त, भाग २, लेखांक २६९.
९.	१७२१	"	गौडीपार्श्वनाथ जिनालय, कोलर	मुनि जयन्तविजय, पूर्वोक्त, लेखांक २४३.
१०.	१७२१	"	अजितनाथ जिनालय, सिरोही	वही, लेखांक २५७.
११.	१७२१	"	वीरजिनालय, रीजरोड, अहमदाबाद	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ९९०.

जीवविचारप्रकरण[२९] की वि०सं० १७१७ की और **भवभावनास्तवक**[३०] की वि०सं० १७२६ में लिखी गयी प्रतियों की प्रशस्तियों में विजयराजसूरि का सादर उल्लेख मिलता है। ठीक यही बात वि०सं० १७३२ में रचित **अतिचारमयबत्तीस श्रीमहावीरस्तव**[३१] और **रतनपालरास**[३२] (वि०सं० १७३२) की प्रशस्तियों में भी कही गयी है।

कर्मग्रन्थबालावबोध की एक प्रति मुनिराज श्री पुण्यविजयजी के संग्रह में संरक्षित[३३] है। इस प्रति की प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि इसे विजयराजसूरि के काल में लिखा गया था, परन्तु रचनाकाल नहीं दिया गया है। श्रीअम्बालाल शाह ने इसे वि०सं० १६५० में लिखित बतलाया[३४] है जो वस्तुतः भ्रामक और सत्यता से परे है। विजयराजसूरि के शिष्य ऋद्धिविजय द्वारा रचित **वरदत्तगुणमंजरीरास** (वि०सं० १७०३) और **रोहिणीरास** (वि०सं० १७१६)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नामक कृतियां मिलती हैं।[२७] वि०सं० १७४२ के बाद विजयराजसूरि का निधन हुआ।

विजयराजसूरि के एक अन्य शिष्य दानविजय द्वारा वि०सं० १७५० में **कल्पसूत्र** पर रची गयी **दानदीपिका** नामक कृति प्राप्त होती है ऐसा मुनि कांतिसागर जी ने उल्लेख किया है।[२८]

विजयमानसूरि—वि०सं० १७४२ में विजयराजसूरि के निधन के पश्चात् विजयमानसूरि ने इस शाखा का नायकत्व ग्रहण किया। इनके द्वारा भी रचित कोई कृति नहीं मिलती है। वि०सं० १७७० में इनका देहान्त हुआ। वि०सं० १७५१ में **कल्पसूत्रस्तवक**[२९] और वि०सं० १७५७ में **संग्रहणीसूत्र**[३०] के प्रतिलिपिकार महिमाविजय ने स्वयं को विजयमानसूरि का शिष्य बतलाया है। वि०सं० १७७६ के आस-पास इनके शिष्य आनन्दविजय ने क्षेत्रसमास पर **बालावबोध** की रचना की।[३१] वि०सं० १७९५ में **भाष्यत्रय** के प्रतिलिपिकार पं० माणिक्यविजय ने स्वयं को पं० हर्षविजय का शिष्य और विजयमानसूरि का प्रशिष्य कहा है:

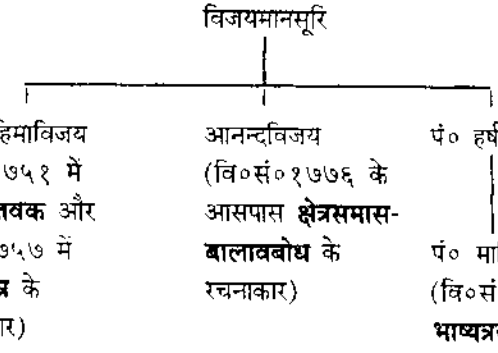

विजयऋद्धिसूरि—वि०सं० १७७० में विजयमानसूरि के निधन के पश्चात् विजयऋद्धिसूरि उनके पट्टधर बने। **सोहमकुलपट्टावली** में इनके मृत्यु की तिथि वि०सं० १७९७ दी गयी है।[३२] वि०सं० १७९५ में इनके द्वारा अपने गुरु की चरणपादुका स्थापित करने का उल्लेख मिलता है। मुनि जयन्तविजयजी ने इस लेख की वाचना निम्नानुसार दी है[३३] :

सं० १७९५ भ० हीरविजयसूरि भ० विजयसेनसूरि भ० विजयतिलकसूरि भ० विजयआणंदसूरि भ० विजयराजसूरि भ० विजयमानसूरीणां पादुका प्रतिष्ठिता श्रीविजयऋद्धिसूरिभिः।

इसी प्रकार वि०सं० १७९८ वैशाख सुदि १ सोमवार के एक प्रतिमालेख, में भ०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अनन्तनाथ की धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण है और आज सुमतिनाथ जिनालय, माधोलालबाबू की धर्मशाला, पालीताना में प्रतिष्ठापित है, प्रतिमा प्रतिष्ठापक आचार्य के रूप में विजयऋद्धिसूरि का नाम मिलता है।

श्री पूरनचन्द नाहर ने इस लेख की वाचना दी है[१], जो निम्नानुसार है :

सं० १७९८ वैशाख सुदि १ सो (म) शा० खिमचंद भार्या विश्व श्री अनन्त विंब प्र० भ० श्री विजयऋद्धि सूरि।

वीरवंशावली में इनके मृत्यु की तिथि वि०सं० १८०६ बतलायी गयी है[२], जो सत्य प्रतीत होती है।

वि०सं० १७८० में **चौबीसी** के रचनाकार ज्ञानविजय ने स्वयं को विजयऋद्धिसूरि का प्रशिष्य और हस्तिविजय का शिष्य कहा है।[३]

विजयऋद्धिसूरि

।

हस्तिविजय

।

ज्ञानविजय (वि०सं० १७८०/ई०स० १७२४ में **चौबीसी** के रचनाकार)

इन्हीं के काल में वि०सं० १७८३ में मानविजय की परम्परा के जीतविजय ने **चन्द्रकेवलीरास** की प्रतिलिपि की।[४]

विजयसौभाग्यसूरि—विजयऋद्धिसूरि के पश्चात् विजयसौभाग्यसूरि उनके पट्टधर बने। इनके बारे में **सोहमकुलपट्टावलीरास** से ज्ञात होता है कि वि०सं० १८१४ में इनका निधन हुआ।[५] भरुच के निकट स्थित सीनोर नामक स्थान स्थित विजयलक्ष्मीसूरि की देहरी के पास इनकी चरणपादुका स्थापित है। इस पर वि०सं० १८१५ चैत्र सुदि १० का लेख उत्कीर्ण है। बुद्धिसागरसूरि[६] ने इस लेख की वाचना दी है, जो इस प्रकार है:

सं० १८१५ वर्षे चैत्र सुदि १० वीरचंद भ० श्रीविजयसौभाग्यसूरीश्वरपादुकेभ्यो नमः सीनोरनगरे समस्तसंघेन का० श्रीकल्याणमस्तु शिवमस्तु॥

इनके बारे में विशेष विवरण उपलब्ध नहीं है।

विजयऋद्धिसूरि के द्वितीय पट्टधर विजयप्रतापसूरि हुए। मुनि कल्याणविजय जी के अनुसार इनका निधन भी वि०सं० १८१४ में हुआ।[७] इसके अलावा इनके बारे में कोई विवरण नहीं मिलता। ठीक यही बात इनके पट्टधर विजयउदयसूरि के बारे में भी कही जा सकती है।

विजयसौभाग्यसूरि के शिष्य एवं पट्टधर विजयलक्ष्मीसूरि हुए। वि०सं० १८१४ में इन्होंने गुरु से दीक्षा ग्रहण की[८] और इसी वर्ष विजयसौभाग्यसूरि का निधन भी हो गया।

चूंकि **सोहमकुलपट्टावलीरास** में विजयऋद्धिसूरि के दोनों पट्टधरों-विजयसौभाग्यसूरि और विजयप्रतापसूरि की मृत्यु की तिथि वि०सं० १८१४ बतलायी गयी है और विजयलक्ष्मीसूरि का दीक्षित होना भी इसी वर्ष में बतलाया गया है।[९] यदि उक्त तथ्य को सही माना जाये तो यह संभावना व्यक्त की जा सकती है कि विजयप्रतापसूरि के पट्टधर विजयउदयसूरि के

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नायकत्त्व को विजयसौभाग्यसूरि के आज्ञानुवर्ती मुनिजनों ने भी स्वीकार किया होगा और जब वि०सं० १८३७ में विजयउदयसूरि का निधन हो गया तब उस समय तक विजयलक्ष्मीसूरि भी काफी वयस्क हो चुके रहे थे और उन्होंने ही अपने गुरु विजयसौभाग्यसूरि और उनके गुरुभ्राता विजयप्रतापसूरि के अनुयायी मुनिजनों का नेतृत्त्व संभाला होगा। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि विजयऋद्धिसूरि के पश्चात् इस शाखा में जो भेद पड़ चुका था, वह विजयलक्ष्मीसूरि के समय में समाप्त हो गया।

विजयलक्ष्मीसूरि द्वारा संस्कृत और गुजराती भाषा में रचित विभिन्न कृतियां मिलती हैं:

१. **ज्ञानदर्शनचारित्र संवादरूपवीरस्तव** (रचनाकाल वि०सं० १८२७)
२. **षट्अष्टह्निकस्तवन** (वि०सं० १८३४)
३. **उपदेशप्रासाद-वृत्तिसहित** (वि०सं० १८४३)
४. **वीसस्थानकपूजास्तवन** (वि०सं० १८४५)
५. **चौबीसी**
६. **ज्ञानपंचमी (अथवा सौभाग्यपंचमी) देववंदन**
७. **रोहिणीसज्झाय**
८. **भगवतीसज्झाय**
९. **मृगापुत्रसज्झाय**
१०. **ज्ञानपंचमीसज्झाय**

वि०सं० १८४४ वैशाख सुदि १० के एक प्रतिमालेख में प्रतिमाप्रतिष्ठापक के रूप में विजयलक्ष्मीसूरि का नाम मिलता है। मुनि जिनविजय जी ने इस लेख की वाचना दी है[११], जो इस प्रकार है।

श्रीपार्श्वनाथ भीड़भंजन जी संवत् १८४४ वैशाख सु० १० गुरौ श्रीवारेजावास्तव्यसमस्तसंघेन कारिता श्री विजयलक्ष्मीसूरिभिः प्र०॥

वि०सं० १८५८ या १८५९ में इनकी मृत्यु हुई। सीनोर ग्राम में इनकी चरणपादुका स्थापित है जिसपर वि०सं० १८६८ का एक लेख उत्कीर्ण है[१२]। लेख का मूलपाठ इस प्रकार है :

सं० १८६८ श्रावण व० १२ बुध श्रीसीनोरग्रामे समस्तसंघेन का० श्रीविजयलक्ष्मी-सूरिपादुकेभ्यो नमः॥

विजयलक्ष्मीसूरि के पश्चात् विजयदेवेन्द्रसूरि, विजयमहेन्द्रसूरि और विजयसमुद्रसूरि ने क्रमशः इस शाखा का नेतृत्त्व किया। **सोहमकुलपट्टावलीरास** में इनका विवरण मिलता है। विजयसमुद्रसूरि के समय में ही कविराज दीपविजय ने उक्त रास की वि०सं० १८७७ में रचना की[१३] थी। दीपविजय द्वारा रचित विभिन्न कृतियाँ प्राप्त होती हैं।[१४]

विजयसमुद्रसूरि के पट्टधर विजयधनेश्वरसूरि हुए। श्रीमोहनलाल दलीचंद देसाई ने वि०सं० १८९३ के एक प्रतिमालेख में इनका नाम मिलने का उल्लेख किया है।[१५] परन्तु वह प्रतिमालेख कहां से प्राप्त हुआ है, उक्त लेख कहां प्रकाशित है, इन बातों की उन्होंने कोई स्पष्ट रूपसे जानकारी नहीं दी है।

बावन जिनालय, पेथापुर में अजितनाथ की धातु की एक प्रतिमा संरक्षित है जिसपर वि०सं० १८९३ माघ सुदि १० बुधवार का लेख उत्कीर्ण है। यह सम्भवतः वही प्रतिमा हो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सकती है जिसका श्रीदेसाई ने उल्लेख किया है।[1]

वस्तुतः विजयलक्ष्मीसूरि के पश्चात् इस शाखा में कोई प्रभावशाली मुनि या आचार्य नहीं हुए अतः शीघ्र ही इसका अस्तित्व समाप्त हो गया प्रतीत होता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

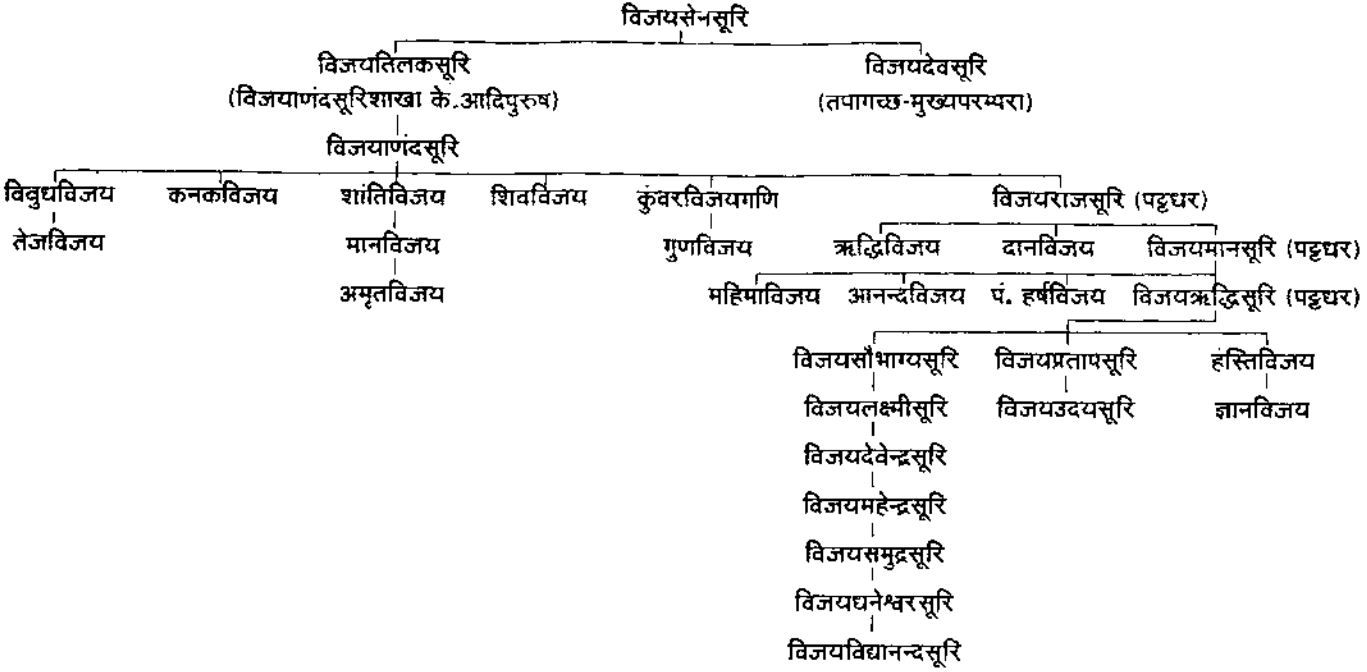

Jain Education International
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संदर्भ

१. मुनि जिनविजय, संपा०- **विविधगच्छीय पट्टावली संग्रह**, पृष्ठ १६०-२२७.

२. मुनि ज्ञानविजय, संपा०- **श्रीपट्टावलीसमुच्चय**, भाग २, श्रीचारित्रस्मारक ग्रन्थमाला, ग्रन्थांक ४४, अहमदाबाद १९५०ई०स०, पृष्ठ ९६-१२०.

३. **जैनगूर्जरकविओ**, भाग ९, द्वितीय संशोधित संस्करण, संपा०- डॉ० जयन्त कोठारी, पृष्ठ ८९-९३.

४. संपा०-**पट्टावलीपरागसंग्रह**, पृष्ठ २०५-२११.

५-६. पूर्वोक्त, पृष्ठ २२४.

७. मुनि विद्याविजयजी, संपा०- **ऐतिहासिकरासंग्रह**, भाग ४, भावनगर वि०सं० १९७७

८. मोहनलाल दलीचंद देसाई, **जैनगूर्जरकविओ**, भाग ३, द्वितीय संशोधित संस्करण, पृष्ठ १८०-१८१.

९. श्री अमृतलाल मगनलाल शाह, संपा०- **प्रशस्तिसंग्रह**, भाग २, पृष्ठ १८३, प्रशस्तिक्रमांक ७२६.

१०. वही, भाग २, पृष्ठ १८५, प्रशस्तिक्रमांक ७३२.

११. वही, भाग २, पृष्ठ १८४, प्रशस्तिक्रमांक ७३१.

१२. मुनि जयन्तविजय, संग्रा०/संपा०, **अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेखसंदोह**, लेखांक २५४.

१३. वही, लेखांक ४४७.

१४. देसाई, पूर्वोक्त, भाग ४, पृष्ठ १८८-८९.

१५. देसाई, पूर्वोक्त, भाग ३, पृष्ठ २४८-४९.

१६. वही, भाग ३, पृष्ठ २६८-७०.

१७. **श्रीप्रशस्तिसंग्रह**, भाग २, प्रशस्तिक्रमांक २७३, पृष्ठ २०३.

१७अ. देसाई, पूर्वोक्त, भाग ३, पृष्ठ ३५९-६५.

१८. **प्रशस्तिसंग्रह**, भाग २, प्रशस्तिक्रमांक ९२६, पृष्ठ २४६.

१९. बुद्धिसागरसूरि, संपा०- **जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह**, भाग १, लेखांक ६०९, भाग २, लेखांक २५४, ५८६.

२०. श्री अगरचन्द भंवरलाल नाहटा, संपा०-**बीकानेरजैनलेखसंग्रह**, लेखांक १८२७.

२१. मुनि जयन्तविजय, संग्रा०-संपा०- **अर्बुदप्राचीनजैनलेखसंदोह**, लेखांक ४७८,४७९,४८०.

२२. वही, लेखांक ४७६-४७७.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२३. देसाई, पूर्वोक्त, भाग ३, पृष्ठ २३-७९.
२४. वही, भाग ३, पृष्ठ१५७.
२५. **प्रशस्तिसंग्रह**, भाग २, प्रशस्तिक्रमांक ७४६, पृष्ठ १८७.
२६. A.P. Shah, Ed., *Catalogue of Sanskrit & Prakrit Mss. Muniraj Shree Panya Vijayaji's Collection*, Part-I, No. 3343, P-189.
२७. **प्रशस्तिसंग्रह**, भाग २, प्रशस्तिक्रमांक ७३१, पृष्ठ २०५.
२८. देसाई, पूर्वोक्त, भाग ३, पृष्ठ ३२२-३२९.
२९. A.P. Shah, *Catalogue of Sanskrit*....., Part-I, No. 3650, P-203.
३०. **प्रशस्तिसंग्रह**, भाग २, प्रशस्तिक्रमांक ८९२, पृष्ठ २३९.
३१-३२. शीतिकंठ मिश्र, **हिन्दीजैनसाहित्यका इतिहास**, **मरु-गूर्जर**, भाग ३, पार्श्वनाथ विद्यापीठ ग्रन्थमाला, ग्रन्थांक ९१, वाराणसी १९९७ ई०स०, पृष्ठ ४७३, ५३१.
३३. A.P. Shah, *Catalogue of Sanskrit & Prakrit Mss*...., Part-I, No. 3157, P-173.
३४. Ibid, P-404-405.
३४अ. देसाई, पूर्वोक्त, भाग ३, पृष्ठ ७४-७५.
३५. मुनि कांतिसागर, **शत्रुंजयवैभव**, पृष्ठ २१२.
३६. **प्रशस्तिसंग्रह,** भाग २, प्रशस्तिक्रमांक ९८८, पृष्ठ २६०.
३७. वही, भाग २, प्रशस्तिक्रमांक १०११, पृष्ठ २६६.
३८. देसाई, **जैनसाहित्यनो संक्षिप्तइतिहास**, कंडिका ९७४.
३९. **पट्टावलीसमुच्चय**, भाग २, पृष्ठ १००.
४०. मुनि जयन्तविजय, **अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेखसंदोह**, लेखांक २५९.
४१. पूरनचंद नाहर, संग्रा०: संपा०- **जैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक १७४५.
४२. **विविधगच्छीयपट्टावलीसंग्रह**, पृष्ठ २२७.
४३. देसाई, **जैनगूर्जरकविओ**, भाग ५, संपा०- जयन्तकोठारी, पृष्ठ ३१०-११.
४४. वही, भाग ४, पृष्ठ ४००.
४५. **पट्टावलीसमुच्चय**, भाग २, पृष्ठ १०१.
४६. **जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक ३७१.
४७. **पट्टावलीपरागसंग्रह**, पृष्ठ २०६.
४८-४९. **पट्टावलीसमुच्चय**, भाग २, पृष्ठ १०१.
५०. देसाई, **जैनगूर्जरकविओ**, भाग ६, पृष्ठ १२२-१२५.
५१. **प्राचीनजैनलेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक ५३४.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५२. बुद्धिसागर, **जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक ३७२.

५३. श्री विजयानंदसूरि पटधारी, समुद्रसूरि गच्छगाज;
तस गजे स्तवना कीधी, दिनदिन चढत दिवाजा रे. मु० २०
संवत अढार सत्योत्तर (१८७७) वरसे, शाक सत्तर बेहेंताल;
श्री सुरत बंदिरमें गाई, मोहम कुलगणमाल रे. मु० २१
पट्टावलीसमुच्चय, भाग २, पृष्ठ ११९.

५४. वही, आमुख, पृष्ठ ४-५.

५५. **जैनगूर्जरकविओ**, भाग ९, पृष्ठ ९३.

५६. बुद्धिसागरसूरि, पूर्वोक्त, भाग १, लेखांक ७१०.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तपागच्छ-राजविजयसूरिशाखा अपरनाम रत्नशाखा

तपागच्छ की नामशेष शाखाओं में राजविजयसूरि शाखा अपरनाम रत्नशाखा भी एक है। विजयराजसूरि इस शाखा के आदिपुरुष कहे जा सकते हैं और उनके शिष्य एवं पट्टधर रत्नविजय से यह शाखा रत्नशाखा के नाम से भी विख्यात् हुई।

राजविजयसूरि - पट्टावलीगतविवरणानुसार वि०सं० १५६४ में इनका जन्म हुआ था। इनके पिता का नाम देवदत्त और माता का नाम देवलदेवी था। इनका बचपन का नाम रामकुमार था। वि०सं० १५७१ में इन्होंने उपकेशगच्छ में दीक्षा ली और वि०सं० १५८४ में आचार्य पद पर प्रतिष्ठित होकर उपकेशगच्छ की परम्परानुसार देवगुप्तसूरि के पट्टधर के रूप में कक्कसूरि नाम प्राप्त किया।

इनकी परम्परा में हुए उदयरत्न नामक सुप्रसिद्ध रचनाकार द्वारा रचित **भावरत्नसूरिप्रमुखपांचपाटवर्णनगच्छपरम्परारास** के अनुसार इन्होंने महमूद नामक शासक की बीबी का सर्पदंश दूरकर उसे स्वस्थ किया था। इसके अलावा इन्होंने अनेक चमत्कारों से उसे प्रभावित किया जिससे प्रसन्न होकर उसने इन्हें **राजवल्लभसूरि** नाम दिया। वि०सं० १६१३ में इन्होंने क्रियोद्धार कर के सम्पूर्ण परिग्रह त्याग दिया और वि०सं० १६१५ में तपागच्छीय आचार्य आनन्दविमलसूरि के पास योगोद्वहन कर राजविजयसूरि नाम प्राप्त किया। उस समय यह भी निश्चित हुआ कि आनन्दविमलसूरि के पट्टधर विजयदानसूरि होंगे तथा राजविजयसूरि युवराज पद पर रहेंगे और समय आने पर विजयदानसूरि के पट्टधर होंगे। आनन्दविमलसूरि के निधन के बाद विजयदानसूरि उनके पट्टधर हुए किन्तु उन्होंने बाद में एक बालक को दीक्षित कर हीरहर्ष नाम दिया और उसे अपना पट्टधर घोषित कर दिया। यही हीरहर्ष बाद में आचार्य पद पर हीरविजयसूरि के नाम से प्रसिद्ध हुए और राजविजयसूरि ने उनसे अपना सम्बन्ध विच्छेद कर लिया। वि०सं० १६२४ में झींझुवाड़ा में इनका निधन हुआ। तत्पश्चात् इनके शिष्य रत्नविजय को तपागच्छ-कमलकलशशाखा के आचार्य लक्ष्मीरत्नसूरि ने सूरि पद प्रदान कर राजविजयजी का पट्टधर घोषित किया। इसी समय निश्चित किये गये शर्त के अनुसार इस शाखा के सभी मुनिजनों के **रत्नान्त** नाम रखे जाने लगे और इसका एक नाम **रत्नशाखा** भी प्रचलित हो गया। रत्नविजयसूरि के पश्चात् इस शाखा में हीररत्नसूरि, जयरत्नसूरि, भावरत्नसूरि, दानरत्नसूरि, मुक्तिरत्नसूरि आदि कई प्रभावशाली आचार्य हो चुके हैं। सुप्रसिद्ध रचनाकार उदयरत्न, हंसरत्न, हर्षरत्न आदि भी तपागच्छ की इसी शाखा से सम्बद्ध थे। इस शाखा के विभिन्न मुनिजनों द्वारा बड़ी संख्या में अनेक रचनाओं की प्रतिलिपियां तैयार की गयीं, जिनकी प्रशस्तियों में इस शाखा के विभिन्न मुनिजनों का उल्लेख मिलता है जो इस शाखा के इतिहास के अध्ययन की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। इस शाखा की एक पट्टावली भी मिलती है, जो विक्रम सम्वत् की २०वीं शती में रची गयी प्रतीत होती

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

है। इसमें राजविजयसूरि से लेकर अंतिम पट्टधर भाग्यरत्नसूरि तक का नाम मिलता है। इसके रचनाकार कौन हैं! यह कब और कहां रची गयी है, इस बारे में कोई सूचना नहीं मिलती। फिर भी इस शाखा के मुनिजनों की नामावली और उनसे सम्बद्ध तिथियों की जानकारी के लिये यह एक महत्त्वपूर्ण साक्ष्य है। इस शाखा से सम्बद्ध अभिलेखीय साक्ष्यों का नितान्त अभाव है, अत: उदयरत्न द्वारा रचित **भावरत्नसूरिप्रमुखपांचपाटवर्णनगच्छपरम्परारास**, **ग्रन्थप्रशस्तियां** और **पुस्तकप्रशस्तियां** एवं इस शाखा की एकमात्र उपलब्ध **पट्टावली**, जिसका ऊपर उल्लेख आ चुका है, को तपागच्छ की इस शाखा के इतिहास के अध्ययन का आधार बनाया गया है।

मोहनलाल दलीचंद देसाई और मुनि कल्याणविजय जी ने इस शाखा की पट्टावली का सार दिया है[1] जिसके अनुसार इससे सम्बद्ध आचार्यों का क्रम इस प्रकार है :

राजविजयसूरि (रत्नशाखा के आदिपुरुष)
|
रत्नविजयसूरि (वि०सं० १६२४ में सूरि पद; वि०सं० १६७५ में निधन)
|
हीररत्नसूरि (वि०सं० १६६१ में आचार्य पद, वि०सं० १६७५ में भट्टारकपद; वि०सं० १७१५ में स्वर्गस्थ)
|
जयरत्नसूरि (वि०सं० १६९९ में राजनगर में आचार्यपद; वि०सं० १७१५ में भट्टारकपद; वि०सं० १७३४में स्वर्गस्थ)
|
भावरत्नसूरि (वि०सं० १७३४ में भट्टारकपद; वि०सं० १७७२ में स्वर्गस्थ)
|
दानरत्नसूरि (वि०सं० १७७२ में भट्टारकपद; वि०सं० १८२४ में स्वर्गस्थ)
|
कीर्तिरत्नसूरि
|
मुक्तिरत्नसूरि (वि०सं० १८७४ में सूरिपद; वि०सं० १८७६ में निधन)
|
पुण्योदयरत्नसूरि (वि०सं० १८७६ में सूरिपद; वि०सं० १८९० में स्वर्गस्थ)
|
अमृतरत्नसूरि (वि०सं० १८९० में सूरिपद)
|
चन्द्रोदयरत्नसूरि
|
सुमतिरत्नसूरि
|
भाग्यरत्नसूरि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुनि कल्याणविजय जी ने जयरत्नसूरि के पट्टधर के रूप मे हेमरत्नसूरि का नाम दिया है, जबकि प्रशस्तियों में जयरत्नसूरि के पट्टधर के रूप में भावरत्नसूरि का ही नाम मिलता है। मुनिश्री के उक्त कथन का क्या आधार है? यह ज्ञात नहीं होता।

रत्नशाखा के आदिपुरुष राजविजयसूरि और उनके पट्टधर रत्नविजयसूरि तथा रत्नविजयसूरि के पट्टधर हीररत्नसूरि द्वारा रचित न तो कोई कृति मिलती है और न ही इस सम्बन्ध में कोई उल्लेख ही प्राप्त होता है। ठीक यही बात इस शाखा के अन्य पट्टधरों के बारे में भी कही जा सकती है। किन्तु इस शाखा के विभिन्न रचनाकारों व प्रतिलिपिकार मुनिजनों ने अपनी कृतियों और प्रतिलिपियों की प्रशस्तियों में अपने पूर्वजों का सादर उल्लेख किया है।

वि०सं० १६९३/ई०स० १६३७ में लिखी गयी **प्रेमलासतीरास** की प्रशस्ति[1] में प्रतिलिपिकार मानविमल ने अपने गुरु जसविमल और प्रगुरु हीररत्नसूरि का सादर उल्लेख किया है :

हीररत्नसूरि
|
जसविमल
|
मानविमल (वि०सं० १६९३/ई०स० १६३७ में **प्रेमलासतीरास** के प्रतिलिपिकार)

वि०सं० १६९६/ई०स० १६४० में रची गयी **नेमिजिनरास** अपरनाम **वसंतविलास** की प्रशस्ति[2] में रचनाकार हर्षरत्न ने अपनी गुरु-परम्परा दी है, जो इस प्रकार है :

हीररत्नसूरि
|
लब्धिरत्न
|
सिद्धिरत्न
|
हर्षरत्न (वि०सं०१६९६/ई०स०१६४० में **नेमिजिनरास** अपरनाम **वसंतविलास** के रचनाकार)

वि०सं० १७१४/ई०स० १६५८ में लिखीगयी **कल्याणमंदिरस्तोत्र** की प्रतिलेखन प्रशस्ति[3] में प्रतिलिपिकार देवरत्न ने स्वयं को हीररत्नसूरि की परम्परा को बतलाते हुए अपनी गुरु-परम्परा इस प्रकार दी है :

हीररत्नसूरि
|
पं० लब्धिरत्नगणि
|
शुभरत्न राजरत्न
|
देवरत्न (वि०सं०१७१४/ई०स० १६५८ में **कल्याणमंदिर**-स्तोत्र के रचनाकार)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वि०सं० १६३६ में रची गयी **आठकर्मनोरास** की एक प्रतिलिपि, जिसमें प्रतिलेखनकाल नहीं दिया गया है, की प्रशस्ति में कहा गया है कि उक्त रचना हीररत्नसूरि के शिष्य विनयरत्न के भ्राता विवेकरत्न के पठनार्थ लिखी गयी थी।[७] चूंकि हीररत्नसूरि का समय (वि०सं० १६७५-१७१४) सुनिश्चित है, अतः उक्त प्रतिलिपि का भी यही समय माना जा सकता है।

हीररत्नसूरि

विनयरत्न — विवेकरत्न (इनके पठनार्थ **आठकर्मनो-रास** की प्रतिलिपि की गयी)

१८वीं शताब्दी के प्रसिद्ध रचनाकार उदयरत्न भी हीररत्नसूरि की परम्परा के थे। वि०सं० १७४६/ई०स० १६९० में इनके द्वारा लिखी गयी **दानदीपिका** की एक प्रति प्राप्त हुई है। इसकी प्रशस्ति[८] में इन्होंने अपनी गुरु-परम्परा दी है, जो इस प्रकार है :

हीररत्नसूरि
|
लब्धिरत्न
|
महोपाध्याय सिद्धिरत्न
|
पं० मेघरत्न
|
अमररत्न
|
उदयरत्न (वि०सं० १७४६/ई०स० १६९० में **दानदीपिका** के प्रतिलिपिकार)

वि०सं० १७४३/ई०स० १६८७ में लिखी गयी **शुकराजरास** की प्रति की प्रशस्ति[९] में भी उदयरत्न का प्रतिलिपिकार के रूप में नाम मिलता है।

उदयरत्न द्वारा वि०सं० १७४९ से १७९९ के मध्य रचित विभिन्न रचनायें प्राप्त हुई हैं।[१०] इनका विवरण इस प्रकार है :

१.	**जम्बूस्वामीरास**	वि०सं०१७४९/ई०स० १६८३
२.	**अष्टप्रकारीपूजारास**	वि०सं०१७५५/ई०स० १६९९
३.	**स्थूलिभद्ररास**	वि०सं०१७५९/ई०स० १७०३
४.	**शंखेश्वरपार्श्वनाथनो छंद**	वि०सं०१७५९/ई०स० १७०३
५.	**राजसिंहरास अपरनाम नवकाररास**	वि०सं०१७६२/ई०स० १७०६
६.	**ब्रह्मचर्यनी नववाडसज्झाय**	वि०सं०१७६३/ई०स० १७०७
७.	**बारव्रतरास**	वि०सं०१७६५/ई०स० १७०९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८.	**मलयसुन्दरी महाबलरास** अपरनाम **विनोदविलासरास**	वि०सं०१७६६/ई०स०	१७१०
९.	**यशोधररास**	वि०सं०१७६७/ई०स०	१७११
१०.	**लीलावतीसुमतिविलासरास**	वि०सं०१७६७/ई०स०	१७११
११.	**धर्मबुद्धिमंत्री अने पापबुद्धिराजानो रास**	वि०सं०१७६८/ई०स०	१७१२
१२.	**शत्रुंजयतीर्थमालाउद्धाररास**	वि०सं०१६६९/ई०स०	१७१३
१३.	**भुवनभानुकेवलीनो रास** अपरनाम **रसलहरीरास**	वि०सं०१६६९/ई०स०	१७१३
१४.	**नेमिनाथशलोको**		
१५.	**शालिभद्रनो शलोको**	वि०सं०१७७०/ई०स०	१७१४
१६.	**भरतबाहुबलिनो शलोको**		
१७.	**भावरत्नसूरिप्रमुख पांचपाटवर्णन गच्छपरम्परारास** इस कृति में राजविजयसूरि, विजयरत्नसूरि, हीररत्नसूरि, जयरत्नसूरि और भावरत्नसूरि - इन पांच पट्टधर आचार्यों का विवरण दिया गया है।	वि०सं०१७७०/ई०स०	१७१४
१८.	**ढंढणमुनिनी सज्झाय**	वि०सं०१७७२/ई०स०	१७१६
१९.	**चौबीसी**	वि०सं०१७७२/ई०स०	१७१६
२०.	**दामन्नकरास**	वि०सं०१७८२/ई०स०	१७२६
२१.	**वरदत्तगुणमंजरीरास**	वि०सं०१७८२/ई०स०	१७२६
२२.	**सुदर्शनश्रेष्ठीरास**	वि०सं०१७८५/ई०स०	१७२९
२३.	**विमलमेहतानो शलोको**	वि०सं०१७९५/ई०स०	१७३९
२४.	**नेमिनाथराजीमतीबारमास**	वि०सं०१७९५/ई०स०	१७३९
२५.	**हरिवंशरास** अपरनाम **रसरत्नाकररास**	वि०सं०१७९९/ई०स०	१७४३
२६.	**सूर्ययशा (भरतपुत्र)नो रास**		
२७.	**भाभापारसनाथनुं स्तवन**		

इसके अतिरिक्त इनके द्वारा रचित अन्य स्तवन, सज्झाय और भास आदि भी बड़ी संख्या मे प्राप्त हुए हैं।

वि०सं० १७५१/ई०स० १६९५ में **अरहन्नकरास** के प्रतिलिपिकार मानरत्न[४] ने स्वयं को भावरत्नसूरि का शिष्य बताया है। इस भावरत्नसूरि को हीररत्नसूरि के प्रपट्टधर और जयरत्नसूरि के पट्टधर भावरत्नसूरि से समसामयिकता, नामसाम्य, गच्छसाम्य आदि को देखते हुए अभिन्न माना जा सकता है।

(हीररत्नसूरि)

।

(जयरत्नसूरि)

।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भावरत्नसूरि (वि०सं० १७३४-१७७२)

मानरत्न (वि०सं० १७५१/ई०स० १६९५ में **अरहन्नकरास** के प्रतिलिपिकार)

मुनि मानरत्न द्वारा वि०सं० १७५४ में लिखी गयी **रत्नसंचय**[१०] और वि०सं० १७५८ में लिखित **दशवैकालिकबालावबोध**[११] की प्रतियां भी प्राप्त हुई हैं।

विक्रम सम्वत् की १८वीं शताब्दी के मध्य में इस शाखा में हंसरत्न नामक एक रचनाकार हुए हैं। उनके द्वारा रचित कुछ कृतियां मिलती हैं[१२] जो इस प्रकार हैं :

१. **चौबीसी** वि०सं० १७५५/ई०स० १६९९
२. **शिक्षाशतदूहा** वि०सं० १७८६/ई०स० १७३०
३. **अध्यात्मकल्पद्रुमबालावबोध**
४. **शत्रुंजयमहात्म्य**

श्री मोहनलाल दलीचंद देसाई[१३] ने इनकी गुरु-परम्परा दी है, जो इस प्रकार है:

गजविजयसूरि

|

|

|

हीररत्नसूरि

|

लब्धिरत्न

|

गजरत्न

|

लक्ष्मीरत्न

|

ज्ञानरत्न

|

हंसरत्न (रचनाकार)

वि०सं० १७६०/ई०स० १७०४ में लिखी गयी **चन्द्रमुनिरास** की प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि उक्त प्रति आचार्य भावरत्नसूरि के काल में लिखी गयी थी और इसके प्रतिलिपिकार के रूप में नयरत्न का नाम मिलता है।[१४] नयरत्न कौन थे, इस बारे में उक्त प्रशस्ति से कोई जानकारी नहीं मिलती, तथापि उनके रत्नान्त नाम होने तथा उनके द्वारा रत्नसूरि का सादर उल्लेख करने से उन्हें भावरत्नसूरि का शिष्य मानने में कोई बाधा नहीं है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भावरत्नसूरि

।

नयरत्न (वि०सं० १७६०/ई०स० १७०४ में **चन्द्रमुनिरास** के प्रतिलिपिकार)

वि०सं० १७६१/ई०स० १७०५ में लिखी गयी **रघुवंशकाव्यवृत्ति** के प्रतिलिपिकार भावरत्नसूरि[१०] और राजविजयसूरिशाखा के आचार्य भावरत्नसूरि को समसामयिकता, गच्छसाम्य, नामसाम्य आदि बातों को देखते हुए एक ही व्यक्ति सिद्ध होते हैं।

वि०सं० १७७३/ई०स० १७१७ में लिखीगयी **प्रतिक्रमणभाष्य** की प्रशस्ति में प्रतिलिपिकार तेजरत्न ने स्वयं को हीररत्नसूरि का प्रशिष्य और धनरत्न का शिष्य कहा है[११]:

हीररत्नसूरि

।

धनरत्न

।

तेजरत्न (वि०सं० १७७३/ई०स० १७१७ में **प्रतिक्रमणभाष्य** के प्रतिलिपिकार)

वि०सं० १७७३/ई०स० १७१७ में ही लिखीगयी **साधुप्रतिक्रमणबालावबोध** की प्रशस्ति में प्रतिलिपिकार के रूप में उक्त तेजरत्न के शिष्य सुबुद्धिरत्न का नाम मिलता है।[१२]

भावरत्नसूरि की परम्परा में हुए कनकरत्न द्वारा वि०सं० १७९४/ई०स० १७३८ में लिखी गयी **नर्मदासुन्दरीनोरास** की प्रति उपलब्ध हुई है।[१३] इसकी प्रशस्ति में प्रतिलिपिकार ने अपनी गुरु-परम्परा दी है, जो इस प्रकार है :

भावरत्नसूरि

।

महोपाध्याय पंडित शांतिरत्न

।

पंडित हस्तिरत्न

।

पंडित कनकरत्न (वि०सं० १७९४ में **नर्मदासुन्दरीनोरास** के प्रतिलिपिकार)

वि०सं० १७९५/ई०स०१७३९ में लिखी गयी **पंचाख्यान** की प्रशस्ति[१४] में प्रतिलिपिकार तिलकरत्न ने स्वयं को हीररत्नसूरि की परम्परा को बतलाते हुए अपनी गुरु-परम्परा निम्नानुसार दी है :

हीररत्नसूरि

।

लब्धिरत्न

।

हेमरत्न

।

तिलकरत्न (वि०सं० १७९५/ई०स० १७३९ में **पंचाख्यान** के प्रतिलिपिकार)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राजविजयसूरिशाखा के आचार्य दानरत्नसूरि (वि०सं० १७७२-१८२४) और वि०सं० १८०७/ई०स० १७५१ में लिखी गयी **श्रीपालरास** के प्रतिलिपिकार[२०] दानसागरसूरि निश्चय ही एक ही व्यक्ति हैं। इन्हीं के काल में वि०सं० १८१४ में मोहनरत्न ने **आगमसार** की प्रतिलिपि की।[२१] उक्त मोहनरत्न संभवतः इनके शिष्य रहे होंगे।

वि०सं० १८४९/ई०स० १७८३ में अज्ञात रचनाकार कृत **धन्नाचरितबालावबोध** के प्रतिलिपिकार हर्षरत्न भी इसी शाखा के थे। श्री देसाई ने इनकी गुरु-परम्परा निम्नानुसार दी है[२२] :

भावरत्नसूरि

।

महो०पं०शांतिरत्न

।

पं० हस्तिरत्न

।

पं० कनकरत्न

।

पं० बुद्धिरत्न

।

पं० धर्मरत्न

।

पं० हर्षरत्न (प्रतिलिपिकार)

दानरत्नसूरि (वि०सं० १७७२-१८२४) के पश्चात् कीर्तिरत्नसूरि ने इस शाखा का नेतृत्त्व संभाला। वि०सं० १८५०/ई०स० १७९४ में लिखी गयी **मानतुंगमानवतीनोरास** नामक कृति के प्रतिलिपिकार मयारत्न ने स्वयं को कीर्तिरत्नसूरि का शिष्य बतलाया है[२३]:

कीर्तिरत्नसूरि

।

मयारत्न (वि०सं० १८५०/ई०स० १७९४ में **मानतुंगमान-वतीरास** के प्रतिलिपिकार)

वि०सं० १८५२/ई०स० १७९६ में पूर्वोक्त हर्षरत्न ने **ढालमंजरी** की प्रतिलिपि की। इसकी प्रशस्ति में उन्होंने लम्बी गुर्वावली दी है, जिसे श्री देसाई ने उद्धृत किया है[२४]

वि०सं० १८५२/ई०स० १७९६ में **उत्तमकुमारनोरास** के रचनाकार पं० राजरत्न भी इसी शाखा के थे। इसकी प्रशस्ति[२५] में उन्होंने अपनी गुर्वावली दी है, जो निम्नानुसार है:

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हीररत्नसूरि
|
उदयरत्न
|
उत्तमरत्न
|
जिनरत्न
|
क्षमारत्न
|
पं० राजरत्न (वि०सं० १८५२/ई०स० १७९६ में
उत्तमकुमारनोरास के रचनाकार)

इन्ही राजरत्न के शिष्य मयांकररत्न द्वारा वि०सं० १८९६ में लिखी गयी **जम्बूस्वामीरास** की प्रति प्राप्त हुई है।[२६]

वि०सं० १८५६/ई०स० १८०० में **रत्नपालरास** के प्रतिलिपिकार मंछाराम भी स्वयं को हीररत्नसूरि की परम्परा का बतलाते हैं। इसकी प्रतिलिपि में उन्होंने अपनी गुरु-परम्परा निम्नानुसार दी है[२७] :

हीररत्नसूरि
|
धनरत्न
|
तेजरत्न
|
जोधरत्न
|
लावण्यरत्न
|
गोविन्दरत्न
|
मंछाराम (वि०सं० १८५६/ई०स० १८०० में
रत्नपालरास के प्रतिलिपिकार)

वि०सं० १८६३/ई०स० १८०७ में लिखी गयी **जम्बूस्वामीरास** की प्रति की प्रशस्ति में प्रतिलिपिकार रंगरत्न ने स्वयं को दानरत्नसूरि की परम्परा का बतलाया है[२८]:

दानरत्नसूरि
|
कल्याणरत्न
|
कुशलरत्न
|
रंगरत्न (प्रतिलिपिकार)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कीर्तिरत्नसूरि के पट्टधर मुक्तिरत्नसूरि हुए। इनके शिष्य पं० सौभाग्यरत्न द्वारा लिखी गयी **कुमारपालरास** की वि०सं० १८६९/ई०स० १८१३ की एक प्रति प्राप्त हुई है।[२९]

मुक्तिरत्नसूरि
।
पं० सौभाग्यरत्न (वि०सं० १८६९/ई०स० १८१३ में
कुमारपालरास के प्रतिलिपिकार)

वि०सं० १८८२/ई०स० १८२६ में **श्रीपालरास** के प्रतिलिपिकार प्रेमरत्न ने स्वयं को भावरत्नसूरि की परम्परा का बतलाते हुए अपनी गुर्वावली दी है[३०] :

भावरत्नसूरि
।
मानरत्न
।
सुमतिरत्न
।
माणिक्यरत्न
।
प्रेमरत्न (वि०सं० १८८२/ई०स० १८२६ में
श्रीपालरास के प्रतिलिपिकार)

इस प्रशस्ति में प्रतिलिपिकार प्रेमरत्न द्वारा तत्कालीन गच्छनायक पुण्योदयरत्नसूरि का नाम नहीं दिया गया है जो गच्छनायक के घटते हुए प्रभाव का द्योतक माना जा सकता है।

वि०सं० १८९३ पौष सुदि १ रविवार को लिखित **जयविजयकुंवरप्रबन्ध** के प्रतिलिपिकार तेजरत्न भी इसी शाखा के थे। इसकी प्रशस्ति में उन्होंने अपनी गुरु-परम्परा निम्नानुसार दी है[३१] :

कीर्तिरत्नसूरि
।
पंन्यास पं० मयारत्न
।
पं० सौभाग्यरत्न
।
पं० राजेन्द्ररत्न
।
पं० तेजरत्न (वि०सं० १८९३/ई०स० १८३७ में
जयविजयकुंवरप्रबन्ध के प्रतिलिपिकार)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वि०सं० १८९३ में ही लिखी गयी **सम्यकत्त्वकौमुदीरास** की प्रशस्ति में भी पं० तेजरत्न का नाम मिलता है।[२७]

तेजरत्न के शिष्य गुणरत्न द्वारा भी इसी वर्ष चैत्र सुदि ३ रविवार को **गजसिंहकुमाररास** की प्रतिलिपि की गयी।[२८]

हीरत्नसूरि की परम्परा के पं० मयांकररत्न द्वारा वि०सं० १८९६/ई०स० १८४० में **जम्बूरास**[२९] और वि०स० १९१० में **अजितसेनकनकावतीरास**[३०] की प्रतिलिपि की गयी। इनकी प्रशस्तियों में उन्होंने अपनी गुरु-परम्परा दी है, जो इस प्रकार है :

हीरत्नसूरि
|
|
|
उदयरत्न
|
उत्तमरत्न
|
जिनरत्न
|
क्षमारत्न
|
राजरत्न
|
मयांकररत्न (प्रतिलिपिकार)

मयांकररत्न के गुरु राजरत्न का ऊपर उल्लेख आ चुका है जिनके द्वारा लिखी गयी **उत्तमकुमारनोरास** की वि०सं० १८५२ की प्रति प्राप्त हुई है।

वि०सं० १८९८/ई०स०१८४२ में लिखी गयी **महावीरस्तवकबालावबोध** की प्रशस्ति में प्रतिलिपिकार विवेकरत्न ने स्वयं को मुक्तिरत्नसूरि का प्रशिष्य और देवेन्द्ररत्न का शिष्य कहा है[३१] :

मुक्तिरत्नसूरि
|
देवेन्द्ररत्नसूरि
|
विवेकरत्न (वि०सं० १८९८/ई०स० १८४२ में
महावीर-स्तवकबालावबोध के प्रतिलिपिकार)

वि०सं० १९१२ में लिखी गयी **चन्द्रराजारास** की प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि कीर्तिरत्नसूरि की परम्परा में हुए मुनि जयरत्न के पठनार्थ उक्त कृति की प्रतिलिपि की गयी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तपागच्छ-राजविजयसूरिशाखा अपरनाम रत्नशाखा के मुनिजनों की गुरु-परम्परा की तालिका

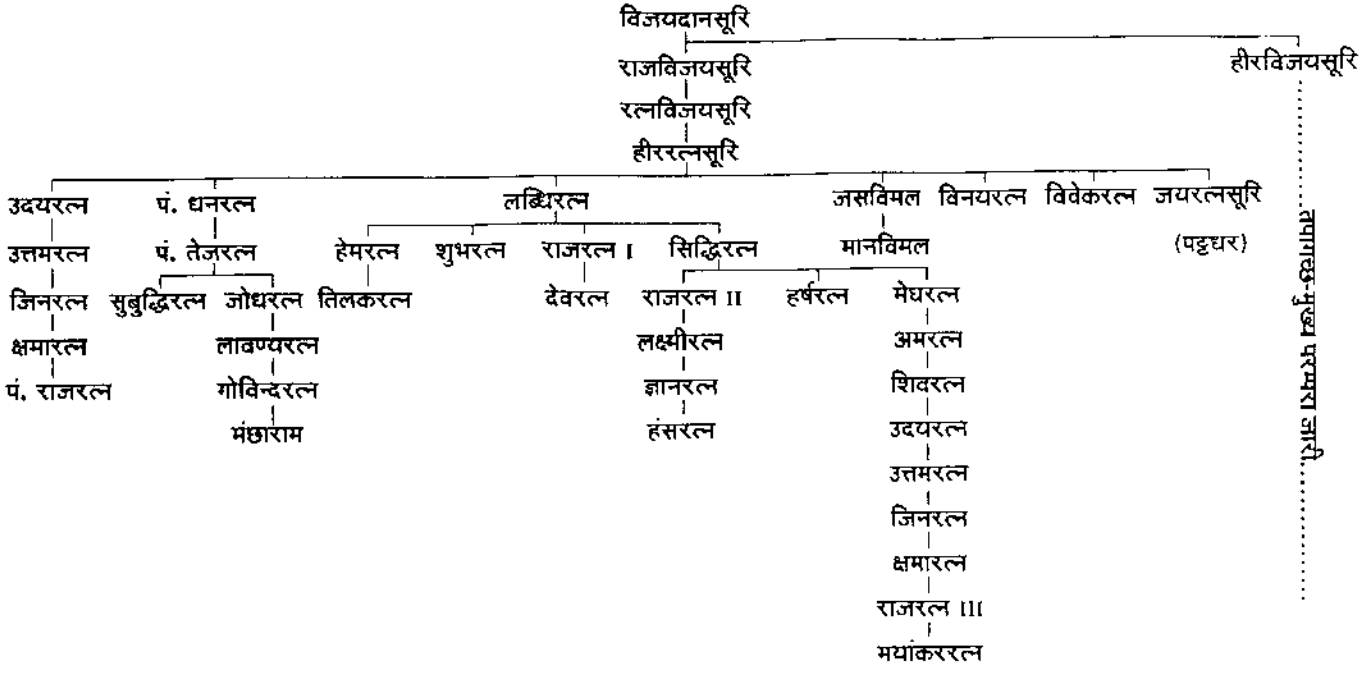

Jain Education International
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

तपागच्छ-राजविजयसूरिशाखा के हीररत्नसूरि के शिष्य परम्परा की तालिका

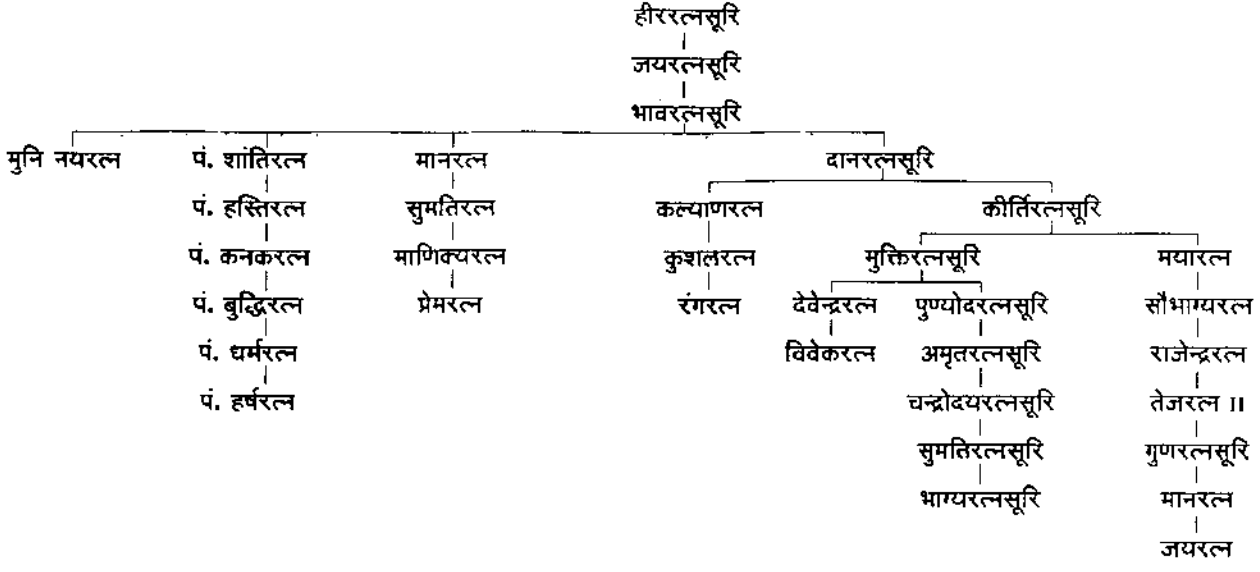

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्री देसाई ने उक्त प्रति की प्रशस्ति के आधार पर जयरत्न की गुरु-परम्परा दी है[१०], जो इस प्रकार है :

कीर्तिरत्नसूरि → मयारत्न → सौभाग्यरत्न → राजेन्द्ररत्न → गुणरत्न → मानरत्न → **जयरत्न** (वि०सं० १९१२/ई०स० १८५६ में इनके पठनार्थ **चन्द्रराजारास** की प्रतिलिपि की गयी।)

उक्त प्रशस्ति को इस शाखा से सम्बद्ध अंतिम साक्ष्य माना जा सकता है।

विभिन्न प्रशस्तियों के आधार पर संकलित उक्त छोटी-छोटी गुर्वावलियों के समायोजन से इस शाखा की पट्टावली को जो नवीन स्वरूप प्राप्त होता है, वह इस प्रकार है :

द्रष्टव्य-तालिका-१-२.

जैसा कि हम इस शाखा के प्रारम्भिक पृष्ठों में ही देख चुके हैं मुक्तिरत्नसूरि के पश्चात् इस शाखा में क्रमशः पुण्योदयरत्नसूरि, अमृतरत्नसूरि, चन्द्रोदयरत्नसूरि, सुमतिरत्नसूरि और भाग्यरत्नसूरि पट्टधर बने, परन्तु इनमें से किसी का भी उक्त पट्टावली को छोड़ कर अन्यत्र कोई उल्लेख नहीं मिलता है। किसी रचनाकार या प्रतिलिपिकार मुनि द्वारा अपनी रचनाओं या प्रतिलिपि की प्रशस्तियों में तत्कालीन गच्छनायक या शाखाप्रमुख का उल्लेख न करना निश्चय ही गच्छनायक के महत्त्वहीन होने का द्योतक है और गच्छनायक का महत्त्वहीन होना उस गच्छ या शाखा के महत्त्वहीन होने का परिचायक है। ठीक यही बात राजविजयसूरिशाखा के अंतिम पांच आचार्यों के बारे में भी कही जा सकती है। वर्तमान में इस शाखा का अस्तित्त्व केवल इतिहास के पृष्ठों तक ही सीमित है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संदर्भ

१. मोहन लालदलीचंद देसाई, **जैनगूर्जरकविओ**, भाग ९, पृष्ठ ९५-९८.
मुनि कल्याणविजय गणि, **पट्टावलीपरागसंग्रह**, पृष्ठ १९६-१९९.

२. अमृतलाल मगनलालशाह, **श्रीप्रशस्तिसंग्रह**, भाग २, प्रशस्ति क्रमांक ७२४, पृष्ठ २०४.
देसाई, पूर्वोक्त, भाग ३, द्वितीय संशोधित संस्करण, पृष्ठ ८९.

३. देसाई, वही, भाग ३, पृष्ठ ३१४.

४. अमृतलाल मगनलाल शाह, पूर्वोक्त, भाग २, प्रशस्ति क्रमांक ८१९, पृष्ठ २२३.

५. देसाई, पूर्वोक्त, भाग २, द्वितीय संशोधित संस्करण, पृष्ठ १६६

६. देसाई, वही, भाग ४, द्वितीय संशोधित संस्करण, पृष्ठ ३२२.

७. वही, पृष्ठ ३८-३९.

८. वही, भाग ५, द्वितीय संशोधित संस्करण, पृष्ठ ७६-११४.

९. वही, भाग ४, पृष्ठ ६७.

१०. शाह, पूर्वोक्त, भाग २, प्रशस्ति क्रमांक १००७, पृष्ठ २६५.

११. वही, भाग २, प्रशस्ति क्रमांक १०२५, पृष्ठ २६९.

१२-१३. देसाई, पूर्वोक्त, भाग ५, पृष्ठ १५७.

१४. शाह, पूर्वोक्त, भाग २, प्रशस्ति क्रमांक १०३४, पृष्ठ २७१.

१५. वही, भाग २, प्रशस्ति क्रमांक १०४५, पृष्ठ २७३-७४.

१६. वही, भाग २, प्रशस्ति क्रमांक १११८, पृष्ठ २८९.

१७. देसाई, पूर्वोक्त, भाग ५, पृष्ठ ३८६.

१८. वही, भाग ५, पृष्ठ १३९.

१९. शाह, पूर्वोक्त, भाग २, प्रशस्ति क्रमांक १२४५, पृष्ठ ३१८.

२०. देसाई, पूर्वोक्त भाग ४, पृष्ठ२५५

२१. वही, भाग ५, पृष्ठ २५२.

२२. वही, भाग ६, द्वितीय संशोधित संस्करण, पृष्ठ ३३४.

२३. वही, भाग ५, पृष्ठ १४८.

२४. वही, भाग ६, पृष्ठ १०८.

२५. वही, भाग ६, पृष्ठ १९६-१९८.

२६. वही, भाग ५, पृष्ठ ८०.

२७. वही, भाग ५, पृष्ठ १४४-४५.

२८. वही, भाग ५, पृष्ठ ८०.

२९. वही, भाग ४, पृष्ठ १०२.

३०. वही, भाग ४, पृष्ठ २२.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३१. वही, भाग ४, पृष्ठ ४४४.
३२. वही, भाग २, पृष्ठ १९४.
३३. वही, भाग ६, पृष्ठ ८०.
३४. वही, भाग ५, पृष्ठ ८०.
३५. वही, भाग ४. पृष्ठ ११८.
३६. वही, भाग ६, पृष्ठ १९६-१९८.
३७. वही, भाग ६, पृष्ठ ७१.
३८. वही, भाग ५, पृष्ठ १५४-५५.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तपागच्छ - विमलशाखा

तपागच्छ से उद्भूत विभिन्न शाखाओं में विमलशाखा भी एक है। तपागच्छ के ५६वें पट्टधर आचार्य आनन्दविमलसूरि के शिष्य हर्षविमल की परम्परा में हुए धीरविमलगणि के शिष्य नयविमल (ज्ञानविमलसूरि) से यह शाखा अस्तित्व में आयी। इस शाखा में ज्ञानविमलसूरि के पश्चात् क्रमशः सौभाग्यसागरसूरि, सुमतिसागरसूरि, विबुधविमलसूरि और महिमाविमलसूरि हुए।

विमलशाखा के इतिहास के अध्ययन के लिये स्रोत के रूप में इस शाखा के आदिपुरुष ज्ञानविमलसूरि द्वारा रचित विभिन्न कृतियों की प्रशस्तियां अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं।[1] इसी प्रकार इस शाखा के चतुर्थ पट्टधर विबुधविमलसूरि की कृतियों की प्रशस्तियां[2] भी उक्त दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं। **ज्ञानविमलसूरिरास**[3] और **विबुधविमलसूरिरास**[4] से भी उक्त दोनों आचार्यों के सम्बन्ध में महत्त्वपूर्ण विवरण प्राप्त होते हैं। इसके अलावा इस गच्छ की एक पट्टावली[5] भी मिली है, जिसका सार श्रीमोहनलाल दलीचंद देसाई ने गुजराती भाषा में प्रस्तुत किया है। इस शाखा से सम्बद्ध कुछ अभिलेखीय साक्ष्य भी मिले हैं जो वि०सं० १७५१ से लेकर वि०सं० १८४८ तक के हैं। यहाँ सभी साक्ष्यों के आधार पर इस शाखा के इतिहास पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है, इस शाखा की एक पट्टावली प्राप्त हुई है, जिसका सार श्री देसाई[6] ने प्रस्तुत किया है। इसे तालिका के रूप में निम्न प्रकार से रखा जा सकता है :

विजयप्रभसूरि (तपागच्छ के ६१वें पट्टधर)
|
ज्ञानविमलसूरि (वि०सं० १६९४ में जन्म; वि०सं० १७०२ में दीक्षा, वि०सं० १७२७ में पंन्यासपद; वि०सं० १८४८-४९ में आचार्यपद; वि०सं० १७८२ में निधन)
|
सौभाग्यसागरसूरि
|
सुमतिसागरसूरि
|
विबुधविमलसूरि (वि०सं० १७९८ में सूरिपद; वि०सं० १८१४ में स्वर्गस्थ)
|
महिमाविमलसूरि (वि०सं० १८१३ में सूरिपद प्राप्त; वि०सं० १८२० में इनके काल में **विबुधविमलसूरिरास** की रचना हुई)

ज्ञानविमलसूरि अपने युग के श्रेष्ठतम रचनाकारों में से एक थे। इनके द्वारा संस्कृत, प्राकृत और गुजराती भाषा में रची गयी अनेक कृतियां मिलती हैं जिनमें से कुछ निम्नानुसार[7] हैं :

१.	**नरभवदृष्टान्तोपनयमाला**	
२.	**साधुवंदनारास**	वि०सं० १७२८
३.	**जम्बूस्वामिरास**	वि०सं० १७३७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४.	नवतत्त्वबालावबोध	वि०सं० १७३९
५.	रणसिंहराजर्षिरास	वि०सं० १७४०
६.	श्रमणसूत्रबालावबोध	वि०सं० १७४३
७.	प्रश्नद्वात्रिंशिकास्तोत्रं स्वोपज्ञबालावबोधयुक्त	वि०सं० १७४५
८.	श्रीपालचरित	वि०सं० १७४५
९.	साढात्रणसौगाथानास्तवनोबालावबोध	
१०.	दसदृष्टान्तनीसज्झाय	
११.	प्रश्नव्याकरणसूत्रवृत्ति	
१२.	संसारदावानलस्तुतिवृत्ति	
१३.	बारव्रतग्रहणरास	वि०सं० १७५०
१४.	रोहिणीअशोकचन्द्ररास	वि०सं० १७५०
१५.	दीवालीकल्पबालावबोध	वि०सं० १७६३
१६.	आनन्दघनचौबीसीबालावबोध	वि०सं० १७६९
१७.	त्रणभाष्यबालावबोध	वि०सं० .....
१८.	अध्यात्मकल्पद्रुमबालावबोध	वि०सं० १७७०
१९.	चन्द्रकेवलीरास अपरनाम आनन्दमंदिररास	वि०सं० १७७०
२०.	पाक्षिकसूत्रबालावबोध	वि०सं० १७७३
२१.	योगदृष्टिनीसज्झायबालावबोध	
२२.	पर्युषणमहापर्वनीसज्झाय	
२३.	शांतिनाथकलश	
२४.	पार्श्वनाथकलश	

साधुवन्दना अपरनाम **गुरु-परम्परा ढाल** (रचनाकाल वि०सं० १७२८) में इन्होंने अपनी लम्बी गुर्वावली[1] दी है, जो इस प्रकार है :

जगच्चन्द्रसूरि (तपागच्छ के प्रवर्तक)

|

|

|

|

|

|

|

|

आनन्दविमलसूरि

|

|

|

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विजयदानसूरि	हर्षविमल
↓	↓
हीरविजयसूरि	(वि) जयविमल
↓	↓
विजयसेनसूरि	कीर्तिविमल
↓	↓
विजयदेवसूरि	विनयविमल
↓	↓
विजयप्रभसूरि	धीरविमल
	↓
	नयविमल अपरनाम ज्ञानसागरसूरि

वि०सं० १७७० में रचित **चन्द्रकेवलीरास** अपरनाम **आनन्दमंदिररास** की प्रशस्ति[1] में भी (नयविमल) ज्ञानविमलसूरि ने उक्त गुर्वावली दी है, साथ ही वि०सं० १७४९ में स्वयं को प्राप्त आचार्यपद और अपने नूतन नाम ज्ञानविमलसूरि का भी उल्लेख किया है :

आचार्यजपद ज्ञानविमल इति, नाम थयुं सुप्रसिद्धजी ॥१३॥
निधि युग मुनि शशी संवत माने (१७४९) फागण
सुदि पंचमी दिवसेंजी,
पत्तन नयर तणे तस पासे, पद पाम्या सुभ देसेंजी ॥१४॥
श्रीविजयप्रभसूरीनें पाटें, पक्ष संवेगी सुहाया जी,
ज्ञानविमलसूरी संप्रति दीपे, तेजे तरणी सवाया जी ॥१५॥

.....

अज्ञात कर्तृक **ज्ञानविमलसूरिरास**[2] के अनुसार वि०सं० १६९४ में इनका जन्म हुआ, वि०सं० १७०२ में विनयविमलगणि से दीक्षा ग्रहण की और धीरविमल के शिष्य बनकर नयविमल नाम प्राप्त किया। अमृतविमलगणि और मेरुविमलगणि के पास इन्होंने विद्याध्ययन किया। वि०सं० १७२७ माघ सुदि १० को मारवाड़ में सादड़ी के पास स्थित घाणेराव नामक स्थान पर विजयप्रभसूरि ने इन्हें पंडित (पंन्यास) पद प्रदान किया। वि०सं० १७४८ में इन्हें संडेर ग्राम में विजयप्रभसूरि की आज्ञा से महिमासागरसूरि ने आचार्य पद प्रदान किया और इस समय से ये ज्ञानविमलसूरि के नाम से प्रसिद्ध हुए।

कवि दीपसागरगणि के शिष्य सुखसागर द्वारा रचित **प्रेमविलासरास**[3] के अनुसार वि०सं० १७७७ में सूरत के श्रेष्ठी प्रेमजी पारेख ने ज्ञानसागरसूरि के उपदेश से शत्रुंजयतीर्थ की यात्रा हेतु संघ निकाला था। उक्त रास में इसका विस्तृत विवरण पाया जाता है। कवि सुखसागर के गुरु दीपसागरगणि किसके शिष्य थे! ज्ञानसागरसूरि से उनका क्या सम्बन्ध था, इस बारे में न तो उक्त कृति से और न ही सुखसागर की अन्य रचनाओं से इस सम्बन्ध में कोई जानकारी प्राप्त होती है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ज्ञानसागरसूरि ने सूरत, खंभात, राजनगर (अहमदाबाद), पाटण, राधनपुर, सादड़ी, घाणेराव, सिरोही, पालिताना, जूनागढ़ आदि स्थानों पर विहार किया। वि०सं० १७८२ में ८९ की आयु में खंभात में इनका निधन हुआ।[१२]

खरतरगच्छीय देवचन्द्रउपाध्याय से भी आचार्य ज्ञानविमलसूरि का घनिष्ठ सम्बन्ध था। ज्ञानविमलसूरि द्वारा प्रतिष्ठापित कुछ जिनप्रतिमायें प्राप्त हुई हैं, जो वि०सं० १७५१ से लेकर वि०सं० १७६९ तक की हैं। इनका विवरण इस प्रकार है :

चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय, शाकोपुरा, खंभात में ज्ञानविमलसूरि की चरणपादुका प्रतिष्ठापित है। इस पर वि०सं० १७८४ मार्गशीर्ष वदि ६ बुधवार का लेख उत्कीर्ण है। बुद्धिसागरसूरि ने इस लेख की वाचना दी है, जो निम्नानुसार है :

संवत् १७८४ मार्गसिरवदि ६ दिने बुधवासरे श्रीस्तंभतीर्थबंदिरे श्रीतपागच्छे सुविहितभट्टारक श्री आणंदविमलसूरिपट्टप्रभावकश्रीविजयदानसूरि तत्पट्टे भ० हीरविजयसूरिपट्टे सद..... विजयसेनसूरिपट्टे भ० श्रीविजयदेवसूरिपट्टप्रभावकसकलभ० पुरंदरभ० श्रीविजयप्रभसूरिपट्टे संविज्ञपक्षे भट्टारकप्रभुश्रीज्ञानविमलसूरीश्वरचरणपादुका: शुभं भवतु।।

जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह, भाग २, लेखांक ९११.

ज्ञानविमलसूरि के पट्टधर सौभाग्यसागरसूरि हुए। इनके बारे में इस शाखा की पट्टावली तथा प्रशस्तियों में नामोल्लेख के अलावा अन्य कोई जानकारी नहीं मिलती। खरतरगच्छीय बड़ा जिनालय, तुलापट्टी, कलकत्ता में संरक्षित धातु की एक जिनप्रतिमा पर वि०सं० १७८४ फाल्गुन सुदि ५ का एक लेख उत्कीर्ण है। मुनि कांतिसागर जी ने इस लेख की वाचना दी है, जो इस प्रकार है :

संवत् १७८४ वर्षे फाल्गुन सुदि ५ रवौ स्तम्भतीर्थवास्तव्य: अकेशवंछो (उपकेशवंशीय) संघवी जवराजीसुतासंघवी मंगल जी भा संघ बहुतयो श्री स्वयंप्रभ जिनबिम्बं कारितम् मोक्षमानाय तपागच्छ.....भ.....सौभाग्यसागरसूरिभि:।।

जैनधातुप्रतिमालेख, भाग १, लेखांक ३२६.

उक्त प्रतिमालेख में प्रतिमाप्रतिष्ठापक के रूप में उल्लिखित तपागच्छीय सौभाग्यसागरसूरि को संविग्नपक्षीय ज्ञानविमलसूरि के पट्टधर सौभाग्यसागरसूरि से समसामयिकता, नामसाम्य और गच्छसाम्य आदि बातों को देखते हुए अभिन्न माना जा सकता है।

सौभाग्यसागरसूरि के पश्चात् सुमतिसागरसूरि ने विमलशाखा का नायकत्त्व ग्रहण किया। इनके समय में ऋषिविमल के शिष्य लक्ष्मीविमल (बाद में विबुधविमलसूरि) ने वि०सं० १७८० में **वीसी**[१३] की रचना की। यह बात इस कृति की प्रशस्ति से ज्ञात होती है:

आकाश (वसु) सागर विधुवर्षे, विजयदशमी जाण रे,
गुरु वासर अति मनोहर, वीसी चढी परमाण रे।

ऊपर हम देख चुके हैं कि वि०सं० १७८२ में शाखा प्रवर्तक ज्ञानविमलसूरि का निधन हुआ था। वि०सं० १७८४ में उनके पट्टधर सौभाग्यसागरसूरि द्वारा प्रतिष्ठापित जिनप्रतिमा प्राप्त हुई है अत: सौभाग्यसागरसूरि के पश्चात् ही सुमतिसागरसूरि ने विमलशाखा का नायकत्त्व ग्रहण किया होगा। यदि पूर्वोक्त **वीसी** की सूचना को प्रामाणिक मानें तो ऐसी स्थिति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

में यह स्वीकार करना होगा कि वि०सं० १७८० में ज्ञानविमलसूरि की विद्यमानता में ही उनके पट्टधर सौभाग्यसागरसूरि ने भी अपना पट्टधर नियुक्त कर दिया होगा और ऐसा होना नितान्त अस्वाभाविक नहीं लगता।

सौभाग्यसागरसूरि और उनके पट्टधर सुमतिसागरसूरि के बीच किस प्रकार का सम्बन्ध था? वे परस्पर गुरुभ्राता थे अथवा गुरु-शिष्य, प्रमाणों के अभाव में इस बात का निर्णय कर पाना कठिन है। **पट्टावली** की सूचना के अनुसार वि०सं० १७८८/ई०स० १७३२ में सुमतिसागरसूरि का निधन हो चुका था।[१४] इस प्रकार मात्र ६ वर्षों के भीतर ही इस शाखा के तीन पट्टधर आचार्य ज्ञानविमलसूरि-सौभाग्यसागरसूरि-सुमतिसागरसूरि दिवंगत हो गये।

सुमतिसागरसूरि के पट्टधर लक्ष्मीविमल अपरनाम विबुधविमलसूरि हुए। वि०सं० १८२० में रचे गये **विबुधविमलसूरिरास**[१५] से इनके बारे में महत्त्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। प्राप्त विवरणानुसार विबुधविमलसूरि का आचार्य पद प्राप्ति से पूर्व नाम लक्ष्मीविमल था और वे आनन्दविमलसूरि के शिष्य हर्षविमल की परम्परा में हुए ऋद्धिविमल के प्रशिष्य और कीर्तिविमल के शिष्य थे। उक्त रास के अनुसार सीतपुर नामक स्थान में इनका जन्म हुआ था, वि०सं० १७८८ में सुमतिसागरसूरि से इन्होंने शंखेश्वर महातीर्थ में आचार्य पद प्राप्त किया। इनका निधन वि०सं० १८१४ में औरंगाबाद नामक स्थान पर हुआ।[१६] इनके द्वारा रचित **वीसी**[१७] (रचनाकाल वि०सं०-१७८०) का ऊपर उल्लेख किया जा चुका है। वि०सं० १८१३ में रचित **सम्यकत्त्वबालावबोधरास**[१८] भी इन्हीं की कृति मानी जाती है। इसकी प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि वि०सं० १८१३ में इन्होंने अपने शिष्य महिमाविमल को औरंगाबाद में सूरि पद प्रदान कर दिया था।

महिमाविमलसूरि के बारे में कोई जानकारी नहीं मिलती। वि०सं० १८२०/ई०स०१७६४ में रचित **विबुधविमलसूरिरास** जिसका ऊपर उल्लेख आ चुका है, इन्हीं के काल में रचा गया था।[१९] चिन्तामणिपार्श्वनाथ जिनालय, शकोपुरा, खंभात में इनकी चरणपादुका स्थापित है, जिस पर वि०सं० १८४८ माघ सुदि १० गुरुवार का लेख उत्कीर्ण है। बुद्धिसागरसूरि[२०] ने इस लेख की वाचना निम्नानुसार दी है :

संवत् १८४८ वर्षे माहसुदि १० गुरौ भट्टारकश्री १०८ श्रीज्ञानविमलसूरि तत्पट्टे श्रीलक्ष्मीविमलसूरि तत्पट्टे श्रीमहिमाविमलसूरिचरणपादुका कारापिता खंभायतनगरे।।

उक्त लेख से यह स्पष्ट हो जाता है कि वि०सं० १८४८ के पूर्व महिमाविमलसूरि का निधन हो चुका था। इनके पश्चात् विमलशाखा के सम्बन्ध में कोई जानकारी नहीं मिलती, इससे यही प्रतीत होता है कि महिमाविमलसूरि के निधन के साथ ही इस शाखा का अस्तित्त्व भी समाप्त हो गया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संदर्भ

१. पंन्यास मुक्तिविमलगणि, संग्राहक-संशोधक, **प्राचीनस्तवनरत्नसंग्रह**, भाग १, श्रीदयाविमल जैनग्रन्थमाला, अंक ५, प्रकाशक-श्रीश्रेष्ठी जमनाभाई भृगुभाई, मनसुखभाई की पोल, अहमदाबाद १९१७ ई०स०. मोहनलाल दलीचंद देसाई, **जैनगूर्जरकविओ**, भाग ४, द्वितीय संशोधित संस्करण पृष्ठ ३८२-४१८.

२. देसाई, पूर्वोक्त, भाग ५, पृष्ठ ३०९-१०.

३. पंन्यास मुक्तिविमलगणि, पूर्वोक्त, भाग १, प्रस्तावना, पृष्ठ १७-२१.

४. मुनि जिनविजय, संपा०- **जैनऐतिहासिकगूर्जरकाव्यसंचय**, प्रवर्तक श्री कांतिविजयजी जैन ऐतिहासिक ग्रन्थमाला, पुष्प ६, भावनगर १९२६ ई०स०, पृष्ठ २२-३६, राससार, पृष्ठ १०-१४.

५-६. देसाई, पूर्वोक्त, भाग ४, पृष्ठ ३८३-८५, भाग ९, पृष्ठ ८३-८४.

७. पंन्यास मुक्तिविमलगणि, पूर्वोक्त, भाग १, प्रस्तावना, पृष्ठ ११-१२.

८. देसाई, पूर्वोक्त, भाग ४, पृष्ठ ३८३-८५.

९. वही, पृष्ठ ३९७-९८.

१०. पंन्यास मुक्तिविमलगणि, पूर्वोक्त, भाग १, प्रस्तावना, पृष्ठ ११-१२.

११-१२. वही, प्रस्तावना, पृष्ठ ५-६.
देसाई, पूर्वोक्त, भाग ९, पृष्ठ ९७.

१३. देसाई, पूर्वोक्त, भाग ५, पृष्ठ ३०९-१०.

१४. वही, भाग ९, पृष्ठ ९७.

१५-१६. मुनि जिनविजय, संपा०- **जैनऐतिहासिकगूर्जरकाव्यसंचय**, पृष्ठ २२-२६.

१७-१८. देसाई, पूर्वोक्त, भाग ५, पृष्ठ ३०९-१०.

१९. मुनि जिनविजय, पूर्वोक्त, पृष्ठ २२-२६, राससार, पृष्ठ १०-१४.

२०. बुद्धिसागर, संपा०- **जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह**, भाग २, लेखांक ९१२.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सहायक ग्रन्थ - सूची

अर्बुदप्राचीनजैनलेखसंदोह, संपा० - मुनि जयन्तविजय, प्रका०- श्रीदीपचंद बांठिया, मंत्री, श्री विजयधर्मसूरि ग्रन्थमाला, उज्जैन वि०सं० १९९४.

अर्बुदाचलप्रदक्षिणाजैनलेखसंदोह, संपा०- मुनि जयन्तविजय, प्रका०- यशोविजय जैन ग्रन्थमाला, भावनगर वि०सं० २००५.

आनन्दकाव्यमहोदधि - भाग ६, संपा०- जीवनचन्द साकरचन्द झवेरी, प्रका०- श्री देवचंद लालभाई पुस्तकोद्धारे, मुम्बई १९१९ई०.

आपणाकविओ, लेखक - केशवराम काशीराम शास्त्री, प्रका०- गुजरात विद्या सभा, अहमदाबाद १९७८ ई०.

आरासणातीर्थ अपरनाम **कुम्भारियाजीतीर्थ**, लेखक-मुनिश्री विशालविजयजी, प्रका०- यशोविजय जैन ग्रन्थमाला, भावनगर १९६१ ई०.

उत्तर भारत में जैनधर्म (ई०पू० ८०० से ५२६ ई० तक), अंग्रेजी में लेखक - चिमनलाल जैसिंह शाह, हिन्दी अनुवादक, कस्तूरमल बांठिया, प्रका०- सेवा मंदिर, रावटी, जोधपुर १९९० ई०.

ऐतिहासिकरासंग्रह, भाग १-४, संपा०- विजयधर्मसूरि, प्रका०- यशोविजय जैन ग्रन्थमाला, भावनगर वि०सं० १९७२-७८.

ऐतिहासिकलेखसंग्रह, लेखक - पं० लालचन्द भगवानदास गांधी, प्रका०- सयाजीराव साहित्यमाला, बड़ोदरा १९६२ ई०.

कृपारसकोश, रचनाकार- शांतिचन्द्र उपा०, प्रका०- श्रीकांतिविजय इतिहासमाला, भावनगर वि०सं० १९७३.

गुरुगुणरत्नाकरकाव्य, संपा०- मुनि इन्द्रविजय, प्रका०- यशोविजय जैन ग्रन्थमाला, वाराणसी वीर सम्वत् २४३७.

गुजरातना सारस्वतो, लेखक- पं० केशवराम काशीराम शास्त्री, प्रका०- गुजरात साहित्य सभा, अहमदाबाद १९७७ ई०.

गुजरातनो राजकीय अने सांस्कृतिक इतिहास, भाग ४,५,६ संपा०-रसिकलाल छोटालाल परीख एवं हरिप्रसाद ग० शास्त्री, प्रका०- सेठ भोगीलाल जयसिंह भाई अध्ययन संशोधन विद्या भवन, अहमदाबाद १९७६-१९७९ ई०.

गुजरातीसाहित्यकोश, भाग-१, संपादक- जयंत कोठरी तथा जयंत गाडीत, प्रका०- गुजराती साहित्य परिषद, अहमदाबाद १९८९ ई०.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुरुदेवश्रीमद्विजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी: जीवन यात्रा, लेखक- श्री भगवान् सहाय वशिष्ठ, प्रका०- श्री राजेन्द्र प्रवचन कार्यालय, श्री मोहनखेड़ा तीर्थ, राजगढ़ (धार) मध्य प्रदेश १९९० ई०.

गुर्वावली, रचनाकार-मुनिसुन्दरसूरि; प्रका०- यशोविजय जैन ग्रन्थमाला, वाराणसी वीर सम्वत् २४३७.

जगद्गुरुकाव्य, रचनाकार-पद्मसागर, प्रका०- यशोविजय जैन ग्रन्थमाला, भावनगर.

जिनदत्तसूरिज्ञानभंडार, जैसलमेर के हस्तलिखित ग्रन्थों का सूचीपत्र, द्वितीय खण्ड, संकलनकर्ता - श्री जौहरीमल पारेख एवं अन्य, प्रका०- सेवा मंदिर, रावटी, जोधपुर १९८८ ई०.

जिनशासनश्रमणीरत्नो, संपा०- नन्दलाल देवलुक, प्रका०- अरिहन्त प्रकाशन, भावनगर १९९४ ई०.

जैनऐतिहासिकगूर्जरकाव्यसंचय, संपा०- मुनि जिनविजय, प्रका०- प्रवर्तक श्री कांतिविजय जैनऐतिहासिक ग्रन्थमाला, भावनगर १९२६ ई०.

जैनगुर्जरकविओ, भाग१-९, लेखक-श्री मोहनलाल दलीचन्द देसाई, संपा०-डॉ० जयन्त कोठारी, द्वितीय संशोधित संस्करण, प्रका०-महावीर जैन विद्यालय, मुम्बई १९८६-९७ ई०.

जैनतीर्थसर्वसंग्रह, भाग १, खंड १-२, भाग २, लेखक- पं० अम्बालाल प्रेमचन्द शाह, प्रका०- आनन्दजी कल्याणजी की पेढ़ी, अहमदाबाद १९५३ ई०.

जैनधातुप्रतिमालेख, संपा०- मुनि कांतिसागर, प्रका०-श्री जिनदत्तसूरि ज्ञान भंडार, सूरत १९५० ई०.

जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह, भाग १-२, संपा०- बुद्धिसागरसूरि, प्रका०-श्री अध्यात्म ज्ञान प्रसारक मंडल, पादरा १९२४ ई०.

जैनपरम्परानो इतिहास, भाग १-४, लेखक - त्रिपुटी महाराज, प्रका०- श्री चारित्र स्मारक ग्रन्थमाला, अहमदाबाद - भावनगर १९५२-८३ ई०.

जैनपुस्तकप्रशस्तिसंग्रह, संपा०- मुनि जिनविजय, सिंघी जैन ग्रन्थमाला, भारतीय विद्या भवन, मुम्बई १९४३ ई०.

जैनप्रतिभादर्शन, संपा०-नन्दलाल देवलुक, प्रका०-श्री अरिहन्त प्रकाशन, भावनगर २००० ई०.

जैनलेखसंग्रह, भाग १-३, संग्राहक-संपा०-श्री पूरनचन्द नाहर, कलकत्ता १९१८-१९२९ ई०.

जैनसंस्कृतसाहित्यनो इतिहास, भाग १-३, लेखक-हीरालाल रसिकलाल कापड़िया,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रका०- श्री मुक्तिकमलजैन मोहनमाला, बड़ोदरा १९७० ई०.

जैनसाहित्य का बृहद्इतिहास, भाग ३, लेखक - मोहनलाल मेहता, प्रका०- पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान, वाराणसी १९६७ ई०.

जैनसाहित्य का बृहद्इतिहास, भाग ४, लेखक- मोहनलाल मेहता एवं हीरालाल रसिकलाल कापड़िया, प्रका०-पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान, वाराणसी १९६८ ई०.

जैनसाहित्य का बृहद्इतिहास, भाग ५, लेखक- पं० अम्बालाल प्रेमचन्द शाह, प्रका०-पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान, वाराणसी १९६९ ई०.

जैनसाहित्य का बृहद्इतिहास, भाग ६, लेखक- गुलाब चन्द्र चौधरी, प्रका०- पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान, वाराणसी १९७३ ई०.

जैनसाहित्यनो संक्षिप्तइतिहास, लेखक- मोहनलाल दलीचन्द देसाई, प्रका०- श्वेताम्बर जैन कान्फ्रेन्स, मुम्बई १९३३ ई०.

जैनस्तोत्रसन्दोह, भाग १, संपा०- मुनि अमरविजय के शिष्य मुनि चतुरविजय, प्रका०-श्री साराभाई मणिलाल नवाब, प्राचीन (जैन) साहित्योद्धार ग्रन्थमाला, अहमदाबाद १९३२ ई०.

ज्ञानांजलि (मुनि पुण्यविजयजी अभिवादन ग्रन्थ), संपा०- भोगीलाल सांडेसरा तथा अन्य, प्रका०- श्री सागर गच्छ जैन उपाश्रय, बड़ोदरा १९६२ ई०.

तपागच्छवंशवृक्ष, लेखक- जयन्तीलाल छोटालाल शाह, प्रका०- जयन्तीलाल छोटालाल शाह, सातभाईनी हवेली, झवेरीवाड़, अहमदाबाद वीर सम्वत् २४६२.

त्रण प्राचीनगुजराती कृतिओ, संपादिका- शार्लोटे क्राउझे (कु० सुभद्रा देवी), प्रका०- गुजरात विद्या सभा, अहमदाबाद १९५१ ई०.

दिग्विजयमहाकाव्य, रचनाकार- मेघविजय गणि, संपा०- पं० अम्बालाल प्रेमचन्द शाह, सिंघी जैन ग्रन्थमाला, भारतीय विद्या भवन, मुम्बई १९४५ ई०.

देवानन्दाभ्युदयमहाकाव्य, रचनाकार- मेघविजय गणि, संपा०- पं० बेचरदास दोशी, सिंघी जैन ग्रन्थमाला, अहमदाबाद- कलकत्ता १९३७ ई०.

नव्यपंचकर्मग्रन्थ: देवेन्द्रसूरि, संपा०- प्रवर्तक चतुरविजय, प्रका०- श्री आत्मानन्द जैन ग्रन्थमाला, भावनगर वि०सं० १९९६/ ई०स० १९४०.

पट्टावलीपराग संग्रह, संपा०- मुनि कल्याणविजय गणि, प्रका०- श्रीकल्याणविजय शास्त्र संग्रह समिति, जालोर १९६६ ई०.

पट्टावलीसमुच्चय, प्रथम भाग, संपा०- मुनि दर्शनविजय, प्रका०- श्री चारित्र स्मारक ग्रन्थमाला, वीरमगाम १९३३ ई०.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पट्टावलीसमुच्चय, द्वितीय भाग, संपा०- मुनि ज्ञानविजय (त्रिपुटी), प्रका०- श्री चारित्र स्मारक ग्रन्थमाला, अहमदाबाद १९५० ई०.

प्रतिष्ठालेखसंग्रह, संपा०- विनय सागर, प्रका०- सुमति सदन, कोटा १९५३ ई०.

प्राचीनजैनलेखसंग्रह, भाग २, संपा०- मुनि जिनविजय, प्रका०- श्री जैन आत्मानन्द सभा, भावनगर १९२१ ई०.

प्राचीनतीर्थमालासंग्रह, संशोधक- विजयधर्मसूरि, प्रका०- यशोविजय जैन ग्रन्थमाला, भावनगर वि०सं० १९७८.

प्राचीनलेखसंग्रह: संपा०- मुनि विद्याविजय, प्रका०- यशोविजय जैन ग्रन्थमाला, भावनगर १९२९ ई०.

प्राचीनस्तवनरत्नसंग्रह, भाग १-२, संशोधक- पंन्यास मुक्ति विमलगणि, प्रका०- श्रेष्ठिवर्य जमनाभाई भगुभाई, अहमदाबाद १९१७-२४ ई०.

बीकानेरजैनलेखसंग्रह, संग्रा०- संपा०- अगरचन्द भँवरलाल नाहटा, प्रका०- नाहटा ब्रदर्स, कलकत्ता १९५५ ई०.

भानुचन्द्रगणिचरित, रचनाकार- सिद्धिचन्द्रगणि, संपा०- मोहनलाल दलीचंद देसाई, सिंधी जैन ग्रन्थमाला, अहमदाबाद-कलकत्ता १९४१ ई०.

महामात्य वस्तुपाल का साहित्यमंडल और संस्कृत साहित्य में उसकी देन, लेखक- भोगीलाल ज० सांडेसरा, प्रका०- जैन संस्कृति संशोधन मंडल, वाराणसी १९५९ ई०.

महावीरजैनविद्यालय रौप्यमहोत्सव अंक, संपा०- मोतीचंद गिरधरदास कापड़िया तथा अन्य, प्रका०- महावीर जैन विद्यालय, मुम्बई १९५१ ई०.

महावीरजैनविद्यालय सुवर्णमहोत्सव अंक, भाग १-२, संपा०- आदिनाथ नेमिनाथ उपाध्ये तथा अन्य, प्रका०- महावीर जैन विद्यालय, मुम्बई १९६८ ई०.

मालवांचल के जैन लेख, संग्रा०- श्री नन्दलाल लोढ़ा, प्रका०- कावेरी शोध संस्थान, उज्जैन १९९५ ई०.

मन्त्राधिराजचिन्तामणि- अनेक जैनचार्यविरचित **जैनस्तोत्रसन्दोह**, भाग २, प्रका०- श्रीसाराभाई मणिलाल नवाब, अहमदाबाद १९३६ ई०.

मुगल सम्राटों की धार्मिक नीति पर जैन सन्तों का प्रभाव, लेखिका - कु० नीना जैन, प्रका०-श्री काशीनाथ सराक, श्री विजय धर्म सूरि समाधि मंदिर, शिवपुरी १९९१ ई०

यतीन्द्रसूरिअभिनन्दनग्रन्थ, संपा०- पं० लालचन्द भगवानदास गांधी तथा अन्य, प्रका०- श्री सौधर्मबृहत्तपागच्छीय संघ, फालना १९५८ ई०.

राधनपुरप्रतिमालेखसंग्रह, संपा०- मुनि विशालविजय, प्रका०- यशोविजय जैन ग्रन्थमाला, भावनगर १९६० ई०.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लींबडीजैनज्ञानभंडारनी हस्तलिखितप्रतिओनुं सूचीपत्र, संपा०- प्रवर्तक कांतिविजय के शिष्य चतुरविजय, प्रका०- आगमोदय समिति, मुम्बई १९२८ ई०.

विजयप्रशस्तिकाव्य, रचनाकार- हेमविजयगणि, संशोधक- पं० हरगोविन्ददास बेचरदास, प्रका०- यशोविजय जैन ग्रन्थमाला, वाराणसी वि०सं० २४३७.

विजयवल्लभसूरिस्मारकग्रन्थ, संपा०- भोगीलाल सांडेसरा तथा अन्य, प्रका०- महावीर जैन विद्यालय, मुम्बई १९५६ ई०.

विज्ञप्तिलेखसंग्रह, संपा०- मुनि जिनविजय, सिंघी जैन ग्रन्थमाला, भारतीय विद्या भवन, मुम्बई १९६० ई०.

विविधगच्छीयपट्टावलीसंग्रह, संपा०- मुनि जिनविजय, सिंघी जैन ग्रन्थमाला, भारतीय विद्या भवन, मुम्बई १९६१ ई०.

श्रीप्रतिमालेखसंग्रह, संपा०- दौलतसिंह लोढ़ा, प्रका०- यतीन्द्र साहित्य सदन, धामणिया १९५५ ई०.

श्रीप्रशस्तिसंग्रह, संपा०- अमृतलाल मगनलाल शाह, प्रका०- श्री देशविरति धर्माराजक समाज, अहमदाबाद वि०सं० १९९३.

श्रीस्वर्णगिरिजालोर, लेखक- श्री भँवरलाल नाहटा, प्रका०- प्राकृत भारती संस्थान, जयपुर एवं बी० जे० फाउण्डेशन, कलकत्ता १९९५ ई०.

शत्रुंजयगिरिराजदर्शन, मुनि कंचनसागर, प्रका०- श्री आगमोद्धारक ग्रन्थमाला, कपडवज १९८२ ई०.

शत्रुंजयवैभव, संपा०-मुनि कान्तिसागर, प्रका०- कुशल संस्थान, जयपुर १९९० ई०.

शत्रुंजयोद्धारप्रबन्ध, रचनाकार- विवेकधीर गणि, संपा०- मुनि जिनविजय, प्रका०- जैन आत्मानन्द सभा, भावनगर वि०सं० १९७३.

शासनप्रभावकश्रमणभगवंतो, भाग १-२, सम्पादक- श्री नन्दलाल देवलुक, प्रका०- श्री अरिहन्त प्रकाशन, भावनगर १९९२ ई०.

समग्रजैनचातुर्मासिसूची, वर्ष १९९७-२०००, संपा०- श्री बाबूलाल जैन 'उज्जवल', मुम्बई १९९७-२०००.

सूरीश्वर अने सम्राट, लेखक- मुनि विद्याविजय, हिन्दी अनुवाद-कृष्ण लाल वर्मा, प्रका०- विजयधर्म लक्ष्मी ज्ञान मंदिर, आगरा वि०सं० १९८०.

हिन्दीजैनसाहित्य का बृहद्इतिहास, लेखक-शितिकंठ मिश्र, भाग १-४, प्रका०- पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी १९८७- ९८ ई०.

हीरसौभाग्यकाव्य, रचनाकार-देवविमलगणि, प्रका०- काव्यमाला सिरीज, निर्णयसागर प्रेस, मुम्बई वि०सं० १९००. पुनर्मुद्रण, कालन्द्री (राजस्थान) वि०सं० २०४१.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Aspects of Early Jainism, by Jai Prakash Singh, Banaras Hindu University, Varanasi- 1972 A.D.

Aspects of Jainology, Vol. II, *Pt. BecharDas Dosi Commemoration Volume*, Editors. Prof. M.A. Dhaky & S.M. Jain, P.V. Research Institute, Varanasi 1989 A.D.

Aspects of Jainology, Vol. III, *Pt. Dalsukha Bhai Malvania Felicitation Volume*, Editors : Prof. M.A. Dhaky & S.M. Jain, P.V. Research Institute, Varanasi 1991 A.D.

Aspects of Jainology,Vol. V, *Shri Svetambar Sthanakavasi Jaina Heraka Jayanti Seminar Volume*, Editors. Prof. S.M.Jain and Dr. Ashok Kumar Singh, Varanasi 1994 A.D.

Aspects of Jainology, Vol. 7, Bhupendra Natha Jain, Felicitation Volume, Ed. Prof. S.M.Jain & Others, Parshwanatha Vidyapitha, Varanasi 1998 A.D.

A Descripts Catalogue of Manuscripts in the Jaina Bhandaras at Pattan, Vol. 1, Ed. C.D. Dalal, G.O.S. No. LXXVI, Baroda 1937 A.D.

Ancient Jains Hymns, Ed. Charlote Krause, Scindia Oriental Series, No. 2, Ujjain 1952 A.D.

Cátalogue of Gujarati Mss : Muni Shree PunyaVijayJi's Collection, Ed. Vidhatri Vora, L.D. Series No. 71, Ahmedabad 1978 A.D.

Catalogue of Palm-Leaf Mss in the Shanti Natha Jaina Bhandar Cambay, Part I, II, Ed. Muni Shree Punya VijayaJi, G.O.S. No. 139, 149, Baroda 1962-66 A.D.

Catalogue of Sanskrit & Prakrit Mss : Muni Shree Punya VijayaJi's Collection, Part I-III; *Acarya Vijayadeva Suris and Acarya KhantiSurie's Collection*, Part IV, Ed. - A.P. Shah, Ahmedabad 1963-68 A.D.

Descriptive Catalogue of Government Collections of Manuscripts deposited at the Bhandarkar Oriental Research Institute, Vol. XVII

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

- XIX, Ed. H.R. Kapadia, Poona 1935-1977 A.D.
Detailed (First) report of Operations in search of Sanskrit Mss in Bombay Circle, April 1882 to March 1883, Ed. P.Peterson, Bombay, 1883.
Second report of Operations in search of Sanskrit Mss in Bombay Circle , April 1883 to March 1884, Ed. P.Peterson, Bombay, 1884.
Third report of Operations in search of Sanskrit Mss in Bombay Circle, April 1884 to March 1886, Ed. P.Peterson, London, 1886.
Fourth report of Operations in search of Sanskrit Mss in Bombay Circle, April 1886 to March 1892, Ed. P.Peterson, London, 1894.
Fifth report of Operations in search of Sanskrit Mss in Bombay Circle, April 1892 to March 1895, Ed. P.Peterson, Bombay, 1896.
Sixth report of Operations in search of Sanskrit Mss in Bombay Circle, April 1895 to March 1898, Ed. P.Peterson, Bombay, 1899.
History of Jaina Monachism, By S.B.Deo. Published by Decan College Postgraduate and Research Institute, Poona 1956 A.D.
Political History of Northern India from Jaina Sources (C. 650 A.D. to 1300 A.D.) by G.C. Chaudhari, Sohan Lal Jaina Dharma Prasarak Samiti, Amritsar, 1963 A.D.
New Catalogue of Prakrit & Sanskrit, Mss: Jesalmer Collection, Ed. Muni Punya Vijaya, L.D. Series No. 36, Ahmedabad,1972 A.D.
The Jain Inscriptions of Ahmedabad, Ed., Praveenchandra, C. Parikh and Bharti Shelat, Publisher - B.J. Institute of Learning and Research, Ahmedabad, 1997 A.D.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पत्र-पत्रिकायें

जैनसत्यप्रकाश	-	अहमदाबाद,
जैनसाहित्यसंशोधक	-	पूना
तुलसीप्रज्ञा	-	लाडनूं
निर्ग्रन्थ	-	अहमदाबाद,
पांचाल	-	कानपुर
श्रमण	-	वाराणसी
संस्कृतिसन्धान	-	वाराणसी,
शोधादर्श	-	लखनऊ
सम्बोधि	-	अहमदाबाद
सामीप्य	-	अहमदाबाद
स्वाध्याय	-	बड़ोदरा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेखक-परिचय

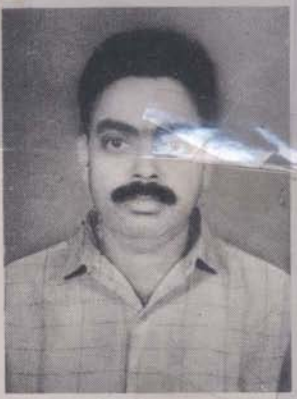

डॉ. शिवप्रसाद

जन्म : 6 मार्च 1957

जन्मस्थान : वाराणसी

शिक्षा : एम.ए. (प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्त्व), पी-एच्.डी. काशी हिन्दू विश्वविद्यालय.

पद : पूर्व रिसर्च एसोसिएट, प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय.
प्रवक्ता,
पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी.

सम्पादक : श्रमण

लेखन :
जैन तीर्थों का ऐतिहासिक अध्ययन (शोधप्रबन्ध), प्रकाशित.
अचलगच्छ का इतिहास, प्रकाशित.

प्रकाशित शोध-निबन्ध : 60

प्रो. सागरमल जैन, प्रो. एम.ए. ढांकी, साहित्य महारथी श्री भंवरलालजी नाहटा, महोपाध्याय विनयसागर आदि के सान्निध्य में विभिन्न श्वेताम्बर गच्छों के इतिहास का लेखन कार्य.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Our Important Publications

1.	Studies in Jaina Philosophy	Dr. Nathamal Tatia	100.00
2.	Jaina Temples of Western India	Dr. Harihar Singh	200.00
3.	Jaina Epistemology	Dr. I.C. Shastri	150.00
4.	Concept of Pañcaśīla in Indian Thought	Dr. Kamla Jain	50.00
5.	Concept of Matter in Jaina Philosophy	Dr. J.C. Sikdar	150.00
6.	Jaina Theory of Reality	Dr. J.C. Sikdar	150.00
7.	Jaina Perspective in Philosophy & Religion	Dr. Ramji Singh	100.00
8.	Aspects of Jainology (Complete Set : Vols. 1 to 7)		2200.00
9.	An Introduction to Jaina Sādhanā	Prof. Sagarmal Jain	40.00
10.	Pearls of Jiana Wisdom	Dulichand Jain	120.00
11.	Scientific Contents in Prakrit Canons	Dr. N.L. Jain	300.00
12.	The Heritage of the Last Arhat : Mahāvīra	Dr. C. Krause	20.00
13.	The Path of Arhat	T.U. Mehta	100.00
14.	Multi-Dimensional Application of Anekāntavāda	Ed. Prof. S.M. Jain & Dr. S.P. Pandey	500.00
15.	The World of Non-living	Dr. N.L. Jain	400.00
16.	अष्टकप्रकरण	अनु.-डॉ.अशोक कुमार सिंह	200.00
17.	जैन साहित्य का बृहद् इतिहास (सम्पूर्ण सेट सात खण्ड)		630.00
18.	हिन्दी जैन साहित्य का इतिहास (सम्पूर्ण सेट चार खण्ड)		760.00
19.	जैन प्रतिमा विज्ञान	डॉ. मारुतिनन्दन तिवारी	150.00
20.	महावीर और उनके दशधर्म	प्रो. भागचन्द्र जैन	80.00
21.	वज्जालग्गं (हिन्दी अनुवाद सहित)	पं. विश्वनाथ पाठक	80.00
22.	प्राकृत हिन्दी कोश	सम्पा.-डॉ. के.आर. चन्द्र	400.00
23.	जैन धर्म और तान्त्रिक साधना	प्रो. सागरमल जैन	350.00
24.	गाथा सप्तशती (हिन्दी अनुवाद सहित)	पं. विश्वनाथ पाठक	60.00
25.	सागर जैन-विद्या भारती (तीन खण्ड)	प्रो. सागरमल जैन	300.00
26.	गुणस्थान सिद्धान्त : एक विश्लेषण	प्रो. सागरमल जैन	60.00
27.	भारतीय जीवन मूल्य	प्रो. सुरेन्द्र वर्मा	75.00
28.	नलविलासनाटकम्	सम्पा.- डॉ. सुरेशचन्द्र पाण्डे	60.00
29.	अनेकान्तवाद और पाश्चात्य व्यावहारिकतावाद	डॉ. राजेन्द्र कुमार सिंह	150.00
30.	दशाश्रुतस्कन्धनिर्युक्ति : एक अध्ययन	डॉ. अशोक कुमार सिंह	125.00
31.	पञ्चाशक-प्रकरणम् (हिन्दी अनुवाद सहित)	अनु.- डॉ. दीनानाथ शर्मा	250.00
32.	सिद्धसेन दिवाकर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व	डॉ. श्रीप्रकाश पाण्डेय	100.00
33.	जैनधर्म की प्रमुख साध्वियाँ एवं महिलाएँ	हीराबाई बोरदिया	50.00
34.	मध्यकालीन राजस्थान में जैन धर्म	डॉ. (श्रीमती) राजेश जैन	160.00
35.	भारत की जैन गुफाएँ	डॉ. हरिहर सिंह	150.00
36.	महावीर की निर्वाणभूमि पावा : एक विमर्श	भगवतीप्रसाद खेतान	65.00
37.	मूलाचार का समीक्षात्मक अध्ययन	डॉ. फूलचन्द जैन	80.00
38.	जैन तीर्थों का ऐतिहासिक अध्ययन	डॉ. शिवप्रसाद	100.00
39.	बौद्ध प्रमाण-मीमांसा की जैन दृष्टि से समीक्षा	डॉ. धर्मचन्द्र जैन	200.00
40.	अचलगच्छ का इतिहास	डॉ. शिवप्रसाद	300.00

Pārśwanātha Vidyāpiṭha, Varanasi-221005 INDIA